कमीशन बड़ौदा का सूची पत्र ॥

१० [दशवें दिनका इजलास]

नम्बर	प्रति दिन की कार्रवाई	पृष्ठ से पृष्ठ तक
	मिस्टर ब्रैसन साहबके प्रश्न	··१८५—१८५
	ऐडवकेट जनरल ने इस गवाह के दुबारह इजहार लिये	··१८५—१८५
	इजहार मिस्टर बूवी साहब	··१८६—१८७
	सरजण्ट वेलन टायन साहब के प्रश्न	··१८७—१८८
	ऐडवकेट जनरल के प्रश्न	··१८८—१८८
११	[ग्यारहवें दिनका इजलास]	
	आजकेदिन दामोदर पंथकेइजहार ऐडवकेट जनरलने लिये	··१८८—२००
१२	[बारहवें दिनका इजलास]	
	ग्यारह बजे साहब ऐडवकेट जनरल ने दामोदर पंथ से [इजहार लेना प्रारंभ किया	··२००—२०४
	सरजण्टवेलनटायन साहब के प्रश्न जो दामोदर पंथ [गवाह से किये	··२०५—२१८
	ऐडवकेटजनरल ने दुबारा इजहार दामोदरपंथ के लिये	··२१८—२१६
	इज़हार हेमचन्द फतहचन्द जौहरी	··२१६—२२५
१३	[तेरहवेंदिन का इजलास]	
	मिस्टरअनवरार्टो साहब ने हेमचन्द फतहचन्द के इज़हार [लेना प्रारंभ किया	··२२५—२२५
	सरजंटवेलनटायन साहब के प्रश्नहेमचन्दफतहचन्द से	··२२५—२२८
	ऐडवकेटजनरल के प्रश्न	··२२८—२३३
	इज़हार नानाजी वितल गवाह	··२३३—२३४
	सरजंटवेलनटायन साहब के प्रश्न	··२३४—२३८
	ऐडवकेटजनरल ने फिर नानजीवितल के इज़हारलिये	··२३८—२३६
१४	[चौदहवेंदिन काइजलास]	
	रघुनाथके पुत्र आत्माराम के इजहार प्रारंभ हुये	··२३६—२३६

भूमिका

ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की अमलदारी जबसे हिन्दुस्तान में हुई तबसे ऐसा महकमा कमीशन गत वर्षमें जो बड़ौदे के राजाके मुक़द्दमे के तहक़ीक़ात करने के लिये नियत हुवा था कभी नियत नहीं हुवा—यह वह मुक़द्दमा है जो सम्पूर्ण हिन्दुस्तान और यूरुप में समाचार पत्रों के द्वारा विख्यात होचुका है—इस मुक़द्दमे की बिना और असल यह थी कि करनैल फ़ियर साहब बड़ौदा के ब्रिटिश रेजीडण्ट को शरबत में विष दियागया या नहीं औरइस अपराधका शुभा मल्हरराव गायकवार बड़ौदा पर हुवा—कि उनके साज़िश या तरग़ीबसे विष दियागया तथाच गवर्न्नमेण्टहिन्दने इसमुक़द्दमेकीतहक़ीक़ात के लियेएक कमीशन नियत की जिसमें तीनसाहब यूरोपियन अर्थात् सररिचर्डकौच साहब चीफजस्टिस बंगाल रेजीडण्ट, और सररिचर्डमीड साहब चीफ़कमिश्नर मुल्कमैसोर, और मिस्टर मैलवल साहब कमिश्नर अम्रतसर, और तीन साहब हिन्दुस्तानी अर्थात् दो बड़े महाराजा हिन्दुस्तान अर्थात् श्रीयुत महाराजा साहबबहादुर जयपुर और श्रीमान्महाराजा साहबबहादुर सेंधिया अधिपति ग्वालियारऔरराजा-

गत वर्ष में अनेक अखबारों में इस मुकद्दमे पर वादानु-
वाद हुआ कई अखबार लिखने वालों ने गवर्नमेण्ट की इस
काररवाई पर बड़े २ एतराज किये और कलङ्क लगाये—और
कितनों ने गवर्नमेण्ट इण्डिया की इस काररवाई की
सहायता की—जोकि अब यह मुकद्दमा पूर्ण होगया इसलिये
अब इस विषय में लिखना कि वह काररवाई कैसी थी व्यर्थ है
लेकिन जोकि अखबारों में इस मुकद्दमे की अलग २ कार-
रवाइयां छपी हैं और बहुधा अखबार के अवलोकन करने
वालों और देश के रईसों की यह इच्छा पाई गई कि तर्जुमा
सब काररवाई कमीशन का आदि से अन्त पर्य्यन्त अखीरी
हुक्म तक खास पूर्ण छापा जावे—जो कि इस भूमिका का
लिखने वाला भी बड़ौदे की कमीशन के अवलोकन करने के
लिये कमीशन की सभा में उपस्थित रहा इसलिये इच्छा हुई
कि इस मुकद्दमे के अनुरागियों को इस काररवाई से
जो यादगार तारीख है सूचित करे—यद्यपि अखबारों
में तर्जुमे हुये परन्तु जांचने के समय उन तर्जुमों में कुछ
अन्तर पाया गया—इसलिये एक अति अंगरेजी विद्या

उनको नियमित स्थान पर अपने साथ लेजाकर बैठाया यह जगह पहिले कमीशन के लोगों की बाईं ओर नियतथी उसदिन मल्हरराव अति उत्तम वस्त्र पहिने हुये थे सुर्ख मरहटी पगड़ी शिरपर बंधी हुईथी और सम्पूर्ण वस्त्रोंके ऊपर एक मखमल का चुगह पहिने हुये थे गले में मोती और लाल और जमुर्रद का हार पहिने हुये थे उनकी उंगुलियों में कोई अंगूठी नथी परन्तु कानों में बाले जिसमें मोती पड़े हुये थे पहिनेथे मिस्टर इस्कोबल साहब वकील खास सरकार और मिस्टर अनवरा-रटी साहब मिस्टर हैरन साहब की हिदायत से और मिस्टर कोवलेगड और मिस्टर लेवारनरसाहब श्रीमान्गवर्नरजनरल वैसराय की ओर से मुकद्दमे की तहकीकात के लिये इज-लास में आये और सरजण्ट वेलनटाइन साहब और मिस्टर ब्रैन्सन और मिस्टर परमल और मिस्टर शान्ता रामनारायण बहिदायत मिस्टर जेफरसिन और पीनसाहबके वास्ते नवाब हेंडी गायकवार की ओर से इजलास में आये और मिस्टर वासदेव जगन्नाथ वकील हाई कोर्ट मल्हरराव की ओर से सम्पूर्ण कारवाई मुकद्दमे की देखरहे थे ॥

ग्यारह बजे पर बीस मिनट आने के उपरान्त साहबान कमीशन की इजाजत से एक अहल्कार ने उस मोकद्दमे शन के तर्जुमे को जोकि जबान मरहटी हिन्दुस्तानी में मिस्टर फिलन साहब मुतरज्जिम ने तर्जुमा कियाथा पढ़ा ॥

सरकार के मुख्य वकील ने साहबान कमीशन के रूबरू अरज किया कि मुकलामा लिखने वाले इस कारवाई के पहिले से मुकर्रर होगये हैं और जो कुछ साहबान कमी-शन को इस विषय में जरूरत होगी तुरन्तही उसकी ता-मील कीजावेगी सरजण्टवेलनटाइन साहब ने कहा कि एक बात अरज करनी मुझको भीहै हमको जरूरत गवाहों की होगी उनका बुलाना आपको मंजूर होगा और श्रीमान् मल्हरराव के वास्ते उनकी गवाही निहायत जरूर है यद्यपि

परन्तु, मैं इस मुक़द्दमे का वृत्तान्त संक्षेप से आपको ज़ेहन नशीन करता हूं क्योंकि यह कमीशन जौडीशल नहीं है किन्तु केवल मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात करके श्रीमान् नव्वाव गवर्नर जनरल बहादुर के इजलास में अपनी रिपोर्ट पेश करेगी और खास अपने तौर पर एक राय नहीं दे सकी है पससें सम्पूर्ण वृत्तान्त इस मुक़द्दमे का संक्षेप में आपके रूबरू पेशकरताहूं अभी आपके सामने इश्तिहार पढ़ा गया मैं उसके मुताबिक़ अपनी तक़रीर इस मुक़द्दमेके विषय में करूंगा मैं रेजीडन्सी के नौकरों के बहकाने की तारीख उस वक्त से ख़याल करता हूं जबकि पहिली कमीशन बड़ौदे में नियत हुईथी तो मालूम हुवा कि पहिली कमीशन तारीख २८ अक्टूबर सन् १८७३ई० को शुरूअ हुईथी और बराबर दो महीने तक अर्थात् नवम्बर डिसम्बर मुकद्दमेंकी तहक़ीक़ात होती रही इन महीनों में जासूस सालिम और यशवन्तराव के द्वारा श्रीमान् मल्हरराव ने रेजीडेन्टके नौकरोंसे विष दिये जाने की साजिश की यहां तक कि सिरफ रेजीडेन्ट के नौकरही नहींथे किन्तु खास निजके नौकर रजीडेन्ट साहब के भी अपने स्वामी के विष दिये जाने के लिये तय्यार किये गये थे उस समय साहब रजीडेन्ट यहां के कारनैल फियर साहब थे और जिस समय का मैं जिकर करता हूं उनकी मेम साहब भी विलायत नहीं गईं थीं किन्तु, मुकाम बडौदे में थीं पहिले श्रीमान् मल्हरराव ने कारनैलफियर साहब के विष देने की चाहा से बातचीत शुरूअकी यह आया फियर साहब की मेम साहिब के जाने के उपरान्त फियर साहब की लडकी अर्थात् ब्वीसाहब की मेमसाहिबाके पास नौकर थी इस आया का नाम अमीना है और यह बहुत मुद्दत से कारनैलफियर साहबके पास नौकर थी और फियरसाहिब की मेम साहिब के मिजाज में इसको इतना दखलथा कि सब बातें मेम साहिबा इससे कह दिया करती थीं यह

मेरे लार्ड प्रेसीडिन्ट और आप महाराजान और साहि-बान कमीशन मेरी तकरीर पर ग़ौर फरमावें अब मैं सर-कार की ओर से संक्षेप रीति से उन अपराधों का बयान करता हूं जो कि मल्हरराव के ऊपर ठहराये गये हैं और जिन अपराधों की तहक़ीक़ात के वास्ते यह कमीशन नियत हुई है हमने बहुतसे लोगोंसे गवाहियांलीं उनसे मालूम हुवा कि मल्हरराव के ऊपर एक बड़ा जुर्म नियत होता है और उनके ऊपर चार अपराध ठहराये गये परन्तु उन चारों को हम नीचे इस भांति पर संक्षेप कर लिखते हैं पहिले तो यह है कि श्रीमान् मल्हरराव ने अपने नौकरों के द्वारा करनैलफियर साहब और रेज़ीडेन्सी के नौकरों को बहकाया और दूसरे यह कि उन्होंने स्वतः अपने नौकरों के द्वारा करनैल फियरसाहब के नौकरों से और रज़ीडेन्सी के नौकरों से उनके खासी को विष दिलवाया मैं सम्पूर्ण गवाहियां कि जिनसे कि मुक़द्दमा साबित होता है इस जगह फ़ज़ूल समझता हूं क्योंकि धीरे धीरे आपके रूबरू सब गवाहियां तसदीक़ हो जायेंगी॥

जावेगा किन्तु कुछ इसके पति अब्दुल्लाकी गवाही की जरूरत नहीं है क्योंकि आया के घरमें कई कागज ऐसे पाये गये कि जिनसे पचास रुपये का दिया जाना साबित है यह कागज चार खत हैं दोतो आया ने अपने पतिको लिखे हैं और दो उसके पतिने आया को लिखे हैं इन खतों में सम्पूर्ण कार रवाई जो महाराज और आया से हुई लिखी है साहिबान कमीशन को उन खतों के देखने से फिर तहकीक़ात करने की आवश्यकता न होगी॥

इस बातको सुनकर सरजन्ट बेलनटाइन साहब ने बहुत धीरे से कहा कि जो कुछ कि साहबान कमीशन स्वीकार करें वह सब ठीक और सच है परन्तु उन खतों को अभीसे गवाही में लाना खिलाफ मालूम होता है आया के हाजिर करने के समय जो यह खत पेश किये जावें और साहबान कमीशन उनका पेश किया जाना उचित समझे तो उस दशा में कुछ हानि नहीं है॥

मिस्टर इसकोबल साहब ने उत्तर दिया कि वह खत गवाही के लायक है परन्तु जब तक कि कमीशन के मेम्बर उन चिट्ठियों को न मांगेंगे हम उनको पेश न करेंगे॥

जब कि आया से इजहार लिये गये तो आया बहुत बीमार थी और इस बातसेसाहबान कमीशन को साबित हुवा होगा कि उसके मनमें अपने अपराध का बड़ा खयालथा अब मैं दो और नौकरोंका बयान करता हूं यह खासनिज के नौकर साहब रेजीडेन्टके हैं और उन्होंनेभी बसबबसाजिश के बहुतसा रुपया श्रीमान्मल्हरराव से पाया था उनमें से एक पेडरू है यह शख्स करनैल फियर साहब का खानसामां था उसको पचास रुपये महाराज ने दिये थे और वह आया के साथ गया था परन्तु अब वह वहांके जाने से इन्कार करता है॥

अब मैं वह हाल आपके रूबरू बयान करता हूं कि जिस तरह करनैल फियर साहब को विष दिया गया परन्तु

कि तुमने रावजीको वहपुड़िया देदी मैंनेकहा हांदेदी आठ दसदिनके पीछे मैंइसहरके सलासको महाराजासाहबकेपा-सगया पहिलीरीतिके अनुसार नौबजे यशवन्तरावके मकान परगया और वहांसे रावजी जुग्गाकेसाथ महाराजा साहब केमहलको गया जिसकमरेमें हमेशा मुलाक़ात होतीथी उ-समें महाराजा साहब से मुलाक़ात हुई सालिम और यश-वन्तराव महाराजासाहब के पासबैठेहुये थे जब महाराजा साहबने मुझको देखा तो बुरी २ गालियांदीं और कहा कि तुमलोग लुच्चेहो गालियादेनेके पीछे महाराजासाहबने हम से कहाकि अबतक तुमलोगोंने कुछनहींकिया मैंनेकहा कि रावजीको मालूमहोगा मैंकुछ नहींजानता रावजीनेकहाजो कुछ मेराकामथा मैंकरचुका और वहवस्तु जोमहाराजासा-हबने दीथी अच्छीनहो तो मैंक्याकरूं महाराजासाहबने कहा अच्छा मैंदूसरी पुड़िया भेजूंगा और कहाकि उसको अच्छी तरह डालना—कलकेदिन तुम्हारेपास सालिमके हाथपुड़िया पहुंचेगी—सोउसके दूसरेदिन जबअपने मकानसे मैंनिकलता था तो सालिमने मुझको पुड़ियादी और मैंनेउसको लाकर रावजीके हवाले करदिया—यहपुड़िया ९ नवम्बरके पांचसात रोज पहिले दीथी ९ नवम्बर के प्रातःकाल के आठबजे मैंअ-पनेमकानसे आया मैंनेरावजीको डेवढ़ीपर बैठाहुआदेखा जो साहबकी कचहरीके निकट है उसदिन भोरको मुझसे और रावजीसे कुछवार्त्ता नहुई थोड़ीदेर के पीछे जब गिलास में विष मालूमहुवा तो गड़बड़ होगई मुझसे रावजीने कहाकि डाक्टरसाहब आयेथे और गिलासजेबमें रखकर लेगये सिवा इसके और कुछबातें रावजीसे नहींहुईं, उसकेदूसरे दिन क-रनलफियर साहबने मेरेइजहारलिये मैंअपने ओहदेपरका क़ायमरहा और फिरसूटरसाहबकी आज्ञानुसारमैं पकड़ागया ९ नवम्बर और जिसदिनतक मैंपकड़ागया रावजीसे कुछबातें नहींहुईं मेरे इजहार के पहिले मुझसे किसीने नहीं कहा

से पहिले चकोतरे का शर्व्वत तय्यार कर रक्खा करता था और फियर साहब उसको हर रोज़ पीलिया करतेथे ९ नवम्बर के रोज़ अब्दुल्ला ने बदस्तूर शर्व्वत बना कर रक्खा हवालदार रावजी वहां गया और करनैल फियर साहब के शर्व्वत में एक ज़हर की पुड़िया मिला दी इस ज़हर में संखिया और हीरे का चूरा मिला ड़ुआ था करनैल फियर साहब जब हवा खोरीसे आयेतो उन्होंने दो तीन घूंट शर्व्वत के पिये मगर चूंकि इस शर्व्वत में विष मिला ड़ुआ था इस सबब से बेज़ाद मालूम ड़ुवा फियर साहब ने यह बात ख्याल करके कि चकोतरह जिसका यह शर्व्वत बनाया गया है खराब होगा शर्व्वत को फेंक दिया परन्तु उनके सिर में दर्द होता रहा और जी मतलाया किया उन्होंने उस बरतन में जो देखा तो उनको मालूम ड़ुवा कि सियाह रंग की गाद उस बरतन में जमीहै इस बात को देखकर एकचिट्ठी डाक्टरसीवर्ड साहब को लिखी और अपनी नादुरुस्ती तबीयत का हाल सब उसमें लिखा डाक्टर सीवर्ड साहिब फौरन् चिट्ठी के देखतेही करनैल फियर साहब के पास आये और देखा कि संखिया और कोई चमकती ड़ुई वस्तु बरतन के नीचे जमी है परन्तु अपने तजुर्बे पर उनको निश्चय न ड़ुवा और उन्होंने कुल कैफियत लिख कर डाक्टर ग्रीसाहब को बम्बई में भेजी और एक पुड़िया उस वस्तु की भी जो उस बरतन में जमगई थी भेजी पस डाक्टर ग्रीसाहब और डाक्टर सीवर्ड साहब की राय मुत्तफिक़ ड़ुई था कि दो डाक्टर लोगों का एक मत है तो इसमें सन्देह नहीं कि करनैल फियर साहब को ज़रूर संखिया दी गई होगी सिवाय इस बात के एक और भी सबूत है कि नानक और यशवन्त राव सबह के वक्त रेज़ीडन्सी में गये इससे साफ मालूम होता है कि विष दिये जाने के हाल मालूम करने के वास्ते गये थे और उससे साफ मालूम होता है कि इनके

को दीयी और सालिम ने रावजी को दी रावजीने छठी और सातवीं नवम्बर को यह पुड़िया कारनैलफ़ियर साहब के शरबत में मिलाई थी परन्तु कारनैल फ़ियर साहब को कुछ असर न हुआ महाराज ने इस बात को मालूम करके ९ तारीख़ को एक और पुड़िया दी और उसी पुड़िया को फंकी का चूरह बरतन की पेंदीमें जलरहा था रावजी का परतला जो देखा गया तो और कई पुड़ियां संखिया की मिलीं जो कुछ मैं कह रहा हूं उसकी सच्चाई दामोदरपंथ और रावजी के इजहार पर मौक़ूफ़ है गवाहों के इजहार अलग २ लिये गये हैं जिस पर भी यह सब का एक बयान है इससे मालूम हुवा कि यह सब बातें सच्ची हैं दामोदरपंथ और रावजी ने अपने अपराध क्षमापन के इक़रार लेने के उपरान्त अपना इजहार दिया नरसू का इजहार बगैर क़सूर मुआफ़ करने के लियागया है उसके बयान से बिलकुल सच्चाई मालूम होती है यह रजीडन्सी में बहुत दिनों से नौकर था जोकि इससे ऐसा खराब काम हुवा तो इसने कोशिश की थी कि कुएं में गिरके मरजाय परन्तु कमीशन के साहिबान् इस विषयमें भी ग़ौर फ़रमायेंगे तो खूब मालूम होगा कि इस मनुष्यने जरूर विष देने की कोशिश की थी दामो-दरपन्थ की गवाही गायकवार के कागजों से सबूत होती है क्योंकि उन कागजों में बहुत से खर्च ऐसे लिखे हुये हैं कि जो गायकवार ने रजीडन्सी के नोकरों को नज़रा दिया था महाराज के खानगी हिसाब में उसने लिखा है कि तीन हजार रुपये के हीरे मोल लिये गयेथे और एक जगह लिखा है कि अठारह सौ रुपये का नग गायकवार ने मंगवाया पस यह सब फ़रज़ी हिसाब मालूम होते हैं हेमचन्द चौधरी के इजहार भी आप के सामने लिये जावेंगे उनसे आपको मालूम होगा कि किस क़दर चोरी दामोदरपन्थके हिसाबमें है और कितने रुपये के हीरे दामो-

जिसदिन उन्होंने सुना था उसीदिन याददाश्त भेजते ॥ अब मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त इस मुक़द्दमे का कमीशनके लोगोंकेसामने इस वास्ते बयान किया कि आप सबलोग इसपर गौरकरें॥

जब आप सब साहिब गवाहों के इज़हारात सुन लेंगे और सरजे न्टवेलन टाइन साहब भी अपने सवालात करलेंगे तबमैं अपनी राय इस मुक़द्दमे में दूंगा और इस समय जिन कामों में ज़रूरत होगी बहस करली जावेगी मुझको और कुछ कहना बाक़ी नहीं रहा अब आप आनन्द से गवाहों को बुल- वाइये इसके पहले कि वकील सरकार अपनी तकरीर कहकर बैठें उन्होंने यहभी कहाकि यहां थोड़े गवाह ऐसे हैं कि जो अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी को बिल्कुल नहीं जानते हैं इस कारण उनके इज़हारात लेने के वास्ते एक बन्दोबस्त करना ज़रूर है सरजन्ट वेलनटाइन साहब ने उत्तर दिया कि जिस ज़बान में जो मनुष्य इज़हार देगा उसका वैसा ही बन्दोबस्त किया जायगा इस बात को साहब प्रेज़ीडण्ट ने स्वीकार किया ॥

अमीना आया का इज़हार ॥

अमीन आया का इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहब ने लिया और फ़िलन साहब उसका तर्जुमा करते जाते थे ॥

आया ने कहा कि मेरा नाम अमीना है मुझ को वह समय याद है जब कि मुकाम बड़ौदे में पहिली कमीशन मुकर्रर हुई थी मैं उस समय कारनेल फ़ियर साहब की मेम साहिबह के पास नौकर थी और जब तक वह इंगलिस्तान को नहीं गई थीं मैं उन्हींके पास रहती थी उनके इंगलिस्तान में जाने के उपरान्त मैं उनकी बेटी जो कि बोबी साहब की मेम साहबह हैं उनके पास नौकर रही मैं गायकवार को खूब जानती हूं और उनके महल में तीन मरतबे गई थी पहले मरतबे जब मैं फ़ियर साहब की मेम साहिबह के पास नौकर थी और दो मरतबे जब मैं बोबी साहब की मेम

जो कि पहिले से महाराज का नौकर था तरक्की की सिफारिश की परन्तु मुझको याद नहीं कि उसका उत्तर महाराज ने क्या दिया फिर मैं घरको चली आई दूसरे दफे तब मैं महाराज के पास गई थी जब महाराज नौसारी से आये थे॥

इन्स्पेक्टर साहब ने कहा कि हमारी और सरजन्ट बेलन् टाइन साहब की राय है कि हम दूसरी अप्रैल से लेकर १९ मई सन् १८७४ ई॰ तकके हालात का जब महाराज नौसारी में थे इज़हार लें और सिवाय इसके और इजहारात लेने में हमारा वक्त ख़राब होगा॥

अमीना बयान करती है कि जून के महीने में महाराज नौसारी से पलट आये तब मैं फिर महाराज के महल में गई क्योंकि सालिम और करीम ने मुझको वहां जाने के लिये बार २ कहा था और करीम भी मेरे साथ गया उस समय पानी बरस रहा था मार्ग में मुझको सालिम मिला और हम तीनों उसी मकान में जहां पहिले गये थे गये॥

सालिमने बदस्तूर मेरे आने की महाराज को इत्तिला की महाराज आकर उसी चौकी पर बैठ गये जिस पर पहिले बैठे थे मैं और करीम महाराज के सामने फर्श पर बैठे महाराज ने मुझसे पूछा कि बोवी साहब की मेम साहिब तो मेरे विषयमें कुछ नहीं कहती थीं मैंने और करीम ने उत्तर दिया कि हमसे कुछ नहीं कहती थी मिस्टर बोवी साहब को कुछ अधिकार नहीं है और न उनकी मेम साहिब तुम्हारे लिये कुछ कर सक्ती हैं यह सुन कर मैंने महाराज को सलाम किया और वहां से बिदा हुई थोड़ी देर के उपरान्त सालिम ने मुझसे आकर कहा कि यशवन्त राव के घर जाकर दो सौ रुपये ले आना मैं वह रुपये ले आई और उसमेंसे सौ रुपये मैंने लिये और सौ रुपये करीम को दिये॥

नौकरी की चाह नहीं इतना कह मैं वहां से चली और चलने के वक्त कहा कि तुम किसी के कहे में आकर साहब पर कुछ मत करना अगर साहब पर कुछ नुकसान पहुंचेगा तो तुम्हारे हक्क में बुरा होगा यह सुन कर महाराज अप्रसन्न हुये और सालिम से कहा आया को यहां से लेजावो फिर सालिम ने थोड़ी देर के उपरान्त पचास रुपये मुझको दिये और जो कुछकि हाल गुज़रा था मैंने सब अपने पति को कि वह मुझ से बहुत दूर था खतके द्वारा इत्तिलादी और उसको अपने पास बुलवा लिया और जो पत्र कि मैंने अपने पतिको लिखे थे वह सब अब्दुल रहमान से लिखवाये थे। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहब ने आया से पूछा कि तुमने सूटर साहब के साम्हने यह इज़हार दिये थे या नहीं ? उ०—हां मैंने सब इज़हार दिये परन्तु मैं बीमार थी डाक्टर सीवर्ड साहब इसबात को खूब जानते हैं और उन्होंने मेरा इलाज किया था॥

सरजनू बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमने पचास रुपये क्या कियेथे ? उ०—मैंने रमजान के महीने में फकीरों को खाना खिलाया। प्र०—क्या उस वक्त तुम और तुम्हारे पति एकही मकान में रहते थे ? उ०—हां साहब एकही मकान में रहते थे। प्र०—क्या उस को तुम्हारे इस पचास रुपये का हाल मालूम होगया था ? उ०—हां साहब मैंने कहदिया था। प्र०—तुमने कुलकैफियत इन रुपयों की बयान करदी थी ? उ०—बहुत रोकर उत्तर दिया और एक चुट्टा कागजों का निकाला कि यह मेरे सारटीफिकट हैं साहब मैं झूंठ नहीं बोलती हूं मैं पांच बरतने इंगलिस्तान होआई हूं इस बात को सुन कर सम्पूर्ण इजलास हंसने लगा। प्र०—वह जो सौ रुपये पहिले तुमको महाराज से प्राप्त हुये थे उसका भी हाल तुमने अपने पति से बयान किया था ? उ०—हां मैंने कहा था कासिम को और मुझको दो सौ रुपयों में से आधा २ मिला है और यह भी कहा

के कहने से साबित हुवा था? उ०—नहीं मुझको केवल पेडरू
और रावजी की बातों से मालूम हुवा था। प्र०—अगर यह
दोनों तुमसे कुछ बात न कहते तो तुमको क्या सन्देह न
होता? उ०—अगर यह दोनों न कहते तो मुझको विषकी
निस्बत कुछ ख्याल न होता। प्र०—तुमको पेडरू और रा-
वजी ने ज़हर के विषय में कब कहा था? उ०—वह महाराज
के बड़े हितू हैं। प्र०—मैं यह पूछता हूं कि उन दोनों ने
तुमसे कब कहा था? उ०—पेडरू और रावजी ने मुझसे
कुछ नहीं कहा था वह दो शख्स और हैं जिन्हों ने मुझसे
कहा था। प्र०—तुमने अभी हमसे कहा था कि पेडरू और
रावजी ने हमसे कहा था? उ०—मैने सोच समझ के नहीं
कहा। प्र०—क्या तुम इस समय बदहवास हो। उ०—मैं
अच्छी हूं परन्तु मेरे हाथ पांव इस समय गिरे जाते हैं?
प्र०—अच्छा अगर पेडरू और रावजी ने तुम से नहीं कहा
फिर उन दोनों मनुष्यों का नाम बताओ। उ०—उन दोनों
शख्सों का नाम नारोस और काजी है। प्र०—उन्हों ने तुम-
से कब कहा था? उ०—जब मैं महाराज के यहां तीसरी
मरतबे गई थी उससे एक महीना पहिले उन्हों ने मुझसे
फ़क़त यह बयान किया था कि महाराज किसी साहब को
विष देना चाहते हैं। प्र०—तुम केवल इस बातसे कि
किसी साहबको ज़हर देना चाहते हैं फियर साहब का नाम
क्योंकर समझ गई? उ०—मैंने एक क़रीने से समझा
कि महाराज को सिवाय कारनेल साहब के और किसी से
प्रयोजन नहीं है। प्र०—फिर तुमने साहब से क्यों न कहा कि
महाराज आपको विष देना चाहते हैं? उ०—यह बात सिर्फ
मैं विचार से समझी थी किस निश्चय पर साहबसे बयान करती
प्र०—तुमको उत्तर दो कि तुमने साहब से कहा था नहीं?
उ०—नहीं कहा। प्र०—क्या तुमको यह ख्याल न हुवा कि अपने
मालिक के प्राण को इतनी इत्तिला करदेने से बचाओं वह

राज ने फकत इतना कहा है कि साहब को कोई ऐसी वस्तु देना चाहिये जिससे उनका दिल फिर जाय। प्र०—यह तुम ने कब कहा था? उ०—जिस रोज मैं तीसरी बेर महाराज के यहां गई थी उसके एक दिन पीछे मैंने कहा था॥

अब साढ़े चार बजे का समय होगया था सरजन्ट बेलन टायन साहब ने साहबान कमीशन से कहा कि इजलास का बरखास्त होना अवश्य है क्योंकि जो आयासे मैं और अधिक प्रश्न करूंगा तो संध्या होजावेगी पस प्रेजीडेन्ट साहब ने इजलास को बरखास्त किया॥

कचहरी के साहबान की वार्त्ता का बयान॥

टाइम्स आफ इण्डिया के खास कारस्पाण्डेण्ट के लेख से प्रतीत हुआ कि इस मकान में जहां कमीशन का इजलास शुरू हुआ पहले साहब कप्टन सिराट मजिस्ट्रेट की कचहरी थी परन्तु कमीशन के लिये कुछ थोड़े कमरे नये बनाये गये हैं सम्पूर्ण कचहरी का लम्बाव चौड़ाव सत्तर फुट लम्बा और पच्चीस फुट चौड़ा और पूर्व की ओर एक ऊंचा चबूतरा बना है जहां कि कमीशन के बैठने की जगह नियत है साढ़े दश बजे सलामी की तोपें दगीं उससे मालूम हुआ कि अब मेम्बरान कमीशन वास्ते इजलास के आनेवाले हैं पहले श्रीमान् महाराजा सेंधिया वहां आये और थोड़ी देर के उपरान्त सरल्यूइस पेली साहब और मल्हरराव एकही गाड़ी पर सवार होके आये और जो खास जगह गायकवार के वास्ते पहिले से नियत हुई थी वहां जाकर बैठे सररिचर्ड मीड साहब की कुर्सी बीच में थी और उनके दाहिनी ओर श्रीयुत महाराजा सेंधिया और बाऐं तरफ श्रीमान् महाराजा जयपुर बैठे हुये थे महाराजा सेंधिया अति उत्तम वस्त्र पहिने हुये थे उनके आभूषण हीरों के आभूषणों से भी सर्वोपरि थे श्रीयुत महाराजा जयपुर जो अपने देश के उत्तम प्रबन्ध करने के लिये विख्यात हैं उन्होंने [illegible] वस्त्र कर रक्खा थे

ने इजलास के रूबरू अपने जुग़राफिये की विद्या को प्रगट किया उसने कहा कि मैं बड़ौदे को नहीं जानती हूं यह कह कर फूट२ रोने लगी और कहने लगी कि मैंने कानपुर, नीमच जबलपुर, और शमला और इङ्गलिस्तान को देखा है और इन स्थानों में बहुत दिन रही हूं यहां तक कि अरबतक भी पहुंच गई थी कि सरजन्ट वेलनटाइन साहब उसको ठहरा कर फिर बड़ौदे में लेआये अमीना ने कहा कि मैं सफ़र के मुआमले से सरजन्ट वेलन टायन साहब से कुछ काम नहीं हूं जब अकबर अली के विषय में उससे पूछा गया तो वह बोली कि मैं अकबरअली को जानती हूं फिर फैज़ गवाही की जगह पर आया उसकी डाढ़ी बहुत सुन्दर और काली थी और सब गवाहों में यही गवाह बहुत सुन्दर था उसने कहा कि एक मरतबा मैं आबा के साथ नायकवार के यहां गया था परंतु मेरे साम्हने महाराज ने कोई जादू का ज़िक्र नहीं किया फिर एक ईमान्दार गाड़ीवाला गवाही के वास्ते आया उसने साफ़२ जिस तरह उसकी गाड़ी किराये की गई थी और जिस तरह अमीना महाराज के यहां गई थी सो बयान किया अन्त को

दूसरे दिन का इजलास ॥

बडौदा २४ फरवरी सन् १८७५ ई० ॥

आजके दिन नियमित समय पर मेम्बरान कमीशन मौजूद हुये पहले दिनसे आज बहुत मनुष्य थे और सूर्य्य की गरमीसे दिनभर बहुत गरमी रही ग्यारह बजेके समय सरल्यूइस पीली साहबके साथ मल्हरराव गायकवार आये महाराजा सेंधिया सफेद कपडे पहिने हुयेथे और पीली पगडी मरहठी सिरपर बांधे हुये थे बाकी और मेम्बरान कमीशन कपडे पहिले दिन के सदृश पहिने हुये थे सरजेन्ट बेलनटाइन साहब बदस्तूर आया से प्रश्न करते रहे खास इजहारात जो अमीना से लिये गये वह यह थे कि खान बहादुर अकबर अली या उनके लडके अब्दुल अलीने अमीना को धमका कर उससे इजहारात लिये हैं आज आयाके इजहारातमें हास्य होता रहा जब सरजन्ट बेलनटायन साहब ने आया से पूछा कि तुमको गायकवार के पास जाने से क्यों इन्कार था तो अमीना

तुम्हारे इजहारात लिये गये हैं तुमने अपने पति से मुला-क़ात की या नहीं? उ०—मुझको इसकी बड़ी मनाही है। प्र०—किसने तुमको मना किया? उ०—खान बहादुर ने प्र०—कल से कोई पुलिस वाला भी तुम्हारे पास आया है? उ०—नहीं कोई नहीं मैं सच कहती हूं कि मुझ से और किसी से बातें नहीं हुईं। प्र०—तुमने कल यह बात जो कही थी कि मैंने वाली और करीम से सुना था कि महा-राज चाहते हैं कि फियर साहब को जहर दिया जाय यह बात सच है? उ०—हां यह बात सच है और जो कुछ मैंने कहा है उसे न बदलूंगी। प्र०—यह बात सच है कि जब महाराज से तुम से तीसरी मुलाकात हुई थी तो तुम से महाराज ने कहा था कि कारनैल फियर साहब को तुम्हारे हाथ से विष दिया जाय? उ०—नहीं साहब मुझसे नहीं कहा और जो कुछ कि ठीक हाल था मैंने पहिलेही आप से बयान किया। प्र०—तुमने जो महाराज के प्रश्न करने पर क्रोधित होकर इन्कार किया था तो वह गुस्सा और इन्कार किस सबब से था? उ०—मैंने केवल यह कहा था कि तुम साहब के साथ किसीतरह की बदमलूकी न करना नहीतो तुम पछताओगे। प्र०—तुमने जो बदमलूकी का शब्द कहा तो उससे क्या मतलब था? उ०—मेरा मतलब उस से था जो महाराज ने मुझ से कहा था।

हूं जब मुझको आराम हो जावेगा मैं तुमको जवाब दूंगी सरजन्ट बेलन टायन साहब ने कहा कि यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है जब तुमने अकबर अली के रूबरू अपने इज़हार दिये थे तो तुम बीमार थी परन्तु यह बताओ कि तुमको उसके पहिले कैद किया या पीछे। उ०—मैं कैद न थी मैं अपने घर में आराम से सो रही थी (मिस्टर मैनवल साहब ने कहा कि यह प्रश्न के जवाब को नहीं समझी इस से फिर पूछो उस दशा में कि जब यह बीमार थी कैद भी थी) प्र०—सरजन्ट बेलन टायन साहब ने कहा कि मैं केवल यह पूछना चाहता हूं कि जब अकबरअली ने तुमसे इज़हार लिये थे उस वक्त तुम क़ैद थी या नहीं? उ०—मैं अपने पलंग पर बीमारी के कारण बेहोश पड़ी थी मुझको खबर नहीं। प्र०—इसका जवाब दो कि जिस समय अकबरअली ने तुमसे इज़हारात लिये उस वक्त तुम कैद थी या नहीं? उ०—जब अकबर अली मेरे पास आया तो उसने मेरे इज़-हारात लेना चाहा परन्तु मैं बहुत बीमार थी इसलिये उसको अपने इज़हारात न दे सकी मुझसे वह कह गया कि तुम यहां से न जाना। सररिचर्ड मीड साहब ने कहा कि इसके उत्तर से प्रगट है कि वह क़ैद न थी। प्र०—सरजन्ट बेलन टायन साहब ने फिर पूछा कि तुमने जब अपने इज़हारात दिये उसके पीछे तुम अपने घर में रही या सरकार की हवा-लात में सुपुर्द की गई? उ०—मैं अपने मकान में थी और मेरे मकान के बाहर पहिरा था मेरे पास मेरा पति नहीं आ सक्ता था इसके दो दिन के उपरान्त मैं अस्पताल को गई। प्र०—तुमने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं? उ०—हां मैंने कहा था। प्र०—तुमने अपने इज़हारात अकबर अली को पहिले दिये थे या सूटर साहब को? उ०—मैंने अकबर अली से कुछ भी नहीं कहा था। प्र०—अच्छा अभी तो तुमने कहा था कि मैंने अकबर अली को

कहा था कि मुझको धमकाया था? उ०—मैंने नहीं कहा सरजन्ट वेलन टायन साहब ने उसके पहिले इजहारात को मुतरज्जिम साहबके इजहारात से मिलाया और साहब प्रेसीडन्टके इजहारात भी मिलाये गये तो उससे पायागया कि उसने बयान किया था कि मुझे धमकाया। प्र०—सरजन्टवेलन टायन साहब ने फिर आया से पूछा कि तुमने क्यों कहा था कि अकबर अली और अब्दुलअलीने मुझको धमकाया था यह बात सच है या झूठ है? उ०—यह बात झूठ है मुझे तो किसीने भी नहीं धमकाया मैंने शायद कहा होगा परन्तु मुझे तो ख़याल पड़ता है कि मुझमे अकबरअली और अब्दुलअली ने सिर्फ़ तीनही प्रश्न पूछे थे धमकाया नहीं था। प्र०—अब तुम्हारा निगहबान कौन है? उ०—अबमैं क़ैद हूं। प्र०—क्या तुम अकबरअली और अब्दुलअली की निगहबानी में हो? उ०— हां मैं उनकी निगहबानी और थोड़े सिपाहियों के पहिरे में हूं। प्र०—जब तुम्हारे इजहारात मूटर साहब ने लिख लिये थे तो तुम्हारे चलते समय तुमको सुनाये थे या नहीं? उ०— उन्होंने मुझे इजहारात नहीं सुनाये। प्र०—फिर तुम्हारे इजहारात और किसीके रूबरू भी मूटर साहब ने पीछे लियेगये?

क्या यही वकील थे।? उ०—हां साहब यही वकील थे। प्र०—जब तुम अस्पताल में थी तो तुम्हारे पास अकबर अली या अब्दुल अली आये थे। उ०—हां साहब आये थे। प्र०—सूटरसाहब के इजहार देने के पीछे फिर भी कभी अकबरअली तुम्हारे पास आये थे? उ०—कभी नहीं आये। प्र०—कोई और पुलिस का अफ्सर तुम्हारे पास आया था? उ०—कोई नहीं आया था मैं पुलिसके सिपाहियों के पहिरे में थी। प्र०—तुम किस अस्पताल में थी? उ०—मैं रजमट के अस्पताल में थी। प्र०—तुम्हारा कौन डाक्टर इलाज करता था? उ०—मुझ को नाम उसका नहीं मालूम परन्तु वह रजमट का डाक्टर था और डाक्टर सीवर्डसाहब भी आया करते थे। प्र०—तुमने पहिले कहा था कि कि खानबहादुर हमारे पास अस्पताल में एक लड़के को साथ लेकर आया था यह बात सच है? उ०— हां साहब यह बात सच है। प्र०—क्या तुमने पहली मर्त्तबा खानबहादुर को देखा था? उ०—हां साहब पहली मर्त्तबा देखा था। प्र०—तुमने उसको कहां देखाथा? उ०—मैं उस समय अपनी चारपाई पर अपने घरमें पड़ीथी। प्र०—तुम उसगाडी वालेको जानतीहो जो अकबरअलीके साथ आयाथा? उ०—हां साहब जानतीहूं। प्र०—उसका क्या नाम है? उ०—उसका नाम भिव्वीया कोचीहै।

साहब के जहर दिये जाने से बीस पचीस दिन पहिले मैंने सुनी थी प्र०—फिररिचर्ड मीडसाहबने पूछाकि तुम रमजान के महीने में महाराज के पास कितने दिन पहिले फियर साहब के जहर दिये जाने से गई थी ? उ०—मैं नहीं बता सक्ती कि मैं कितने दिन पहिले गई थी क्योंकि मुझको यह बात याद नहीं है परन्तु मैंने जहर दिये जाने के पहिले यह बात सुनी थी ॥

फैजूरमजान का इजहार ।

फैज रमजानने बयान कियाकिमैं चौकीदार रेजीडन्सी का हूं और बीस बरससे नौकरहूं मुझ को वह समय मालूम है कि जब यहां पहिले कमीशन हुई थी मैं आया के साथ एकबेर गाड़ीमें सवार होकर महाराजके यहांगयाथा और हम दोनों चम्पानियर दरवाजेमे महाराज की हवेली में जीने पर चढ़ कर एक ऊपर के कमरे में गये और हम फर्श पर जाके बैठ गये उस कमरेमें एकबड़ा आईना रक्खा हुवा था और एक चौकी भी रक्खी हुई थी सालिमने जा कर महाराजसे हमारे आनेकी इत्तिलाकी महाराज आकर उसचौकीपर बैठ गये महाराजने आयासे कहाकितुम हमारे पास क्यों नहीं आती हो आयाने उत्तर दियाकि मुझको आने का अवकाश नहीं है फिर महराजने आयासे कहा कि तुम मेम साहिबा से हमारी सिफारिश करदो आया ने उत्तर दिया किमैं मेमसाहिबासे तुम्हारे विषयमें कुछनहीं कहसक्ती इसके पीछे मैंने सलाम किया और कहाकि मुझसे बहुत से आदमी बैर रखते हैं आप मेरे ऊपर मेहरबानी किया करें फिर मैंने अपने लड़के के वास्ते सिफारिश की और फिर हम और आया महाराज से बिदा होकर घरको आये ॥

इसलिये सम्पूर्ण वृत्तान्त विस्तार से स्मर्ण नहीं जो कागजात निजकी कचहरीकेथे वहकईदिनतक बन्दरहे फिररजीडन्सी में मंगायेगये कुछकागज अबभीगायकवारके महल में बंद हैंजो कागजरेजीडन्टीमें मंगायेगयेवहपुलिसके पहिरेमेंरक्खेगये॥

साहबप्रेजीडेण्टने पूछाकियह कागजरेजीडन्सी में किसने मंगवायेथे? उ०-सरकारकी आज्ञानुसार गयेथे और जबयह सोहरेंतोड़ी गईं तोसम्पूर्ण कारकुन निजके महकमेके और मिस्टरबूटर साहब उपस्थितथे जिसदिन दामोदरपंथ पकड़ा गया मुझकोयाद है किपकडेजानेके पीछे मैंने उसको देखाथा मैंनेउससेकहाथा। किअगरतुमसहो २ हालबयान करोगेतो तुम्हाराअपराध चमाहोजावेगा किन्तुताजीरात हिंदकीजिस दफामें अपराधके चमापनका वर्णनलिखाहै वहभीमैंने उसको दिखाईथी इसके विशेष मैंने उससे यहभी कहा था किनाना जीवतिल आदि ने तो अपने २ अपराधों का इकरार किया यहीबातेंदामोदरपंथसेमैंने कहीथीं और कहाथाकिभलेप्रकार समझकर इसका उत्तर दो-इसके उपरान्त कमीशन के मेम्बर टिफनखाने को गये भोजन से सुचित होकर फिर एकत्र हुये साहबऐडवकेटजनरलनेप्रश्नकियाकि तुमनेकहाकि दामोदर-पंथकोदेखा और उसकोसमझाया था।तुमने उसकेपीछे भीउसे देखा? उ०-मैंनेदोतीन घण्टेके उपरान्त फिरउस को देखाथा जबसरल्यूइस पीलीसाहबने उसकाअपराध चमाकरदियातो उसकेइजहारहुयेथेयहमनुष्य डेरेमेंबुलायागयावहांमैंनेउसको देखाथा सरल्यूइसपीली साहब भी उसडेरेमें थे उसवक्त उसने इजहारदियेऔरमिस्टररिचीसाहबने उसकाइज्हारलिखाथा मैंहेमचन्दगवाहकोजानताहूं दामोदर पंथके इजहार केपहिले मैंनेउसकोदेखाथा।प्र०-कितनीमुद्दतकेपहिलेतुमनेउसकोदेखा था? उ०-पांचछः दिनपहिलेमैंनेउसकोदेखा उसकाबयान सब अशुद्ध है किमैंनेउससे जबरदस्तीइकरार कराया।और यह भी गलतहैकि जोकुछजोचाहा मैंने लिखलिया और यह बयानभी

फिर मुलाक़ात न हुई और मैंने अस्पताल में भी कोई बात उस से नहीं की और मेरे रूबरू उससे इज़हारात भी नहीं लिये गये मुझे स्मर्ण नहींहै कि मैंने आया को इजहार देने से कितने दिनों के उपरान्त अपने इज़हार सूटर साहब को दिये। प्र०-प्रेसीडन्ट साहब ने फैज़ू से पूछा तुम महाराज के कौन से महल में गये थे ? उ०-हवेली में। प्र०-क्या तुम्हारी दरख़ास्त से तुम्हारा लड़का नौकर हुआ था ? उ०-नहीं साहब वह तो खण्डेराव के समय से नौकर था। प्र०-क्या तुम्हारे कहने से खण्डेराव ने नौकर रक्खा था ? उ०-जब कि कारनैल वायस साहब इंगलिस्तान को जाने लगे तब मैंने उन से दरख़ास्त की थी कि अगर मेरा नाम महाराज के हां करा दो तो मेरे वास्ते अच्छा होगा क्योंकि मेरा इस थोड़े मासिक में यहां गुज़ारा अच्छी तरह से नहीं होसकता है मेरी दरख़ास्त को श्रीयुत वायस साहब ने मंजूर किया और मुझको महाराज के यहां नौकर रखा-दिया थो दो वर्ष तकमैं बराबर महाराजके यहां नौकर रहा परन्तु जब कारनैल वारसाहब आये तब मुझको रज़ीडन्सी में नौकर रक्खा और महाराज से कह कर मेरी जगह पर मेरे लड़के का नाम करा दिया॥

कार भाई पुष्पा भाई के इजहारात।

शेख करीम के इजहारात ॥

इस मनुष्य ने कहा कि मिस्टर बोवी साहब के पास मैं
चपरासियों में नौकर था मैं उस समय भी मौजूद था कि
जब वह नौसारी को गये थे और नौसारी से वर्ष के प्रारम्भ
में आये थे जब मैं वहां से आया तो उसके आठ दिन के
उपरान्त अमीना के साथ महाराज के यहां गया था पहिले
आया ने एक संदल नामे गाडीवान को वहां जाने के
वास्ते ठहराया था हम और आया सन्दल की गाडी में बैठ
कर महाराज के यहां गये महाराज का जासूस सालिम
हमको रास्ते में मिला और हवेली में ले गया हम जीनेपर
चढ़कर एक कमरे में गये सालिम ने महाराज को बुलाया
महाराज आकर एक चौकी पर बैठे आया महाराज के
रूबरू फर्श पर बैठ गई और मैं एक तर्फ खडा रहा महाराज
और आया में वार्त्ता होती रही महाराज और आया के मध्य
में नौसारी की गादी का जिक्र होता रहा महाराज आया
से पूछते थे कि साहब हमारी गादी के सबब से हम से
अप्रसन्न तो नहीं हैं आया ने उत्तर दिया कि मैं अब कुछ
नहीं कह सक्ती हूं जब हमारी मेम साहिबा आवेंगी तो
हम इसका उत्तर देंगी हम उनके द्वारा आपकी सिफारिश
साहिब से करावेंगी साहब के मिजाज में हमको दखल नहीं
है जो उनके दिल में आता है सो करते हैं उसी दिन दो सौ
रुपये सालिम ने हमको दिये और कहा कि तुम और आया
आधे २ लेना यह महाराज के विवाह का पारितोषक है सौ
रुपये मैंने आया को दिये और सौ रुपये मैंने आपरक्खलिये ॥

सरजन् बेलनटायन साहब ने करीम से प्रश्न किये ॥

यह मनुष्य उनके प्रश्न का उत्तर देता है कि मैंने आया
को उसके पति के सन्मुख रुपया दिया था मेरे इजहारात
बोवी साहब ने फियर साहब के नहर दिये जाने के उप-
रान्त लिये सुभान मिर्जा सालिम के बारे में बोवी साहब ने

बख़्तियार खां के पुत्र मन्दल खां का इज़हार।

बख़्तियारखां के पुत्र सन्दलखां ने इज़हार दिया कि मैं शिकरम वाला हूं और मैं शेख मुहम्मद बख़्तर की शिकरम को हांकता हूं मैं बीबी साहब की आया को जानता हूं परन्तु उसका नाम नहीं जानता हूं और मैं करीमको भी जानता हूं मैं करीम और आया को अपनी गाड़ी में बिठाकर गायकवार की हवेली में ले गया था मैं सालिम को भी जानता हूं यह शख़्स महाराज के पास रजोडन्सी में आया करता था सालिम भी हमारे साथ गाड़ी में बैठकर गया था मैं इन लोगों को सवार करके नौबजे रात को ले गया था और वहां से दश बजे रात को लौटकर आये जब कि मैं गया था तो थोड़ा पानी वर्ष रहा था इस बात को नौ महीने हुए होंगे करीम ने दूसरे दिन गाडी का किराया दिया था करीम और आया दोनों इजलास में बुलाये गये और इस मनुष्य ने दोनों को पहिचाना॥

सरजन वेलनटायनसाहब के प्रश्न।

प्र०—तुमने यह इज़हारात कबदिये? उ०—सूटर साहब के रूबरू दिये थे प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो कबदिये? उ०—जब कि पुलिस बम्बई के अफ़सर बड़ौदे में आये और तहक़ीक़ात शुरू करने लगे। प्र०—यह कबकी बातहै? उ०—साहब मैंतो लिखा पढ़ा नहीं हूं मैं क्योंकर बतासक्ता हूं कि कबकी बात है। प्र०—तुम को आठमहीने की बात तो यादहै और इस थोड़े दिनों की बात को भूलगये? उ०—हां साहब मुझको नहीं यादहै। प्र०—क्या यह कल की बात है? उ०—नहीं। प्र०—क्या यह परसों की बात है? उ०—नहीं साहब जब बम्बई के पुलिस के अफ़सर आये थे। प्र०—अच्छा यह बताओ कि उसको कितने दिन हुये? उ०—साहब दो तीन महीने हुये होंगे। प्र०—तुमने अपने इज़हारात सूटर साहब को दिये थे? उ०—हां साहब

भी कभी करीमको सवार किया। था उ०—नहीं। प्र०—तुमने उसे कल रातको देखा था? उ०—नहीं। प्र०—अब्दुलअलीने करीमके विषय में तुमसे कहाथा? उ०—नहीं। प्र०-कलरात को तुम कहां सोये थे? उ०—मैं अपने घरमें सोया था। प्र०—वहां कोई पुलिसका आदमी था? उ०—कोई नहीं। प्र०—कभी हवालातमें रहेथे? उ०—कभी नहीं परन्तु एक दिन जब पहिले इजहारात दिये थे। प्र०—क्या तुमने करीमके विषयमें इजहारात पहिलेही से दे दिये थे? उ०—नहीं साहब बहुत देर पोछे दिये थे और यह भी मैंने कह दिया था कि मेरे इजहारात किसीको मालूम नहों। प्र०—तुमने यह क्यों कहा था? उ०—मैं परदेसी था और मुझको प्राणका अन्देशा था। प्र०—मुझको मालूम हुवा कि तुमनेअपने इजहारात इसके दो महीनेपीछे दिये थे? उ०—हां साहब दो अढ़ाई महीने के पीछे दिये थे। प्र०—वहां और भी कोई उपस्थित था? उ०—कोई नहीं। प्र०—तुमने आया और करीम के जानेके विषयमें भी सूटर साहबसे कुछ कहा था? उ०—हां साहब मैंने कहा था परन्तु उस समय कि जब उनसे मैंने अपनी जान के बचनेका इकरार लेलिया था। प्र०—तुम नीची गरदन करके न देखो और मेरी ओर देखो तुमने आया और करीम के विषय में कहा था? उ०—नहीं साहब केवल आया की निस्बत में कहा था। प्र०—तुमने आया निस्बत क्या कहा था? उ०—मैंने कहा था कि मेरी गाड़ी में बैठकर आया शहर की ओर गई थी। प्र०—तुमतो आया को जानतेही न थे? उ०—साहब परन्तु अबतो मैं जानता हूं। प्र०—तुमने क्योंकर जाना? उ०—साहब मैंने उसको बोबीसाहबके बंगले में रहते हुये देखा। प्र०—तुम इससे पहिले आया को नहीं जानते थे? उ०—हां साहब नहीं जानता था। प्र०-सूटर साहब ने तुमसे करीम के विषय में कुछ पूछाथा? उ०—कुछ नहीं पूछा था। प्र०—फिर तुमने क्योंकर मनसे हाल सूटर साहब से कहाथा

वाले का नाम जानता हूं जिसकी गाडी में बैठ कर गया था। प्र०—तुमने जो अभी यह कहा कि कम से गवाह अलग २ कर दिये गये हैं वह कौन २ हैं? उ०—मैं उनके नाम नहीं जानता आया, करीम, और और गवाह हैं जो गवाही अपनी दे चुके हैं॥

शेख दाऊद के इज़हारात॥

इसने बयान किया कि मेरे पिता का नाम शेख रहीम है और मैं शिकरम को हांकता हूं मैं बीबी साहब की आया को नहीं जानता हूं मैं आया के पति और छुट्टू लड़के को जानता हूं मैं आया और उस लड़के को शिकरम में बैठा कर महाराज के महल में ले गया था यह पांच चार रोज़ दीवाली से पहिले का ज़िक्र है सालिसभी उस गाडीमें था और घोडीदेर के उपरान्त फिर इनको सवार कराकर लौटा ले आया अब्दुल्ला खानसामां ने मेरी गाडी का किराये लिया था॥

मरजनृवेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

अब तुम कहां हो? उ०—कम्पूमें हूं। प्र०—तुम कहां रहते हो? उ०—अपने मा बाप के पास घरमें रहता हूं। प्र०—कोई सिपाही तुम्हारे पास था? उ०—कोई नहीं। प्र०—तुमने यह खबर किसीसे कही थी? उ०—किसी से नहीं। प्र०—तुमने इसका हाल पहिले किस से कहा? उ०—एक मनुष्य से कहा था।

कि तुम किसको लिये जाते हो वह उस समय न बोला परन्तु दूसरे दिन मैंने उससे पूछा कि तुम किसको ले गये थे उसने मुझसे बयान किया ॥

सारजन्ट बेलनटायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—तुमने करीम का नाम लिया था उ०—हां साहब लिया था प्र०—तुमने सूटर साहब से अपने इज़हारात में सब बयान कर दिया था ? उ०—हां साहब बयान कर दिया था ॥

फिर दुबारह इज़हारात लिये गये ।

प्र०—तुमने शेख दाऊद से करीम के विषय में क्या पूछा था ? उ०—मैंने पूछा कि रात को तुम कहां गये थे उसने मुझसे कह दिया । प्र०—परन्तु तुमने करीमके विषय में क्या कहा था ? उ०—मैंने कुछ भी नहीं कहा । प्र०—सारजन्ट-बेलन्टायन साहब ने कहा कि मेरे और देखा तुमने तो अभी बयान किया है कि मैंने करीम की निस्बत कहा था कि वह बौबी साहब का नौकर है ? उ०—साहब मैंने नहीं कहा और जो आपने पूछा होगा तो मैं अंगरेजी ज़बान नहीं समझता । प्रेज़ीडन्ट साहबने पूछा कि तुमने करीमके विषय में कुछ भी नहीं कहा ? उ०—कुछ भी नहीं कहा । प्र० कभी भी कुछ नहीं कहा ?

पहली बेर सिवाय इसके और कुछ वार्त्ता नहीं हुई कि मेम साहिबा को समझा दो कि वह साहब से कहैं ता कि साहब महाराज पर मेहरबानी करैं दूसरी मर्त्तबा जब कि वह गई थी तो मैं महाबलेश्वर में था उसने मुझसे बयान किया था कि मैं करीम बेग के साथ गई थी और महाराज ने उससे पूछा था कि मेम साहिबा हमारे विवाह के विषय में तो कुछ नहीं कहती थीं उसने उत्तर दिया कि कुछ नहीं कहती थी फिर महाराज ने कहा कि तुम मेम साहिबा को समझा दो कि वह साहिब से हमारी सिफारिश करैं इसबेर मौकपया महाराज ने मेरी स्त्री को दिया फिर मेरी स्त्री मेमसाहिबा के साथ पना को चली गई। प्र०—जब कि तुम्हारी स्त्री पना को गई थी तो यशवन्त राव कहां था? उ०—वह बम्बई को गया था। ऐडवकेट जनरल ने प्रेसीडेण्ट से कहा कि जब आया पना को गई थी तो यशवन्तराव चिट्ठी लिखा करता था मुझको मालूम हुआ कि आया को इस मुकद्दमे में साज़िश थी—सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा कि मुझको उसका साज मालूम नहीं होता मैं नहीं कहसक्ता कि यह चिट्ठियां गवाही में क्योंकर ली जावेंगी क्योंकि यह चिट्ठियां घरोगू हैं जो पति ने स्त्री को लिखीं और स्त्री ने पति को इनका क्योंकर सबूत हो सक्ता है ऐडवकेटजनरल ने कहा कि उनका सबूत यों हो सक्ता है कि आया ने जो कुछ इजहार दिये हैं उसकी सचाई इन से मालूम होती है बेलनटायनसाहब ने कहा कि अच्छा इन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल न करो परन्तु इतना मालूम हुवा कि आया और खानसामां को इस मुकद्दमे में साज़िश थी ऐडवकेटजनरल ने यह बात स्वीकार की और कहा कि अच्छा फिर इन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल क्यों नहीं करते बेलनटायन ने कहा कि साज़िश का शब्द बहुत बुरा है और साज़िश के नाम से इन चिट्ठियों को गवाही में दाखिल करना उचित नहीं है प्रेसीडेन्टसाहब ने कहा कि यह तुम्हारा

अगस्त सन् १८७४ की है और उसमें तारीख नहीं पड़ी है परन्तु मालूम होता है कि डाकखाने की मोहर से दो एक दिन पहिले यह चिट्ठी लिखी गई होगी यह चिट्ठी शेख अब्दु-ल्ला ने अमीना को लिखी है कि मैं ईश्वर की कृपा और तुम्हारे आशीर्व्वाद से अच्छी तरह से हूं तुम कुछ चिन्ता न करना करनैल फियर साहब पूना से १८ तारीख को गये हैं और मुकाम गरकी में रहेंगे तुमको मालूम हो कि दीवान मौकूफ़ होगये और दूसरा मनुष्य उनकी जगहपर अभी नौकर नहीं हुवा है तुम वहांकी खबरें लिखते रहना जो हजरत बम्बई में गये थे उनके विषयमें मालूम करना और जब तुम वहां से आना तो अपने साथ उनको जरूर लेते आना तुम उनको इस जरूर बातकी इत्तिला देना और समय २ पर अपने समा-चार से हमको इत्तिला करते रहना जबसे तुम यहांसे गई हमको बिल्कुल भूलगई इसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं है हमारी प्रारब्ध का कसूर है यशवन्त राव बम्बई को अब्दुल्ला-खां साहब के साथ गया है और पेडरू का सलाम पहुंचे हमारे और पेडरूके तरफसे अपने खानसामां से सलाम कह देना जितनी जल्दी होसके इसका उत्तर भेजना—इति॥

(दस्तखत शेख अब्दुल्ला)

साहब प्रेसीडेन्टने कहाकि इन चिट्ठियोंकी नकल कीजावे॥

गवाह वर्णन करताहै कि जबकि मेरी स्त्री पूनामें आई तो फिर एक वेर महाराजके पास रमज़ान के महीने में गई थी मैं उसके वास्ते गाड़ी किराया करके लायाथा एक लड़का छूटू भी उसके साथ गयाथा और महाराज और मेरी स्त्रीमें कुछ वार्त्ता हुईथी सुबहको सुभान उसने बयानकी इसमें महाराज ने कहाकि साहब को कोई ऐसी वस्तु दोकि जिससे साहब का दिल फिर जावे मेरी स्त्री ने कहा कि ऐसी वस्तु कदाचित् न देना अगर साहब को कुछ होगया तो तुम तबाह होजा-वोगे इस बातने महाराजने पचास रुपये उसको दिये महा-

क्या सुना था? उ०—बंगले पर बहुत से मनुष्य बात चीत किया करते थे कि मालूम नहीं किस मनुष्य ने साहब को विष दिया है। प्र०—तुम कुछ जहर की निसबत जानते थे? उ०—मैं कुछ नहीं जानता था। प्र०—तुम जानते हो कि शर्बत कौन बनाया करता था? उ०—मैं नहीं जानता था अब मैं १३ नवम्बर के हालात में कुछ प्रश्न तुम से पूछना चाहता हूं। प्र०—तुम को याद है कि तुमने करनैल फियर साहब के रूबरू इजहार दिये थे? उ०—मैंने उनके रूबरू इजहार नहीं दिये थे किन्तु मैंने बोवीसाहब के रूबरू इजहार दिये थे। प्र०—जो कुछ तुम्हारी स्त्री ने तुम से कहा था उस का बयान साहब से किया था? उ०—मैंने नहीं कहा। प्र०—तुमने किसके साम्हने पहले कहा था? उ०—सटर साहब के साम्हने।

के कमरे में बैठे हुये थे जिस समय मेरे इजहार लिये तो उस समय मेरी स्त्री बेबीसाहब की मेमसाहिबा के पास नैाकर थी। प्र०—तुमने बयान किया कि जब तुम अपने इजहार दे चुके तो तुम पहरे में रक्खे गये थे ? उ०—पहिले दिन मैंने कई प्रश्नों का उत्तर दिया था और मेरे दो तीन दिनतक इजहारात होते रहे । प्र०—जिस दिनसे तुमने अपने इजहारात देने शुरू किये थे और जिस दिन तक कि पूर्ण किये थे इस दरमियान में कभी अपनी स्त्री से कुछ बातें तुमने की थीं ? उ०—नहीं की। प्र०—जब कि वह अस्पताल में थी तब तुम देखने को गये थे ? उ०—हां गया था। प्र०—वह कितने दिन अस्पताल में रही ? उ०—पांच दिन तक अस्पताल में रही ? ऐडवकेट जनरल ने कहा कि प्यारा के इजहारात १८ तारीख को लिये गये थे और उसके पति के इजहारात १९ तारीख को ॥

अली गया था प्र०—क्या वह अकबरअली का सम्बन्धी है? उ०—हां साहब उनका सम्बन्धी है। प्र०—अहमदअली तम्हारे पास आया तो तुमने क्या कहा? उ०—अहमदअलीने तो मुझसे कुछ नहीं कहा परन्तु खानबहादुर ने मेरे इज़हारात लिये। प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो अहमदअली ने तुमसे क्या कहा और उस समय कौन २ मौजूद थे? उ० उस वक्त केवल मैं और अहमदअली था और कोई न था। प्र०—तुम्हारे किस जगह पर इज़हार लिये थे? उ०—अहमदअली ने अपने घरपर लेजाकर इज़हारात लिये थे। प्र०—तुमसे खानबहादुर ने क्या पूछा? उ०—खानबहादुर ने मुझसे पूछा कि कोई चिट्ठी तो तुमने महाराज को नहीं लिखी है मैंने कहा मैंने कोई चिट्ठी नहीं लिखी है परन्तु खाया के वास्ते एक चिट्ठी लिखी है फिर मुझसे पूछा कि तुमने कब शेख अब्दुल्ला के नाम चिट्ठी लिखी थी मैंने उस को बता दिया। प्र०—क्या वह होली के पीछे चिट्ठी लिखी थी? उ०—मैं होली को नहीं समझता मुसल्मान हूं। प्र०—क्या बकराईद के पीछे लिखीथी? उ०—मुझको याद नहीं। प्र०—तुम गवरात को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं।

खत के साथ भेजी थी वह किसके नाम है ? उ०-वह मज़ाराज को देने के वास्ते सालिस के नाम थी वह चिट्ठी कि जिस पर निशान (ए) का था इजलास में पढ़ी गई उसमें यह लिखा था कि हमने तुम्हारा मतलब समझा तुम बारंबार इसी तरह पर चिट्ठियां लिखते रहो। सालिस मेरे पास आया था अब मैं किसी कदर अच्छी हूं मैंने सालिस को चिट्ठी लिखदी है कि मैं २० तारीख तक वहां आऊंगी पांच रुपये मुहम्मद वज़ीर को दिये गये तुम्हारे स्वसुर के घरमें जगह रहने को है नहीं मैं कहां रहूं मुझको बड़ी तकलीफ है जमादार से २५) रु० पहुंचे २०) रु० उस लाडुबाड़ी को अव्व देदेना मेरा इन दिनों में बड़ा नुकसान हुआ बीमारी के सबब से मुझको छुट्टी लेनी पड़ी मैं यशवन्तराव के घर पर गया थी वह बयान करता था कि महाराज ने दो तीन बेर तुम्हारे विषय में पूछा था सालिस तो तुम्हारे मकान पर कभी नहीं आया था मुझको लक्खूबावा सलकर और और आदमी तुमको सलाम देते हैं॥ लिखा हुवा १० अप्रैल सन् १८७४ ई०॥ गवाह वर्णन करती है कि यह चिट्ठी मैंने आप

परन्तु कोई पुड़िया तुमने महाराज से पाई थी? उ०—कोई पुड़िया नहीं पाई। प्र०—तुमने ऐडगैन्हन साहब के साम्हने क्या इज़हार दिये थे। उ०—साहब जो कुछ मैंने इज़हार दिये थे वह कागज़ में लिख लिये गये हैं। प्र०—क्या उन्होंने तुमसे पूछा था कि तुमने महाराज से कुछ पाया? उ०—हां साहब मुझ से पूछा था लेकिन मैंने उसका उत्तर दिया। प्र०—तुम अकबर अली को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं। प्र०—जब तुमसे ऐडगैन्हन साहब इज़हार ले चुके थे तो तुमसे कोई सवाल अकबर अली ने किया था? उ०—हां साहब उन्होंने भी इज़हार लिया था मैंने वही इज़हार जो ऐडगैन्हन को दिया था उनके रूबरू भी कह दिया। प्र०—तुमसे यह कहा था कि अगर तुम सच कहोगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा? उ०—हां साहब मुझ से कहा था और मैंने सो जो कुछ सच था कह दिया था। प्र०—आनरेबल ज़ज बहादुर ने तुमसे पूछा था कि तुम महाराज के यहां गये थे? उ०—हां साहब पूछा था।

विवाह हुवाथा? उ०—हां७ मईको विवाह हुवा था। प्र०—तो फिर यही तारीख आपके नाराजीकी मालूम करनी चाहिये? उ०—इन्ही तारीखों में खरीता लिखा गया था। प्र०—तुमको खबर है कि श्रीमान् वैसरायके पास १७ मईका कोई खरीता गायकवार ने भेजा था? उ०—हां भेजा था। प्र०—उस खरीते का उत्तर श्रीमान्गवर्नरजनरलबोरेश के पास से कब आया था? उ०—साहब २५ नवम्बर सन् १८७४को आया था और वह मेरे द्वारा आया था साहब प्रेजीडण्ट ने सरन्टबेलनटायन साहब से कहा कि आपने वह सब खरीते और उसके उत्तर का आशय पढ़ा था नहीं? उ०—साहब मैंने नहीं पढ़ा वह सब पुलिस के हाथ में है। सरल्युइसपोली साहब ने कहा यदि आवश्यक हो तो आप पुलिसे से मंगवा लीजिये? उ०—नहीं उसकी कुछ जरूरत नहीं है। प्र०—अच्छा यह बताइये कि महाराज के यहां कौन तारीख को पुत्रउत्पन्न हुवाथा? उ०१६—अकटूबर को उत्पन्न हुवा और ८—मईको विवाह हुवा। प्र०—अच्छा हमको इस बात से कुछ प्रयोजन नहीहै यह क़ानूनी बहस है क्या आपके फोड़ा उन्ही दिनों में हुवा था? उ०—हां साहब उन्हीं दिनों में हुवा था और डाक्टरसीवर्ड साहब मेरा इलाज करते थे।

जगह नहीं थी। प्र०—वह लोग इन खबरों के सबबसे तुमसे रुपया भी पातेथे ? उ०—कभी नहीं। प्र०—ज़रा याद कीजिये शायद कभीऐसा हुवाहो ? उ०—कभीऐसा नहीं हुवा। प्र०—तुम्हारा इससे क्या निश्चय है ? उ०—मुझको अच्छी तरह से विश्वास है कि कभी ऐसा नहीं हुवा। प्र०—तुमने उस चिट्ठी में लिखाहै कि मुझको प्रतिष्ठितमनुष्यके द्वाराखबर पहुंचीहै वह कौन विश्वसित मनुष्यथा ? उ०—साहब बहुतसे मनुष्य हैं। प्र० जिस मनुष्य ने तुम से कहा था कि तुम को तीन वस्तुओं से विषदिया गयाहै तुमने उसका नाम क्योंनहीं लिख लिया था ? उ०—उस का नाम इस सबब से नहीं लिखा कि वह विश्वसित मनुष्य था और छिपी हुई खबर थी और सिवाय इसके कुछ लिखने की जरूरत नहीं थी। प्र०—तुम भावपूना कर को जानते हो ? उ०—हां मैं जानताहूं।

उ०—मुझको चकोतरह खराब मालूम होता था और मैंने कई बेर अब्दुल्ला को ताकीद की थी और चकोतरे मंगाकर देखे थे तथापि कई बेर खराब चकोतरों को देखा। प्र०—तुमतो कहते हो कि ६ नवम्बर से मुझको संदेह हुवा और मेरे मुंहका स्वाद बदल गयाथा ? उ०—नहीं यह मैंने नहीं कहा था। प्र०—तुमने कहा तो है कि मैंने दो तीन घंट पीकर बाकी फेंकदिया ? उ०—हां मैंने दोतीन घूंट पीकर बाक़ी फेंक दिया था। प्र०—पस मालूम हुवा कि तुम्हारी तबीयत ६ नवम्बर को ऐसी रही कि जैसे सितम्बर और अकटूबरमें रहा करती थी। प्र०—सातवीं तारीखको भी तुमने शर्बत कुछ पीकर फेंकदिया था उ०— हां साहब फेंक दिया था। प्र०—तुमने आठवीं तारीख का जिक्र नहीं किया क्या तुमने आठवीं तारीखको शर्बत नहीं पियाथा ? उ०—आठवीं तारीख में मैंने बिल्कुल शर्बतनहीं पिया। प्र०—तुमने जो बयान कियाकि उस वस्तुमें गहरा रंगथा यह सही है ? उ०—यह बात सही नहींहै। प्र०—अच्छा तुम यह बताओकि फिर क्या रंगथा ? उ०—उसमें हलका भूरा रंग था। प्र०—१३ नवम्बर की चिट्ठी इजलासमें है वह किसकी लिखी हुई है ? उ०—उस का आशय क्याहै। प्र०—उसका आशय यहहै कि तुमने किसी से सुना है कि तुमको विष दिया गया है और उसमें संखिया और हीरेकाचूर्ण और ताम्बाहै ? उ०—यह चिट्ठी मैंने अपने खबर देनेवालेसे पाईथी जो मुझको खबरें दिया करताथा। प्र० अच्छा नाम बताओ कि वह कौन मनुष्य था ? उ०—एक मनुष्य नहीं है बहुतसे मनुष्य खबरें दिया करतेथे। प्र०—वहखबरें किस विषय में तुमको दिया करते थे उ०—जो बातें मेरी तजवीज़ के लिये होती थीं उनबातों की यह लोग खबरें दिया करते थे और बहुधा उन लोगों से जियादह मालूम होता था किजो गायकवार पर नालिशी हुवा करते थे प्र०—वह मनुष्य किस स्थान पर तुमसे भेंट करते थे ? उ०—कोई खास

कोई सन्देह नहीं है बेशक सआदतअली के मुक़द्दमे में भाऊपूनाकर ने बहुत मदद दी थी। प्र०—तांबे के निस्बत तुमसे भावपूनाकर ने क्या कहा था? उ०—मुझको याद है कि उसने कहा था कि तुम्हारे ज़हर में संखिया और हीरे का चूरा और तांबा मिला था। प्र०—क्या केवल यही ख़बर तुमको मिली थी? उ०—हां यही ख़बर मिली थी। प्र०—तुमने भाव पूनाकर से पूछा था कि तुमको यह ख़बर क्योंकर मिली? उ०—मैंने नहीं पूछा किन्तु मैंने इस ख़बर को एक बाज़ारी गप समझा। प्र०—अभी तो तुमने कहा था कि वह बहुत मोतबिर ख़बर है फिर बाज़ारी गप क्योंकर थी?

मैं मानता हूं कि वह प्रतिष्ठित मनुष्य है परन्तु यह बताइये कि उसने गायकवार के प्रतिकूल खबरें दी थीं या गायकवार के फ़ायदे की? उ०—उसने गायकवार के प्रतिकूल एक भी खबर नहीं दी थी। प्र०—आप के रुतबे का आदमी हमारे प्रश्न का जवाब बख़ूबी दे सक्ता है आप यह बताइये कि वह खबरें गायकवार के प्रतिकूल थीं या गायकवार के वास्ते अच्छी थीं? उ०—गायकवार अन्याई मनुष्य था और भाव पूनाकर नगर के रहने वालों का बड़ा हितैषी था सो लोगों की भलाई के लिये खबरें दिया करता था। प्र०—यह हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं है बड़े खेद की बात है कि आप हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं देते हैं? उ०—यह मनुष्य जो खबरें दिया करता था तो हमेशा गायकवार के प्रतिकूल नहीं हुवा करती थीं। प्र०—करनैल फ़ियर साहब आप अपने रुतबे पर ख्याल करें आप ऐसा बुद्धिमान हमारे प्रश्नों का ऐसा उत्तर दे बड़े अफ़सोस की बात है? उ०—मैंने उत्तर तो दिया कुछ यह बात न थी कि हमेशा वह बरखिलाफ खबरें दिया करता था। प्र०—क्या सआदत अली की शिकायत गायकवार के अन्याय की इसी शख़्स ने तुमसे बयान की थी? उ०—सआदत अली ने खुद बयान की थी। प्र०—अच्छा करनैल फ़ियर साहब सावधानी से जवाब दो क्या सआदत अली के मुक़द्दमे की उसने पैरवी नहीं की थी? उ०—एक हुक्म गवर्न्मेण्ट से आया था रिपोर्ट करने के वास्ते। प्र०—करनैल फ़ियर साहब मेरे प्रश्नों पर किञ्चित् ध्यान दीजिये कि आया भावपूनाकर ने सआदत अली के मुक़द्दमे की पैरवी की थी या नहीं? उ०—जहां तक कि मैं जानता हूं कह सक्ता हूं कि उसने पैरवी नहीं की क्योंकि पैरवी का शब्द बहुत पुरमानी है उसका मुक़द्दमा तो बहुत दिन से पेशी में था वह इस मुक़द्दमे में के विषय में बहुधा खबरें दिया करता था। प्र०—तुमको इस बात के कहने में कोई सन्देह तो नहीं है? उ०—हम को

नहीं कहा था। प्र०—तुमने उसके विषय में कब सुना था? उ०—मैंने सुनाथा मगर यह याद नहीं कि कब सुनाथा। प्र०—अच्छा आप याद कीजिये? उ०—एक दो रोज़ पहिले सुना था परन्तु मैं ठीकर नहीं कह सक्ता हूं। प्र०—भाव पूनाकर को कुछ उसके विषय में खबर थी? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—एक खरीता जो श्रीमान् नव्वाब गवर्नर जनरल के यहां से आया था उसके जवाबके बारे में कुछ इसने कहा था या नहीं? उ०—हां कहा था। प्र०—उसे कहां से खबर मिली? उ०—यह बात मैंने उससे नहीं पूछी प्र०—उसने तुम से क्या कहा था? उ०- उसने कहा था कि एक खरीता जो गवर्नर जनरल के यहां से आया है उसका उत्तर महाराज के यहां से लिखा जाता है। प्र०- क्या उस जवाब में तुम्हारी शिकायत की थी? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—क्या भावपूनाकर ने इसकी इत्तिला तुमको नहीं दी? उ०—इसकी इत्तिला नहीं दी। प्र०- कारनैल फायर साहब क्या आप सौगन्द खा सक्ते हैं कि इस की इत्तिला उसने आपको नही दी? उ०—हां मैं सौगन्द खा सक्ता हूं कि इसकी इत्तिला उसने नहीं दी। प्र०—फिर आपको क्योंकर मालूम हुवा कि उस में आपकी शिकायत थी?

और ७ तारीख़ को मेरा चित्त अच्छा नहीं था इसी सबब से ८ को नहीं पिया। प्र०—कोई और सबब नहीं है? उ०—मेरे विचार में कोई सबब नहीं है। प्र०—तुमने रावजी के इज़हार लिये थे? उ०—हां लिये थे। प्र०—क्या उसने फौज का नाम लिया था? उ०—हां लिया था—फिर टिफन का समय आगया और जलसा बरखास्त हुवा टिफन खाने के पीछे फिर प्रश्न पूछने शुरू होगये। प्र०—भावपूनाकर तुम्हारे पास क्यों आया करता था? उ०—साहब मुलाक़ात करने को आया करता था। प्र०—क्या वह तुम्हारे पास दफ़्तर केवल आया करता था? उ०—आया करता था। प्र०—क्या तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में भी आया करता था? उ०—नहीं आया करता था। प्र०—कभी तुमने उसको अपने पीछे भी आकर पाया था? उ०—नहीं पाया। प्र०—साहब कुछ सोच कर जवाब दीजिये? उ०—हां कभी ऐसा होता था कि अगर मैं दफ़्तर को गया तो वह आकर मेरी मुलाक़ात के वास्ते ठहरजाता था। प्र०—इससे क्या यह बात साबित है कि अगर तुम कभी बाहर गये और वह तुम्हारी मुलाक़ात को आया तो तुम उसको आकारघरपर पाते थे? उ०—कभी सुबह को जब मैं हवा खाके आया तो उसको मैंने आया-हुवा नहीं पाया। प्र०—मेरा मतलब आपके सुबह के हवाखाने से नहीं है मेरा मतलब यह है कि कभी आपने बाहर से आकर उसको बैठाहुवा पाया या नहीं? उ०—कभी नहीं। प्र०—अच्छा यह बताओ कि वह तुम्हारे पीछे कभी आता था तो तुम्हारे बरामदे में आकर बैठा-करता था या नहीं? उ०—हां बैठा रहता था। प्र०—तो मालूम हुवा कि कभी वह तुम्हारे पीछे तुम्हारे खास कमरे में भी चला आता होगा? उ०—नहीं मेरे कमरे में नहीं आ सक्ता था। प्र०—२ नवम्बर के खरीते के विषय में कुछ भावपूनाकर ने कहा था? उ०—मुझसे कुछ

नहीं कहा था। प्र०—तुमने उसके विषय में कब सुना था? उ०—मैंने सुनाथा मगर यह याद नहीं कि कब सुनाथा। प्र०—अच्छा आप याद कीजिये? उ०—एक दो रोज़ पहिले सुना था परन्तु मैं ठीकर नहीं कह सक्ता हूं। प्र०—भाव पूनाकर को कुछ उसके विषय में खबर थी? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—एक खरीता जो श्रीमान् नव्वाब गवर्न्नर जनरल के यहां से आया था उसके जवाबके बारेमें कुछ इसने कहा था या नहीं? उ०—हां कहा था। प्र०—उसे कहां से खबर मिली? उ०—यह बात मैंने उससे नहीं पूछी प्र०—उसने तुम से क्या कहा था? उ०—उसने कहा था कि एक खरीता जो गवर्न्नर जनरल के यहां से आया है उसका उत्तर महाराज के यहां से लिखा जाता है। प्र०—क्या उस जवाब में तुम्हारी शिकायत की थी? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—क्या भावपूनाकर ने उसकी इत्तिला तुमको नहीं दी? उ०—इसकी इत्तिला नहीं दी। प्र०—कारनैल फ़ियर साहब क्या आप सौगन्द खा सक्ते हैं कि इस की इत्तिला उसने आपको नहीं दी? उ०—हां मैं सौगन्द खा सक्ता हूं कि इसकी इत्तिला उसने नहीं दी।

कुछ हाल कह दिया था ? उ०—नहीं कहा थ
प्र०—तुम से तांबे के निस्बत उसने किस तारीख़ को क
था ? उ०—बारवीं या तेरवीं तारीख़ कहा था। प्र०—तु
को पूनाकर को देखे हुये कितने दिन हुये ? उ०—कल
मुझसे उससे मुलाक़ात हुई है। प्र०—तुमने उससे कुछ क
तो नहीं ? उ०—मैंने उससे यह पूछा कि तुमने मुझको ख़
दी थी कि तुमको संखिया और हीरेका चूर्ण और तांबे
ज़हर दिया गया है उसने कहा कि हां मैंने कहा था।

सरजन्टबेलनटायन साहब के प्रश्न पूर्ण हुये॥

ऐडवकेटजनरल ने कहा कि मैंने बम्बई को फ़ैलके मंगाने
लिये तारबर्क़ी भेजीहै अब मैं करनैल फियर साहबसे दुबार
तब प्रश्न करूंगा कि जब सरजन्टबेलन टायन साहब के प्र
सब ख़तम होजावेंगे—प्रेजीडगट साहब ने कहा कि नहीं तु
अपने प्रश्न करलो और सरजन्टबेलन टायन साहब फिय
साहब से फिर प्रश्न करलेंगे॥

फियर साहब से इज़हारात फिर लिये गये॥

प्र०—ख़रीता कौन सी तारीख़ को लिखा गया था ? उ०
९ तारीख़ को। प्र०—क्या तुम नौसारी को गवर्न्मेगट क
आज्ञा से नहीं गये ? उ०—गवर्न्मेगट की आज्ञा से
वहां नहीं गया। प्र०—तुम्हारे इस न जाने को गवर्न्मेग
ने पसन्द किया ? उ०—हां पसन्द किया। प्र०—महाराज
जो दादा भाई नूरूजी को अपना दीवान किया था ते
उसमें तुम्हारी सलाह ली थी या नहीं ? उ०—हां साह
पहले उन्होंने मुक़र्रर कर लिया था फिर ख़रीते के द्वार
मुझको इत्तिला दी थी। प्र०—जबसे दादा भाई नूरूजी
मुकर्रर हुये थे और उन्होंने प्रबन्ध के लिये किसी तरह की
सहायता मांगी तो तुमने उनको सहायता दीथी ? उ०—
हां साहब दी थी। प्र०—कभी दादा भाई नूरूजी ने उसकी
शिकायत की थी कि फियर साहब हमको मदद नहीं देते

है ? उ०—कभी नहीं किन्तु कई बार उन्होंने मेरी सहायता
देने का गुण माना । प्र०—तुमने अभी कहा है कि कई आ-
दमी मेरे पास खबरें लाते थे क्या वह यों ही आते थे या
तुम कुछ उनको देते थे ? उ०—मैं कुछ भी नहीं देता था ।
प्र०—उस खरीते में जो महाराज ने तुम्हारी शिकायत लिखी
थी वह सही है ? उ०—बिल्कुल गलत है । प्र०—तुमने उस
खरीते के निस्बत महाराज से कुछ बातें कहीं थी ? उ०—
मैंने उनसे बड़ा अफसोस जाहिर किया था कि तुमने मेरी
शिकायत बिल्कुल झूठ लिखी और उन्होंने भी बड़ा अफसोस
किया और कहा कि वास्तव में आपकी शिकायत झूठ लिखी
गई मेरा कुछ अपराध नहीं दादा भाई ने आपकी शिकायत
लिखी और मैंने जो उनको मना किया तो उन्होंने उत्तर दिया
कि जब तक सम्पूर्ण कारवाई मेरे सुपुर्द न करोगे तब तक
इन्तिजाम बिल्कुल न होगा । प्र०—उस शर्त में सिवाय
अरक चबूतरे के और भी कोई वस्तु थी ? उ०—और कुछ
वस्तु न थी सरजन्टबेलन टायन ने पूछा कि क्या तुमने उस
खरीते को अपने उत्तर के साथ भेजा था ? उ०—हां मैंने
अपने जवाब के साथ खरीता भेजा था ।

कुल हाल कह दिया था ? उ०—नहीं कहा था। प्र०—तुम से तांबे के निस्बत उसने किस तारीख़ को कहा था ? उ०—बारवीं या तेरवीं तारीख़ कहा था। प्र०—तुम को पूनाकर को देखे हुये कितने दिन हुये ? उ०—कलही मुझ से उससे मुलाक़ात हुई है। प्र०—तुमने उससे कुछ कहा तो नहीं ? उ०—मैंने उससे यह पूछा कि तुमने मुझको ख़बर दी थी कि तुमको संखिया और हीरेका चूर्ण और तांबे से ज़हर दिया गया है उसने कहा कि हां मैंने कहा था॥

सारजन्टबेलनटायन साहब के प्रश्न पूर्ण हुये॥

ऐडवकेटजनरल ने कहा कि मैंने बम्बई को फैलके मंगाने के लिये तारबर्क़ी भेजीहै अब मैं करनैल फियर साहबसे दुबारह तब प्रश्न करूंगा कि जब सारजन्टबेलन टायन साहब के प्रश्न सब ख़तम होजावेंगे—प्रेजीडण्ट साहब ने कहा कि नहीं तुम अपने प्रश्न करलो और सरजन्टबेलन टायन साहब फियर साहब से फिर प्रश्न करलेंगे॥

फियर साहब से इज़हारात फिर लिये गये॥

प्र०-ख़रीता कौन सी तारीख़ को लिखा गया था ? उ०-९ तारीख़ को। प्र०—क्यों तुम नौसारी को गवर्न्नमेण्ट की आज्ञा से नहीं गये ? उ०-गवर्न्नमेण्ट की आज्ञा से मैं वहां नहीं गया। प्र०—तुम्हारे इस न जाने को गवर्न्नमेण्ट ने पसन्द किया ? उ०—हां पसन्द किया। प्र०—महाराज ने जो दादा भाई नूरूजी को अपना दीवान किया था तो उसमें तुम्हारी सलाह ली थी या नहीं ? उ०—हां साहब पहले उन्होंने मुक़र्रर कर लिया था फिर ख़रीते के द्वारा मुझको इत्तिला दी थी। प्र०—जबसे दादा भाई नूरूजी मुकर्रर हुये थे और उन्होंने प्रबन्ध के लिये किसी तरह की सहायता मांगी तो तुमने उनको सहायता दीथी ? उ०—हां साहब दी थी। प्र०—कभी दादा भाई नूरूजी ने उसकी शिकायत की थी कि फियर साहब हमको मदद नहीं देते

के कारण से नहीं आये श्रीमान् मल्हरराव टिफन के उपरान्त कमीशन में आये॥

पहिली रीति के अनुसार ऐडवकेट जनरल अर्थात् सरकार के मुख्य वकील और मिस्टर अनवरारटो साहब मिस्टर बरन साहब की हिदायत से और मिस्टर लीवलैण्ड साहब और मिस्टर लेवारनर साहब श्रीहुजूर वैसराय के ओर से उपस्थित थे और सरजन्टवेलनटायन साहब और मिस्टर ब्रेन्सन साहब और मिस्टर परसल साहब और मिस्टर शान्ताराम नारायण, मिस्टर जाफरसन साहब की हिदायत से और वेलनटायन साहब गायकवार की तरफ से थे मिस्टर वासुदेव जगन्नाथ वकील हाईकोर्ट श्रीमान् गायकवार की ओर से मुक़द्दमे की देख रहे थे।

मिस्टर जार्ज्जटेलर साहब और मिस्टर जी, ऐम, बेगली साहब दोनों रानियों और महाराजा साहब की बेटी के ओर से हाजिर थे॥

से आया तो मैंने दो नोकरों को बरामदे में बैठे हुये पाया नरसू ने मुझको हमेशा के तौर पर सलाम नहीं किया हमेशा जो मैं आता था तो मैं नरसू से कुशल पूछता था और वह मुझको झुक २ कर सलाम करता था परन्तु इसबेर उसने प्रति कूल किया और रावजी ने मेरा छाता और टोपी जल्दी से ले लिया रावजी कभी छाता नहीं लेता था यह बात भी मुझको नई मालुम हुई और मैं करनैल फियर साहब के कमरे में गया और वहां मैंने उनको पाया और करनैल फियर साहब ने मुझसे कहा कि मुझको किसी ने जहर दिया है देखो इस गिलास में तलछट जमा है और सब कैफियत अपने मिजाज को वर्णन की मैं उस तलछट को लेकर अपने घर चला आया करनैल फियर साहब ने मुझको वह भी जगह दिखाई जहांबाकी शर्बत फेंक दिया था मैंने देखा कि कोई पतली वस्तु वहां फेंकी गई है फिर मैने रावजी नरसू को बाहर जाने के समय भी उसी जगह बैठे पाया और रावजी ने फिर जल्दी से उठ कर मेरी टोपी और छाता देदिया और वह आदमी जो मेरे बुलाने के वास्ते गया था उसको मैंने रानी के पुल के पास या मालुम हुआ कि वह उधर से आता है मैंने उससे एक दो सवाल किये उसने मुझको जवाब दिया फिर मैंने दो सवारों को महाराज की रजीडन्सी में आते देखा उसमें से मैं एक को पहिचानता हूं उसका नाम यशवन्तराव है॥

अब साढ़े चार बजगये थे इस कारण मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि जो और प्रश्न किये जावेंगे तो बहुत देरी होगी इस कारण जलसा बरखास्त हुवा॥

छठे दिन का इजलास॥

आज ११ बजे कमीशन का इजलास शुरू हुआ कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बरान मौजूद थे सरल्यूइसपीली साहब बीमारी

के कारण से नहीं आये श्रीमान् मल्हरराव टिफन के उपरान्त कमीशन में आये ॥

पहिली रीतिके अनुसार ऐडवकेट जनरल अर्थात् सरकार के मुख्य वकील और मिस्टर अनवरारटी साहब मिस्टर बरन साहब की हिदायत से और मिस्टर लोवलैण्ड साहब और मिस्टर लेवारनर साहब श्रीहुजूर वैसराय के ओर से उपस्थित थे और सरजन्टवेलनटायन साहब और मिस्टर वैन्सन साहब और मिस्टर परसल साहब और मिस्टर शान्ताराम नारायण, मिस्टर जाफरसन साहब की हिदायत से और वेलनटायन साहब गायकवार की तरफ से थे मिस्टर वासुदेव जगन्नाथ वकील हाईकोर्ट श्रीमान् गायकवार की ओर से मुकद्दमे को देख रहे थे ॥

मिस्टर जार्ज्जटेलर साहब और मिस्टर जी, ऐम, वेगर्ली साहब दोनों रानियों और महाराजा साहब की बेटी के ओर से हाजिर थे ॥

जो रोजमर्रा पहिना करते हैं और किसी बातका उनको ख्याल नथा वह कारनैलफियर साहब के इजहार का तर्जुमा जो हिंदुस्तानी जबान में हुआ था देखरहे थे आजके दिन केवल डाक्टरसीवर्डसाहब और डाक्टरब्रेसाहब के इजहार लिये गये इनदोनों डाक्टर साहबों के इजहार से साबित हुआ जो तलछट गिलास में रहगया था और गिलास का शर्बत कारनैल फियर साहब ने फेंक दिया था वह सफेद संखिया और पिसा हुआ हीरा था डाक्टर सीवर्ड साहब ने वह हाल भी बयान किया जो आया ने अस्पताल में कहा था॥

जिस समय अदालत एकत्र हुई तो डाक्टरसीवर्डसाहब बुलाये गये मिस्टर अनवरारटी साहब ने नीचे लिखे हुये प्रश्न किये॥

प्र०—डाक्टरसीवर्डसाहब आपको यादहोगा कि शनिवार को आपने कहांतक इजहार दिये थे कि आपगिलास लेकर जिसमें तलछट था अपने मकान पर आये फिर उसको क्या किया आपने उस तलछटको क्या जुदा अलग २ कियेथे? उ०—मैंने उस गिलास को किताब की अलमारी में रखकर बन्द करदिया था॥

सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि कुछ जोर से वर्णन कीजिये क्योंकि आप की गवाही अति आवश्यक है मुझको अफसोस है कि मैं आप की गवाही में दखल देता हूं। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहब—क्या आपने गिलास को उस समय तक बन्द रक्खा जबतक आपने तलछट के जुदा अलग करने के वास्ते उसको मंगाया था? उ०—हां बन्दरक्खा। प्र०—क्या आपने अलग किया—अभी प्रश्न पूरा नहीं हुआथा कि सर-जन्टबेलनटायन साहबने खड़े होकर कहा कि आप पूछिये कि उन्होंने उस तलछट को क्या किया? उ०—मैंने कुछ ताजे कोयले मंगवाये लेकिन कोयलों के मंगवाने से पहिले इस तलछट मेंसे थोड़ी तलछट को एक शीशे के टुकड़े पर

को रोजमर्रा पहिना करते हैं और किसी बातका उनको खयाल नथा वह कारनैलफियर साहब के इजहार का तर्जुमा जो हिंदुस्तानी जबान में ज़ुवा था देखरहे थे आजके दिन केवल डाक्टरसीवर्डसाहब और डाक्टरग्रेसाहब के इजहार लिये गये इनदोनों डाक्टर साहबों के इजहार से साबित ज़ुवा जो तलछट गिलास में रहगया था और गिलास का शर्बत कारनैल फियर साहब ने फेंक दिया था वह सफेद संखिया और पिसा ज़ुवा हीरा था डाक्टर सीवर्ड साहब ने वह हाल भी बयान किया जो आया ने अस्पताल में कहा था॥

जिस समय अदालत एकत्र ज़ुई तो डाक्टरसीवर्डसाहब बुलाये गये मिस्टर अनवरारटी साहब ने नीचे लिखे ज़ुये प्रश्न किये॥

प्र०—डाक्टरसीवर्डसाहब आपको याद होगा कि शनिवार को आपने कहांतक इजहार दिये थे कि आपगिलास लेकर जिसमें तलछट था अपने मकान पर आये फिर उसको क्या किया आपने उस तलछटके क्या जुज अलग २ कियेथे? उ०—मैंने उस गिलास को किताब की अलमारी में रखकर बन्द करदिया था॥

सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि कुछ जोर से वर्णन कीजिये क्योंकि आप की गवाही अति आवश्यक है मुझको अफसोस है कि मैं आप की गवाही में दखल देता हूं। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहब—क्या आपने गिलास को उस समय तक बन्द रक्खा जबतक आपने तलछट के जुज अलग करने के वास्ते उसको मंगाया था? उ०—हां बन्दरक्खा। प्र०—क्या आपने अलग किया—अभी प्रश्न पूरा नहीं ज़ुआथा कि सर-जन्टबेलनटायन साहबने खड़े होकर कहा कि आप पूछिये कि उन्होंने उस तलछट को क्या किया? उ०—मैंने कुछ ताजे कोयले मंगवाये लेकिन कोयलों के मंगवाने से पहिले इस तलछट मेंसे थोड़ी तलछट को एक शीशे के टुकड़े पर

साहबने मुझको भेजीथी उसवक्त मैं रजीडन्सी को जाता था मैंने अपने इम्तहान और इस तलछट के जुज्वों के अलग करने का नतीजा करनैलफ़ियरसाहब से बयान किया और मैंने जो चिट्ठी करनैल फ़ियर साहब को लिखी थी वह उन्हीं के पास बैठकर मिस्टर बोबोसाहब के सामने लिखी ॥

मिस्टर अनवरारटीसाहबने अदालत में बयान किया कि यह चिट्ठी रजीडन्सी के सरजन्ट के तरफ से साहब रजीडेण्ट के नाम है उस पर (ऐन) अक्षर का निशान है और उसका आशय यह है ॥

साहब—आपकी चिट्ठी के उत्तर में जो मैंने इसवक्त एक बजे पाई रपोर्ट करता हूं कि जहांतक मैंने इस गिलास के तलछट का इम्तहान किया जो आपने आज मुझको इम्तहान के वास्ते दिया था तो मालूम हुवा कि वह तलछट संखिया है ॥

यह संखिया इतनी थी कि मैंने उसका इम्तहान कोयले से किया और संखिया का होना मुझको मालूम हुवा ॥

वह छल्ला कोनेमें पड़ा हुवा है और छल्ले के दोनों ओर जो उज्ज्वल वस्तु है यह खास संखिया होने का असर है ॥

मेरी इच्छा है कि गिलासके इस बाक़ी तलछट को डाक के द्वारा गवर्न्नमेण्ट के डाक्टर के पास भेजदूं जो ऐसी चीजों का इम्तहान किया करता है ॥

अगर आप गिलास का सब शर्बत पीजाते तो आप के मरने के वास्ते काफी था ॥

(दस्तखत जी—एडवनसीवर्ड रजीडन्सी सरजन)

६ नवम्बर सन् १८७४ ई०

बड़ोदा।

फिर डाक्टरसाहबने वर्णन किया कि बाक़ी तलछट को मैंने ब्लाटिङ्ग कागज़ के ऊपर रखकर छाना और कुछ तलछट जो गिलास में रहगया था उसको भी पानी में डालकर छान

डाक्टर सीवर्डसाहब ने बयान किया था कि यह शीशी के टुकड़े जो अब मैं पेश करता हूं वह हैं जिसपर कि मैंने गिलास का तलछट रखकर खुर्दबीन से देखा था (यह तीन टुकड़े शीशे के सन्दूकसें बन्द थे जिसपर (आर) अक्षरका निशान है) प्रथम टुकड़ा शीशेका वह है जिसपर कि मैंने गिलास का तलछट रक्खा था दूसरा टुकड़ा शीशे का वह है जिसको पहले टुकड़े पर रखकर तलछट को रगड़ा था देखिये यह शीशा छिलगया और उसका यह निशान है रगडने से पहिले यह निशान शीशे पर न थे इससे यहबात मालूम हुई कि जो जर्रे चमकते हैं वह किसी और वस्तुके हैं शीशे के जर्रे नहीं हैं और निश्चय करके यह हीरेका चूर्ण है जिसका हाल मैंने पहिले भी सुना था सिवाय इसके यह जर्रे बहुत चमकते थे। प्र०—डाक्टरसाहब मैंने सुना है कि आपके पास कुछ खबर आई थी उस खबर को इत्तिलाअ १० नवम्बर को करनैल फियर साहब को आपने की थी॥

साहब प्रेजीडेण्टने पूछा कि यह खबर तुमने पाई थी या डाक्टरग्रेसाहब ने- मिस्टर मैलब साहब ने कहा कि मिस्टर ग्रे साहब कहिये मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि नहीं डाक्टर सीवर्डसाहब इसपर साहब-प्रेजीडण्ट बोले कि डाक्टर ग्रे साहब का नाम आपने भूल से लिया था॥

मिस्टर अनवरारटी साहब—हां मैंने भूल की थी क्षमा चाहता हूं मेरा प्रयोजन डाक्टरसीवर्ड साहब के कहनेसे था॥ डाक्टर सीवर्ड साहब ने बयान किया कि यह चिट्ठी जो अदालत में पेश है इसकी इत्तिला करनैल फियर साहब को सरकारी रीति पर भेज दीगई थी॥

मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि माईलार्ड—मैं इच्छा रखता हूं कि इन सब चिट्ठियों पर पहिचानने के वास्ते चिह्न कर दिये जावें॥

सरजन्टेलनटायन साहब—नहीं मेरे विचारसे जो ऐसा

माई डियर सीवर्ड मैंने आपकी चिट्ठी एक और लिफ़ाफ़े समेत पाई अर्थात् डोसी आफ़ीशियल करनैल फ़ियर साहब की चिट्ठी और एक छोटी पुड़िया जिसमें भूरे रङ्गकी कुछ वस्तु थी और उसमें कोई वस्तु पीली चमकती हुई भी थी ॥

तथाच मैंने उसका इम्तहान किया तो मालूम हुवा कि इसमें सफ़ेदसंखिया और कोई चमकती हुई वस्तु है खुर्द-बीन से मालूम हुवा कि यह पिसा हुवा शोशा या संगखारा है वह बहुधा संगखाराके सदृश है कोई २ ज़र्रोंका रंग गुलाबी और ज़र्द था यदि आपको इच्छा हो तो सरकारी रीति से उसका उत्तर दूं ॥

मैं करनैलफ़ियर साहब की चिट्ठी लौटाता हूं और पुड़िया को अपनी चिट्ठी के उत्तर आने तक रखलिया है ॥

(दस्तख़त डब्ल्यू ग्रे साहब)

क़ायममुक़ाम कमीकल आने लाइज़र गवर्नमेण्ट ग्रान्ट कालेज मुक़ाम बम्बई लिखा हुआ ११ नवम्बर सन् १८७४ ई० ॥

डाक्टर सीवर्ड साहबने यह भी वर्णन किया कि मैंने कई दिन के पीछे तलछट की और भी परीक्षा की मैंने उस वस्तु को जो नली में इकट्ठी होगई थी निकालकर थोड़े पानी में डाला उसमें जो वस्तु भारी थी वह पानी के नीचे बैठ गई और जो हलकीथी वह पानीके ऊपर तैरने लगी जो वस्तु पानी के ऊपर तैरती थी उसको मैंने दो तीन बार करके उतारा और अब उसको शीशे के टुकड़े में पेशकरता हूं साहब-प्रेज़ीडेण्टने प्रश्न किया कि यह क्या तुमने कहा कि तीन दफ़ा करके उतारा ? उ०—नहीं माई लार्ड कई मर्त्तबा करके ॥

साहब प्रेज़ीडेण्ट ने उस समय कहा कि मिस्टर अनवरारटी साहब दयाकरके तुम एक ओर होजाओ तो डाक्टर साहब का वर्णन हम अच्छी तरह सुनें ॥

पंखे रोक दिये गये ताकि वह अजज़ा जो डाक्टर साहब पेश करते हैं उड़ न जावें ॥

पास आप किस वास्ते गये ? उ०—मुझको मालूम हुआ कि आया बहुत बीमार है, मैंने समझा कि शायद उनसे आया कुछ कहेगी और अपना दिल हलका करेगी और आया से मैंने यह भी कहा था कि अगर अपने दिलका हाल कहेगी तो जल्द आराम होजावेगा तथाच उस समय आया ने मुझसे कुछ कहा था इसी कारण मैं मिस्टर सूटर साहब के पास गया मुझको मालूम नहीं कि मेरे जाने के पीछे मिस्टर सूटर साहब अस्पताल में आये या नहीं मुझको याद नहीं कि किस तारीख़ को मिस्टर सूटर साहब के पास मैं गया था क्योंकि मैंने अपनी याद्दाश्त की किताब में नहीं लिखा निश्चय करके १८ नवम्बर से दो तीन दिन पीछे होगा ॥

सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि माईलार्ड हमारे पास तारीख़ है—अर्थात् २१ तारीख़ है ॥

मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा यह वह तारीख़ है जब कि मिस्टर सूटर साहब अस्पताल को गये थे परंतु वह तारीख़ नहीं है जिस तारीख़ को डाक्टर सीवर्ड साहब मिस्टर सूटर साहब के पास गये थे ॥

होना तो गलती होगी जब तक हर एक चिट्ठी आदि की सच्चाई न होजावे उस पर निशान न किया जाय क्योंकि चिट्ठियां बहुत हैं कहां तक निशान किये जांयगे॥

साहबप्रेजीडेण्ट ने कहा बहुत अच्छा जब तक सिदाकत न हो निशान न किया जाय। प्र०–मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा डाक्टर सोवर्ड साहब–आपने शनिवार को कहा था कि आपने जब कारनैन फियर साहबका गिलास देखकर हिलाया तो उसमें से धुवां सा उठा था तो क्या उस धुयें के उठने से भी कोई बात मालूम हुई थी? उ०–जब से यह गिलास मेरे पास आया था उस वक्त से किसी ने इस गिलास को हाथ नहीं लगाया था मैंने आपही औजारों के द्वारा उसकी परीक्षा ली थी। प्र०–मिस्टर अनवरारटी साहब अब मैं दूसरी बात आपसे पूछता हूं आपको याद है कि अमीना आया का इलाज आपने किया था अगर आपके विचार से उचित हो तो अपनी किताब देखकर बयान कीजिये? उ०–अमीनाका इलाज शायद १७ और १८ तारीखको मैंने किया उसके दाहिनी ओर बहुत पीड़ा थी और उसको बुखार भी था और मालूम होता था कि उसके कलेजे में कोई रोग था और उसका फेफड़ा भी खराब होरहा था और अस्पताल के जाने से पहिले मैंने उसको देखा था मिस्टर बोवी साहब के हाते में वह रहा करती थी मेरी रायसे वह अपने मकान से अस्पताल को गई मुझसे और उससे अस्पताल में कुछ बातें हुईं सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा माई लार्ड मैं नहीं जानता क्या आपके यह सवालात किस तरह इज़हार में दाखिल हो सक्ते हैं इस बारे में कुछ सवाल न करना चाहिये। प्र०–मिस्टर अनवरारटीसाहब ने कहा कोई सन्देशा आया का आप किसी के पास ले गये थे? उ०–मैं कोई सन्देशा किसी के पास नहीं लेगया केवल सूटर साहब को बुलाया था। प्र०–सूटर साहब के

प्र०—परन्तु आपने प्लास्टर तो लगाया? उ०—हां बाहर लगाया था। प्र०—क्या आप उसको परीक्षा नहीं कहते? उ०—यह प्लास्टर मैंने अस्पताल के आनेसे पहले लगाया था। प्र०—मैं नहीं समझा पहिले मैंने समझा था कि बाहर लगाने से खाल पर लगानेका आपका मतलब है (यह सुनकर सम्पूर्णसाहबान कमीशन हंसनेलगे) जब आया अस्पताल में गई तो जो कुछ आपसे होसका आपने किया? उ०—हां अगर आप अस्पताल के असिस्टन्टको बुलाकर पूछेंगे तो वह ध्यान से सब बातें कह देगा। प्र०—नहीं २ असिस्टन्टके बुलानेकी कुछ आवश्यकता नहीं है आपकी सब बातों पर मैं निश्चय करता हूं जब वह शफाखानेमें गई तो आपने उसके लिये कुछ किया था। उ०—शायद नहीं किया—अगर आप अस्पतालके असिस्टन्टको बुलायेंगे तो वह आपसे सब हाल कह देगा। प्र०—नहीं मैं उसको न बुलाऊंगा आपने सब बातोंका विस्तारपूर्वक इजहार दिया है अगर आपने उसका इलाज बखूबी नहीं किया तो आप उसके पास क्यों गये थे? उ०—चूंकि मैं उसके पास जाता था। प्र०—पस आपके विचारसे आयाको फायदा था और जब आपने देखा कि उसको हौलदिल है तो आपने अफ़ायता की और दिलका हाल उसको जाहिर कराया? उ०—हां ऐसाही हुवा। प्र० आप और आया एक दूसरेकी बातों को खूब समझाते थे? उ०—हां। प्र०—आपके और उसके दरमियान कोई मुतरज्जिम न था? उ०—नहीं प्र०—आपको यह बात खूबयाद है? उ० हां कोई मुतरज्जिम न था केवल एक पुलिसका आदमी वहां था। प्र०—पस आप जानते थे कि यह पुलिसका आदमी आया की तबीयतको दुरुस्त करदेगा और यह पुलिसका आदमी कौन था? उ०—ईश्वर जाने कौन था। प्र०—ईश्वरका नाम न लो क्योंकि आप खूब जानते हैं कि मैं ईश्वरको यहां नहीं बुला सक्ता? उ०—आप मुझसे ऐसीबात पूछते हैं कि मैं उसको नहीं जानता हूं। प्र०—मुझे अधिकार है जो चाहूं आपसे पूछूं अब

हैं कि जब आया अस्पताल में आई तो वह बीमार थी ? उ०—हां
वह बीमार थी। प्र०—क्या उसके ब्लिस्टर (फफोला) था ? उ०—मु-
झको याद नहीं कि ब्लिस्टर था। प्र०—क्या तुमने ब्लिस्टर रक्खा
था क्योंकि आया कहती है कि आपने ब्लिस्टर रक्खा था ? उ०
नहीं (हिन्दुस्तानी लोग प्लास्टर को ब्लिस्टर कहते हैं) मैंने ब्लिस्टर
बेलेडूना द्वा का लगाया था लेकिन उस समय नहीं लगाया। प्र०
उसके कलेजे में पीड़ा थी ? उ०—हां उसके कलेजे में पीडा थी
और उसका इलाज सरजनमेजर ल्यूइससाहब करते थे। प्र०
तुम कहते हो कि आया अधिक चिन्ता के कारण बीमार हुई थी क-
लेजे की बीमारी से उसका यह हाल नहीं हुवा था ? उ०—हां मु-
झको उस समय ऐसा ही मालूम हुवा था और शायद वही बात
हो। प्र०—आपको ऐसा ही मालूम हुवा अर्थात् उसकी शरीर
के रोग से चित्त में अधिक चिन्ता थी ? उ०—हां क्योंकि जो कुछ उ-
सका इलाज हो चुका था उससे बहुत कुछ उसको फायदा था।
प्र०—आपको मालूम होगा कि देह का रोग कम है परन्तु चिन्ता
से उसके मुंह का रङ्ग बदल गया होगा ? उ०—हां प्र० क्या उसका दिल
अधिक चिन्ता से बेकरार था ? उ०—मुझको ऐसा ही मालूम होत
था प्र०—बयान कीजिये कि यह पलटन का अस्ताल है ? उ०—
हां पलटन और इस्टाफ का अस्ताल है। प्र०—क्या आप वहां काम
करते हैं ? उ०—नहीं सरजनमेजर लोइससाहब काम करते हैं
प्र०—फिर आप वहां क्यों गये थे और क्या आपका वहां जाना स-
ही है परन्तु आप कहते हैं कि डाक्टर लोइससाहब को वहां का चा-
र्ज है ? उ०—सरजनमेजर लोइससाहब मेरे मित्र हैं और जो कि
मैं आया को जानता था और मुझको उससे तअल्लुक था इसलिये मैं
उसके देखने को गया था। प्र०—क्या आपने जाने से पहिले सरज-
नलूइससाहबको इत्तिला की थी उ०—नहीं इसकी कोई जरूरत
न थी क्योंकि वह मेरे मित्र हैं। प्र०—यह मालूम हुवा कि आपने
डाक्टर लूइससाहब के देखने के बिना आया की रोगपरीक्षा की थी ?
उ०—मैं यह नहीं कहता हूं कि मैंने उसके वास्ते परीक्षा की थी॥

आपमुझसे वर्णनकीजिये किआप भावपूनाकर कोजानते हैं ? उ०—हांमैंने उसको देखाहै लेकिन नहीं कह सक्ता किमैं उसकोजानताहूं। प्र०—आपनेउसको कबदेखाथा ?उ०—बड़ौदेसे लिस्टरबोवी साहब केजानेके उपरान्त। प्र०—आपनेउसकोपहिले कभी नहीं देखा ? उ०—मुझकोयाद नहीं। प्र० आपने उसको उस्के पीछे देखा था ? उ०—किसके पीछे। प्र० आपकहतेहैं किमैंने उसकोएक मरतबादेखाथा और अबयह भीकहतेहैं किलिस्टरबोवी साहबके जानेसेपहिले उसकोनहीं देखाक्या आपनेएक मर्तबाके सिवाय और भी देखा था ? उ० जहांतक मुझको यादहैमैं कहताहूं किमैंने उसकोनहीं देखा नउसेबातीकी। प्र०—लिस्टरबोवीसाहब कबगयेथे ? उ०—मुनको याद नहीं। प्र०—मैं आपसे फिरनपूछूंगा केवल इसमर्त्तबे यहपूछता हूं किआपखूब जानते हैं कि उसवक्त से आपनेभाव पूनाकेर कोनहीं देखा ? उ०—नहीं जहांतक मुझकोनिश्चय और स्मरणहै। प्र०—अबआपकीइजाजतसे ९ नवम्बरकीबाबत सवालकरना चाहताहूं परन्तुआयाके विषयमें मुझको पूछना है वहयहहै किमैं समझाकि आपकीऔर आयाकी वार्त्ताहुई थी ? उ०—जितनाकि मुझको स्मरणहै मैं वर्णन करताहूं कि मेरी और आयाकी कुछमामूली बातेंहुईथीं। प्र०—क्याआप कहतेहैं पुलिसके आदमीने तर्जुमानहीं कियाथा ? उ०—जहां तकमुझको स्मरणहै कहताहूंकि कोई मुतरज्जिम नथा। प्र० जोआपने जवाबदिया यहमेरा प्रश्ननहींहै मेराप्रश्न यहहै कि पुलिसके आदमीने आपकी वार्त्ताका तर्जुमा नहींकिया ?उ० अगरआप अबसेप्रलय तकपूछे जावेंगेतोमैं वहीजवाब दूंगाजो कुछकि देचुकाहूं अन्तरनपड़ेगा। प्र०—मुझको यहांप्रलयतक ठहरना मंजूर नहींहै हां अगर कोई ऐसी बात पेश होजावे जिसकाहाल कुछ मालूम नहींहै शायद ठहरूं ? उ०—आप ऐसीहीबातें करतेहैं मानोप्रलय तकआप ठहरेंगे। प्र०—आप नहीं जानते पुलिस के आदमी ने तर्जुमा किया था नहीं ?

मैं पूछता हूं कि तुम किसी पुलिसके आदमीको जानते हो? उ०—मैं किसी पुलिसके आदमीको नहीं जानता। प्र०—आप अकबरअली को जानते हैं। उ०—हां जानता हूं। प्र०—क्या वह अकबरअली था? उ०—नहीं। प्र०—या अब्दुलअली? उ०—यह नहीं जानता एक छोटा पुलिस का आदमी था। प्र०—वह बीमार औरतके कमरेमें क्या करता था? उ०—मैं जानता हूं कि वह औरत पुलिसके पहरेमें थी। प्र०—जब आपने उसके कहा था कि अपने दिलका हाल कहो तो कोई आदमी पुलिसका उस कमरेमें था? उ०—मैं नहीं जानता कि पुलिस का आदमी कमरेमें था या दरवाजे पर। प्र०—मैं बहुत नम्रता से आपसे पूछता हूं कि क्या डाक्टरों में यह बातहै कि एक डाक्टरके बीमार का इलाज दूसरा डाक्टर करै? उ०—मैं नहीं कहसक्ता कि क्या रीतिहै परन्तु सरमेजर लूइससाहबसे मेरी मित्रताहै उनके बग़ैर कहनेके उसबीमारके पासगया था। प्र० डाक्टर सीवर्डसाहब आपसे पूछताहूं और यक़ीनहै कि आप ऐसा ओहदे दार और जानकार मुझको बख़ूबी जवाब देगा कि आपकी रीतिहै कि आप दूसरे डाक्टरके बीमार के पास उसके इत्तिलाके बिना जासक्ते हैं? उ०—हांहै और नहीं भीहै यह बात डाक्टरोंके तअल्लुक़ है जैसी प्रीतिहो वैसा वर्त्ताव करें। प्र०—पस इससे मालूम हुवा कि आपका यह मतलबहै कि अगर आपकी और एक डाक्टरकी प्रीतिहै तो आप उसके बीमार के पास उसकी इत्तिलाके बिना जा सक्ते हैं? उ०—जो कुछ मैं जानता था आपसे कहदिया मुझको आपसे छिपाने की इच्छा नहीं है॥

साहब प्रेज़ीडण्टने कहा कि आप हां या नहींका जवाब दीजिये——गवाहने वर्णन किया कि अगर यह बीमार डाक्टरके निकाहैतो उसकेपास जाना उचित है। प्र०—सरजरण्टबेलन टाइनसाहबने कहा जो बिमार अस्पतालमें हो तो उसकेपास आप जांय? उ०—नहीं। प्र०—मालूम हुवा कि सरजनमेजर ल्यूइससाहब अपनेकाममें बड़े प्रवीणहैं? उ०—बड़े निपुणहैं। प्र०—

को जहर दिया जायगा? उ०—क्या मैंने यह कहाथा। प्र०—मैं आपके इसबात पेशकरता हूं मुझको मंजूर नहीं कि कोई गलती हो? उ०—अगर मैंने ऐसा वर्णन कियातो गलत है। प्र०—आप कहते हैं कि करनैल फियरसाहबने मुझसे कहाथा कि मैंने सुना है कि लोग मेरी जान लेनी चाहते हैं पर अबतक मुझको निश्चय नथा परन्तु अब निश्चय हुवा आपको मालूम नहीं कि करनैल फियरसाहबने किस शख्स से सुनाथा? उ०—जहांतक मुझको याद है कहता हूं कि लोगोंने उनकी जान लेनेवास्ते उनको धमकाया था और उसवक्त तक उनको जहर देते का सन्देह नथा। प्र०—जब आप रेज़ीडन्सीको गये थे तो आपने गिलासको तलछटके समेत देखाथा उ० हां। प्र०—जब आपने उसको देखा था तो तलछट मिलाहुवाथा और गिलासकी पेन्दीमें बैठा हुवा न था? उ०—जब करनैल फियरसाहबने गिलासको तिरछा किया तो तलछटको मैंने पेंदीमें बैठाहुवा देखा। प्र०—क्या यह तलछट पानीमें मिलाहुवा नथा अलग था? उ०—यह तलछट पानीके नीचे बैठा हुवाथा। प्र०—क्या यह वस्तु इसकदर गिलासमें थी कि उसमें पानी पच गया था और केवल तरी उसमें बाकी रहगई थी? उ०—पानी बहुतथा आप ऐसेसवाल करते हैं कि जवाबदेना कठिन है। प्र०—आप कहते हैं कि करनैल फियर साहबने आपसे कहाथा कि तलछट कीरंगत सियाही माइल भूरीथी क्या पिसे हुये हीरे और संखियाका रंग ऐसा होता है मेरे विचारसे इसका यह रङ्ग नहीं होता? उ०—हां सियाही माइल भूरा रङ्ग नहीं होता। प्र०—तो आप इसबातका जवाबदे सक्ते हैं कि संखिया और हीरे के चूर्ण का रङ्ग सियाही माइल नहीं होता है? उ०—हां नहीं होता। प्र०—पस मालूम होता है कि सिवा इन दोनों चीजोंके और कोई चीज भी थी—जिससे तलछटका रङ्ग सियाही माइल होगया? उ०—इस विषयमें मैं कुछराय नहीं दे सक्ता। प्र०—है, है, डाक्टर सीवर्ड साहब इस का जवाब दीजिये॥

उ०—मैंआपसे पहिलेकह चुकाहूं। प्र०—फिर मुझसे कहिये कि आपनेक्या कहाथा? उ०—मुझकोयाद नहींहैकि मैंनेक्या कहाथा। प्र०—शायद पुलिसके आदमीने तर्जुमा कियाहो? उ०—शायद।—क्यातुमजानते होकि उसने तर्जुमा कियाहो उ०—मुझकोयादनहीं। प्र०-डाक्टरसीवर्डसाहबमैंतुमसेपूछता हूंकि हरएक आयाके बयानका शब्दतुमनेअपने कानोंसुना? उ०—मुझको खूबयाद नहीं आपउस बातको पूछते हैं जोमेरे खयालमें नहींहै आपमुझको दरवियानी करारे दिया चाहते हैऔरइसी प्रयोजनसे आप ऐसेप्रश्न करतेहैं। प्र०—क्यामेरीयह इच्छाहै—डाक्टर सीवर्ड साहब जैसे आप बातोंमें सावधान हैं उसीतरह डाक्टरीमेंभी निपुणहैंतो आपसे बढ़कर दूसरा कोई डाक्टरन होगा इसलिये आपदयाकरके बयानकीजियेकि आपने मुतरज्जिम केद्वारा आयासे बातें कीथी? उ०-(बड़े जोरसे कहा)मैं उत्तरनहींदेसका। प्र०—मेहरबानी करके इसकदर गुस्सा न कीजिये अबमेरे सवालका जवाबदीजिये? उ०—मैंकुछ जवाबनहींदेसका। प्र०—आपकोकुछभीतअम्मुलहै? उ०-(मेम्ब-रान्कमीशनकी तरफ देखकर) अगरयह साहबइसीतरहप्रलय तकप्रश्न कियेजायंगे तोसिवा उसउत्तरके जोमैंदे चुका और कुछजवाब न दूंगा और प्रलयतक इनके सवाल नचुकेंगे॥

साहबप्रेजीडण्ट-सरजंटबेलनटायन साहब आपसे हरएक बातपूछनेके अधिकारीहैं डाक्टरसीवर्डसाहबने उत्तर दियाकि जोकुछमैं बयानकरूं उसकोसुनना चाहियेसाहब प्रेजीडेण्टने कहाकिजो सरजन्टसाहब पूछैं उसका उत्तर आपकोदेना चाहिये डाक्टरसाहबने कहाकि मुझको मालूमनहीं। प्र०—सर-जन्टबेलनटायनसाहब काक्याआप कहसक्तेहैकिआपबखूबीहि-न्दुस्तानी बोलसकेंगे? उ०—मैंहिन्दुस्तानीबोल सक्ताहूं लेकि नबखूबी हिन्दुस्तानी नहीबोल सक्ता। प्र०—अबमैं आपसे(दर बार२९ नवम्बरके प्रश्नकरताहूं किआपनेबयानकिया थाकिमु-झसेकरनैल फियरसाहबने कहाकि मुझको खबरपहुंचीहै मुझ

हां वह ढाई चावल के बराबर होगा। प्र०—मैं नहीं समझा कि
आपने क्योंकर दुबारह आज़मायश की? उ०—यदि आपकी
इच्छा हो तो मैं दुबारह आप को आजमायश करके दिखाऊं।
प्र०—क्या आपने उन्हीं वस्तुओं से फिर इमतिहान किया जिनसे कि
पहिले इमतिहान किया था? उ०—हां। प्र०—क्या आपने
उसी तलछट की फिर आजमायश की जो बाक़ी रह गया था?
उ०—हां। प्र०—जो कुछ नली में पड़ा था उसमें क्या आठवां
हिस्सा संखिया था? उ०—मैं नहीं कह सक्ता। प्र०—आपने और
कितना इस तलछट में से लेकर इमतिहान किया था? उ०
एक चुटकी भर मैंने लिया था। प्र०—आपने उस कोयले को
तौला था जिससे आजमायश की थी? उ०—कोयले के तौलने की
कुछ जरूरत नथी। साहब मैजीडस्ट बोले कि श्रीमान् महा-
राजा साहिब कहते हैं कि मुतरज्जिम को तर्जुमा करने को
नौबत नहीं आती कि आप डाक्टर साहब से प्रश्न कर बैठते हैं
इस बात का आगे को खयाल रखिये॥

सरजन्हबेलनाटायन साहबने कहा कि मेरा क़सूर है जो मैं
जल्द २ प्रश्न करता हूं अब आगे से खयाल करूंगा और गवाह से
फिर प्रश्न पूछने शुरू किये। प्र०—क्या तुमने अन्त में आजमायश
उस कदर तलछट पर की जो नली में बच रही थी? उ०—हां सब
के ऊपर की जो कुछ बच रही थी। प्र०—क्या वह एक चुटकी भर
थी? उ०—हां वह चुटकी भर थी। प्र०—क्या तुम्हारे आजमा-
यश करने से उसमें कोई रंग पैदा हो गया? उ०—कोई रंग पै-
दा नहीं हुआ। प्र०—परन्तु मेरी आंखें खुर्दबीन नहीं हैं मैं उस
को रंगहीन कहूंगा? उ०—नहीं वह तो एक चमकती हुई वस्तु
थी। प्र०—एक चिट्ठी जो अभी तुम्हारी इजलास में पढ़ी गई
और जो कि ग्रेसाहब के नाम थी नहीं यह मेरी गलती है जो कि
तुम्हारे नाम ग्रेसाहबने लिखी थी उसमें लिखा है कि मैंने तुम्हारी
चिट्ठी और जो उसके भीतर वस्तु थी पाई क्या कोई तुमने चिट्ठी
लिखी थी? उ०—नहीं उस चिट्ठी से मतलब फियर साहब की

साहब प्रेसीडेण्टने कहाकि सरजन्ट वेलन टायन साहब का यातहै—सरजन्ट वेलनटायन साहबने कहा आप खयाल करें मैंने यह प्रश्न कियाहै कि करनैल फियर साहबने कहाथा कि गिलासमें कोई वस्तु मूरैस्कूकी स्याहीमाइलथी अबमैंडाक्टर सीवर्डसाहबसे पूछताहूंकि ऐसीरङ्गत संखिया और पिसीहुई हीरेकीसी होसक्ती है तो डाक्टरसाहब कहतेथेकि नहींफिर मैंनेपूछा हैकि सिवाइन दोवस्तुओंके औरकिसी वस्तुके हेतुसे का सम्भवहै जिसमें तलछटका यहरंग होगया डाक्टरसाहब कहतेहैं किमैं इसपर रायनहीं देसक्ता? उ०—डाक्टरसीवर्ड साहब मैंने केवल दोही वस्तुओंको देखाऔर कोईवस्तु नहीं देखी। प्र०—आपके इसवर्णनसे मालूमहुआकि जुजोंके देखने केसमय आपने और कोईवस्तु नहीं देखी? उ०—हांपरीक्षाके समयकोई वस्तु स्याहीमाइल मैंने नहीं देखी। प्र०—तो आप इस तलछटका रङ्गक्या बतलाते हैं? उ०—हलका भूरा रंग बताता हूं। आपने थोड़ा पानी भी मिलाया था? उ०—हां। प्र०—डाक्टर सीवर्डसाहब मुझको निश्चयहै किपानी डालनेके पहिलेभी अलगअलग करलिये होंगे? उ०—मैंने पानीका बखूबी इमतिहान नहींकिया। प्र०—मैंजानताहूं जबकोईमनुष्य किसी वस्तुके जुज अलाहिदा करता तोवह उन वस्तुओं का बखूबीइमतिहान करलेता हैजिनकेद्वारा जुजोंको अलगकरता है? उ०—हां बहुधा यहीरीतिहै। प्र०—बहुधा दृष्टिऐसी है कि जबकभी लोगोंनेविषका इमतिहान कियाहैतो जिनवस्तुओं केद्वारा इमतिहान किया गया उनही चीजों में जहर पाया गया? उ०—हांऐसी दृष्टिहै। प्र०—आप कहतेहैं किमैं पानी और तलछट समेत मझोले चमचेका एक तिहाई हिस्सा तल छट होगा? उ०—हां एक मझोला चमचा भरहोगा। प्र० आपनेअपने इजहारमें बयान किया किएक मझोले चमचे के बराबर पानीथा औरपांचचावल बराबर दूसरी वस्तुथी? उ० हां। प्र०-आपने इस तलछट कोक्या कियाआपने जो उसमें

यह कहसक्ते हैं कि २४ दिसम्बर के पहिले यह वार्त्ता हुई थी? उ०—हां निश्चय कर कहता हूं। प्र०—सिवाय इसके और कुछ आप नहीं कहसक्ते? उ०—नहीं और कुछ नहीं कहसक्ता। (फिर तलछट से शीशे के छिलने को आजमायश की तथा इसको बखूबी आजमायश हुई और शीशा छिलगया) साहबशे जोडराटनेसर-जन्टबेलन टायनसाहब से कहा कि आपने बखूबी निशान देखे सरजन्टसाहबने कहा कि हां मैने खूबसाफ तौर से निशानोंको देखा॥

डाक्टरसीवर्ड साहब के दुबारह इज़हार
ऐडवकेटजनरलन ने लिये॥

प्र०—मेरी समझमें यह आया कि जब अस्पतालमें आया नहीं गई थी तो आप उसका इलाज करते थे? हां। प्र०—आपको याद है कि अस्पताल जानेके पहिले कितने दिन आपने उसका इलाज किया? उ०—सिर्फ एक रोज़। प्र०—आपका यह काम भी बतौर डाक्टर रज़ीडन्सी के है कि रज़ीडन्सीके नौकरोंका आप इलाज करें? उ०—हां यदि कोई शख्स बहुत बीमार हो। प्र०—क्या सबबथा कि आपने उसको अस्पतालमें भेजदिया? उ०—मुझ-को वह बहुत बीमार मालूम हुई और उसका इलाज उसके मकानपर बखूबी नहीं होसक्ताथा। प्र०—अर्थात् फिरस्वोबो साहबके अहातेमें? उ०—हां। प्र०—उसकेवास्ते आप अस्प-तालमें दवा तजवीज करनेको वास्ते गये थे? उ०—मेरी दवा तज-वीज़ करनेकी इच्छा न थी मैं केवल उसको देखनेको गयाथा मैंने उस केफेफडे़को देखा और जो कि आया वो बो साहबकी नौकर थी इस लिये मुझे उसको देखना मंज़ूर था। प्र०—यह आया अस्पताल में अलग कमरे में थी या और बीमारों के साथ थी? उ०—अलग कमरे में थी। प्र०—आप किस मुकाम पर पुलिसके आदमीका होना बताते हैं वह कमरे में था या बाहर दरवाजे के बैठाथा? उ०—शायद दरवाजे के बाहर खड़ाथा मैंने कुछ गौर नहीं किया प्र०—जब आप आयाके कमरे में गये थे तो आपके साथ और

चिट्ठीकाहै। प्र०—वहलिखतेहैं किहमनेतुम्हारी चिट्ठीपाईवह क्योंलिखतेहैं? उ०—साहबलैनेकोई चिट्ठीउनकोनहीं लिखी परन्तु करनैलफियर साहबके लिफाफेपर लिखदियाथा मेरा हाथउससमयपीड़ा करताथा और इसवास्तेमैंअलग चिट्ठी न लिखसका। प्र०—क्यावहीचिट्ठी तुम्हारे पासकरनैल फियरसा-हबनेपहिले आईथी? उ०—हां वही पहिली चिट्ठीथी। प्र० क्यासंखियाको शीशेकेबनानेमेंवर्त्ततेहैं? उ०-हांकोई२ शीशोंमें वर्त्ततेहैं प्र०-शीशाजोछिलगयाहैअगरफिररगड़ाजायतोवह फिरभी छिलजायगा उ०—हांबेशक छिलजायगा। प्र०—तुम उसको दिखासक्तेहो? उ०—यदिसाहिबान कमीशनआज्ञा दें तोदिखासक्ताहूं मैंजोडाक्टसाहबने कहाइसवक्त तुमदिखा सक्तेहो? उ०—यदिआज्ञाहोतो दिखासक्ताहूं। प्र०—अच्छाहम-नेदीनियेयह बातहमडाक्टर ग्रेसाहबसे पूछलेंगे। प्र०—अब दूसरेमुआमलेमें आपसेवार्त्ताकरूंगा आपनेबयान किया कि रावजीनेआपकी तरफ किसदृष्टि से देखा? उ०—वह रावजी नथानरसुया। प्र०—हांरावजीने आपको छाता दिया था? उ०—हां। प्र०—उसनेपहिले कभीऐसानकिया? उ०—नहीं। प्र०—जब तक रावजी ने यह बयान नहींकियाथा कि उसने अपनेहाकिमको जहरनहींदिया तो आपने यहजिक्रकिसी और से कियाथा? उ०—हांकिया था। उ०—किस शख्ससे जिक्रकियाथा? उ०—मिस्टरबोडीसाहब से। प्र०—अर्थात्‌यह नौकरआपकी ओरकिसतरहदेखतेथे इसबातकाआपनेउनसे जिक्रकियाथा? उ०—हां। प्र०—आपनेयहजिक्रउनसेकबकिया था? उ०—मैंयहनहीं कह सक्तामगर बडौदेसे रवानाहोनेके पहिलेमैंने उनसेकहाथा। प्र०—मैंनेसुनाहै कि मिस्टरबोडीसा-हबपच्चीसदिसम्बरकोबडौदेसे रवानाहुये? उ०—मैंनहींजानता प्र०—क्या आपकहसक्तेहैं कि एकआधरोज पहिले आपनेउन सेयहजिक्रकियाथा? उ०—मुझकोयादनहीं मगरजहरदिये जानेकेउपरान्त और रवानगीसेपहिलेउनसेकहाथा। प्र०-आप

कोयले और औज़ार मंगायेथे और यहकोयले और औज़ार आपके अस्पतालका असिस्टन्ट लाया था आपकोयादहैकि वह कौनसाअसिस्टन्ट अस्पतालका था? उ०—उसशख़्सका नाम इब्राहीमजोहै परन्तु वह बड़ौदेसे चलागया। प्र०—वहयहूदी था या मुसल्मान? उ०—यहूदी। प्र०—इब्राहीमजो उसवक्त कहांथा वहअपने मकानपरथा या आपके मकान पर? उ० मुझकोयादनहीं कि मैंनेउसको चिट्ठोलिखकर बुलायाथा या किसतरह परन्तु उसको उसके घरसे बुलायाथा। प्र०—यहबात आपने किसीसे नहीं कहीकि औज़ार और कोयले आपकिस प्रयोजनसेमंगाते हैं? उ०—किसीसेनहींकही। प्र०—अस्ताल केअसिस्टन्टसेभो नहीं कहाथा? उ०—हांउससेभी नहीं कहा प्र०—सरजन्टबेलनटायन साहब ने आपसे पूछा था कि अगर। संखियागिलासमें डालनेके पहिले बोतलमें मिलाई जातीतो क्यासंखियापानीके ऊपरतैरनेलगे? उ०—यहमैंनहीकहसक्ता प्र०—मुझको अब सिर्फ इतनी बतका जवाब दीजिये किऐसी ख़ासियत संखिये की है? उ०—हां ऐसी हो ख़ासियत है। प्र०—हीरेका चूर्ण अगर पानीमें डालाजाय तो वह पेंदी में बैठ जावेगा? उ०—हां। प्र०—आपकहते हैं जबमैंने मालूम करलिया कि वास्तवमें संखियाहै तो फिर आपनेकुछ उसकी आज़माइश नहीं की? उ०—हां मैंने फिर आजमाइश नहीं की। प्र०—क्या वजह जो आपने फिर आजमाइश नहीं की? उ०—फिर इमतिहान करना वृथा मालुम हुआ। प्र०—आपने सबतलछट की आज़माइश आपही क्योंनहीं की। उ०—न मेरे पासदवाइयां थीं न औज़ारथे। प्र०—सिवा हीरे के और भी ऐसी चीजें हैं जिससे शीशाछिल जाता है? उ०—हां हैं। प्र० आपऐसी चीज़ों कोजानते हैं? उ०—मैंनहीं जानता हूं। प्र० यह बात डाक्टर ग्रे साहबने पूछी जावेगी मगर आपने गिलास की तलछट में गुबार उठता हुआ कब देखा था? उ०—मैं ने तलछट को फियर साहब के पास पानी मिलानेके पहिले

कोई आदमीसीथा ? उ०—मुझेयाद है कि शायद अस्ताल का असिस्टन्ट सेटमाथा। प्र०—आपकोयाद है किकौनसे अस्ताल का वह असिस्टन्टथा? उ०—मुझको यादनहीं। प्र०—आपकहते हैं कि पुलिसका आदमी दरवाजेपर खडाहुवाथा आप कह-सक्ते हैंकि वहकिस प्रकार के पुलिस का आदमीथा क्या वह बम्बईके पुलिस काथा ? उ०—हां बम्बईके पुलिसकाथा बड़ौदे में पुलिस नहीं है। प्र०—उसकी वरदीकैसीथी (सरजन्टबेलन टायनसाहबनेकहा) कि जब डाक्टरसाहब बयानकरें किउसकी वरदीकैसीथी तोमैंमंजूर करूंगा ? उ०—मुझको एकछोटा पुलिसका सिपाही मालूम हुवाथा सादीवर्दी पहिनेहुयेथा। प्र०—डाक्टर सीवर्ड साहब आप कहते हैं किमैं हिन्दुस्तानी बोलसक्ताहूं परन्तु जल्दी और बखूबीनही बोलसक्ते ?उ०—हां जल्दीनही बोलसक्ता। प्र०—क्याआप इतना बोलसक्ते हैंकि रोज मर्रो की गुफ्तगूमें मुतरज्जिम की जरूरत नहींहै ? उ० हांथोड़ी२ बातोंमें मुतरज्जिम कीजरूरत नहींहै। प्र०—क्या आपको कभी मुतरज्जिम कीजरूरत होती है ? उ०—हांजब जरूरत हुई और जो शख्स मुझको उस वक्त मिल जाता है बुलालेताहूं। प्र०—अबमैं ९ नवम्बरकेविषयमेंआपसेप्रश्नकरूंगा आपबयान करतेहैंक गिलासके तलछट काहलका भूरा रंगथा उ०—हां। प्र०—जबआपको पहिले यह तलछट मिलाथा तो आपनेउसके रंगपरग़ौर कियाथा ? उ०—हां मैंनेग़ौरकिया था गुलाबी मालूम उसकारंग थाजैसाकि चकोतरेके अरक का रंगहोताहै। प्र०—आपने कितना पानी उसमें मिलाया था ? उ०—शायद एक चमचा होगा। प्र०—आपकोयाद हैकि आपने किस बरतनसे पानी लेकर उसमें मिलाया था ?उ० उस बरतनसे जो मुंह धोनेकी मेज़पर रक्खाथा और मुझको ऐसा याद आता है कि वह सुराही थी। प्र०—अर्थात् जो बरतन उसवक्त आपकेसाम्हनेथा उससे आपने पानी लिया ? उ०—हां। प्र०—आपकहतेहैं कि जबआप घरगये तोआपने

भी आजमाइशकी मैं समझा कि यह सफ़ेद संखिया के टुकड़े हैं मैंने उनको थोड़े पानीमें डालकर जोश किया और जोश होने के उपरान्त मैंने थोड़ा पानी लिया और उसमें अमोनियम नइट्रेट आफसिलवरको मिलाया इसके मिलानेसे हलकापीला रंग हो गया फिर मैंने अमोनियलसलफ़ेट आफ़कापरको मिलाया जिससे हलकीसब्ज़ रंगत होगई फिर मैंने ललअब्ररवेड हैडोजनगा- से आजमाइश को पसतीन तरीकों से इमतिहान हुवा तीनों दफ़ा मैंने अमोनिया मिलाई थी लेकिन अमोनिया सबमें नहीं मिलाई थोड़ा पानी दूसरी रीतिके आजमाइशके वास्ते रहने दिया अर्थात् आज्ञासे मारीटक तेज़ाब मिलाया उसको मैंने जोश किया लेकिन वह पानीमें न घुला हर प्रकारके इमतिहानसे मुझको निश्चय हुवा कि यह संखिया है इस आजमाइश से छठा हिस्सा बुरादेका खर्च हुवा सिवाय इसके और तरहसे भी मैंने उसका इमतिहान किया अर्थात् मैंने थोड़ा चूर्ण पानीमें मि- लाया और उसमें तेज़ाब मारीटक डालकर दो तांबे के पत्तरों में रक्खा और उन दोनों पत्तरोंको आगपर रक्खा जब वह खूब गरम होगये तो भूरे रंगकी चीज़ पत्तरोंके भीतर मालूम हुई फिर मैंने एक पत्तरको उठाया और खुर्दबीनसे उसको देखा तो अष्टकोण टुकड़े नजर आये पस इस इमतिहान सेभी मालूम हुआ कि यह संखिया है मैंने कायलेमसी इमतिहान किया मेरे पास वह नैचे है जिनमें मैंने इमतिहान किया गवाहने उस नैचेको निकालकर दिखाया—देखिये इस नैचे में जो धात काला छल्ला पड़गया है वह संखिया है अगर फिर आगपर रखकर खूब गर्म किया जाय तो संखिया फिर असली हालत पर आजाय (यह नैचे डाक्टरसाहब लेलीगई और इर्फ़ (टी) का निशान किया गया) मैंने इस बुरादे से ११ नवम्बर को और कुछ आजमाइश नहीं की न उस दिन मैंने चमकते हुये ज़र्रों की कुछ आजमाइश की हरचन्द संखिया के होनेकी सबतरहसे आजमाइश कीपरन्तु इनसब आजमाइशोंमें इन चमकते हुये ज़र्रोंको कुछ असर

देखा था। प्र०—नरदिन कार रावका—आपकी रायमें जहर सङ्खियाथा या पिसाऊआ हीरा? उ०—सङ्खिया प्र०—अगर हीरेका चूर्ण किसीको दिया जायतो उसकोवह पचा सक्ताहै और उसको दुःखनहीं पहुंचसक्ता? उ०—मैं इसबारेमें कुछ जवाब नहीं देसक्ता फिर मेम्बरान् कमीशन टिफन खाने के वास्ते उठ गये॥

डाक्टर ग्रे साहब का इज़हार।

जबमेम्बरान् कमीशनटिफन खाकरआये तोडाक्टरग्रे साहबकाइज़हार शुरूऊवाउनके इज़हार ऐडवकेट जनरलनेलिये डाक्टर साहबने बयान किया कि मेरानाम वौइलंगटनग्रे है मैं बम्बईकेफौजका एकसरजनहूं और कायममुक्काम कमीकलए नेलायर्ज गवर्न्मेण्टका हूं॥

११—नवंबरको एकरिजिस्टरी की ऊईचिट्ठी डाक्टर सीवर्ड साहबरेजीडन्सी सरजनबड़ौदाके पाससे आईयह एकरजिस्टरीकियाऊवा पाकिटथा जिसपरअब निशानहर्फ(पी)का है यहलिफाफाजो मेजपररक्खा ऊवा है ऊपरकादूसरा लिफाला है जिसवक्तयह मेरेपास पाकिटआया तो उसकीमुहर साबित थी इस लिफाफेमें एकपाकिट और एकचिट्ठी है उसपर हर्फ (एफ) का निशानबना है अन्दरकेपाकिट परभीमुहरसही और साबितथी, डाक्टरसीवर्ड साहबकालेख इसपाकिट परथा जिस लिफाफेपर निशानहर्फ(ओ)का बनाऊवा था उसमेंएक ब्लाटिङ्ग कागज़लिपटा ऊवा मैंनेपाया इसकागजमें मुझकोथोड़ा चूरहमिला जो तौलमें ढाईचावल था उसकी रंगत भूरीथी उसमेंकुछ चमकते ऊये जर्रेभीथे तथाच इस बुरादेके मैंनेअजज़ाअलग कियेजिस तरहसंखिया की आजमाइश होती है पहिलेमैंने थोड़ाचूरह नलकी में रखकर गर्मकिया उससेमालूमऊवा कि एक सफैद चीजएक तर्फको आगई उसको मैंने खुर्दबीनसे देखातो उस वक्तमुझको मालूमऊवा कि किसीचमतीऊईचीज के अष्टकोण रेजेहैं मैंनेउन जर्रोंकी और तरहसे

डालनेवाले जहरहैंअगर सहीबातयह हैकिइन दोनों मेंसे मुश्किल एकवस्तुभीनहीं है जोकुछआप और भेजेंगे उसकोभी आजमाइश करके मैं आपकोइत्तिला दूंगा यदि यह सम्भव है किइस चकोतरे का शर्व्वत जिससें यह जहर मिला हुआ था या उसजगह की मिट्टी जहांकिशर्व्वत फेंकागया था आपमेरे पासभेजेंगे शायद उससेमालूम हो किउससेतांबाथायानहीं।

दस्तखत—डब्ल्यूग्रे कमीकल ऐनैलायजर गवर्नमेन्ट
कालिजलैबुरैरो बम्बई लिखा हुआ
१३ नवम्बर सन् १८७४ ई०॥

सरजन्ट वेलनटायनसाहबने कहाकि इसचिट्ठीको कादरबारै अल्लास साईदाके पढ़ना दुबारहयाद दिलानाहै औरकोई फायदा नहीं——साहबप्रेजीडण्ट ने कहा क्या आपइनकार करते है कि यहचिट्ठी गवाही में शामिल न की जाय सरजन्ट वेलनटायन साहब ने कहा कि मुझको कुछ इनकार नहीहै डाक्टर ग्रे साहबने कहाकि जबमैंने यहचिट्ठीलिखी थी तोमेरे पास कोई और लेख बड़ौदेका नहो आदा जिससें लिखा हो कितलछटमें हीरेका चूरह भी है उसको मैंने अपनी तौरमें मालुम किया इसचिट्ठी के लिखने के उपरान्त दूसरा पाकट रिजिस्टरी कियाहुवा १७नवम्बरको मेरेपास वड़ौदेसें पहुंचा उसमुहरमें चिड़ियाकी चोटीखुदीहुईथी जिसलिफाफेमेंयह पाकिटबन्दथा उसमेंएकपुडिया थीऔर एकचिट्ठीथी औरमुहरसही सालिमथी पाकटमें मिट्टीकेसदृशकोई वस्तुथी१७चावलभरयहवस्तु थी मैंनेउसका इसतिहान कियामालूम हुवाकि इसमेंसोसंखिया औरचमकतेहुये जर्रेथेजैसेकि पहिलेपाकिट मेथे जिसतरह पहिलीपुड़िया कोमैंनेआजमाइश कीथी उसी तरह उसका इसतिहानकिया पहिली पुड़ियामें एकचावल संखिया पाईथी औरउसमेंसिवाचावलथेपसइसमूरतमेंसवादो चावल संखिया एक आदमीके मारने के वास्ते काफीथा अगर मैंकानुनासिबमे होजाता॥ सरजन्ट वेलनटायन साहबनेकहा

नहीं पहुंचा मैंने उन्नीस नवम्बर को खुर्दबीन से इन जर्रों को देखा मुझको खयाल हुआ कि यह पिसाहुआ शीशा है या संग मालूम होता है तथापि इसबारे में डाक्टर सीवर्ड साहबको मैंने लिखा जो चिट्ठी मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब को भेजीथी उसपर (क्यू) का निशान है जब मैंने इस चूरह कोनर्रे पुड़िया में चमकते हुये देखे तो मुझको अतिआश्चर्य हुआ जब खुर्दबीनसे देखा तो हीरेके जर्रे मालूम हुये मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब को जोचिट्ठी भेजीथी और अब उसपर निशान हर्फ (यू) का है उसमें मैंने यह मजमून लिखाथा॥

माईडियर सीवर्ड——वर्त्तमान मासकी १२ तरीख की लिखी हुई चिट्ठीके क्रमसे मैं आपको लिखता हूं कि जब मैंनेबखूबी तौर से उनचमकते हुए जर्रों का इमतिहान कियातो मालूम हुवा कि वह पिसाहुवा हीरा है कोईजर्रे ऐसे चमकते हुये हैं कि ऐसी चमक सिवाय हीरेके और किसी वस्तु मेंनहीं होसक्ती सिवाय इसके वह बहुत सख्त है मैंने तेजाब में उसको गलाना चाहा लेकिन न गली यहबात सिर्फ मेरी देखीहुईहै अगर किसीको संदेह होतो दूसरी रीतिसे भी उसकी आजमाइश करसक्ता हूं ताकि साबितहो कि यह हीरेका चूर्णहै यानहीं करनैल फियरसाहबके मुंहमेंजो तांबेकास्वाद आगया उसका क्यासबब है क्या उसमेंतांबाथा क्योंकि संखियामें कोईस्वादनहीं होता मैंने कितनाही उस पुड़ियाके चूरेकी अजमाश की लेकिन मुझको उसमेंतांबानमिला मगरजोकि अक्सर जौहरपानी में घुलजाते हैंशायदयह जौहरभी अर्कचकोतरे केसाथ घुलगया औरशर्बत केसाथ फिकगया शायदजल्दीसे जोमतलाने की यहवजह हो गई कि संखिया जोशर्बतपर तैरतारहा उसको फियर साहब कुछपीगयेहोंगे औरउसवक्त उनकापेट खाली होगा क्योंकि यहरीति है कि जब संखिया पानी में खूब नहीं मिलाई जाती है उस वक्त तक वह पानीके ऊपरतैरती रहतीहै हिन्दुस्तानी लोगनिश्चय करतेहैं कि संखिया और हीरे का चूर्णबड़े मार-

प्रेजीडएट साहब ने डाक्टर ग्रे साहबसे सवाल किया कि डाक्टरों ने आजमाइशकी है कि हीरेकाचूर्ण मारडालता है या नहीं? उ०–हां आजमाइश की है। प्र०–इस आजमाइश का क्या नतीजा हुआ? उ०–यह नतीजा हुआ कि वह मोहलक नहीं है यस सवाल और जवाब डाक्टरग्रे साहबके पूर्ण हुये–सरजन्ट साहब ने प्रेजीडएट से कहा हजूर जानते हैं कि और कोई कार रवाई शुरू कीजाय–परंतु थोड़े समयके रहजाने से सरजन्ट साहबने कहा कि इसवक्त मेरा गला दुखता है प्रेजीडएट साहब ने कहा बेहतर है फिर अदालत बरखास्त हुई॥

पांचवे दिनका इजलास।

आज के दिन सब मेम्बरान् कमीशन् मौजूद थे परन्तु सरल्यू इसमीथीसाहब और हाजिर और वरवक्त शुरू सुबह से के गायकवारभी मौजूद न थे जिसवक्त रावजी का इजहार शुरू हुआ गायकवार अदालत में आये॥

डाक्टर ग्रेसाहब के इजहार के उपरान्त सरजएट बेलनटायन साहबने उनके इजहारमें सवालातकरने शुरूकिये। प्र० आपके इजहारसे यहबातमालूम नहीं है कि आपने संखियाउस चूरहसे अलगकीया नहीं जो आपको भेजागयाथा? उ०–हां अलग किया। प्र०–हलनेवह छल्लाधातका जोनलकीमेंपड़गया है देखा क्या उस आजमाइशसे और कोई रीति इमतिहान की नहीं जिससे बखूबी साबित होकि संखियाहै या नहीं? उ०–और कोई रीतिनहीं है मैंने इस इमतिहान के उपरान्त खुर्दबीन से भी देखाथा। प्र०–इससे बढ़कर कोई इमतिहान नहीं हो सक्ता है? उ०–हांइससे बढ़कर और कोई इमतिहान नहीं है। प्र०—क्या इसी आजमाइशसे संखिया अलग होजाती है? उ०–हां। प्र०–कई जौहर तांबे के होते हैं क्या वहभी विपहोते हैं? उ०–हां। प्र०–क्या तांबेका जौहर भी जहर होताहै? उ०–हां जहर होता है। प्र०–अगर जौहर तांबे का किसी पतलीवस्तु मे मिलाकर किसी को पिलायाजाय तो उसमेंसु

आपबक्त सुनासिब किसब को कहते हैं? उ०—जबकि आदमी का पेट खाली हो। प्र०—हां मैं पहिले नहीं समझता था मैं वक्त सुनासिब और बातको समझाथा प्रेसीडेण्ट साहबने कहा डाक्टर साहबको गर्ज यह है कि संखिया ऐसेवक्त पर दीजाय तो खूब कारगर हो डाक्टरसाहबने बयान किया कि संखिये का असर आध घण्टेमें एक घंटे में होजाता है उसकी तासीर यह है कि निरघुलता है जो सतगाता है औ होते हैं छाती सूख जाती है दस्त आते हैं अगर संखिया थोड़ी २ दीजावे तो आंखों से पानी बहता है आंखोंको जरर पहुंचता है मैं नहीं कहसक्ता कि हीरेका चूर्ण मिलानेसे उसका सुहलिक होना जियादा होना-ताहै ऐडवोकेट जनरल साहबने कहा। अगर एकबोतल में संखिया डालीजावे जिसमें पानी भराहो और वह हिलायाजाय और फिर किसी पतली चीज़में वह पानी डालाजाय तो संखिया सब में मिलसक्ती है? उ०—हांडाक्टर साहबने बयानकियाकि ३० दिसम्बरसन् १८७४ ई० को एक पाकिट जिस्टर सूटरसाहबका भेजा हुआ मेरेपास पहुंचा उसमें एकलिफाफाथा और उस लिफाफेमें एकपुड़ियाथी जबमैंने पुड़ियाकीवस्तु देखी तो उसमें सातचावल संखिया वैसीहीथी जिसकोमैं पहिलेसे अजमाइश कर चुकाथा औरडाक्टर सीवर्डसाहबकी दरख़ास्त अनुसारमैंने कुछ इम्तिहान कोयलेका २१ जनवरीको कियावहसाफ कोयला था उसमें कुछ भी संखिया नथीबड़े२ डाक्टरोने लिखाहै कि हीरेका चूर्ण कोई जररनिशानी नहीं पहुंचाता। प्र०—ऐडवकेट जनरल। डाक्टरग्रेवर्ज साहबअपनीऔषधि केगुणोंकी किताबों में क्या लिखते हैं कि हीरेका चूर्ण जहर मोहलिक है अभी यह सवालपूर्ण नहींहुआथा कि सरजल्वेलनटायनसाहब बोलउठे कि डाक्टरग्रेवर्जसाहब की रायनहीं मानी जा सक्ती ऐडवकेट जनरलनेकहा कि मैंडाक्टर ग्रे साहब से केवल इतना पूछता था कि उनकीराय डाक्टर ग्रेवर्ज साहब कीराय के अनुकूल है या नहीं, डाक्टरग्रेसाहबने कहा कि मेरीरायउनकेअनुकूल है

लाने और कफ आनेलगा होगा ? उ०—हां इतनी जीमतलाने और कफके आनेवास्ते काफीहै । प्र०—आप कहतेहैं कि अगर कोईशख्स तांबेका जौहरखावे तो उसकाभी यही हालहोता है ? उ०—हां बुरन्तही जीमतलानेलगताहै । प्र०—डाक्टर ग्रे साहब आपको बखूबी अजजा के अलग करनेमें अभ्यास है यह बात उचित थी या अनुचित कि डाक्टरसीवर्ड साहबने गिलास की तलछटसे बगैर अजसायश के पानी मिलाया? उ०—हां उचित थी लेकिन (अभीप्रश्नपूर्णनहींहुवा था कि फिरसवालकिया गया) प्र०—मेरे इसबातके कहनेसे यह मतलब नहींहै कि डाक्टर सीवर्ड साहबने जानबूझकर खराबकामकिया परन्तु सम्भव हैकि पानीमेंभी कोईजुज़ जहरीलाहो? ०—उ० हांमुमकिन है प्र०—क्यामेरा ख़यालसहीहै कि दसबारह दिनके उपरान्त दूसरी पुड़िया आपके पास भेजीगई जिसके निस्बत बयान है कि अमीनसेखुरचकर मट्टीभेजीगई? उ०—हां छः दिनके उपरान्त ॥

सरकार के वकील ने डाक्टर ग्रे साहब के फिर

इज़हार लिये ।

प्र०—तुमनेसंखियेको उसचूरेसे जोतुम्हारेपासभेजागयाथा बखूबी अलगकिया ? उ०—हांबखूबी अलगकिया साहबप्रेजीडएटने कहाकि मिस्टरब्रैन्वलसाहबकहतेहैं कि सुतरज्जिमने तज्जुर्बा गलतकिया उसनेतज्जुर्बा कियाकि मुमकिनहै संखिया का अलगहोना चूरेसे सुतरज्जिमने अपनीगलती मानली प्र०-आपनेपहलीया दूसरी पुडियामें तांबेका जौहर पायाथा ? उ० नहीं प्र०-आपकोकरनैल फ़ेयरसाहबकी चिट्ठीमेंमालूमहुआ होगाकिइसमें तांबेकाहोनाभी सम्भवितथा आपने तांबेकेहोने कीभी आजमाइशकीथी ?उ०-हांमैंनेतांबेके होनेकी आजमाइश कीथी प्र०-क्यासंखिया ऐसाविषहैकि वह नहींपचता? उ० नहीं । प्र०—पसपाखानेके रास्तेसे कुछनिकलजाताहै और कुछ रहजाताहै उ०—हां । प्र०—आ पसेपूछागयाथाकि तुममेंसे

से वस्तुयी तांबेका मजा आजायगा? उ०—हां। प्र०—मैंनेसुना है कि इसतांबेके जौहर का मजाऐसा तेजहोता है कि अगर कोई शख्स उसको गलती से खाजाय तो शीघ्र मालूम होजाय? उ०—जबान को लगतेही उसका मजा मालूम हो जावेगा। प्र०-यहमजा कुछदेरतकरहेगा? उ०—हां कुछ देरतकरहेगा। प्र०—क्याइसकी पहिचान यह भीहै जबउसकोकोई शख्सखा जाय तो उसके कण्ठ में कांटेसे पड़जाते हैं या उसकीखासियत क्याहै? उ०— उसकी खासियत जहरकीसी है और उस के हल्कमें खुश्कीआजाती है। प्र०—औरक्याउसके पेट मेंपीड़ा भीहोती है? उ०—हांदर्द भी होजाता है। प्र०—क्या मुंहमें कफभी आनेलगता है? उ०—इसबातकोमैं नहीं जानता। प्र० क्या कुछ थोड़ा कफ आता है? उ०—हां जब वह अपनी तासीर करता है आताहोगा। प्र०—आधघण्टेमें याएकघण्टे में? उ०—इससे भी कमदेर में तांबेकीतासीर होतीहै। प्र० शायदइसका क़ायदा है किअगरखाली पेटमेंजाय तो जल्द असर करे? उ०— हां यह सही है। प्र०—जब वह अपनी तासीरकरता है तो बराबर थूक आताहै? उ०—हांजब जो मतलायेगा तो जरूर थूक आयेगा। प्र०—अगरथोड़ीसंखिया खाईजाय तो शायदथूक न आये और बराबररोज खाईजाय तोथूकआना शुरूहोजाय? उ०—हां यहीबात है। प्र०—तो यहबातकुछअवश्य नहींहै जिसको संखिया दीजाय उसकोथूक आवै? उ०—नहीं। प्र०—आपके बिचारसे ढाईचावल संखिया एकआदमी के मारडालने के लिये काफीहै? उ०—हां। प्र० करनैलफियर साहबका बयानहै कि उनका जीमतलानेलगा औरऐसीदशा होगई जिसतरहकि किसीको संखियादी जाती है मगर इस्क़ोमकपन्थ को उनकेवास्ते कुछ जरूरत नहीं हुई मालूमहोता है कि उन्होंनेबहुत कम संखिया खाई होगी? उ०—हां बहुतकम संखियाखाई होगी। प्र०—डाक्टर ग्रे साहब क्या आपके बिचारसे ऐसीथोड़ी संखियाके खानेसेजीमत-

उ०—हां कई वस्तु हैं। प्रश्न। श्रीमान् महाराजा जैपुरका यह बात पूछते हैं कि संखिया पानी मे घुल सक्ती है? उ०—हां घुल सक्ती है तिसपीछे ऐडवकेट जनरल ने प्रेसीडएट साहब से कहा जो गवाहोंका कटहरा कुछ पीछेको हटा दियाजाय तो उचित है क्योंकि यूरोपियन गवाहों के वास्ते कटहरा आगेको बढ़ा दियागया था अब हिन्दुस्तानी गवाह आवेंगे—सो कटहरा पीछेको हटा दिया गया और एक गवाह हिन्दुस्तानी तलब होकर उसमें खड़ा किया गया था—साहब प्रेसीडेएटने पूछा कि यह गवाह कौन शख्स है ऐडूवकेट जनरलने उत्तर दिया कि इसका नाम अब्दुल्ला है॥

मुहम्मद अब्दुल्ला गवाह का इज़हार॥

मुहम्मद अब्दुल्ला के इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहब ने लिये उसने वर्णन किया कि जब करनैल फियर साहब बड़ौदे में रेजीडेन्टीपदपर नियतहोकर आये तो उस समयसे मैं करनैल साहब का नौकर हूं——करनैलफियर साहब पालन पुरसे यहां आये—मैं उनके पीछे बड़ौदेसे आया पूर्व्वमें जब कि मेरी उमरकमथी और लड़का था तो करनैलफियर साहब अपनी मेम साहिबा समेत इङ्गलिस्तान को जायाकरते थे उस समय मेंभी उनका मैं नौकर था—पन्द्रह वर्षसे मैं उनकी नौकरी करता हूं—कभी मौकूफ होजाता था और कभी फिर रखलिया जाता था गतनवम्बरमें मैं उनका नौकर था चोबदारीभी करचुका हूं और रमज़ान महीने में दूसरे दरजेका मैं नौकर था और दूसरे दरजे को मुलाज़िमी का कार्य्य शर्व्वत तय्यार करने का था जब मैंबीमार अथवा ग़ैरहाज़िर होजाता तो खानसामा शर्व्वत बनायाकरता करनैलफियर साहबप्रति दिनयहशर्व्वत पिया करते ९ नवम्बर को उस कमरे में जहां कि शर्व्वत बना करताथा मैंने शरबततैय्यार किया और उसको खानेके कमरे में लेगया वहांपर मैंने एक तश्तरी और एक बरतन और एक छुरीलेकर बरतन से फलीकीलेकी और दोतीन नारंगियां रस

के स्वाद होने का क्या कारण था क्या ऐसा मज़ा संखिया के खाने से ही होजाता है? उ०—इस विषय में मुखतलिफ राय है। प्र०—इस बारे में आपका क्या मत है? उ०—तो आप यह पूछते हैं कि संखिया में मज़ा है या नहीं साहब प्रेज़ीडण्ट बोले कि आपको अपनी निश्चय से क्या मालूम हुआ? उ०—मैंने उसको चक्खा और दूसरी तरह से मैंने उसकी परीक्षा ली पर मुझको उसका कोई मज़ा न मालूम हुवा ऐडवकेट जनरल ने कहा शायद आप ने संखिया थोड़ी चक्खी होगी सर जन्टवेलन टायन साहब ने कहा कि इतनी ही कारनैलफियर साहिबने चक्खी होगी उ० नहीं मैंने काफी संखिया चक्खी थी और मैंने देखा है कि जिन लोगों ने संखिया खाई उनका वर्णन है कि मुंह में धातका सा स्वाद आजाता है साहब प्रेज़ीडेण्ट ने कहा कि डाक्टर साहब केवल उतना ही कहसक्ते हैं जो पहिले केवड़े २ डाक्टरों की राय होचुकी हैं? उ०—दश बीस मनुष्यों से मेरा साबिका हुआ जिन्होंने संखिया खाई उन्होंने वर्णन किया कि मुखमें धातका सा स्वाद आजाता है। प्र०—तीसरे पाकिट में जो आपके निकट संखिया रक्खी गई वह वैसी ही संखिया थी जैसे कि प्रथम और दूसरे पाकिट में थी? उ०—हां ऐसी ही थी। प्र०—क्या संखिया सब एक ही प्रकार की होती है? उ०—नहीं तरह २ की होती है। प्र० क्या आपने बुरादे से इतना संखिया अलग करलिया था कि आप कहसकें कि तीसरे पाकट में संखिया वैसी ही थी जैसे कि बुरादे में थी? उ०—हां मैंने भले प्रकार खुर्दबीन से देखा और मालूम हुवा कि वही संखिया है। प्र०—पस आपको मालूम हुवा कि यह वही संखिया थी? उ०—हां वही संखिया। प्र०—आपने अच्छी तरह देखा कि वही संखिया थी? उ०—हां मैंने खुर्दबीन से देखा कि वही संखिया थी। प्र०—जिसको आप धातका मज़ा बयान करते हैं क्या उससे तुम्हारा प्रयोजन तांबे के स्वाद से है? उ० हां। सरदिनकरराव ने कहा संखिये के सिवा और भी इस प्रकार की वस्तु हैं जिनकी खासियत संखिया की हो और प्राणहर हों?

कोसाफ करताथा ? उ०—दोमनुष्य उसमें सोतेथे और वही साफ कियाकरते थे। प्र०—मेरे प्रश्नका यहउत्तरनहीं हैतुमने ९ नवम्बरको साफकरते हुयेबरामदेको देखाथा ?उ०—नहीं॥

इज़हार गोविन्द बालू॥

गोविन्दबालू बुलायागया और मिष्टर अनवरारटी साहब ने उसके इजहार लिये उसने कहा कि मैं हम्माल हूं और रेजीडन्सी कानौकर हूं नवम्बीयुत करनेल वाकर साहब दो वर्ष की छुट्टी लेकर इंगलिस्तान को गये थे मैंउस समय में नौकर था इसको पांच छः वर्षव्यतीत हुये मेराकाम है कि साहबरेज़ीडन्टकेनिजकी कचहरीका कमरा साफ किया करूं मुझको ९ नवम्बर सोमवार अच्छीतरह यादहै कि उसदिन भोरको मैंने कमरा साफकिया था ७ बजेसे पहिले जब साहब हवा खानेको गयेथे तो मैंने कमरा साफ किया था और मैं उसदिन कमरे में आध घंटे या पौन घंटे तक रहा अभी मैं कमरेके भीतर ही थाकि अब्दुल्ला भी कमरेमें आया-लक्ष्मण सिपाही दवातलियेहुये बाहरखड़ाथा सबसे प्रथम यलपा उस कमरे में गया और वह कमरे को साफ करके चला आया यलापा दूसरा मजदूर है-अब्दुल्ला भीतर था और साहबके कपड़े निकालता था कपड़ों के निकाल ने के पीछे बूट साफ किये और बाहर निकल आया रावजी हवालदार भी उस कमरेमें गया परन्तु अब्दुल्लाके निकल आनेकेपीछे वहगया था रद्दीकी टोकड़ी साहबकी मेजके पासरहा करतीथी रावजीने कहा कि इस रद्दीकी टोकड़ी को दूसरी टोकड़ी में कर देना चाहियेयह रद्दीकागजको इकट्ठी को जातीथी इसलिये उस को फेंका नहीं करते थे-दो टोकड़ी रद्दीकी रहती थीं एक टोकड़ी भीतर रहतीथी और दूसरी बाहर रावजीने भीतरकी टोकड़ीके कागज बाहरकी टोकड़ीमें डालदियेसाहब प्रेजीडे- ण्टने कहा कि इस बात के कहने से तुम्हारा क्या मतलब है गवाहने कहाकिजो टोकड़ी भीतरके कमरेमें रहतीथी उसके

सरजान् वेलन टायन साहवके प्रश्न॥

प्र०—उस कमरेके सम्मुख बरामदाभीथा वा नहीं ? उ० हां बरामदाहै और उसबरामदेमें भीतरऔर बाहरसे रस्ता है। प्र०—यहबरामदा रोजसाफ कियाजाताहै ? उ०—बाजर लरतबा—औरजो बरामदा भीतर की ओरहै वह रोज साफ कियाजाताहै—औरमैं अच्छीतरह नहींकहसक्ता कि बाहर काबरामदा प्रति दिन झाडा जाताहै यानहीं। प्र०—मैंभले प्रकारनहीं समझाता कितुम भीतरकाबरामदा किसको कहते हो ? उ०—साहबकी कचहरीके कमरेमें जानेके दोमार्ग हैं एकबाहरके बरामदेसे औरदूसरे अन्दरके बरामदेमेंसे होकर है। प्र०—एक बरामदाहै यादो बरामदे हैं ? उ०—बरामदा एकहै परथोड़ा बरामदा खुलाहुवाहै। प्र०—यहबरामदारोज़ साफहोताहै ? उ०—हांभीतरसे प्रतिदिन साफहोताहै। प्र० उस रोजयह बरामदा साफ किया गयाथा या नहीं ? उ० मैंयहबात अच्छेप्रकार नहींकह सक्ता क्योंकि वहमेरा काम नहींहै मजदूरका कामहै। प्र०—साहब ऐडवकेट जनरल ने प्रश्नकियाकितुमने ९नवम्बरको देखाथा किकोई मनुष्यबरामदे

कागज बाहरके कमरेकी टोकड़ी में डाल दिये गये अर्थात् रातको भीतरकी टोकड़ीसे वह कागज लाया और बाहर की टोकड़ी में वह कागज रख दिये भीतर जो लेख है उसको मैं साफ किया करता हूं सुबहको नेकी सेजको भी मैं भले प्रकार जानताहूं प्रतिदिन नवीन जल लाकर उसपर रक्खा करता हूं ६ नवम्बर को उसपर मैंने नवीन जल बाहर के घड़े से लाकर रक्खा और उस घड़े में पानी भीस्तीभरा करता है-यह जल केवल साहब लोगोंके पीनेकेलिये है मैंने अब्दुल्लाको शर्बत लाते हुये और मेजपर रखतेहुये नहीं देखा मैं सातबजे दूसरकामरे में गया था-जब साहब हवाखाकर लौट आये मैंने उनको नहीं देखा सरजन्टबेलनटायनसाहबनेगवाहसे कोईप्रश्न नहींकिया॥

ऐडवकेट जनरल ने कहा कि मैं यलापा नाम दूसरे मजदूर को बुलाता हूं-साहब मेजीडस्ट ने कहा कि आपने घड़े के विषयमें कोईप्रश्न नहीं किया तथाच गवाह फिर बुलायागया और ऐडवकेटजनरल ने उससे प्रश्नकिया॥

गवाहने वर्णन किया कि खानेके कमरेके बाहर एक दीवार है जहांकिघड़े रक्खेजातेहैं-उसके सामने दरबारका कमरा है वहां मनुष्यों का आवागमन रहता है उस स्थानपर घड़े रहते हैं-साहब ऐडवकेट जनरलने कहा कि पहिलेसे अबकुछ रेजी-डन्सीका प्रबन्ध पलटगया है-साहब प्रेसीडन्टने सरजन्ट बेलन-टायनसाहबसे कहाकि आप इसगवाहसे कुछसवाल करना नहींचाहते उत्तरदिया नहीं॥

इज़हार यलापा गवाह॥

यलापाके इज़हार ऐडवकेट जनरलने लिये उसने वर्णनकिया कि मेरा नामयलापा नरसूहै मैंमजदूर रेजीडन्सीका नौकर हूं ९नवम्बरको साहबका कमरा साफ किया था॥

सरजन्ट बेलनटायनसाहब ने इसगवाह से कुछ सवालात नहीं किये॥

इज़हार नाटाजुग्गा गवाह ॥

नाटाजुग्गाके इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसनेकहा कि मैंबाजारका मुहतमिम हूं और सफाईआदिकी देखभालका कार्य्यमेरे संबंधितहै ९ नवम्बर मुझको भलीभांति स्मर्णहै मैं सालिम को जो गायकवार का सवार है जानता हूं मैने ९ नवम्बर को भोरको आठ बजे उसको देखाथा—मैं एकमुहल्ला कमातीपुरा है उसको साफ कराताथा सालिम बाजारकी तरफ़ घोड़ेपर सवार हुवा घोड़ेको खूब तेजलिये जाताथा वहनगरकी ओरसे आताथा और सदरबाजारको जाताथा वहमुझको पुलपर मिलाथा मैं जुग्गा और रावजी कोजो रजीडन्सीमें मुलाजिमहै जानताहूं यहदोनों सदरबाजारमेंरहतेहैं पांचमिनटके उपरान्त सालिम घोड़ेपर सवार उसतरफ से वापिस आया और शहरकी ओर गयाउस समय उसकाघोड़ा बहुततेज नहींजाताथा मैनेजम्मूमियां कोतवाल सेसालिमका जिक्रकिया जबसदर बाजारसे वहलौट आयातो मुझसेकुछ बातकीथी ॥

सरजनूबेलनटायन साहब के प्रश्न नाटाजुग्गासे ॥

प्र०—जबतुमसे और सालिमसे बातेंहुईथीतो सालिमका घोड़ाधीरे २ जाताथा वा तेजजाता था ? उ०—जाते समय अतितीव्र जाताथा और आनेके समय धीरे २ । प्र०—सालिम कानाजविदको दियेजानेसे तुमसे किसीने कहाथा ? उ०—नहीं तिसपीछे रावजी बुलायेगये उससमय सरजन्ट बेलन टायन साहबने कहा कि मैं चाहताहूं कि महाराजा साहिब भी बुलायेजांय सो प्रेजीडन्ट साहब की आज्ञानुकूल महाराजा साहब बुलाये गये ॥

प्रेजीडण्टसाहबने पूछा कि महाराज को क्यों बुलातेहो सरजन्टसाहबने कहाकि महाराजा साहबने कहाथा कि जब रावजीके इज़हारहोंतोमैंबुलालियाजाऊं—एडवकेटजनरलने

कारनैलफियरसाहबके विषदियेजानेका उद्योग हुआहै यहतुम ने उससेइत्तिलाके पहिलेकहाथा या उसकेवर्णनके पश्चात् ? उ०—जिससमय मैनेडाक्टरसीवर्ड साहबसे इत्तिलापाई उसी समयमैनेनाटा जुम्मासेकहाथा साहब प्रेजीडण्टने कहा कि मेरीसमझमेंनहीं आताकियह गवाहक्याकहताहै उससेफिर पूछाजायसो पूछागयातो उसनेकहाकि प्रथमसुझसे डाक्टर सीवर्डसाहबने कहाथा इसके उपरान्त मैने नाटाजुम्मा से कहा और उससे मैंनेइसप्रयोजनसे कहाथाकिकुछ ब्योरेवार वृत्तान्तउससे मालूम हो। प्र०—जबतुमनेनाटा जुम्मासेकहा था तोयहभीतुमने उससेकहाथा कि यह बातडाक्टर साहब ने मुझसे कही ? उ०—हां॥

सवालात जो जम्मू मियाँ से सरजन्‌ वेलन टाइन साहब ने किये॥

प्र०—जब तुमने नाटाजुम्मासे वहकहा जो तुमसे डाक्टर सीवर्ड साहबने कहा था तो तुमसे नाटाजुम्माने कुछ कहा था ? उ०—हां। प्र०—इसकेपीछे तुमनेडाक्टर सीवर्ड साहब को देखा ? उ०—हांदूसरेरोज प्रातःकालको। प्र०—उनसे तुमनेवहीकहा जोनाटाजुम्माने तुमसेकहा था ? उ०—हां। प्र०—डाक्टरसीवर्ड साहबने तुमसे तहक़ीक़ात करनेको कहा था ? उ०—हां। प्र०—तुमसेडाक्टर सीवर्डसाहबने क्या कहा था ठीक२वर्णन करो ? उ०-मुझसे उन्होंने कहाथा किएक मनुष्यनेकरनैल फियरसाहब को बिषदिया परन्तुमालूमनहीं कि किसनेदिया सोतुम उसको निश्चयकरो। प्र०—क्या तुमसे केवल इतनाही डाक्टर साहबने कहाथा ?उ०—हां इतनाही कहा था। प्र०—तुमको भलीभांति मालूम है कि इतनाही कहा था ? उ०—हां। प्र०—उन्होंने किसी मनुष्यका नाम नहीं लिया ? उ०—उन्होंने किसीका नाम नहीं लिया। प्र०—यह तहक़ीक़ातंतुमको क्यों सुपुर्दकीगई ? उ०—यह तहक़ीक़ात मुझको इसवास्ते सौंपीगई किमैं यहांका कोतवाल हूं॥

नहीं करनैलफियर साहब अलग बैठे थे। प्र०—तुमने करनैल फियरसाहबको कब्रू अपने किसी बयानपर दस्तखत किये थे? उ० नहीं क्योंकि करनैलफियरसाहब वहां मौजूद न थे। प्र०—तुमने मिस्टर बोवी साहब से कहा था कि जब तुम बाजारसे पलट आये तो तुमने सालिम से कह दिया था कि बिस्कुट तय्यार नहीं हैं? उ०—हां मैंने दूरसे कहदिया था। प्र०—दोमिनट हुये तुमनेवर्णन कियाथा कि बाजारसे लौटतेहुये मैंनेसालिम को नहीं देखा अब बयान करो कि तुमने सालिमको कबदेखा था? उ०—जब मैं डाक्टर साहब के बंगले से वापिस आता था तोस्कूलकेनिकट उसको देखाथा। प्र०—जबतुमने स्कूलकेनिकट देखाथा तो कौनवक्तथा? उ०—साढ़ेसात या आठ बजे होंगे। प्र०—इसके उपरान्त तुमने सालिमको नहीदेखा? उ०—हां जब मैं बंगले को आया था उस समय सालिम को देखा था॥

ऐडवकेटजनरलने मुहम्मद अलीबख़्श का दूसरी बेर इज़हार लिया।

प्र०—जब तुमने सालिम को इस्कूलके निकट और डाक्टर साहबके बंगलेके पास देखा था तो वह क्या करता था? उ० वह नगरकीओर जाताथा। प्र०—घोड़ेपर यापैदल? उ०—घोड़े पर। प्र०—कितनी देरके पीछे तुमने उस को घोड़े पर देखा था? नौबजे॥

साहबप्रेजीडएट ने पूछा कि बंगले पर सुतरज्जिम ने कहा हां माईलार्ड—मिस्टरअनेबरारटो साहबने कहा कि रेजीडन्सी पर—सुतरज्जिमने कहा हां हां रेजीडन्सी पर॥

ऐडवकेटजनरलने गवाहकी तरफ देखकर प्रश्न किया कि तुम से और सालिमसे कुछबातेंहुईंथीं? उ०—उससमय कुछ बातें नहीं हुईं। प्रश्नमरदिन दार रावका—क्या सालिम का यह नियमथा कि प्रतिदिन रेजीडन्सीको आया करताथा वा उसके आने का कोई मुख्य दिन नियत था? उ०—सोमवार और इतवार को आया करता था। प्र०—९ नवम्बर को क्या दिन था? उ०—सोमवार और देवालीका दूसरादिन था

कहा कि एक गवाह और है जो इजाजत होतोबुला लिया जाय—सो मुहम्मद अलीबख्श गवाह बुलाया गया॥

मुहम्मद अलीबख्शगवाह का इज़हार॥

मुहम्मद अलीबख्शका इज़हार मिस्टर अनवरारटीसाहब ने लिया उसने कहा कि मैं रेजिडन्सीका चपरासी हूं ९ नवम्बर सोमवार मुझको अच्छीतरह स्मर्णहै सालिम जो गायकवारका सवारहै उसको मैं जानताहूं—साढ़ेछ: बजे या सात बजे मैंने सालिमको रेजीडन्सीमें देखाथा उससमयतक साहब रेजीडराटहवाखोरी से लौटकर नहीं आये थे—मैं डेवढ़ी में एक सन्दूकपर बैठाहुवाथा और सालिम घोडीकीबाग पकड़े हुये खड़ाथा यह सन्दूक डेवढ़ीके बाईं तरफ़ रक्खा हुवाहै जिस समय डाक्टरसीवर्डसाहब के निकट मैं चिट्ठीलेगया उससमय सालिमकोमैंनेवहां नहींदेखा मुझसे और सालिमसे कुछबातें हुईं थीं उसने कहाथा कि तुम बाजारको जातेहो एकरुपया लेतेजाओ मुझको थोड़े बिस्कुटलादो जबमैं रेजीडन्सीको लौट आयातो मैंने सालिमको वहां नहीं देखा उसने मुझसे नवह रुपयामांगा न बिस्कुटमांगे मुझे स्मर्णहै कि उसदिनमैंने मिस्टरबोवीसाहब को देखा था—दो तीनदिन के पीछे साहब रजीडराटने मुझे आज्ञादी कि मैं सालिम वा और किसी मनुष्यसे न बोलूं उससमय मैं रेजीडन्सीको लौटआया मुझको डाक्टर सीवर्डसाहब मिले थे—मैंने सलामकिया तो डाक्टर साहब ने मुझसे पूछाकि तुम क्या लायेहो मिस्टर अनवरारटीसाहबने कहा कि मैं तुमसे यहबात नहीं पूछताकि उन्होंने तुमसे क्या पूछाथा और तुमसे डाक्टरसाहबबोले थे या नहीं? उ०—हां बोले थे और मैं उनसे बोला था—मिस्टर ब्रेन्सनसाहब ने इस गवाहसे प्रश्न किये॥

प्र०—करनैलफियरसाहब ने तुम्हारे इज़हारलियेथे? उ० नहीं मिस्टर बोवीसाहब ने मेरे इज़हार लिये थे। प्र०—यह इज़हार करनैलफियर साहब के रूबरू उन्होंने लियेथे? उ०

यशवन्तरावकेसाथ आये और मैंनेउनको पहिचाना और उठ करसलामकिया महाराजा साहिबनेमुझसे कहाकितुमबंगले से खबरलासक्ते हो जोबंगलेसेखबर लाओगे तो मैंतुमको खूब इनआम इकराम दूंगा और जबखबर लाओगे तोमैं तुमको खुशकिया करूंगा तुममुझको सदाखबरेंदियाकरो मैं तुमको हमेशाखुश किया करूंगा महाराजा साहब ने यह भी मुझ से पूछाकितुम रेजीडन्सीके जमादारको भलीभांति जानतेहो मैंनेकहाहां महाराजासाहब ने मुझसेयहभी पूछाकि उससे और तुमसे कुछस्नेहहै मैंनेकहा हां महाराजा साहबने कहा कि आगे जमादार को भी अपने साथलाना मैंने कहा बहुत अच्छा इसके पीछे महाराजा साहब मुझ से इधर उधर की बातें करने लगे॥

ऐडवकेट जनरलनेकहा किइधरउधर के शब्दकाअर्थ इस से उत्तमऔर नहीं होसक्ता उसने कहा किनहीं इससे यह मतलबहै कि मुतफर्रिक्ष बातेंहुवा कीं॥

तिसपीछे गवाहने वर्णनकिया कि जबमैं महाराजा साहब के निकटजाया करताथा तो यशवन्तराव और सालिमसवार मेरे हमराह जायाकरते थे मैं सदैव महाराजा साहिब को रेजीडन्सी में लोगोंके आनेकी इत्तिलादिया करताथा॥

फिर मेम्बरान कमीशन टिफन खानेको वास्ते उठे॥

जब टिफनके पीछे कमीशन के मेम्बरान् एकत्र हुये तो उस गवाहने वर्णन किया कि जब पूर्व्वमें कमीशन इकट्ठी हुई थी तो उस समय में मैं तीनबेर महाराजा साहब के निकट गया था सदाउसी मकानमें महाराजा साहबसे मेरीभेंट हुई और जिस प्रकार कि पहिली बेर हुई उसी तरह दूसरी मरतबा भी हुई मैं हमेशा महाराजा साहब को इत्तिला दिया करता था कि रेजीडन्सी में क्या कारखाई होती है क्योंकि मैं कमीशन की कारखाई को भलीभांति जानताहूं मैंसुना करताथा कि लोग कमीशन के रूबरू क्या शिकायत करते हैं यही महाराजासाहब

उसमसलब मल्हारराव उसीअदालतमें आये और रावजीगवाह बुलाया गया ॥

इज़हार रावजी गवाह ॥

रावजी रहोसन के इज़हार ऐडवकेट जनरलने लिये उसने कहा किमैं रेसीडन्सी के चपडासियों का हवालदार था और डेढ़वर्षयासवा वर्ष से इसओहदेपर नियत हूं ॥

करनैल फ़ियरसाहबने मुझको नियत कियाथा मैं सदरबाजारमें रहाकरताथा कोई रेसीडन्सीका नौकरमेरे साथ या मेरेपासनहीं रहताथा मैं सालिमको जानताहूं जो महाराजा साहिबका एकसवारहै जबरहबंगलेको आया करता था उस समयसे उसकोमेरी मुलाक़ातहै बंगलेसेमेरा अर्थरेसीडन्सीहै कमीशन के बैठने के दो महीने पहिले जो काश्तकारों की नालिश के सुनने के लिये हुई थी और जिसको सवावर्षबीता सालिमनेमुझसे कहाकिमहाराजा साहिबनेतुमको बुलायाहै वह तुमसेकुछ बातचीतकरने चाहते हैं तुममहाराजा साहब के निकटचलो मैनेउससेकहा कि अभीमेरा आना नहोगा वह मुझसेतकरार करतारहा अन्तको मैं जानेपर राजी हुवा सो पहिलीबेर रविवारको मैं महाराजासाहबके निकटगया—संध्या समयसातबजे रेसीडन्सीसे मैंरवानाहुवा प्रथममैं यशवन्तराव के निकटगयायह मनुष्यमहाराजा साहबकाजासूस है वहरेसी डन्सीको आया करता था ॥

उसकाघर नईबाजारमें है उसके निकट सालिमभी बैठा हुवाथामुझको यशवन्तराव औरसालिम महाराजा साहबके सन्मुख ले गये ॥

श्रीमहाराजा साहिबका मन्दिरनगरके भीतरहै उसमकान में नजरबागहोकर उसमार्गसेगया जोमकानकेपीछेसे है जब मुझकोयहदोनों मनुष्यसीडीपर लेगयेतोएककमरेपरमुझको बैठायासालिम मेरेनिकट बैठारहा और यशवन्तरावमहारा- जा साहिबसे इत्तिलाकरनेके वास्तेगयाथा महाराजासाहब

और उन्हींके साथ आना उसी दिन संध्याको मैंने जमादार से जिक्रकिया जमादारने कहाकि अच्छा मैं इतवारकेरोजचलुंगा मुझको महीना याद नहीं परन्तु इतनाख़्याल है कि कमीशनको पूर्णहुये आठदस दिनहुये थे—इल्तिमास यह किया गया था कि प्रथम यशवन्तराव केघरमें जाऊं जमादार यशवन्तराव के मकानपर मुझको मिलगये थे—मुझको याद है कि जुग्गा या कारभाई मेरे साथ गयेथे—यहदोनों मनुष्य पंखेवाले हैं और अब बेकार हैं एक मनुष्य का मेरे हमराह होना मुझको खूब यादहै—जब हमलोग वहां पहुंचे तो नरसूजमादार और सालिम और यशवन्तराव हमको मिले हमलोग नजर बाग की तरफहोकर गायकवारके मन्दिर मेंगये औरयशवन्तरावनगर में होकरगये—सालिमसवार मेरे साथगया था हमलोग जब सीढ़ीपर पहुंचे तो उस समय जमादर हमारे साथ था और पंखेवाला नीचे खड़ारहा कमरे में हमसब बैठाये गये सालिम एक और जीनेपरगया थोड़ी देरपीछे मुझको और नरसूजमादारको साथ लेगया जब हमवहां पहुंचे तो महाराजा साहब एक बेंचपर बैठेहुये थे उसकेनिकट एक गुसलखानाथा वहां यशवन्तराव और सालिम और महाराजासाहबथे महाराजा साहब और जमादार और मुझसे बातें हुई इनबातों से यह प्रयोजन था कि रेजीडन्सी में जो जो बातें हुआ करें उसकी इत्तिला महाराजा साहब को दीजायाकरे महाराजा साहब ने कहाकि जोकि तुमलोगबड़ौदे में रहतेहो हरगोशकीखबर मुझको दियाकरो और महाराजा साहबने जमादारसे कहा कि पुराने जमादारहो तुमसब सरदारोंको जानतेहो इसलिये मुझको इत्तिला दियाकरो कि कौन २ सरदार आताहै और क्या २ बातें हुआकरतीहैं जमादारने वाइदाकियाकि सालिम के द्वारा बराबर आपको खबरें पहुंचाया करूंगा यदि आपके विचारमेंउचित होतोआप उन खबरों को लिख लियाकीजीये महाराजासाहब ने कहा कि जो जरूरी खबर हुआ करे वह

ने जाकर कहदेताथा उनदिनों महाराजा साहबसे मैंने अपने विवाह का हाल वर्णन किया महाराजा साहबने बतौर खर्ची श्रादीके पांचसौ रुपये दिये जिस जमाने में कि कमीशन तहकीक़ात करती थी उस समय मुझको यह पांचसौ रुपये दिये थे—महाराजा साहब ने यशवन्तराव को पांचसौ रुपये के देने की आज्ञादी थी सो उसने रुपये लाकर मुझको दिये थे॥

साहब ऐडवकेट जनरल ने कहाकि माईलार्ड जो दरवाजे बन्दकरदिये जावें तो उचितहै क्योंकि रौशनीकी चमकनियादाहै—मिस्टर सैलवलसाहबने कहा खिडकियोंके बन्दकरने की कुछ आवश्यकता नहीं॥

ऐडवकेटजनरल ने कहाकि चिलमनका डालाजाना अवश्यहै—साहबप्रेजीडेण्टने आज्ञादी कि मिस्टर जारडीनसाहब यह कारवाई करें——गवाहने बयानकिया कि यशवन्तराव मेरेनिकट रुपया नहीं लाया था किन्तु उसने मुझसे आकर कहाथा कि महलसें आकर रुपया लेजाओ—सो एक मनुष्य पंखेवाला रेजीडन्सी का जिसका नाम जुग्गाथा उस को मैं अपने हमराह लेगया जबमैं महल में पहुंचा तो मुझ को एक सिपाहीमिला फिर यशवन्तराव मिले—यशवन्तराव के कारकुनने मुझको पांच सौ रुपये दिये—उस समय कारकुन और जुग्गावर्त्तमानथे और कोई मनुष्यनथा—कारकुनकानाम दलपतथा मैंने चारसौ रुपये बिवाहमें खर्चकिये और सौ रुपया अमानतमें रक्खे और जिसके पास अमानत रखवाईथी उससे यह बातकहीकि जिससमय चाहूंगा लेलूंगा--इस चारसौरुपये का कुछजेवरबनाया औरकुछका वस्त्र मोललिया जिस समय में कि कमीशन का इजलास होता था मेरा बिवाह हुवा था कमीशन के पूर्णहोने से दोतीन दिनके उपरान्त मैंने सालिम को देखाथा उसने मुझसे कहाकि मैंने जमादारको भी राजी करलियाहै और मुझसे कहाकि जमादारने महाराजासाहब के पासआने का वाइदा किया है जब जमादार आवें तो तुम

महाराजासाहबने पूछा कि तुम अपने गोवादेश से कब लौट
आये पेडरूने कहा कि तीन चार दिन हुये उससमय महाराजा-
साहबने पेडरूको एक पुडिया दी और कहा कि साहबके खाने
में डालदेना—जब पेडरू अपने घरको जाता था तो उसने
कुछ रुपया सालिमसवार से लिया था॥

ऐडवकेटजनरलने मेम्बरान् कमीशनसे कहा इससमय चार
बज गये क्या और भी किसी गवाह के इज़हार लिये जायंगे
मेम्बरोंने कहा आज अदालत बरखास्त हो कलमुकद्दमा फिर
पेश होगा सो अदालत बरखास्त हुई॥

आठवें दिनका इजलास

रावजी का इज़हार फिर शुरू हुआ॥

जब कि अदालत एकत्र हुई तो सरल्यूइसपीली साहब आये
और श्री महाराजामल्हरराव टिफन खाने के वक़्ततक समाज
में वर्त्तमान थे ऐडवकेटजनरल ने रावजी से नीचे लिखेहुये
प्रश्न किये॥

प्र०—तुमने मुझसे कलके दिन कहा था कि मैं महाराजा
साहबके पास पेडरू के साथ गया था कहो कि सिवाय पेडरू
के और भी कोई मनुष्य था? उ०—मेरे साथ नरसू जमादार था
और क़ब्लइसके भी बादवापिसी नौसारीके कई मरतबा जमा-
दार और पंखेवालेके साथ महाराजासाहबके पास गया था॥

सरजन्टवेलनटायनसाहबने कहा कि इसगवाहसे कहा जाय
कि ऊंचेशब्दसे बोले क्योंकि महाराजासाहब उसकी आवाज
नहीं सुनसक्ते गवाहने कहा कि नौसारीसे आनेके पन्द्रहदिन
उपरान्त तीन सौ रुपये मुझको मिले थे यह रुपये मुझको नरसू
जमादारने दिये थे और कहा था कि महाराजा साहब ने तुम
को दिये हैं फिर मैं और नरसू जमादार महाराजासाहबके पास
गये महाराजासाहबने कहा कि साहब मुझपर बड़ा अन्याय
करते हैं जो कोई बातमैं तुमसे कहूं तो तुम उसको मानोगे

लिखकर भेज दिया करो—जमादार ने महाराजासाहब से कहा कि मेरे भाई की पिनशन लौकूफ होगई है आप उसके वास्ते कुछ बन्दोबस्त कीजिये महाराजा साहब ने कहा मैं उस का कुछ बन्दोबस्त नहीं करसका तुम साहब रेजीडण्ट को अर्जीदो जमादार का भाई महाराजासाहबके पास नौकर था इस के अनन्तर कुछ वार्त्ता न हुई और महाराजासाहब नौसारीको चले गये॥

नौसारीको जानेके पहिले मैं तीनचारबेर महाराजासाहब के पास गया——मैंऔर जमादार कर्नेलफ़ियरसाहबकी अर-दलीमें थे जबकि वह नौसारीको गयेथे महाराजासे औरमुझ सेकईबेरतबे नौसारीमें मुलाक़ातहुई यशवन्तरावका बेटाएक -वटी में वहां रहता था और एक मरतबा मुझ को सालिम महाराजासाहबके पासलेगया और मुलाक़ातकराईउसरोज महाराजा साहबने मुझसे भावपूनाकर के बड़ै बार्त्ताकी और कहा जो तुम बराबर खबरें दोगे तो तुमको बहुतखुश करूंगा और कहाकि तुम दामोदरपंथ या दामोदर परपदको जान-तेहो मैंने कहा कि हां जानता हूं——तीनबेर पेडरू के साथ महाराजा सहब के निकट गया था जबकि महाराजा साहब नौसारी से लौट आये तो मैं बीस इक्कीस मरतबा महाराजा साहबके पासगया पेडरूसे महाराजासाहबने पूछाकि साहब किस समय भोजन करते हैं और खातेवक्त क्या २ बातें होती हैं पेडरू ने उत्तर दियाकि संध्यासमय भोजन करते हैंछोटी मेमसाहिबा आप की बड़ी प्रशंसा किया करती हैं जो आप साहबसेदोस्ती रखियेतो आपकेलिये अति उत्तमहोगा महा-राजासाहबने कहाकिमैंतो साहबसेस्नेह रखताहूंपरन्तुसाहब मुझसे अप्रसन्न रहते हैं॥

गवाहनेयहभी वर्णनकिया अगरआपसाहब से अच्छीतरह रहेंगे तो साहब भी आपपर मेहरबानी रक्खेंगे॥

छोटी मेमसाहिबा की गर्ज़ बोवोसाहब की मेमसाहिबा से है

गालियां निहायत फोहश हैं—तब ऐसा न होना चाहिये तिस
पीछे महाराज ने कहा मैं तुमको एक और वस्तु दूंगा सो
उन्होंने एक विषकी पुड़िया दी उसकी रंगत स्याहीमाइल थी
प्र०—ऐसी सियाह जैसा सुतरञ्जिस का कोट है ? उ०
नहीं जैसे कि टोपी है—टोपी की रंगत भूरी थी—मैंने सोमवार
को साढ़े छः बजे साहब के शर्बत में पुड़िया डाली यह पुड़िया
वह थी जो महाराजा साहब ने दुबारह दी थी जब मैं साहब
के कमरे से बाहर आया तो सालिम सवार ने मुझसे पूछा कि
तुमने वह काम किया मैंने कहा कि हां—करनैल फियर साहब
को चिट्ठी लिख कर डाक्टर साहब को बुलाना मुझे स्मर्ण है
मैंने जमादार से कहा कि डाक्टर साहब बुलाये गये हैं अब हम
लोगों की फजीहती होगी जिस समय डाक्टर साहब आये हैं
मैं और जमादार बरामदे में खड़े थे उसी दिन मेरी पेटी लीगई
थी और मुझको आज्ञा हुई कि मैं अपने घर को जाऊं तब से मुझको
पेटी नहीं मिली करनैल फियर साहब ने मेरे इजहार लिये उस
समय सिसरबोबोसाहब वर्त्तमान थे दूसरे दिन मैं हवालात में
सुपुर्द हुवा परन्तु सन्ध्या को ५ बजे वहां से छूट गया जो रुपया
मुझको मिला था उससे यह आभूषण बनवाया था सो वह
जेवर पेश किया गया पांचसौ वा साढ़ेपांचसौ रुपये की लागत
का होगा मैं सर्वदा महाराजा साहब को खबरें लिखकर
भेजा करता था—जुग्गा लिखा करता था जुग्गा के हाथ का लिखा
हुवा खत पहिचानता हूं मैं थोड़ा गुजराती पढ़ सक्ता हूं सो
एक कागज गवाह को दियागया उसने कहा कि जुग्गा का
लिखा हुवा है मैं इसको सही नहीं पढ़सक्ता ॥

मैं हमेशा जुग्गा से खबरें लिखाता था और किसी से नहीं
लिखाता था और जमादार महाराजा साहब के पास पहुं-
चाया करते थे ॥

इस गवाह ने वर्णन किया कि मैंने मिस्टर सूटर साहब के
भी रूबरू अपने इजहार दिये थे मुझको स्मर्ण है कि सोमवार

हमलोगोंने कहा मैंने महाराजासाहबने पूछाकि साहबकि स समयभोजन करतेहैं और क्याखातेहैं हमने उत्तरदिया कि वह हमारे साम्हने खानानहींखाते इसलिये हमको मालूमनहीं किवहक्या भोजनकरतेहै वह हमारेसाम्हने शर्बतजरूर पीतेहैं उससमयमहाराजासाहबने पुड़ियादीऔर कहाकियहसाहब केशरबतमें डालदेना मैंने महाराजासाहब से पूछाइसमें क्याहै उन्होंनेकहाकि जहरहै मैंनेकहाकि अगरसाहबको जहरपहुंचे तो हम लोगोंकी बड़ीखराबी होगी महाराजा साहबने कहा एकहीबेर कुछनहोगा किन्तु बहुतदिनोंके पीछे असर होगा महाराजा साहबने कहाकि अगर इस पुड़ियाने असर किया तो मैं तुमको लाखरुपया और अपनेयहां नौकरी दूंगा और तुम्हारे बालबच्चोंकी खबरगीरी करूंगा॥
प्र०—यहपुड़िया तुमको किसतारीखको दीगईथी? उ०—मुझको स्मर्णनहीं। प्र०—हरएक पुड़ियामें कितना २ विष था? उ—०गवाहने उंगलीके इशारेसे बताया कि इतनाथा॥

प्रश्न मैलवलसाहब का—क्याचुटकीभर था—सरजन्टबेलनटायनसाहबने कहाकि इसकोथोडोसी मट्टी देदीजावे ताकि वहबयान करे—सोथोड़ीसी मट्टीउसेदीगई और उसनेबतलाया कि इतनीथी——सरजन्ट बेलनटायन साहब बोले मैंचाहता हूंकि यहमट्टीअदालतमें रखलीजावे साहबप्रेजीडण्टने आज्ञा दीकिमिस्टर जारडीन साहब सेक्रेटर इसमट्टीको अपनेपासरख लेसोवहमट्टी उनकोदीगई और आज्ञाहुईकि इसेरक्षापूर्व्वक रक्खो—और गवाहनेयहभी वर्णन कियाकि विषदियेजाने के आठ दिन पहिले जबमैं महाराजा साहब के निकटगया तो मुझको और नरसूको गालियांदीं और कहाकि अबतक तुम लोगों ने कुछभी नहींकिया॥

मुतरज्जिम ने कहा जो अज्ञाहो तो गालियोंका तर्जुमा कियाजाय—सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा इसकी कुछ आवश्यकता नहीं है मुतरज्जिमने कहा किवास्तव में यह

काइलबाल करदिया मैनेकहा। हां मैने हरएकबातका इकरार करलिया और जोनले २ पानी होगा तो यही कहूंगा इसके उपरान्त पुलिसके कमरेमें लोगलेगये यहपेटी जोअदालतमें रक्खी ऊईहै इसीको पहिना करताथा इसपेटीमें जोजेबहैउसी में विषकी पुड़िया रक्खाकरताथा॥

ऐडवकेटजनरलने कहा—माईलार्ड इस गवाहकी बयान से विदित होताहै कि दोपुड़ियां जिनका उसने इस्तैमालकियाहै विषहैंवह अ।गेकीजेबमेंरखताथा और जिसपुड़ियाका उसने इस्तैमाल नहींकिया वहदूसरे जेबमें रक्खा करताथा गवाह ने बयान कियाकि मैं उससमय वर्त्तमान था जबकि रावसाहब और खान साहबने इसपेटीकी तलाशीलीथी मेरे सामने एक पुड़ियाभी इसपेटी में निकली थी—गवाह ने कहाकि मुझसे खानसाहबने पूछाथा कि तुमविषकी पुड़ियोंको कहां रक्खा करतेथे मैंने उत्तर दिया किपेटीकी जेबमें रक्खा करता था मुझसे पूछाकि तुम्हारीपेटी कहांहै मैंने कहाकि भोदरपट्टा वालेके पासहै खानसाहबने एक मनुष्य भेजकर भोदरपट्टेवाले को बुलाया मेरेरूबरू उसकेगलेसे यहपट्टा उतारा और उसी में इधरउधरदेखने लगे फिर बड़े खानसाहब को टटोलते २ एक जगह पर कोई कठोरसी वस्तु मालूम ऊई उन्होंने कहा कि यहां कोई वस्तुहै यह कहकर उन्होंने पट्टेको रखदिया और सूटरसाहबको जो दूसरे कमरेमेंथे बुलाया जबवह आये तो उनके सन्मुखपेटीको सिलाईके। खोला उसमें से एक सफेद पुड़िया निकली मुझको दिखायाकि तुम इसपुड़ियाको पहिचानतेहो मैंने कहाकि हां पहिचानता हूं इस पुड़िया में जहरहै ग़लती से मेरीपेटी में रहगई थी फिर सूटरसाहबने कुछ और बातें मुझसेपूछीं और मैं वहांसे चलाआया जिस रोज यहपुड़िया मुझको मिलीथी वहदिन मुझको भलीप्रकार स्मरणहै यहपुड़िया मेरे इजहार देनेसे रोज पीछे मिली थी।

सरजम्स फैगनटायन साहबने कहा किअबमेरी तरफसुत-

थी, और शायद २२—तारीख थी परन्तु मुझको स्मर्ण नहीं
साहब ऐडवकेट जनरलने कहा कि शायद २२—दिसम्बर
होगी—गवाहने कहा कि मेरे इजहार मिस्टर सूटर साहबने
लिये थे अथवा उन्होंने आपनही लिखे सरीव. र आपही लिखे
मैने यह इजहार उस समय दिये जब कि मिस्टर सूटर साहबने
मुझको बुलाया था—९ बजे तक वह मेरे इजहार लेते रहे मैने
उस समय तक किसी बातका इकबाल नहीं किया था फिर वह
मुझे रेजीडन्सीकी कोठीमें लाये और रेजीडन्सीके बागमें बैठा
था—पांच छः बजे तक मैं वहां बैठा रहा फैजू और करीम भी वहां
विद्यमान थे—इस लोगोंमें परस्पर तकरार होने लगी—फैजू
और करीमने अपना और आयाका मुझसे जिक्र किया और
कहा इस लोगोंने तो इकबाल किया तुम क्यों नहीं इकबाल
करते हो यह बात सुनकर मैं सूटर साहब के हवलदार को बु-
लाया मैं आपही जाकर बुलालाया उसका नाम नहीं जानता हूं
जो उसको देखूं तो पहिचानलूं—उसका नाम मीर असान अली
था वह अदालतमें बुलाया गया और गवाहने उसको देखकर
पहिचान लिया फिर गवाहने कहा कि मैने हवलदारसे कहा
था कि मुझको बडे खान साहब अर्थात् अकबर अली खान बहा-
दुरके पास लेचलो जब मैं उनके पास गया तो मैने उनसे कहा
कि मैं आपको बहुत सही २ विषके दियेजानेका हाल बतादूंगा
बशर्ते कि मेरी जानबख्शी हो और उसका वाइदा आप साहब
सेलें॥

साहब ऐडवकेट जनरलनेकहा कि हम नहीं चाहते कि तुम
अतिविस्तारसे वृत्तान्त कहो केवल इतनाही वर्णन करो कि
तुम्हारी जानबख्शी हुई थी—गवाहने बयान किया कि हां इसी
वाइदेपर मैने सम्पूर्ण वृत्तान्त सूटर साहबसे कहदिया था जबसे
मैने सूटर साहबके रूबरू इजहार दिये उस समयसे मैनेनरसू
जमादार को नहीं देखा—बरवक्त इजहार के उसदिन नरसू
जमादार वर्त्तमान था जमादारने कहा कि तुमने हर एक बात

था और मुझको तरगीब होगई । प्र०—तुम से और करनैल फियरसाहब से नाराजगी तो नहीं हुई ? उ०—नहीं । प्र० तुम केवल द्रव्य के लोभ से मारना चाहते थे ? उ०—हां मैं गरीब आदमी हूं और मुझको तरग़ीब होगई थी । प्र०—चूंकि तुम गरीब आदमी थे केवल द्रव्य के ही लोभ से खूनी बनना चाहते थे ? उ०—हां मुझको तरगीब दी गई मैं राजी होगया । प्र०—अब तुम को लाख रुपये मिल गये ? उ०—नहीं मुझको कुछ भी प्राप्त न हुआ । प्र०—तुमने महाराजा साहब से कुछ रुपया मांगा था ? उ०—नहीं । प्र०—तुमको स्मर्ण है कि तुम्हारे इज़हार इरादा होने के पीछे करनैल फियरसाहब के रूबरू लेगये थे ? उ०—हां याद है । प्र०—इसके पीछे तुम अनुमान एक महीने के छूटे रहे ? उ०—हां । प्र०—इस अवसर में तुमने महाराजा साहब से रुपये मिलने की दरख्वास्त की थी ? उ०—नहीं । प्र०—इस अवसर में तुमने कभी महाराजा साहबको देखा वा कोई सन्देशा उनका तुम्हारे पास आया था ? उ०—न मेरे पास कोई सन्देशा आया न कभी उनको मैंने देखा । प्र० तुम गरीब आदमी हो और गरीब होने और बहकाये जाने से तुम मार डालने के वास्ते राजी होगये तुमने किस वास्ते रुपये के मिलने की महाराजा साहब से दरख्वास्त नहीं की ? उ०—मैं नहीं गया और क्योंकर मैं जाता । प्र०—क्यों तुम तो बहुधा वहां गए होगे? उ०—मैं पहिले वहां गया था मौकूफ होने के पीछे नहीं गया । प्र०—जब कि तुमने वह कार्य किया जो महाराजा साहब ने तुमसे कहा था तो फिर क्यों नहीं गए तुम को महाराजा साहब से रुपये की दरख्वास्त करनी चाहिये थी क्या कारण था कि तुमने करनैल फियर साहब को मार डाला या कोई और बात थी? उ०—मेरा उद्योग निष्फल हुआ । प्र०—मैंने यही समझा था परन्तु मुझको मालूम हुआ कि तुम अपनी आबरू की बाबत [illegible] नहीं मानते हो [illegible] कि तुम जब तक समझते कि तुम करनैल फियरसाहब को न मार [illegible] कि महाराजा साहब के पास जाना चाहिये । उ०—नहीं [illegible] ।

वह जो थोड़े से प्रश्न मैं भी तुमसे कहूंगा। उससमय प्रेसी-डेण्ट साहबने कहाकि अबदो बजगयेहैं आपक्या सवालआह-तेहैं सरजन्टरेलन टायनसाहिबने कहाआपकी आज्ञाहोतो उत्तमहै किपांचछ:मिनट के वास्तेसवालात मुलतवीकिये जावें उससमय कमीशन के मेम्बर टिफन खानेके वास्ते उठे टिफन खानेके पोछेमिस्टर कारसिटजी से जो नवीन मुतरज्जिम नियत ऊये थे सौगन्ध लीगई॥

मरजंट बेलनटाइन माहब के प्रश्न।

प्र०—तुमकितने दिनों तक कारनैलफियर साहबके नौकर रहे? उ०—शायद डेढ़ वर्ष। प्र०—कारनैल फियर साहब तुम परबड़ी मेहरबानी करतेथे? उ०—हांवह मुझपर बड़ेमेहरबानथे। प्र०—तुमकोउनसे कोईशिकायत की बातनहो ऊई? उ०—नहीं। प्र०—फिरभी तुम उनके मारडालने पर राजी-होगये? उ०—मुझको महाराजासाहबने रुपयेदेकर राजी कियाथा। प्र०—तुमको राजीकरने में जियादह कहने सुनने की जरूरत नऊई? उ०—मुझको लाख रुपयेदेनेको कहाथा जोकिमैं गरीब आदमी हूं राजी होगया। प्र०—चूंकि तुम गरीबआदमीथे औरतुमको एकलाख रुपयेके मिलनेकावादा ऊवा तोतुमअपने हाकिमके मारडालने पर राजीहोगयेजो सदातुमपर कृपारखता था। इसबातको सुनकर गवाहनेमुंह ही मुंह कुछ कहा॥

सरजन्टरेलन टायन साहब ने कहा कि वास्तबमें ऐसा हो या लज्जामतकरो स्पष्टरीतिसे वर्णनकरो? उ०—हांमैं मार-डालने पर राजी ऊआ। प्र०—क्यावास्तवमें तुम मारडालना चाहतेथे? उ०—वास्तवमें मारडालनेको मेरीइच्छानथी किन्तु महाराजा साहब की थी। प्र०—क्या तुम्हारी इच्छा थी कि तुम अपने हाथसे साहबको मारो? उ०—मुझको महाराजा साहबने बहकायाथा। प्र०—चूंकि तुमको बहकायाथा तोतुम ने मारडालने काउद्योगकरलिया? उ०—हांमैं गरीबआदमी

को इसीशीशीसे की दवासेतुम्हारे फोड़ाहोगया था क्योंठीक है? उ०—हां। प्र०—पसतुमने इससंदेहसे कि कारनैलफियर साहबको कष्टहोगा औषधि को फेंकदिया? उ०—हांइसो हेतुमैंने दवाफेंकदी। प्र०—परभाई तुमजानतेथे कियहदवा कारनैलको हानिकेलिये दीगई है? उ०—हां। प्र०—फिर तुम ने क्यों उसकाइस्तैमाल नहींकिया तुमजानतेथे कियहशीशी की औषधिजरर पहुंचाने केवास्तेदीगई है तुमनेउसको क्यों फेंकदिया? उ०—मैंनेउसका इस्तैमालनहीं किया और फेंक दिया। प्र०—किसवास्ते इस्तैमालनहीं किया? उ०—इसवास्ते इस्तैमालनहीं कियाकि उससे मुझको कष्टहुवा औरमुझको यहसंदेहहुवा किमैं शीघ्र होपकड़ा जाऊंगा। प्र०—परन्तु तुम जानतेथेकि मेराविषदेने का उद्योगहै पस ऐसीवस्तुका क्यों इस्तैमालनहींकिया? उ०—मैंने नहींकिया। प्र०—परमैंपूछता हूं कि तुमने किसवास्ते उसका इस्तैमाल नहीं किया? उ० मुझकोभयहुवा कि साहबको उससेजरर पहुंचेगा इसलिये इस्तैमालनहीं किया। प्र०—तुमने नरसूसे कहाथा कि मैंने इस्तैमाल किया है? उ०—हां मैंने नरसुसे कहा था। प्र० तुम्हारा वह कहनाझूठथा? उ०—हांमैंने असत्यकहा था। प्र०—मालूमहोता है कि कभी२तुम झूठकासचा भी उठाया करतेहो? उ०—मैंझूठ क्यों बोलूंमैंने आपसेसच २ कहदिया प्र०—तुमने नरसु से क्योंझूठबोला इसझूठबोलनेकी क्याजरू-रतथी? उ०—एकसवार प्रतिदिन महाराजा साहबके पास से आयाकरता था कि कामहुवा यानहीं दवाडालीगई या नहीं। प्र०—तुमनेनरसु से क्योंझूठ बोलाथा? उ०—वह मेरे पीछेपड़ाहुवा था इसलिये सिवायझूठ के और कोई उपाइ नदेखा। प्र०—वह तुम्हारे पीछेपड़ाहुवा था इसलिये तुमने उससे झूठबोला क्याजोकोई तुम्हारेपीछे पड़ताहै उससेझूठ बोलतेहो? उ०—हां अबमुझको झूठबोलने से क्यालाभहै। प्र० केवल तुमने इसीवास्ते झूठ बोला कि वह तुम्हारे पीछे पड़ा

गया और न रुपया मंगवाया। प्र०—पर तुम क्यों नहीं गये तुम गरीब आदमी थे और मुफलसी से खूनी बनना चाहते थे? उ० मैं खूनी बनने को न था। प्र०—हां महाराजा साहब चाहते थे कि तुम खूनी बनो इस बात को हम सब लोग जानते हैं परन्तु तुम गरीब थे फिर तुम किस वास्ते रुपया मांगने नहीं गये? उ०—मैं क्यों कर जाता मैं नहीं गया। प्र०—तुममें और नरसू में उस वक्त कुछ वार्त्ता हुई थी जब कि विष देने का उद्योग तुम्हारा पूर्ण न हुआ? उ० नरसू में कुछ वार्त्ता न हुई थी मैं अपने घर से बाहर नहीं निकला और मैं कहीं नहीं गया। प्र०—तुम भाव पूना कर को जानते हो? उ०—हां वह बंगले को आया करता था और मैं उनको जानता हूं। प्र०—वह बंगले को किस वास्ते आया करता था? उ०—वह साहब के पास आया करता था मैं नहीं जानता था कि क्यों आता था। प्र०—क्या खबरों के देने वास्ते साहब के पास आया करता था कि नगर में क्या हो रहा है? उ०—मैं यह नहीं जानता। प्र० तुमने कभी कोई वस्तु उसको देते हुए सुना है (जवाब का तर्जुमा सुतरज्जिम ने इस तरह किया) उ०—नहीं सुना कभी २ सुना उसको मैंने इत्तिला की प्र०—कारनैल फियर साहब के नौकरों में कुछ वार्त्ता हुआ करती थी कि महाराजा साहब ने श्रीमान् वाईसराय के निकट खरीता भेजा है? उ०—खरीते का हाल मैं नहीं जानता। प्र०—तुमने कुछ भी इस विषय में सुना था? उ० मैंने कुछ भी नहीं सुना और मुझको कुछ स्मर्ण नहीं है। प्र० भाव पूना कर से भी नहीं सुना उस तरफ मत देखो हमारी ओर देखो उ०—नहीं भाव पूना कर से भी मैंने नहीं सुना। प्र०—अब तुम से छोटी बातों में कुछ प्रश्न करता हूं तुम सच कहना? प्र० तुम्हारे जो फोड़ा निकला था और जिसको तुमने दिखाया—यह फोड़ा शीशी की वजह से हो गया था? उ०—हां शीशी की दवा से मेरे फोड़ा हो गया था। प्र०—शीशी के रखने से खाल के पास फोड़ा हो गया था? उ०—शीशी के मुख पर रुई लगी थी और रुई में से दवा निकल कर मेरे शरीर पर लग गई थी। प्र०—मालूम हुआ

मैं तुमसे वह कहताहूं जो तुमने कारनैलफियरसाहबसे कहा
था किन्तु मैं तुमको पढ़कर सुनाताहूं तुमने कहाथा कि दो
तीनदिनके पीछे जमादारने मुझको दोपुड़ियां दीं और कहा
कि बराबरके तीनहिस्से बनायेजावें और दोयातीनदिनदीजावें
ताकि तीनरोज़में वहखत्म होजावे और तुमने यहभी कहाथा
कि साबिस और यशवन्तरावने महाराजासाहबको रूबरू वही
एहतियातसे समझाया था और फिर तुमकहते हो कि इन
पुड़ियोंका देना दोतीन रोजतक मैंने मुलतवी रक्खा क्योंकि
मुझको अवसर न मिला? उ०—गवाहने कहा कि हां यहसब
मेराबयान है। प्र०—औरतुमकहतेहो कि विषकीपुड़िया जोमुझ
को पहिलेजमादारने दीथी मैंनेउसके तीन भागकिये? उ०
हांमैंने तीनभागकिये थे। प्र०—उनपुड़ियों को तुमने अपनी
पेटीकी जेबमेंरक्खा और कहतेहो कि एकपुड़िया जोपीछेनि-
कलीथी वहभी उन्हींपुड़ियों मेंसेथी जोमुझको जमादारनेदी
थी क्या मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूभी तुमनेयही वर्णनकियाथा
उ०—हां। प्र०—क्यायहबात ठीकहै? उ०—हां। प्र०—अबमैं
तुमसे पिछली पुड़िया के मद्धेपूछताहूं क्यातुमको वहपुड़िया
जमादारने दीथी? उ०—हांजमादारनेदीथी। प्र०—क्याइस
पुड़ियाके दवाकारंग पहिलीपुड़ियोंके खिलाफथा क्योंकितुम
कहतेहो कि जो पुड़िया तुमको प्रथममें मिलीथी उनमेंसेएकमें
सफ़ेदरंगकीदवाथी और दूसरेमेंजोवस्तुथीं वहगुलाबीमाइल
थीं इसतीसरी पुड़िया का रंग जो अन्तको तुम्हें मिली कैसा
रंगथा? उ०—उसका रंग इसटोपीकासा था—एक बैरस्टर
को टोपी वहांरक्खी थी उसका रंग स्याहीमाइल भूरा था।
प्र०—उस सूरतमें उसको रंगन सफ़ेद पुड़िया कीसीन थी?
उ०—नहीं स्याहीमाइल रंगथा। प्र०—क्या उसटोपीके उस
का रंगगहराथा? उ०—मुझको यादनहीं। प्र०—तुमनेपुड़िया
को सबदवाको गिलास में छोड़ दियाथा? उ०—हां। प्र०
पानीमें मिलाकर छोड़ा था? उ०—हां प्रथम मैंने बोतलमें

हुवा था ? उ०—हां मैने इसीवास्ते झूठबोला। प्र०—तुम जानते हो कि मिस्टर सूटर साहब भी तुम्हारे पीछेपड़े रहे शायद उनसे तुमने एक झूठ नहीं किन्तु सैकड़ों झूठबोले होंगे ? उ०—वह मेरे पीछे कभी इतना नहीं पड़े। प्र०— पस जो कुछ तुम ने उनसे कहा सब सच था ? उ०—हां सब सच था। प्र०—इस बातपर तुम्हारा भलेप्रकार निश्चय है ? उ०—हां इतमीनान है। प्र०—तुमको इसबात का बड़ा खयाल था कि मिस्टरसूटर साहबको धोखा न दो ? उ०—उनसे मैंने जो कुछ कहा सब सच कहा। प्र०—क्या तुमने कारनैलफियरसाहबसे भी सचकहा था ? उ०—अगर मैं कारनैलफियरसाहब से सच कहता तो वह कब मेरा या किसी का विश्वास करते। प्र०—तो यही कारणहै कि तुमने उससे सच नहीं कहा ? उ०—हां। प्र०—पस तुमने इसवास्ते उनसे सच नहीं कहा कि वह तुम्हारा विश्वास नहीं करते ? उ०—हां इसी विचारसे मैंने सच नहीं कहा। प्र०—तुमने मिस्टरसूटरसाहब से हरएकबात सचकही उ०—हां। प्र०—अबमैं तुमसेकुछ वहबातें किया चाहताहूं जो तुमने मिस्टरसूटर साहब से कही थी और यहबातें उन दो पुड़ियोंके मद्धेहै जोतुमको उससमयदी गई थी जबतुमसेलाख रुपयेके दिये जानेका वाइदाहुवा थातुमको यहपुड़िया किसनेदीथी ? उ०—नरसूजमादार लायाथा—उसने मुझको दी थी। प्र०—क्या उसने तुमसेकहाथाकि उनदोनों पुड़ियोंकेतीन हिस्से बराबरकरके तीनरोज तक देनो? उ०-उसने कहाथा कि इनदो पुड़ियों के तीन हिस्से करना औरदो या तीन दिनतक इसका इस्तैमालकरना। प्र०—उसनेकहाथा कि बराबरकेहिस्सेकरना ? उ०—हां तीनहिस्से बराबर करनेको कहाथा तथापि मैंनेतीनपुड़िया बनाई और अपनेपासरखली। प्र०—यानी उन दोपुड़ियोंको मिलाकर तुमने बराबरके हिस्सेकिये थे ? उ०—हरएक पिसीहुई वस्तुसेसे मैंने थोड़ा २ लिया क्योंकि मैं जानताथा कि सफेदचीज अधिकहानिकारकहै। प्र०—अब

जानायहीथा? उ०—हां। प्र०—तुम उसकीतारीखकहसक्ते हो? उ०—मुझको तारीख स्मर्णनहीं। प्र०—मेरे विचारसे शुरूनवम्बरहोगा जबकितुमको यहपुड़िया दीगई? उ०—हांयह पुड़िया मुझको दीगई उसके दोदिन पीछे मैं बुलाया गयाथा। प्र०—तुमकोयादहै किमहाराजा साहबनेपुड़िया तुमकोकबदीथी हांमैंभूला जमादारनेतुमको पुड़ियादीथी? उ०—हांपहिलीबेर जमादारने दोपुड़ियांदीथीं और दूसरीमरतबा एक पुड़ियादीथी। प्र०—उनदोपुड़ियों यादूसएक पाकिटसे पहिले पेडरूकोपुड़िया दीगईथी? उ०—हांपहिले मेरी दूस पुड़िया सेदीगई थी। प्र०—यानिक़ब्ल अखीर पुड़ियाके? उ०—हां प्र०—तुमने पेडरू की पुड़ियाके मिलनेसे एकदोदिन पीछेपुड़ियापाईथी? उ०—दोदिनबाद। प्र०-फिरतुमको मालूमहुआ थाकि पेडरूकोक्यादियागया? उ०-मुझकोमालूम नहींनयह जानताहूंकि उसकेपास पुड़ियाहैया नहीं। प्र०—क्यातुम सब एकही काममेंप्रवृत्तथे अर्थात् करनैल फियरसाहबके मारडालनेमें? उ०—हां हमसब शरीकथे। प्र०—तुमने पेडरूसेकिसवास्ते नहींपूछा किउसने उसपुड़ियाको क्याकिया? उ०—मैं क्योंपूछता वहअपने कामपर होशियाररहा मैं अपने कामपर होशियाररहा (इससेसम्पूर्ण समाजके अधिष्ठाताहंसे) मैंनेनहीं पूछा। प्र०—इससे मालूम होताहै कितुमने पेडरूको छोड़ दियाथा किजबवह चाहेवह विषदे और जबतुमचाहो तुम जहरदो? उ०—महाराजा साहब को बड़ीजल्दी थी उन्होने मुझसे और पेडरूसे कहदिया था कि यहकाम शीघ्र करना प्र०—तुमकोयहबात क्योंकर मालूमहुई? उ०-सालिमऔरयशवन्तरावदोनोताकीदकिया करतेथे। प्र०—जबइससेतुमकोविदितहुवाकिमहाराजासाहबको जल्दीहै? उ०-हां। प्र०-परन्तु तुमसेकहदियागयाथा कि चारमहीने के उपरान्त यहपुड़िया असरकरेगी? उ०—हांमुझसे कहाथाकि दोतीनमहीने केबाद असरकरेगी। प्र०—तुमनेकभी पेडरूसे नहीं पूछा कि

ने सबका सब बोतलका जल गिलास में डालदिया ? उ०—हां सबपानी डालदिया। प्र०—असलकी पुड़ियामें कितनोदवाथी? उ०—उसगवाह ने चुटकोभरकार रेतउठाई (जोस्याहीके सुखानेके वास्तेवहां रक्खोथी और कहा कि इतनीथी या शायद कुछ इससे अधिकहो। प्र०—इसरेतसे उसपुड़िया की दवा का रंगस्याही मालूम था? उ०—इसकारंग जियादा स्याही माइलहै उसकारंग हलकाथा। ऐडवकेट जनरलने कहाकि सुतरज्जिम तुमतर्जुमा अच्छा नहीं करतेहो उसनेकहा था कि थोड़ाकालाथा। प्र०—तो मालूमहुवा कि वह दवाटोपी से जियादहस्याही माइलथी परन्तुउसका रंगइसरेतसे हलका था? उ०—हां। प्र०—जिस दिन तुमने अपने स्वामीकेमारडालने का उद्योग किया उसदिन डाक्टरसीवर्डसाहब को देखाथा? उ०—हां बंगलेपरथा वहीं उनको मैंने देखाथा। प्र०—अबसालिम कहांहै? उ०—मैंनहींजानता किवह कहां है सुनाहै किवहक़ैदहै औरमैंभीकईदिनसेक़ैदथा। प्र०-तुमको विश्वासहै किसालिम क़ैदहै? उ०—हां मैंजानता हूं किवह क़ैदहै। प्र०—बयानकरोकिपेडरू तुम्हारेसाथ कितनीबेर महाराजासाहबको मुलाक़ातको गयाथा? उ०—तीनबेरनौसारीसे आकर और एकबार जबकिवह गोवासेअपने घरसेलौटआया। प्र०—कुलचार मरतबा? उ०—हां चार मरतबा। प्र०—इसविषदेनेकाहालवहकुछजानताहै? उ०—हांवह सब जानता है महाराजासाहबनेखुद मुझसेकहाथा। प्र०—तुमनेमहाराजासाहबसे कहते हुये खुदसुनाथा? उ०—हांमैंने खुदसुनाथा। प्र०—तुमने कागज़देतेहुयेदेखाथा? उ०-कौनसा कागज़। प्र० वहकागज़जिसमेंविषथा और जिससेज़हरहोना तुमजानतेथे? उ०—एकपुड़िया देतेहुये मैंनेदेखाथा। प्र०—तुमने महाराजासाहबको कहतेहुये सुनाथा कि इसपुड़िया में विषहै? उ०—हांमैंने कहतेहुये सुनाथा। प्र०—कबयह बातहुई थी? उ०—जबकिपेडरूगोवासेवापिसआया। प्र०—पेडरूका अखीर

था जिसने तुम्हारीपेटीमें कठोरवस्तु देखीथी ? उ०—हां प्रथम मुझसे पूछागयाकि तुम्हारीपेटी कहांहै। प्र०—तुमने बताया था कि मेरीपेटीकहांहै जिसमें तुमविष रखतेथे ? उ०—मैंने नहीं बताया। प्र०—क्या तुमको स्मर्णथा किपेटीमें जहररक्खी है ? उ०—मुझको स्मर्णगया जोयाद होता तो मैंउसको निकालकर फेंकदेता। प्र०—जब तुमने पुड़ियाको देखाकि तो तुमकोआश्चर्य्य हुवा ? उ०—हां मुझको अचम्भा हुवा और मैं घबरागयाथा। प्र०—अगर मेरीयाद सही है तो तुमने कहा था कि जबतुमसे अकबरअलीने पूछा था कि तुम बहुधा वस्तु अपनीकहां रक्खाकरते हो तो तुमने कहा था किपेटीमें ? उ०—हां मैंने यहीकहा था। प्र०—उस समय अकबरअलीने कहाथा किपेटी संगबादीजावे ? उ०—मुझसे कहाथा किपेटी कहांहै मैंनेकहाथा कि बहादुरके पासहै। प्र०—तुमने बहादुरकोपेटी क्योंदी थी ? उ०—मैंने नहींदी नवीन रेजीडिण्ट साहबने दीथी। प्र०—उस मनुष्य को तुम्हारी पेटी कबदी गई थी ? उ०—मेरे रूबरूदीगई थी परन्तु मुझको दिनयाद नहीं है। प्र०—कितने दिनोंके उपरान्त पुलिस को पुड़िया मिली थी ? उ०—बहुत दिनोंके पीछेपरन्तु मुझेस्मर्ण नहींकि कितनेदिनोंकेबाद। प्र०—तुमको कुछभी स्मर्णनरहा कियहतुम्हारीपेटी जो दूसरामनुष्य पहिनेहैं उसमें एक पुड़िया विषकी है ? उ०—इस पुड़िया को मैं बिल्कुल भूल गया था। प्र० जब करनैल फियर साहब ने तुम्हारे इजहार लिये थे और तुमसे पूछा था कि दुबारह जहर देने का तुम्हारा संदेह किसपरहै और तुमनेकहाथा कि फैजूपरहै क्योंकि फैजूकरनैल गार्टसाहब और करनैलसाहबको नसानेमें बन्दबातोंके निस्बत मालूम हुवाथा ? उ०—हां मैंने अपने प्राणके बचानेके वास्ते उसकानाम लियाथा। प्र०—पहिले तुमने खूनकरना चाहा और फिरएक निर्दोष मनुष्यको मालूम करतेथे ? उ०—हां लोगभी दरबार (अर्थात् महाराजासाहब) मेंथाया करते थे

उनकोपुड़िया क्याहुई ? उ०—कभीनहीं पूछा । प्र०—तुमने पेडरूका अपराधी होना कब बयान किया किवहभी कारनैल फियरसाहब के मारडालने में तुम्हारा शरीक है ? उ०—मैंने मिस्टरसुटरसाहब केरूबरू उसको मुलजिम कहाथा। प्र०—तुमने उसका नाम कारनैल फियर साहब के रूबरू नहीं लिया उ०—नहीं। प्र०—क्यों नहीं ? उ०—मुझको भयथा। प्र०—तुमको क्याभयथा ? उ०—जो कोईमनुष्य कोईबात करताहै तो क्याकहनेके वास्ते कियाकरता है। प्र०—यह पुडिया तुम्हारी पेटीमें भूलसे रहगई ? उ०—हांगलतीसे रह गईथी प्र०—क्या तुमने दोनों खूराक पुडियाकी दीऔर एक गलती से रहगई उ०—चार खूराकें थीं तीन दी गईं और एक गलती से रह गई प्र०—क्या कारण था कि तुमने इस खूराक को रहने दिया ? उ०—भूल से रहगई। प्र०—इससे तुम्हारा मतलब क्या है कि भूलसे रहगई ? उ०—इससे यह मतलबहै कि मैंने पुडिया को जेब में रक्खा और रख कर भूल गया कि कहां रक्खी है। प्र०—तुमने वहकाम क्योंन किया जिस वास्ते इन आमदिये जानेका वाइदा हुवा था ? उ०—मुझको भयथाकि साहबको एकाएकी कुछ न होजाय। प्र०—क्या तुमनेइससाहोमाइल पुडियाको दवा ९ नवम्बर को बिल्कुल डालदीथी ? उ०—थोड़ीडाली थी और बाक़ीको रखलिया था। प्र०—थोड़ी सोजितनी कि तुमनेहमको दिखाईक्या तुम जानते थे किफ़ौरन् उसकी तासीरहोगी ? उ०—मैं जानता था कि एकहीबेर उसकी तासीरन होगी-परन्तु मुझको महाराणा साहबबराबर कहला २ भेजते थे कि जल्दीकरो जल्दीकरो। प्र०—और किसीको मालूमन था कि तुम्हारेपास यह जहर बाक़ी है ? उ०—किसीको मालूम न था तुमने किसी से कहाभी नहीं। उ०—मैने किसीसे नहींकहा। प्र०—पसतुम्हारे साथी जानतेहोंगेकि तुमने इसतमाम पुड़ियाका इस्तमाल किया ? उ० हांवह यहीजानतेथे। प्र०—क्यावह कोई पुलिस का आदमी

कात करनेके उपरान्त नौकर रक्खेजाओगे। प्र०—भावपूना
करने तुम्हारे विषय में कहा था ? उ०—मैं नहीं जानता
कि उसने कुछकहाहो। प्र०—क्या तुमने उससेकहा था कि
वह तुम्हारे निस्बत कुछकहे ? उ०—मैंअपनेघरमें रहताथा
कहींबाहर नहींजाता था। प्र०—क्या तुम्हारी गरज़ यहहै
कि तुम अच्छीतरह जानते थे कि भावपूनाकर तुम्हारे मद्दे
कुछ नहीं कहा ? उ०—नहीं प्र०—सावधान होजाओ क्या
तुम्हारा यहमतलबहै कि तुमनेभावपूनाकर से कुछबातें नहीं
कीं ? उ०—नहीं। प्र०—क्यातुम यहकहतेहो कि तुमनेउसको
नहींदेखा ? उ०—जबवह बंगलेपर आताथा मैंउसको देखता
था ? प्र०—ज़हरदेने के पहिलेतुमने उसकोदेखा था ? उ०
जब साहिब रवाना होनेवाले थे उस समय उसको मैंने
देखाथा। प्र०—यानिज़हर देनेके पीछे ? उ०—हां। प्र०—
पसमैंखयाल करताहूं किउससे और तुमसे विषदेनेके विषयमें
कुछबातेंहुईं ? उ०—नहीं २ कुछ बातेंनहींहुईं। प्र०—क्यातु-
म्हारायहमतलबहै कितुमसे और उससेकभी इसविषयमें बातें
नहींहुईं ? उ०—मुझको स्मर्ण नहीं शायदकभी कीहों। प्र०—मैं
तुमकोयाद दिलाताहूं तुमकोयाद होगा कि दरमियान तुम्हारे
औरउसके महाराजा साहबके विषयमें बातेंहुईथी ? उ०—
कभीनहीं हुईं। प्र०—क्यातुमने महाराजा साहबके मद्दे उस
से कुछबातेंकी थी अर्थात्ज़हर देनेकेपश्चात् ? उ०—नहीमैंने
कभीमहाराजा साहबकेविषय में कोई बातनहीं की। प्र०—
क्यातुमसे उसनेनहीं पूछाथा कि महाराजा साहब इसबात
को जानतेहैं यानहीं ? उ०—उसनेमुझसे नहींपूछा। प्र०—
क्यातुम्हारी यहगर्ज़है कि तुमनेकभी उसकेरोबरू महाराजा
साहबका नामनहीं लिया ? उ०—नहींलिया। प्र०—तुम्हारे
इज़हारके पहिले जोकरनैल फियरसाहबने लियेथे तुमनेभाव
पूनाकरको नहींदेखा ? उ०—नहीं। प्र०—जब तुम्हारे इज़-
हार लियेगये तो भावपूनाकर मौजूद था ? उ०—क्यामिस्टर

यदि उन्होंने विषभीदिया होतातो मुझको किसतरह मालूम होता। प्र०—बहर सूरत तुमने अपने ही प्राण बचाने के वास्ते उसको माखूज़ किया ? उ०—जबरजीडण्ट साहबने मुझसे पूछा तोमैंने उत्तर दिया कि बहुतसे मनुष्य नगर में रहते हैं और यहांआते जाते हैं। प्र०—पसतुमने एकनिर्दोष मनुष्यको माखूजकरना चाहाहालांकि खूनकरनेका तुमने उद्योगकियाथा ? उ०—चूंकि यहसब लोगनगरमें रहतेथे इसलिये उनकोमैंने माखूज करना चाहाथा। प्र०—साहबने तुमसे यह पूछाथा कि विषदेनेमें तुम्हारा किसपर सन्देह है तुमनेउत्तर दिया कि फैजूपर ? उ०—मैंने कहाथा कि फैजू नगरमें रहताहै मेरा सन्देह उसपरहै। प्र०—क्यातुमने कहाथा कि फैजूपर मेरा सन्देहहै ? उ०—हां। प्र०—यहतो तुमभूलगये कि मैंनेविषकी पुड़िया पेटीमें रक्खीहै परन्तु इसबातको नहींभूले कि हमने विषदियाहै और अपराध इसका फैजूपर लगाया ? उ०—हां पुड़ियारखकर भूलगयाथा। प्र०—और फैजूको माखूजकिया ? उ०—बहुत आदमी उसका नाम लेतेथे उस समयमैं चुपहो रहा। प्र०—नहींनहीं तुमचुप नहींहुयेथे तुमनेकहा था कि फैजूपर मेरासन्देहहै ? उ०—हांमुझसे पूछागयातो मैंनेकहा कि फैजूशहरमें रहताहै मेरासन्देह उसपरहै। प्र०—अर्थात् मारनेके उद्योगका सन्देहहै ? उ०—हां मैं केवल पुड़ियोंको जानताथा। प्र०—इससेतुम्हारा क्यामतलबहै ? उ०—मुझेयह सन्देहथा कि जैसी पुड़िया मुझको और पेडरूको दीगईहै वैसीपुड़ियां औरोंकोभी दीगई होंगी। प्र०—इसलिये तुमने उनकोमाखूज किया ? उ०—हां। प्र०—जबतुम करनैलफियर साहबके रोबरूइजहार लियेजानेके पश्चात् छुटादियेगये तो तुमकहांरहे ? उ०—मैंघरमेंथा और मैंने साहबसे दरखास्त कीथी कि मुझकोपट्टा मिलजाय अर्थात्मैं फिर नौकर रक्खा जाऊं। प्र०—क्यातुम फिरनौकर रक्खेगये ? उ०—नहींसाहबने कहाथा कि साहबलोग तहकीकातके वास्ते आते हैं तहकी-

कात करनेके उपरान्त नैाकर रक्खेजाओगे। प्र०—भावपूना
करने तुम्हारे विषय में कहा था? उ०—मैं नहीं जानता
कि उसने कुछ कहा हो। प्र०—क्या तुमने उससेकहा था कि
वह तुम्हारे निसबत कुछकहे? उ०—मैंअपनेघरमें रहताथा
कहींबाहर नहीजाता था। प्र०—क्या तुम्हारी गरज यहहै
कि तुम अच्छीतरह जानते थे कि भावपूनाकर तुम्हारेमदद
कुछ नहीं कहा? उ०—नहीं प्र०—सावधान होजाओ क्या
तुम्हारा यहमतलबहै कि तुमनेभावपूनाकर से कुछबातें नहीं
कीं? उ०—नही। प्र०—क्यातुम यहकहतेहो कि तुमनेउसको
नहींदेखा? उ०—जबवह बंगलेपर आताथा मैंउसको देखता
था? प्र०—ज़हरदेने के पहिलेतुमने उसकोदेखा था? उ०
जब साहिब रवाना होनेवाले थे उस समय उसको मैंने
देखाथा। प्र०—यानिज़हर देनेके पीछे? उ०—हां। प्र०—
पसमैंखयाल करताहूं किउससे और तुमसे विषदेनेके विषयमें
कुछबातेंहुईं? उ०—नहीं २ कुछ बातेंनहींहुईं। प्र०—क्यातु-
म्हारायहमतलबहै कितुमसे और उससेकभी इसविषयमें बातें
नहींहुईं? उ०—मुझको स्मर्ण नहीं शायद्कभी कीहों। प्र०—मैं
तुमकोयाद दिलाताहूं तुमकोयाद होगा कि दरमियानतुम्हारे
और उसके महाराजा साहबके विषयमें बातेंहुईथी? उ०—
कभीनहीं हुईं। प्र०—क्यातुमने महाराजा साहबके मद्दे उस
से कुछबातेंकीं थी अर्थात्ज़हर देनेकेपश्चात्? उ०—नहीमैंने
कभीमहाराजा साहबकेविषय में कोई बातनहीं की। प्र०—
क्यातुमसे उसनेनहीं पूछाथा कि महाराजा साहब इसबात
को जानतेहैं यानहीं? उ०—उसनेमुझसे नहीपूछा। प्र०—
क्यातुम्हारी यहगर्ज़है कि तुमनेकभी उसकेरोबरू महाराजा
साहबका नामनहीं लिया? उ०—नहीलिया। प्र०—तुम्हारे
इज़हारके पहिले जोकरनैल फियरसाहबने लियेथे तुमनेभाव
पूनाकरको नहीदेखा? उ०—नहीं। प्र०—जब तुम्हारे इज़-
हार लियेगये तो भावपूनाकर मैाजूदथा? उ०—क्यामिस्टर

सूटरसाहबके सन्मुख। प्र०-हां? उ०-मैने उसको वहां नहीं देखा और वह वहां नथा। प्र०—उससमय तुमने भावपुनाकरको नहीं देखा? उ०—मैने उसको नहीं देखा। प्र०—पस मैं खयालकरता हूं कि एकलक्षरुपये के लोभसेतुमने अपनेस्वामी के मारडालने कावाइदाकिया? उ०—हांमैं गरीबआदमी था एकलाख रुपये के लोभमें आगया। प्र०—पस गरीबहोने और एक लाखरुपये के लोभसे तुमने मारडालना चाहाथा? उ०—हां मैं गरीब आदमी था लाखरुपये के लोभ से मैने ऐसाकरना चाहाथा। प्र०—मैंतुमसे फिर प्रश्नकरना चाहताहूं इसवास्ते कि तुमगरीब आदमी थे तुमने द्रव्य के लोभसे मारडालना चाहा जिन दिनोंमें कितुमछूटे हुयेथे महाराजा साहब के पासतुम किस वास्ते नगये? उ०—मैं डरता था इसलिये नहीं गयामुझको इस विषय में वार्त्ताकरने काभय था। प्र०—तुमने साहब की शर्बतमें शुक्रऔर शनिवर को विषनहीं डालाथा? उ०—नहीं मैनेसोमवारके दिन डालाथा उसीरोज उसकोखबर होगई। प्र०—तुमने केवल उसी दिनजहर डाला था? उ०—हां मैंने केवलउसी दिनविष डाला था। प्र०—शुक्र और शनिबार को जिस किसी ने साहब के गिलासमें विषडाला होतो तुमकोउस की खबर नहीं है? उ०—जमादारने शनिश्चरबार को मुझको विषकी पुड़िया दीथी और मुझको कुछ मालूम नहीं। प्र० जबसे किमिस्टर सूटरसाहबने तुम्हारे इजहारलिये तुमनेपुलिसकेआदमियोंको देखाहै? उ०—उससमयसे मैं पहिरेमेंहूं॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह प्रश्न किये॥

प्र०—जबतुम पहिलीबेर महाराजा साहब के निकट गये तो तुमसे महाराजा ने कुछ विषका जिक्र किया था? उ० नहींमुझसे कुछजिक्र नहीं किया। प्र०—उन्होंने तुमसे क्या कहाथा? उ०—उन्होने केवल इतना कहा कि बंगलेपर जो बातहो उसकीइत्तिला मुझकोकिया करो। प्र०—महाराजा साहबसे विषदेने का जिक्र पहिले कबआया था? उ०—नौ-

सारी से वापिस आनेसे पांच महीने के उपरान्त। प्र०—जिस सोमवारको तुमनेकरनैल फियरसाहब को विषदियाथा और उसजहरका दियाजाना मालूमहोगया और उसकेउपरान्त जोतुमकहतेहो किमैंअपने घरमेंरहा? उ०—हां जिसदिनसे किमुझपर विषदेनेका संदेह पायागया मैं अपनेघरमेंरहा? प्र०—यशवन्तराव या सालिम कभीतुम्हारे घर परआयेथे उ० नहीं। प्र०—तुम्हारीमुअत्तली केपीछेभी नहींआये? उ०—नहींमेरे घर कभी नहीं आये। प्र०—बग़ैर यशवन्तराव और सालिम के तुमकभी महाराजा साहब के पासगये थे? उ० नहीं। प्र०—अपनी मुअत्तली केबादतुम अपनेघर रहेक्या तुमको अपनेघरपर पहिरा रहिनेका सन्देह था यातुम यह खयाल करतेहो किऊंकास तुम्हारी काररवाई पर निगरानी करतेहैं उ०—मुझको स्मर्णनहीं मैंअपने घरसे कहीं बाहरनहीं निकला। प्र०—सरजन्ट वेलनटायन साहबने तुमसे उस निशानकी बावत दरयाफ्त कियाथाजो तुम्हारे पेटपरहै वह चिह्नअबभी है? उ०—हां है। प्र०—तुमने कभीयह निशानकिसी डाक्टरको दिखाया—सरजन्टवेलन टायनसाहबबोले कि निशानभी बहुत अच्छीजगहपरहै जहांपर कि शीशीके रखनेका हालयह शख़्स बयानकरताहै--ऐडवकेट जनरलने कहाकि ग्रेसाहबमेहरबानी करके आप उस चिह्नको देखें सो डाक्टर ग्रेसाहब गवाहको बाहरलेगये और चिह्नको देखाफिर ऐडवकेट जनरलनेडाक्टर ग्रेसाहबसे इज़हारलिये उननेपूछा कि आपनेइस गवाहको देखाउन्होंनेकहा कि हांदेखा एकइञ्चशा आधाइञ्चकेनाभि के निकट तीनचिह्नहैं अर्थात् जहां कि पाजामाबान्धा जाताहै वह निशान मिसलतेजाय और गरमलोहे या फोड़ेकेमानुस होतेहैं या जिसतरह फफोलेका चिह्न पड़जाताहै या किसी वस्तुका निशान जिससे शरीरका चर्मदग्ध होजाताहै फिरसरजन्टवेलन टायनसाहबने प्रश्नकिया कि आपसुनचुकेहैं कि इस गवाह ने क्या इज़हार दिये अर्थात् उसने वर्णन कियाहै कि

सूटरसाहबके सन्मुख। प्र०-हां? उ०-मैंने उसको वहांनहींदेखा औरवहवहांनथा। प्र०—उससमय तुमने भावपूनाकरको नहीं देखा? उ०—मैंने उसको नहींदेखा। प्र०—पस मैं ख़यालकरता हूंकि एकलाखरुपये के लोभसेतुमने अपने स्वामी के मारडालने कावाइदाकिया? उ०—हांमैं गरीबआदमी था एकलाख रुपये के लोभमें आगया। प्र०—पस गरीबहोने और एक लाखरुपये के लोभसे तुमने मारडालना चाहाथा? उ०—हां मैं गरीब आदमी था लाखरुपये के लोभ से मैंने ऐसाकरना चाहाथा। प्र०—मैंतुमसे फिर प्रश्नकरना चाहताहूं इसवास्ते कि तुमगरीब आदमी थे तुमने द्रव्य के लोभसे मारडालना चाहा जिन दिनोंमें कितुमछूटे हुयेथे महाराजा साहब के पासतुम किस वास्ते नगये? उ०—मैं डरता था इसलिये नहीं गयामुझको इस विषय में वार्त्ताकरने काभय था। प्र०—तुमने साहब की शर्बतमें शुक्रऔर शनिवर को विषनहीं डालाथा? उ०—नहीं मैंने सोमवारके दिन डालाथा उसीरोज उसकोखबर होगई। प्र०—तुमने केवल उसी दिनज़हर डाला था? उ०—हां मैंने केवलउसी दिनविष डाला था। प्र०—शुक्र और शनिबार को जिस किसी ने साहबके गिलासमें विषडाला होतो तुमकोउस की खबर नहीं है? उ०—जमादारने शनिश्चरबार को मुझको विषकी पुड़िया दीथी और मुझको कुछ मालुम नहीं। प्र० जबसे किमिस्टर सूटरसाहबने तुम्हारे इज़हारलिये तुमनेपुलिसकेआदमियोंको देखाहै? उ०—उससमयसे मैं पहिरेमेंहूं॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह प्रश्न किये॥

प्र०—जबतुम पहिलीबेर महाराजा साहब के निकट गये तो तुमसे महाराजा ने कुछ विषका ज़िक्र किया था? उ० नहींमुझसे कुछज़िक्र नही किया। प्र०—उन्होंने तुमसे क्या कहाथा? उ०—उन्होंने केवल इतना कहा कि बंगलेपर जो बातहो उसकीइत्तिला मुझकोकिया करो। प्र०—महाराजा साहबसे विषदेने का ज़िक्र पहिले कबआया था? उ०—नौ-

साय—तिसपीछे रावजी बुलागया—साहब प्रेजीडराटने उसे प्रश्न किया कि जबतुम सोमवारको संखियेका इस्तैमालकरचुके तो बोतलको क्या किया था ? उ०—मैंने उसबोतलको एकसंदूक के पीछेछिपादिया था। प्र०—किसजगह छिपाकर रक्खाथा ? उ०—जहांकि बागमदके खूबसूगाड़ियां आकर खड़ीहोती हैं। प्र०—क्या वहां पर शीशी तुमको नहीं मिली ? उ०—पुलिसके लोगों ने आकर ढूंढ़ा था परन्तु उनको शीशी नहीं मिली। प्र०—शीशीकितनी बड़ीथी ? उ०—इतनीबड़ी (गवाहने बताया कि उंगलीके बराबर थी) एडवकेटजनरलने कहाकि अबचार बचगये हैं किसी गवाह के शायद इजहार न लिये जावेंगे साहबप्रेजीडराटने कहाकि हां अवफजूल है—इसवास्तेकमी शन बरखास्त हुई॥

नवें दिनका इजलास॥

आज बरवक्त इजलासके सम्पूर्ण मेम्बरान् वर्त्तमान थे सर-ल्यूइसपीली साहब दो पहर तक रहे पर श्रीमान् महाराजा मल्हरराव दिनभर मौजूदरहे और श्रीयुत महाराजासेंधिया भी मध्यान्ह के उपरान्त देरतक कमीशन से गैरहाजिररहे इजलासके आरंभहोतेही साहबएडवकेटजनरलने प्रेजीडराट साहबसे पूछाकि माईलार्ड—सुनाहै कि शनिश्चरवार को कमी-शनका इजलास न होगा—क्यायहबात सत्यहै साहबप्रेजीडराट नेकहाकि मैंभी इसका तजकरह करनेको था शनिश्चरवारको हिन्दुओंकी तातीलहै इसलिये उसदिन इजलास न होगा।

साहबएडवकेटजनरलने कहाकिवजशनिवारको—साहब प्रेजीडराटने कहा—हां—तिसपीछे नरसुराजाना गवाहबुलाया गया॥

नरसुराजाना गवाह का इज़हार॥

इस मनुष्यने वर्णनकिया किमैं रजीडन्सी बड़ोदेके चपरा-सियों का जमादार हूं मुझको रजीडन्सी में नौकरीकरते हुए

शीशीके मुंहपर रुईलगीथी और रुईमेंसे वहवस्तु निकलकर उसके पेटसे लगगई—क्या आप खयाल करसक्ते हैं कि उसके वर्णनके अनुकूल ऐसे चिह्नपड़गयेहैं? उ०—हां सफेद संखियेसे ऐसे निशान पड़जातेहैं। प्र०—क्या आप खयाल करतेहैं कि बगैर रगड़ने संखियेके खालपर निशान पड़सक्ताहै? उ०—हां जोसंखिया खालसे लगजावे। प्र०—कितनीदेरमें वोनिशान मालूमहोगी? उ०—एक घण्टेमें। प्र०—ऐसा चिह्न एकघण्टेमें पड़जावेगा? उ०—हां। प्र०—क्यावास्तवमे ऐसाही विचारांश है कि यहचिह्न जोगवाहके शरीरपरहै वहइसी तरहसेहोगये हैं? उ०—हां मुझको यही निश्चयहै अर्थात् जोयह संखिया देहमें लगताते ऐसाचिह्न पड़जाता। प्र०—चूंकिआप डाक्टर हैं और डाक्टरहोने के कारणआप कमीशनमेंरहे और इसके इजहार आपनेसुने—सोडाक्टरी विद्याकेबलसे वर्णनकरसक्ते हैं कि इसमनुष्यकी देहपर इसीतरहसे जैसा कि वहकहताहै चिह्न पड़गयेहैं? उ०—हां। प्र०—मुझको विश्वासहै कि इस गवाहके इजहारोंपर भलेप्रकार ध्यानकरके आपऐसा बयान करतेहैं? उ०—हां। प्र०—यदिआप इसमनुष्यके इजहार न सुनते और आपको रायतलब होती तो आप क्या कहते? उ०—मैं कहता कि यह चिह्न तेजाब या गरम लोहेके हैं। प्र०—मैंइन मुआमिलोंको नहींजानता परन्तु क्याआप कह-सक्तेहैं कि ऐसेनिशान हिन्दुस्तानियों की देहपर बहुधाहोते है? उ०—हांमैंखयाल करसक्ताहूं—इसके उपरान्त ऐडवकेट जनरलने डाक्टरसाहब से प्रश्न किये॥

प्र०—क्या संखिया तेजाबकीखासियत रखताहै? उ०—हां। प्र०—मैं पछताहूं कि आपकी राय है किजो संखिया घोलकर बोतलमें डालीजाय और वह शरीर से लगेतो ऐसे चिह्नपड़ सक्ते है? उ०—हां पड़सक्ते है। प्र०—सररिचर्डमीड साहबने कहा जो तेजाब एक फोड़ेपर लगाया जायातो ऐसानिशान पड़सक्ता है? उ०—हांपड़सक्ताहै परन्तु फोड़ेकी हालतदेखो

राजीहुवा और बरखास्त कमीशनसे वेसमझीतरोज के पीछे महाराजासाहबके निकट मैंगया उसदिन रावजीऔर सालिम और एकमनुष्य जोरावजीके साथथा और मैं महाराजासाहबके पासगये प्रथमहम यशवन्तरावके घरपरआये वहांसे महाराजा साहबके महलको गये सररिचर्डमीड साहबने सुतरञ्जिनसे पूछाकि ये डब्बे क्याअर्थ हैं सुतरञ्जिनने कहाकि दरबार—सा हबकेलोगो कहतेहैं—गवाहने वर्णनकिया कि रावजी और एक औरमनुष्य मेरेसाथ गयेथे यशवन्तराव और एकदूसरा मनुष्य दूसरेमार्गसे गयेथे महलके पीछेजो एक बागहै उसमेंहोकर हमलोगमहलमें पहुंचे यहबाग नवीन तैय्यार हुवाहै मैं इस बागकानाम नहींजानता जब हममहलमें पहुंचे तो मैं सीढ़ीपर बैठगया—जब यशवन्तराव महाराजा साहबको अपने साथ ले-या उससमय सालिमने हमको ऊपर बुलाया जो मनुष्य रावजी केसाथ गयाथा वहनीचेखड़ारहा जबहम ऊपर गये तो महा-राजासाहबसे मुलाकात हुई—सलामकरके मैं जमीनपर बैठ गया यशवन्तराव और रावजी और महाराजासाहबसे कुछ

बत्तीस वा चौतीस वर्षहुये और सत्तह या अठारह वर्षसे मो-
हर्ट्लजमादारी परघा मेरामासिक १४) रु० थायही तनखाह
जमादार की है—दस रुपये मासिक रावजी हवालदार को
मिलतेथे मैंनगरमें रहताथा प्रतिदिन भोरको सातया आठ
बजे रेजीडन्सीमें अपने कामपर हाजिरहुवा करता संध्याको
सातबजे चलाजाया करता था रेजीडन्सी की कचहरी कभी
साढ़ेछःबजे बरखास्तहोजातीथी तो उससमय मैं घरकोचला
आता था—मुझेयह जमाना याद है जबकि बड़ौदेमें कमीशन
का इजलासहुवा था उससमय रावजीनेमुझसे बातेंकी थीं
और मुझसे कहाथा कि सालिम और यशवन्त कहते हैंकि
तुमकोमहाराजासाहबके निकटजानाचाहिये मैनेउत्तरदिया
किमेरेघरमें बीमारीहै मैं अभीनहींजासक्ता और सिवायइस-
केइनदिनों मुझको अपने कार्य्यसे छुट्टी नहीं है जब बड़ौदेसे
कमीशन बरखास्त हुई तो रावजीऔर सालिमने फिरमुझसे
वहांजानेका तज़करहकिया मैंसालिमको उससमयसे जानता
हूं जबकि वहरजीडन्सीमें आयाकरताथा—महाराजखण्डेराव
के कालके पीछे मैं यमुनाबाईकी सेवामें रहा उनकेपास से
रेजीडन्सीकोलौटआया—करनैलबारसाहबकेजमानेमेंसालिम
रेजीडन्सीको आयाकरताथा जबकि यमुनाबाई रजीडन्सी में
रहाकरतीथी उसजमानेमें उनकेपास मेरीतैनाती हुईथी मु
झको आज्ञाथी किजबतक वहयहांरहैंतुमभी उनकेपासरहो
अबवह पूनाकोगई उससमयभी दौमहीनेतकमैं उनकेपासरहा
उनदिनों करनैलबार साहब बड़ौदेके रजीडण्ट थे और जब
मिस्टरटक्कर साहबआये उन्होंनेभी मुझेयमुनाबाईके पासरक्खा
यशवन्तराव जासूसने दोतीनबेर मुझसेकहा कितुम महारा-
जासाहबसे मुलाक़ात करो सालिम और रावजीने भीकहा
थाकि सोम और हहस्पतिवार को जबकि महाराजा साहब
रजीडन्सीको आयेथेतो सालिम और रावजीमुझसे सदायही
कहाकरतेथेअन्तको मैंमहाराजासाहबकी मुलाक़ातके वास्ते

अर्थात् मैंने और सालिम और रावजीने यह रुपया लिया और कुछ जुम्मा पंखेवालेको भी दिया रावजी हरमनुष्य का नाम जोरजीडन्सोमें आया करते थे लिखकर महाराना साहबके भेजनेको मुझे दियाकरता मैं यशवन्तरावके मकानपर जाकर सालिमको देदेता इसीभांति बीसया पच्चीस परचे महाराना साहबको गये-सोम और वृहस्पतिवारको यह परचेनहीं भेजे जाते थे क्योंकि दोनों दिनोंमें महाराना साहब स्वतः आया करतेथे इसरुपयेके मिलनेके एक महीने या सवा महीनेपीछे फिरहम महारानासाहब के पास सलाम करने के वास्ते गये उसरोज महारानासाहबसे मुलाकात एकछोटे कमरेमें हुई जहांकि बड़े २ शीशेरक्खे हुयेथे वहांकुछ पीतलके बत्तीदान और एक घण्टाभी रक्खा हुवाथा सालिम और यशवन्तराव महारानासाहबके पासथे महारानासाहबने सालिम से कुछ वार्त्ता करके हमलोगोंसे कहाकि साहब मुझसे अतिअप्रसन्न रहतेहैं इसकाकुछ उपायकरना चाहिये महाराना साहबने कहाकि मैं कोई वस्तुदूंगा ऐसाकोई यत्नकरनाकि वहउनके कण्ठ और उदरतक पहुंचजाय मैंने उत्तरदियाकि खानेपीने में तो कुछमेरा इखतियार नहीहै नवह मेरेसम्मुख भोजन करतेहैं रावजी ने कहाकि चकोतरेका शर्बततो पीतेहैं उस में डालदो महारानासाहबने कहा यदितुमऐसा कामकरोगे तो तुम को धनवान बनादूंगा—नौकरी की तुमको आवश्य कतानरहेगी यहवार्त्ता दसपन्द्रहमिनट तकरही मुझको सम्पू ना स्मर्ण नहीं परन्तु इतना कह सक्ता हूंकि अन्तिम विषे उद्योगसे तीनचार महीने पहिले की यहबात है इसवार्त्ता उपरान्त सालिमने मुझकोएकपुड़ियादी वहपुड़िया अनुमान एक उंगली के थी वह पुड़िया अहमदाबाद के कागज की बनी हुईथी जब मैं रेजीडन्सी को लौट आया तो मैंने वह पुड़िया रावजी को दे दी उसके चौथे पांचवें दिन सालिम और यशवन्तराव को बंगले पर देखा मुझसे सालिमने पू

रताथा महाराना साहबके साथ सालिम और यशवन्तराव हुवा करतेथे जब महाराज नौसारी को गयेतो साहबरेज़ीडेण्टके साथभी वहांगया था महाराना साहबके साथ केवल सालिमथा यशवन्तराव नहींगया—जबनौसारीगयेथे सालिम साहब रेज़ीडण्ट के हातेमें रहा करता था इसहाते में कोई और सवारभी रहा करते थे रावजी ने मुझको नौसारीमें एक वेर पारितोषक दिलवाया था इसका ज़िक्र महाराजासाहब और सालिमसे पहिलेहोचुका था जबमुझको इनआमदिया तोरावजीने मुझसेकहा थाकि तुमको डेढ़सौरुपया इनआम कामिलाहै मैंने कहाकि मैं इसरुपयेको क्याकरूं यह कहकर सालिम के पासवह रुपया रावजी छोड़आये जबसालिम नौ-सारीसे गयाथा तो रावजीने उसके हाथ यहरुपया मेरेघर भिजवादिया सोसालिमने वहरुपया मेरे भाईको देदियाजब मैं बड़ौदेको आयातो मालूमहुवा किवह रुपया मेरे भाईके पासपहुंचगया—जब महाराना साहब नौसारीमें थेतो कभी महाराज के सन्मुखमें अकेला नहीं गयाजब साहब रजीडण्ट उनकेपास जातेथे तोमैं भी हमराहजाताथा जब महाराना साहबबड़ौदेको वापिसआयेतो मैंमहीनेडेढ़महीनेकेपीछेउनके सलाम के वास्ते फिरगया और पूर्व्ववत् यशवन्तरावकेमकान पर हमऔर रावजीगये और वहासे महाराजासाहबकेपास गये इसवेर महाराना साहबने कहाकि जोकुछ रजीडन्सीमें हुवाकरेलिखकरहमारेपास भेजदियाकरो रावजीनेकहाबहुत अच्छा जोमनुष्य आयेगा उसकानाम लिखकरआपकेपासभेज दूंगासालिमने महाराजा साहबसे मरहटीभाषामें कहा कि महाराज विवाहका पारितोषक इसमनुष्यकोनहींमिलामहा-राजासाहबने कहाकि इसका तुम कुछवन्दोबस्त करदो केवल इतनीही वार्त्ता हुई थी हमको कुछ रुपया उस समय नहीं मिला था परन्तु दस पन्द्रहदिन के अनन्तर आठ सो रुपया सालिम लाया और हमने इस रुपये को परस्पर बांट लिया

कि रावजीने क्या इजहार लिया और इजहारसे पहिले मुझसे मुआफीका वाइदा नहीं हुआ जब मेरे इजहार लियेगये तो सरल्युइसपीली साहब भी वहां बैठेथे—साहबप्रेजीडएटनेप्रश्न किया कि मिस्टर सूटरसाहब और सरल्युइसपीली साहबने इजहार लियेजानेके पहिले तुमसे कुछ कहाथा ? उ०—कुछ नहीं कहा। वह मेरे इजहार सुनतेरहे। प्र०—ऐडवकेट जनरल ने कहा तुमसे अपराधके चमाहोनेका कुछ वर्णन हुआथा ? उ० नहीं इसके उपरान्त गवाहने कहा कि जबसे मैं कैद हुआ हूं कईदिन तक हिन्दुस्तानी सिपाहियोंके पहरेमें रहा। और इसकेपीछे गोरोंकेपहिरे हूं मुझे स्मर्ण है कि एकदिन मैं रेजीडन्सी के बागमें गयाथा मैंने वहां नौकरों को देखा मुझे लज्जा आई कि इतने समयके पीछे मेरे भाग्यमें लिखाथा कि मैं ऐसाकर्म करूं और अवक्योंकर अपनामुख दिखाऊं इसरोसे मैं कुयेंमेंगिर-पड़ा—रावजीके पेटसे जोनिशान है उसने ९ नवम्बरके दोदिन पहिले मुझको दिखायाथा वह जगह सूजीहुई फोड़ेके सदृश थी उसने कहाकि मैंने यहीशीशी रक्खी थी उससे मेरी यह गति होगई ॥

कि तुमने रावजीको वहपुडिया देदी मैनेकहा हांदेदी आठ दसदिनके पीछे मैंदसहरेके सवासको महाराजासाहबकेपा-सगया पहिलीरीतिके अनुसार नौबजे यशवन्तरावके मकान परगया और वहांसे रावजी जुग्गाकेसाथ महाराजा साहब केमहलको गया जिसकमरेमें हमेशा मुलाक़ात होतीथी उ-समें महाराजा साहब से मुलाक़ात हुई सालिम और यश-वन्तराव महाराजासाहब के पासबैठेहुये थे जब महाराजा साहबने मुझको देखा तो बुरी २ गालियांदीं और कहा कि तुमलोग लुच्चेहो गालियादेनेके पीछे महाराजासाहबने हम से कहाकि अबतक तुमलोगोने कुछनहीकिया मैनेकहा कि रावजीको मालूमहोगा मैंकुछ नहींजानता रावजीनेकहाजो कुछ मेराकामथा मैंकरचुका और वहवस्तु जोमहाराजासा-हबने दीथी अच्छीनहो तो मैंक्याकरूं महाराजासाहबने कहा अच्छा मैंदूसरी पुड़िया भेजूंगा और कहाकि उसको अच्छी तरह डालना—कलकेदिन तुम्हारेपास सालिमके हाथपुड़िया पहुंचेगी-सोउसके दूसरेदिन जबअपने मकानसे मैंनिकलता था तो सालिमने मुझको पुड़ियादी और मैनेउसको लाकर रावजीके हवाले करदिया—यहपुड़िया ९ नवम्बरके पांचसात रोज पहिले दीथी ९ नवम्बर के प्रातःकाल के आठबजे मैंअ-पनेमकानसे आया मैनेरावजीको डेवढ़ीपर बैठाहुआ देखा जो साहबकी कचहरीके निकट है उसदिन मेरको मुझसे और रावजीसे कुछवात्ती नहुई थोड़ीदेर के पीछे जब गिलास में विष मालूमहुवा तो गडबड होगई मुझसे रावजीने कहाकि डाक्टरसाहब आयेथे और गिलासजेबमें रखकर लेगये सिवा इसके और कुछबातें रावजीसे नहींहुईं, उसकेदूसरे दिन क-रनलफियर साहबने मेरेइज़हारलिये मैंअपने ओहदेपरका-क़ायमरहा और फिरसूटरसाहबकी आज्ञानुसारमैं पकड़ागया ९ नवम्बर और जिसदिनतक मैंपकड़ागया रावजीसे कुछबातें नहींहुईं मेरे इज़हार के पहिले मुझसे किसीने नहीं कहा

के पासकोई गुसलखाना न था? उ०—हां शायद हो मैं नहीं कह
सक्ता। प्र०—तुम कहते हो कि दरवाजे और बहुतसे कमरे थे
तुमने कोई गुसलखाना नहीं देखा? उ०—मैंने गुसलखाना नहीं
देखा। प्र०—दरवाजोंके खयालसे तुम कहते हो कि शायद कोई
गुसलखाना होगा? उ०—हां। प्र०—परन्तु तुम नहीं जानते?
उ०—नहीं। प्र०—महाराजा साहबके निकट हालमें भीगये
थे? उ०—नहीं। प्र०—मारलैनफियर साहबने तुम्हारे इजहार
आपलिये था किसी और मनुष्यसे अपने सन्मुख लिवाये थे?
उ०—आपही लिये थे। प्र०—तुमने मारलैनफियर साहबसे प्रति-
ज्ञाकीथी कि सच कहोगे और सिवा सचके और कुछ न कहोगे?
उ०—हां परन्तु मैंने उनसे सत्य नहीं कहा था मेरे इजहार
उन्होंने लिखलिये थे। प्र०—तुम्हारा दिल उस समय गवाही
न देता था कि तुमको झूठ बोलना न चाहिये? उ०—नहीं मैंने
उनसे कुल वृत्तान्त वर्णन नहीं किया था। प्र०—पस इसको सो
तुम किसलतपर ख्याल करो कि तुम्हारे भाग्यमें था कि मारलैन
फियर साहबके सामने बहुतसा झूठ बोलो? उ०—हां मेरे भाग्यमें
यही था मैं क्या कहूं।

के निज़ामें लिखाथा। प्र०—इसकाम के वास्ते तुम को क्या मिलने वालाथा? उ०—मुझसे प्रतिज्ञा हुईथी कि मेरेवास्ते कुछ बेहतर होगा। प्र०—तुमको निश्चयथाकि तुम्हारी नौकरीमें तरक्की होगी और तुमको रुपयामिलेगा? उ०—हांयही समझा था। प्र०—पस यहबात समझकर तुम भी युआमिले में शरीकहुये? उ०—हां। प्र०—परन्तु आज वर्णनकरते हो इस बयानके वास्ते तुमको कुछ न मिलेगा? उ०—कुछ नहीं मिलेगा। प्र०—पस मालूमहोता है कि तुमरुपया लेकर खून करोगे और दरोग हल्फ़ो न करोगे? उ०—मैं क्या करूं मेरे भाग्यमें यहीथा मेरी क़िस्मत थी। प्र०—तुमकहतेहो कि जो कुछरजोडन्सीमें होता था रावजी लिख लियाकरते थे और लिखकर महाराजासाहबको भेजनेको हमें दिया करते थे? उ०—हां चिट्ठी लिखकर मैं सालिम को देदिया करता था। प्र०—यहपरचा कागजका होताथा या कोईकिताब होतीथी या और कुछ होताथा? उ०—एकपरचाकागजका होताथाजो मोहरसे बन्दकिया जाताथा वहीपरचा प्रतिदिन भेजाजाता था। प्र०—ऐसाकोईपरचा तुम्हारेपास अबनहींहै? उ०—नहीं है। प्र०—तुमको मालूमहै कि उनपरचोंमें से कोई परचाअब कहींहोगा? उ०—यहपरचे सालिमके पासहोंगे या सरकार के पास। प्र०—अबबयानकरोकि तुमसे और महाराज(साहब) से पहिले किसकमरेमें मुलाक़ात हुईथी? उ०—एक छोटा कमराथा और उसमें एक बेंचबिछीहुई थी। प्र०—उसकमरे का हालबयानकरो? उ०—इसकमरेमें दो बड़े २ आईने थे और एकघड़ीथी और जोकिराचिका समयथा कमरेको और असबाबका मैंनेख्याल नहींकिया। प्र०-क्याएकही कमरेमेंतुम से और महाराजासाहबसेभेंट हुईथी या मुखतलिफ़ कमरोंमें? उ०—हमेशाएकही कमरेमें मुलाक़ात होती थी। प्र०—उस कमरेमें गुसलखानाभी था? उ०-शायदहो क्योंकि चारोंओर दरवाजे और कमरेथे। प्र०—परतुम कहतेहो कि उसकमरे

करके मेरे प्रश्नका स्पष्ट उत्तर दो मैं शायद नहीं जानता ? उ०—मैं जानता हूं कि पांच दफा। प्र०—हांमैं भी ऐसा ही जानता हूं परन्तु जबप्रथम तीनवेर महाराजा साहब से भेंट हुई थी तो विषका जिक्र आयाथा यानहीं ? उ०—नहीं। प्र०—जब तुम्हारी चौथीवेर महाराजा साहबसे मुलाक़ातहुई थी तो उसदिन कौन२ मनुष्यथा ? उ०—यशवन्तराव और सालिम और महाराजा साहब रावजी और मैंथा। प्र०—इस मुलाक़ात में यह बात ठहरागई थी कि यह पुडिया तुमको भेजीजावेगी ? उ०—हां। प्र०—अगर यादहोतो महीना और तारीख़ बयानकरो ? उ०—मुझको न तारीख़ स्मर्णहै न महीना प्र०—जोमहीना नहीं कहसक्ते तो यहबात बताओ कि विषदिये जानेके कितने पहिले यह बातें हुईथी ? उ०—एक पुडिया २५ दिन पहिले और दूसरी पुडिया सात आठ दिन पहिले सरजन्टबेलनटायन साहबने मुतरज्जिमसे कहा कियद्यपि तुम सही२ तर्जुमा नहीं करते यद्यपि मैं तुम्हारी भाषाको नहीं जानता परन्तुमुझको ऐसाहीमालूम होताहै मुतरज्जिम करनलफ़ेर जीने उत्तरदिया कि मेरा अफ़सर मुतरज्जिम मेरी ओरसे उत्तर देताहै उससे पूछिये मैनेतर्जुमा गलत कियाथा सही सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा कि गवाहसे पूछो कि जबपहिली वेरविषका वर्णनहुआ तोभलेप्रकार समझाया कि महाराज को जहरदेनेका यहजिक्र है ?

उ०—दूसरे नौकरोंके सम्पूर्ण नौकरोंने उसका नामलिया था इस-लिये मैंनेभी उसका नामलिखाया। प्र०—केवल इसी कारण तुमने विचार किया कि तुम्हारे इक़रार भी और गवाहों के अनुकूल हों? उ०—हां। प्र०—तुम जानते थे कि वह बयान तुम्हारा बिल्कुल ग़लत था? उ०—हां मैंने झूठ वर्णन कियाथा। प्र०—मालूम होता है कि तुमने और रावजी ने इसबात का सम्मत कियाथा कि फौजूको भी अपराधी बनावें? उ०-हमने सम्मत नहीं किया। प्र०—तुम जानतेथे कि रावजीने ऐसाही बयानकिया है? उ०—सम्पूर्ण नौकरोंने ऐसाही बयान किया था। प्र०—क्या रावजीसे और तुमसे इक़रार के पहिले कुछ वार्त्ता हुई थी? उ०—नहीं वह मेरे इक़रारके पहिले क़ैद होगयाथा। प्र०—मगर वह दसतारीख़ से पहिले क़ैद नहीं हुआ था तुम को क्योंकर मालूम हुआ कि और नौकरों ने फौजूका नामलिया था? उ०—अब्दुल्ला और पेडरू और एक मुसल्मान मज़दूरने फौजूका नामलियाथा। प्र०—मैं विचारता हूं कि तुम नहीं जानते थे कि रावजी और और नौकरोंने महाराजासाहबको इसी अपराधमें संयुक्तकिया है? उ०—मैं न जानताथा। प्र०—परन्तु हमजानतेहैं कि तुमजानते थे कि रावजीने महाराजासाहबको अपराधमें संयुक्त किया? उ० नहीं। प्र०—मैं समझताहूं कि जोकुछ तुमने आज वर्णनकिया वह सबसचहै और सिवायसचके और तुमने कुछ बयाननहीं किया? उ०—हां आज सिवाय सचके मैंने और कुछ बयान नहीं किया--इसके अनन्तर कमीशनके अधिष्ठाता टिफनखाने खानेके वास्ते उठे टिफनके उपरान्त मेम्बरान् कमीशन फिर समाज में सुशोभित हुये तो सरजज्ज मेलन टायन साहब नरसू गवाह से फिर प्रश्न करने लगे। प्र०—तुम से और महाराजा साहबसे सब कै दफे मुलाक़ात हुई? उ०—पांच छः दफा। प्र०—यह तुमको भलेप्रकार स्मर्णहै परन्तु ठीक२ बताओ? उ०—शायद पांचबेर हुई होगी। प्र०—मेहरबानी

प्र०—जब चौथी मुलाक़ात पर तुमको पुड़िया दीगई थी और उससेकुछ फलनहुआ तो तुमको पांचवींमुलाक़ात परपुड़िया दीगई ? उ०—हां महाराजासाहबमुझपर क्रोधितहुये और दूसरीपुड़िया मुझको दी। प्र०—अब तुम मुझसे कहोकि जब अन्तकी बेर कारनैलफियर साहब को विष दिया गया उससे कैदिन पहिले महाराजा साहबसे तुम्हारी मुलाक़ात हुई ? उ०—पांच या सात दिन पहिले परन्तु मुझेभले प्रकार स्मर्ण नहीं। प्र०—तुमनेरावजीसे पूछाथा कितुमको जो चौथीमुलाक़ातमें पुड़ियामिली उसकोतुमने क्या किया ? उ०—हां मैंने पूछाथा क्योंकि सालिम मुझसे रोज़पूछा करता था रावजीने मुझसेकहा कि मैंने पुड़ियाको डाल दिया मगरकुछ कारगरनहीं हुई इसको मैं क्याकरूं। प्र०—जब तुम्हारे हाकिम को विषदिया जाताथा तो तुमनेकुछ इन्कार किया था ? उ० किसकेरूबरू। प्र०-रावजीसे ? उ०-नहीं। प्र०-तुमकहते होकि रावजीने तुमको फोडादिखाया था क्याउसने यह फोडामहाराजासाहबकी अन्तिमभेंटके पहिलेदिखायाथा वामुलाक़ातके पीछे ? उ०—पहिले या पीछे मुझको स्मर्ण नहीं। प्र०—जो शीशी रावजीको दीगई थी वह तुमने देखी थी ? उ०—एक शीशी सन्दूकके नीचेबंगले में रक्खीहुई देखी थी। प्र०—जब वहदीगई थी तुमनेशीशीको देतेहुये देखा था ? उ०— कुछ दियाथा मैंने भलीभांति नहींदेखा थाकि पुड़ियाथी या शीशीथी मैं आगेथा और रावजी पीछे खड़ा था। प्र०—पुड़िया थी या नहीं ? उ०—मैंनहीं कहसक्ताकि पुड़ियाथी या नहीं यह तुम्हारा बयान अन्तकीबेर काहै? उ०—हां। प्र०-तुम ने पूछा थाकि रावजीने उसकोक्या दिया ? उ०—मुझको स्मर्ण नहींकि मैंनेउससे पूछाहो परन्तु मुझको स्मर्णहै कि रावजी नेवहफोड़ा जो उसके उदरपर होगयाथा मुझकोदिखायाथा। प्र०—इसशीशीके सिवायतुमने कोईशीशी औरभी देखीथी?उ० नहीं। प्र०—तुमसे रावजीने कहाथा किशीशीका इस्तैमालमैंने

अपराधक्षमा करदे तोजो कुछवाकी रहगयाहो वहभीवर्णन करोगे? उ०—इससे बढ़कर और क्या सचकहूंगा उसननयमे मैं सचकह रहाहूं सरकारमेरी मातापिताहै चाहेफांसी देदें॥

प्रश्न खरदिनकरराव का—जिसमनुष्यके पासतुमने ३५ वर्ष नौकरीकी तुमनेउसीको विपद्दिया चाहाजो कुछतुमको और सचकहनाहो ईश्वरको वर्त्तमान समझकर वर्णनकरो? उ० मुझको भयनहींहै मैं सचकहता हूं और परमेश्वर को वर्त्तमान समझता हूं॥

प्रेसीडेण्ट साहबने सुतरञ्जिम से कहाकि तुमने गवाहसे यहकहाथाकि तुमईश्वरको वर्त्तमान समझकर सचकहो सुतरञ्जिमसाहबने उत्तरदिया हां और गवाहने भीकहाकि ईश्वर कोवर्त्तमान समझकर सचकहता हूं॥

इजहार जुग्गा भगवान गवाह॥

जुग्गागवाह बुलायागया और मिस्टर अनवरारटी साहबने उसके इजहारलिये उसनेवर्णन कियाकि रजीडन्सीकापंखिवाला हूं मैंरावजी हवालदार और नरसू जमादार को जानताहूं मैं सालिम और यशवन्तराव को भी जानताहूं यशवन्तराव का मकानभी जानताहूं शहरमेंउसकाघरहै रावजीकेसाथ मैंदो तीनवेर गयाथा जबमैं यशवन्तरावके घरगया

तुम ठीक २ वर्णन करते हो? उ०—हां ठीक २ वर्णन करता हूं उस समय में पारितोषक देने का क़ायदा दरबार में न था थोड़े से सरदार पारितोषक दिया करते थे। प्र०—जब महाराजा साहब ने तुम को विष देने के लिये बहकाया था और तुम जानते थे कि यह बात बहुत बुरी है तो तुमने अपने परिवार के लिये कुछ प्रबन्ध कर लिया था? उ०—मैं महाराजा साहब की जबानी प्रतिज्ञा पर स्थिर रहा। प्र०—तुम जानते हो कि किसी मनुष्य को विष देना बड़ा अपराध है ऐसे महाराजा साहब दस बारह मनुष्यों के रूबरू क्यों कर ऐसी वार्त्ता करते? उ०—दस बारह मनुष्य न थे केवल दो ही मनुष्य थे अर्थात् मैं और रावजी। प्र०—जितनी संखिया दी गई थी वह कम थी वा अधिक थी और क्या तीन बेर दी गई? उ० मैंने अपने आयु भर में कभी किसी को संखिया नहीं दी मैंने रावजी को संखिया दे दी थी। प्र०—जब महाराजा साहब से पहिले तुम्हारी भेट हुई थी तो महाराजा साहब ने तुम को लुच्चा कहा था पस लुच्चा कहने पर भी तुम को ऐसा मुआमला सुपुर्द करते उ०—रावजी ने समझा दिया था कि अब लुचपन न करेगा इसी हेतु यह कार्य्य मुझ को सौंपा गया। प्र०—तुम हिन्दू हो? उ० हां प्र०-कौन हिन्दू हो तुम्हारी क्या जाति है। उ०-तिलंगी कमाती हिंदू हूं। प्र०—तुम को पुलिस का भय है? उ०—किस वास्ते। प्र०—सच कहने के वास्ते? उ०—सच के कहने में क्या भय करना चाहिये। प्र०—तुम को विश्वास है कि तुम अपराधी हो? उ० मेरी दुर्भाग्यता है कि मेरा भी इस बात से सम्बन्ध है मैं क्या करूं मेरी अभाग्यता। प्र०—यदि सरकार तुम्हारा अपराध क्षमा करेगी तो ईश्वर को वर्त्तमान और साक्षी देकर सच कहोगे? उ०—सरकार चाहे क्षमा करे वा न करे सरकार मेरी माता पिता है जो चाहे सो करे। प्रश्न मिस्टर मैलवल साहब का॥ यदि सरकार तुम्हारा अपराध क्षमा कर देते और भी तुम सच कहो? उ०—मैं इस समय भी सच कह रहा हूं इससे अधिक और क्या सच कहूंगा। प्रश्न सरदिनकरराव का। भला जो सरकार तुम्हारा

कि कोई बड़ा साहब आया है और खुश हुये कि अब हम सारी दाद
फ़र्याद सुनी जावेगी—साहबने कहा कि यह जनरलनाकर हैं
जो अहमदाबाद से पलटनके अवलोकन के लिये आये हैं॥

चौथे—रखमाबाईके भाई ने अरजीदी है कि मेरी बहिन
मुझको मिले—साहब उससे अतिअप्रसन्न हुये॥

पांचवें—मैं कल आऊंगा और अपने साथ कासनी को
लाऊंगा वकीलको भेजदीजिये॥

दो चिट्ठी और भी उस गवाहको दिखाईगईं उसने कहा
कि मैं इनको नहीं जानता न मेरी लिखीहुई हैं सरजन्टबेलन-
टायनसाहबने कहा कि मुझको इसगवाहसे कुछसवालकरना
नहीं है॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहा कि मैंने कुछ कागज़ द-
बारह करनैलसाहब के मंगवाने का वाइदा कियाथा और
गवर्न्मेण्टको तारबर्क़ी भेजीथी परन्तु उनकाग़ज़ों के आने
किसी प्रकार की दिक्क़त है—शायद गवर्नमेण्टके दफ्तरसे व
कागज़ न मिले—सरजन्टबेलनाटायन साहबने कहा कि मैं
आपपर जाहिरकर दिया है कि मैं कोई ऐसी बातपेश न
करना चाहता जिससे बदमजगीहो मैं उसकागज़की नक़ल
दूंगा अगर करनैलफ़ियरसाहब उसको पढ़कर कहें कि य
नक़लसही है तो काफ़ी होगा—दुबारह करनैलफ़ियर साहब
इज़हार की जरूरत न होगी—साहबप्रेसीडेण्ट ने कहा कि
यह बात बहुत मुनासिब है—जबकि करनैल फ़ियरसाहब उ
को देखकर मानलें तो वही नक़ल कमीशन के अधिकारियों
को देदी जावे॥

केवलएकही सेरुपया लिखा (गवाहको एककागज दिखाया गया उसनेस्वीकार कियायह मेरा लिखाहुवा है गवाहसे कहा गयाकि इसको तुमपढ़ो)गवाहने कहा कि मैंने यह कागज नरसूजमादार और रावजी हवालदारके कहनेसे लिखाथा जोकुछ वहबतलातेथे मैं लिखाकरताथा– लिखकर कभीतो मैं नरसूको देता और कभी रावजीको॥

ऐडवकेटजनरलने प्रेजीडण्टसाहबसे कहा कि लाईलॉर्ड यह चिट्ठी गवाहीकी तौरपर मंजूरकी जाय इस शर्तपर कि सरजन्टबेलनटायनसाहब स्वीकार करें यह चिट्ठी खालिलके घरसे मिलीथी सरजन्टबेलनटायनसाहबने स्वीकारकिया और साहब प्रेजीडण्टकी आज्ञानुकूल यहचिट्ठी गवाहीमें दाखिल की गई इसचिट्ठीपर हर्फ (एक्स)का चिन्ह दियागया॥

मिस्टर अनवरारटोसाहबने नीचेलिखीहुई चिट्ठीका तर्जुमा पढ़ा॥

आज भाववपूनाकर आया और उसनेसाहबसे वर्णनकिया कि महाराजने एक नई नौकरीहै उसका नाम गङ्गाबाई है उसका पिताथेबोथा महाराजने आज्ञादी है कि सातहजार रुपया नजरानालहनलो झालसे उसकोदियेजावें और वह लज्जापना किन्तुमकरनेको आये हैं परन्तु किसीने उनकीनालिश न सुनी—दूसरे—बापूसाहब गायकवार आयेथे साहबने पूछाकि तुम कैसे हो उन्होंने कहाकि साहबके आशीर्वाद से अच्छा हूं—तिसपीछे साहबने पूछाकि तुमअपने कार्य्यकेलिये दादा भाई और शिवदीन(शायदमहाबुहीन) के पासजातेहो—बापू साहबने सुनकर उत्तरदिया मेरे जाने की उनके पास क्या आवश्यकताथी—जबतक आपवर्त्तमान हैं मैं किसी को कुछ नहीं समझता यहलोग नीति औप्रबन्धसे अज्ञानहैं वहलोग परस्पर बैठ २ कर मशवरह कर लिया करते है॥

तीसरे भावपूनाकरने साहबसेकहा कि तोपोंका शब्दसुन करलोगअति प्रसन्नहुये और परस्परएकनेदोसरेसे कहने लगे

किकोई वडासाहबआया है और खुशहुये कि अबहसारीदाद फ़रयादसुनी जावेगी—साहबने कहाकियह जनरलसाहब हैं जो अहमदाबाद से पलटनके अवलोकन के लिये आये हैं॥

चौथे—रत्नाबाईके भाई ने अरजीदी है कि मेरी बहिन मुझको मिले—साहब उससे अतिप्रसन्न हुये॥

पांचवें—मैं कल आऊंगा और अपने साथ कमासणी को लाऊंगा वालिसको भेजदीजिये॥

दो चिट्ठी और भी उस गवाहको दिखाईगईं उसने कहा कि मैं इनको नहीं जानता न मेरी लिखीहुईहैं सरजन्टमेजर-टायनसाहबने कहाकि मुझको इसगवाहसे कुछसवालकरना नहीं है॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहाकि मैंने कुछ कागज़ दर-बारह कारनैलसाहब के बंगला से मंगवाने का वाइदा कियाथा और गवर्न्मेण्टको तारबर्क़ी भेजीथी परन्तु उनकागज़ों के आनेमें किसी प्रकार की दिक़्क़तहै—शायदगवर्नमेण्टके दफ़्तरसे वह कागज़ न मिले—सरजन्टमेजरटायन साहबने कहा कि मैंने आपपर ज़ाहिरकर दिया है कि मैं कोई ऐसी बातपेश नहीं करनाचाहता जिससे वहसजगोको मैं उसकागज़की नक़ल दूंगा अगर कारनैलफ़ियरसाहब उसको पढ़कर कहें कि यह नक़लसही हैतो काफ़ीहोगा—दुबारह कारनैलफ़ियर साहबके इज़हार की ज़रूरत न होगी—साहबप्रेज़ीडण्ट ने कहा कि यह बात बहुत मुनासिबहै—जबकि कारनैल फ़ियर साहब उस को देखकर मानलें तो वही नक़ल कमीशन के अधिष्ठाताओं को देदी जावे॥

सब कईबेर नगरको उसकेसाथगया था मुझे ऐसा स्मर्ण है कदाचित् बेरमें नगरमें गयाहूं परन्तु यह स्मर्ण नहीं कि कितने दिनबीते—जबरह महाराजाके पासजाता तो यशवन्तरावके मकानपर जाया करता मैं नहीं कहसक्ता कि कै बेर महाराजासाहबके पास उनके साथगया जबवह लोग महाराजा साहबके पासऊपरके मकान को जातेतो मुझको नीचेछोड़जाते थे ॥

साहबमौसूफ़ने जोडस्टनेपूछा कि कौन२ मनुष्यतुम्हारे साथजाया करतेथे—गवाहनेकहा कि रावजी—सालिम—नरसूजमादार और यशवन्तराव—जायाकरतेथे ॥

मस्टर जान्सन टायनसाहबके प्रश्न ॥

रजीडन्सीमें कितने दिनतक तुमपंखेवालोंमें नौकररहे ? उ०—अन्तकीबेर पन्द्रहबीस दिननौकररहा परन्तु मैंपहिलेभी नौकर रहचुकाहूं। प्र०—मेरा मतलब यहहै कि तुम कितने दिनोंतक पंखेवालेरहे ? उ०—मैंदोबेर रहाएकबेर एकमहीने और दूसरीबेर पन्द्रह या बीसरोजतक। प्र०—पहिलीबेर तुम किसकोकहतेहो ? उ०—जबपंखे चलनेशुरूहुयेथे। प्र०—कोई तारीखबताओ कबचलना शुरूहुयेथे ? उ०—होलीकी छुट्टियों केपीछे। प्र०—आखीर होलीकी छुट्टियोंकेपीछे ? उ०—हां। प्र०—तुमकहतेहो कि मैंएक महीने तक नौकररहा ? उ० हां। प्र०—दूसरीबेर कबनौकरहुये ? उ०—जबपंखेका मैं सम र्णहोने वालाथा। प्र०—नौकर होनेसे पहिले रावजी और नरसूको जानतेथे ? उ०—हांमैं जानताथा। प्र०—तुमसौगन्द खासक्तेहो ? उ०—हां। प्र०—नौकरीसे पहिलेभी उनकोजान- तेथे ? उ०—हां—परन्तु जबनौकर हुवा उनको जियादहजानने लगा। प्र०—तुमनेमिस्टर सूटरसाहबके रूबरूबयान कियाथा कि तुमकभी सीढ़ीके नीचे ठहरतेथे और कभीजीनेके ऊपर जातेथे क्यायहबात ठीकहै ? उ०—झूंठीकहै। प्र०—तुमकबसे हवालातमें हो ? उ०—ढाई महीने हुये। प्र०—किसहेतुसे

तुमहवालातमेंहो ? उ०—गवाहीदेनेके लिये । प्र०—तुमनेसच कहाइसलिये तुमक़ैदकियेगये ? उ०—हां। प्र०—तुमखानसाहब कोहिरासतमें कैरोजरहे ? उ०—तीन दिन—इसके उपरान्त लूटर साहबके पास रहा । प्र०—जोकुछ तुमने वर्णन किया उसको कबूल कराते ऊवेतीन दिन खानसाहबकोलगे ? उ० उन्होंने मुझसे एकरोज कुछभी नहींकहा । प्र०—तुम्हारेसाथ जुम्मासी रहताथा ? उ०—मैंने उसको नहींदेखा मैंअकेला रहाकरता था । प्र०—तुमने जुम्माका बयान सुनकर अपना इकरारदियाथा ? उ०—नहीं । प्र०—क्या जुम्माभी क़ैदथा ? उ०—हां ॥

समय कईबेर नगरको उसकेसाथगया था मुझे ऐसा स्मर्ण है कि पांचछः बेरमैं नगरमें गयाहूं परन्तु यह स्मर्ण नहीं कि कितने दिनबीते—जबरह महाराजाके पासजाता तोयशवन्तरावके मकानपर जाया करता मैं नहीं कहसक्ता कि मैं सरतके महाराजासाहबके पास उनके साथगया जबरह लोग महाराजा साहबके पासऊपरके मकान को जातेतो मुझको नीचेछोड़जाते थे॥

साहबमजिस्टेटनेपूछा कि कौन२ मनुष्यतुम्हारे साथजाया करतेथे—गवाहनेकहा कि रावजी—सालिम—नरसूजमादार और यशवन्तराव—जायाकरतेथे॥

मरजनृबेलन टायनसाहबके प्रश्न॥

रजीडन्सीमें कितने दिनतक तुमपंखेवालोंमें नौकररहे? उ०—अन्तकीबेर पन्द्रहवीस दिननौकररहा परन्तु मैंपहिलेभी नौकर रहचुकाहूं। प्र०—मेरा मतलब यहहै कि तुम कितने दिनोंतक पंखेवालेरहे? उ०—मैंदोबेर रहाएकबेर एकमहीने और दूसरीबेर पन्द्रह या बीसरोजतक। प्र०—पहिलीबेर तुम किसकोकहतेहो? उ०—जबपंखे चलनेशुरूहुयेथे। प्र०—कोई तारीखबताओ कबचलना शुरूहुयेथे? उ०—होलीकी छुट्टियों केपीछे। प्र०—आखीर होलीकी छुट्टियोंकेपीछे? उ०—हां। प्र०—तुमकहतेहो कि मैंएक महीने तक नौकररहा? उ० हां। प्र०—दूसरीबेर कबनौकरहुये? उ०—जबपंखेका मौसम पूर्णहोने वालाथा। प्र०—नौकर होनेसे पहिले रावजी और नरसूको जानतेथे? उ०—हांमैं जानताथा। प्र०—तुमसौगन्द खासक्तेहो? उ०—हां। प्र०—नौकरीसे पहिलेभी उनकोजानतेथे? उ०—हां—परन्तु जबनौकर हुवा उनको जियादहजानने लगा। प्र०—तुमनेमिस्टर सूटरसाहबके रूबरूबयान कियाथा कि तुमकभी सीढ़ीके नीचे ठहरतेथे और कभीजीनेसे ऊपर जातेथे क्यायहबात ठीकहै? उ०—हांठीकहै। प्र०—तुमकबसे हवालातमें हो? उ०—ढाई महीने हुये। प्र०—किसहेतु से

किसीशख्स के वास्ते बनवाया या जिसके वास्ते यह आभूषण बनाथा एकपट्टे वालाहै रावजी उसकानामहै बडसाहब के पासरेजीडन्सी मेंनौकर था मेराहिसाब वहीसे मालूम होगा किमैंने क्या२ उसका जेवर बनायाहैयह मेरीही हिसाबवही है जो रक्खीहै लिखना पढ़नामैं नहीं जानता दूसरे मनुष्य से लिखवालिया करता था॥

प्रश्नऐडवकेट जनरलका-तुमजोलिखनापढना नहीं जानते तोतुम अपनेसब हिसाब जबानीयाद रखतेहोगे गवाहनेबयान कियाकि मैं यहहिसाब नहींपढ़सक्ता आपहीपढ़िये याकिसी औरसे पढ़वाइये औरकहाकि देवालीमे पहिले रावजीनेएक जोडीपांवके कडेकी एककांठी एकजोडी कांगन और कई वस्तु बनवाईथी जोजो वस्तुबनीथीरावजीके पासभेजदेताथा मुझको स्मर्णनहींकि देवालीके दसपन्द्रहदिनपहिले यहजेवरबनगया था बाददेवालीके उपरान्त तकबनाजो जेवर कि इससमय यहां वर्त्तमानहै उसमेंएक जंजीरसोनेकी नहीहै जोमैंने बनाईथी तीनसौया चारसौ पचहत्तर रुपयेका जेवर बनायाथा मुझको जबानी याद नहीं हिसाबमेंलिखाहै मुझको सबरुपया मजदूरी समेत मिलगया—सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहाकि मुझको इस गवाहसे कुछ नहीं पूछना है॥

इजहार दुवन मजूदार॥

केआरम्भहुये उसकेइजहार लिखकर अनबराग्टोसाहबने लिये उसनेवर्णन किया कि मैंकुम्हारहूं रेजीडन्सीके रावजी हवाल-दारको जानताहूं—दिवालीसे पहिले उसनेमुझसे कुछ जेवर केबनवानेके वास्ते कहाथा सोमैंने उसकेसाथ जाकरशिवलाल सुनारका मकान बता दिया—नीचे विस्तृत आभूषण बनवाये गये थे॥

एकजोड़ी पाओंके कड़ोंकी—एक कण्ठी—एकजोड़ी कंगन, दोस्वर्णके छल्ले जिनका वजनएकतोला—एककरधनी लड़केकी, एकजोड़ी कड़ेकी लड़कीके पांवकी—कातिकके महीने सेइस आभूषणके बननेका प्रारम्भहुआथाजो २ वस्तुतय्यार होतीगईं रावजीको मिलती गईं—अदालतसें जोपेशहै सुनार का अस-बाबहै॥

साहब प्रेसीडण्टने सरजन्टबेलन टायन साहबसे पूछा कि आपको इसहिसाबके दाखिल होनेसें कुछइन्कारहै उन्होंने उत्तरदिया कि नहीं परन्तु सुनारइस हिसाबकी तसदीक के वास्ते बुलायाजाय॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबके प्रश्न॥

प्र०—क्याकारणहै कि रावजीने यहआभूषण तुम्हारेद्वारा बनवाया? उ०—मैं नगरके भीतर रहता था और रावजीने मुझसे पूछाकितुम किसी सुनार को जानतेहो मैंने कहाहां जानताहूं। प्र०—यहसुनारकहांरहता है? उ०—सड़कपर पीपलके वृक्षके नीचेरहताहै। प्र०—क्याउस जगह रावजीभी रहताहै? उ०—नहींवह शहरसे बाहरिरहता है॥

इजहार शिवलाल वतिन॥

किसीशख्स के वास्ते बनवाया था जिसके वास्ते यह आभूषण बनाथा एकपट्टे वालाहै रावजी उसकानामहै वहसाहब के पासरजीडन्सी मैंनौकर था मेराहिसाब बहीसे मालूम होगा किसैंने क्या२ उसका जेवर बनायाहैयह मेरीही हिसाबबही हैजो रक्खीहै लिखना पढ़नामैं नहीं जानता दूसरे मनुष्य से लिखवालिया करता था॥

प्रश्नऐडवकेट जनरलका-तुमजोलिखनापढना नहीं जानते तोतुम अपनेसब हिसाब जवानीयाद रखतेहोगे गवाहनेबयान कियाकि मैंयहहिसाब नहींपढ़सक्ता आपहीपढ़िये याकिसी औरसे पढ़वाइये औरकहाकि दिवालीमें पहिले रावजीनेएक जोडीपांवके कड़ेकी एककांठी एकजोड़ा कंगन और कई वस्तु बनवाईथी जोजो वस्तुबनीथीरावजीके पासमैंनदेताथा मुझको स्मर्णनहींकि दिवालीके दसपन्द्रहदिनपहिले यहजेवरबनगया था वादिवालीके उपरान्त तकावनाजो जेवर कि इनसमयहां वर्त्तमानहै उसमेंएक जंजीरसोनेकी नहीहै जोमैंने बनाईथी तीनसौया चारसौ पचहत्तर रुपयेका जेवर बनायाथा मुझको जबानी याद नहीं हिसाबमेंलिखाहै मुझको सबरुपया मजदूरी समेत मिलगया—सरजन्ट वेननटायन साहबनेकहाकि मुझको इस गवाहसे कुछ नही पूछना है॥

लिखा—शायद १९३० सम्वत होगा-इसमें कुछ रक़में लिखी हैं जिसका जोड़ ११॥) है इसके सिवाय और भी कई रक़में नीचे लिखी हैं—आषाढ़ बदी सप्तमीको २०) फिर २०) लिखे हैं आषाढ़ बदी नवमीको २०) फिर ६०) सोनेकी जंज़ीरोंके वास्ते दिये गयेथे दसवीं तारीखको ८) रु० और दिये गये सेनेसब ७९॥) रु० पायेथे सो मैंने रावजी के वास्ते दो छल्ले--दो बाले दो कानोंकी जंजीरें बनाई थीं—सरजन्टबेलन्टायन साहबने कहा कि इस गवाह से मुझको कुछसवाल नहीं करना है ॥

दलपतगोविन्दराम का इज़हार ॥

दलपतगोविन्दराम बुलायागया और ऐडवकेटजनरलने उस के इज़हारलिये उसने कहा कि मैं यशवन्तराव को जानता हूं वह गायकवारका नौकर है मैं उसकेपास सवातीन वर्षसे नौकरथा सन्दूक आदिकी कुञ्जियां मेरे निकटरहाकरतीथीं जोकुछ वह कहताथा मैं कियाकरताथा मैं उसकाकारकुन था मैं जुम्मा और रावजी को पहिचानता हूं यदि वह मेरे सम्मुखआवें तोमैं शीघ्रही पहिचानलूंगा सो अदालतनेउनको बुलाया—गवाहने कहाकि यशवन्तरावको मैंने एकमर्त्तबा या बारह या चौदहमहीने हुयेथे देखा था उससमय देखाथाकि रात्रि के समय आठबजे मेरे मकानपर दोनों आये थे और पांचसौ रुपया सिक्का बड़ौदे के यशवन्तरावकी आज्ञाके अनुसार रावजी और जुम्माको दियेथे उससमय यशवन्तराव मकान के ऊपरथे—सरजन्टबेलनटायनसाहबने कहाकि मुझको इस गवाहसे कोई सवालनहीं करनाहै ॥

छगनलालदामोदर दासगवाह का इज़हार ॥

इस मनुष्य के इज़हार मिस्टर अनबरारटी साहबने लिये उसनेवर्णन कियाकि मैं इजराफौजदारी बड़ौदेका नौकरहूं मैं सालिमको जानताहूं वह गायकवारका नौकरहै जिसदिन गायकवारके पुलिसका गार्ड उसके मकानपर नियतहुआथा शायद तारीख़ २३ दिसम्बर थी दिनमुझको यादनहीं गार्ड

के नियत होने से एकदिन पहिले उसके मकानपर ख़ुरसुतजी अरदासियर बद्याके साथ मैंगया यह हुजूर फ़ौजदार हैं और मकानकी तलाशी लेने के वास्ते गये थे बम्बई के पुलिसका एक हवालदारभी साथथा इसबातके कहनेपर सोरईसान अर्थात् हवालदार अदालतमें बुलाये गये गवाहने कहा यही मनुष्य उसदिन हमारेसाथ गया था—हुजूर फ़ौजदार गायकवार की सरकार में नौकर थे जब सालिम के घरकी तलाशी लीगई तो एकरूमालमें कुछ काग़ज़ बन्धेहुये मिले उनकाग़ज़ों को हुजूरफ़ौजदार अपनेमकान पर लेगये और उनको बन्दकरके मोहरलगादी और उसपर एकटिकट लगाकर लिखदियाकि यहकाग़ज़ सालिसके मकानसे निकले गवाह को एकरूमाल दिखाकर पूछागयाकिवह रूमालयहीथा गवाहनेकहाकिमैं अच्छीतरह नहींकहसक्ता कि यहीथा तिसपीछे फिर उससे कहागया कितुमभले प्रकारध्यान सेदेखो कियही रूमाल है जबगवाहने ग़ौरसे देखातो कहाकि हां वह रूमाल यही है सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा कि मुझको इस गवाह में कोई सवाल नहीं करना है॥

लिखा—शायद् १९३० सम्वत होगा-इसमें कुछरक़में लिखीहैं जिसका जोड ११॥) है इसके सिवाय श्रौभीकई रक़में नीचे लिखीहैं—श्राषाढ़बदी सप्तमीको २०) फिर २०) लिखेहैं श्राषाढ़ बदी नवमीको २०) फिर ६०) सोनेकी जञ्जीरोंके वास्ते दिये गयेथे दसवींतारीख़को ८) रु० श्रौर दियेगये मैंनेसब १९॥) रु० पायेथे सोमैंने रावजी के वास्ते दोछल्ले--दोबाले दो कानोंकी जंज़ीरेंबनाई थीं—सरजन्टवेलनटायन साहबने कहा कि इस गवाह से सुझको कुछसवाल नहीं करनाहै ॥

दलपतगोविन्दराम का इजहार ॥

दलपतगोविन्दराम बुलायागया श्रौर ऐडवकेटजनरलने उस के इज़हारलिये उसने कहा कि मैं यशवन्तराव को जानता हूं वहगायकवारका नौकरहै मैं उसकेपास सवातीन वार्षसे नौकरथा सन्दूक आदिकी कुञ्जियां मेरे निकटरहाकरतीथीं जोकुछ वह कहताथा मैं कियाकरताथा। मैं उसकाकारकुन था मैं जुम्मा श्रौर रावजी को पहिचानता हूं यदि वह मेरे सम्मुखश्रावें तोमैं शीघ्रही पहिचानलूंगा सो श्रदालतनेउनको बुलाया—गवाहने कहाकि यशवन्तरावको मैंने एकमर्त्तबा या बारह या चौदहमहीने हुयेथे देखा था उससमय देखाथाकि रात्रि के समय श्राठबजे मेरे मकानपर दोनों श्राये थे श्रौर पांचसौ रुपया सिक्काबड़ौदेके यशवन्तरावकी श्राज्ञाके श्रनुसार रावजी श्रौर जुम्माको दियेथे उससमय यशवन्तराव मकान के ऊपरथे—सरजन्टवेलनटायनसाहब ने कहाकि मुझको इस गवाहसे कोई सवालनहीं करनाहै ॥

छगनलालदामोदर दासगवाह का इज़हार ॥

इस मनुष्य के इज़हार मिस्टर श्रनवरारटी साहबने लिये उसनेवर्णन कियाकि मैं इजराफौजदारी बड़ौदेका नौकरहूं मैं सालिमको जानताहूं वह गायकवारका नौकरहै जिसदिन गायकवारके पुलिसका गार्ड उसके मकानपर नियतहुआथा शायद तारीख़ २३ दिसम्बर थी दिनमुझको यादनहीं गार्ड

सरजन्टवेलनटायन साहब इस बातका विचार करते हैं कियह चिट्ठियांवास्तवमें उनलोगों की लिखीहुई नहीहै किन्तुछलपत्र हैंतो इसबातके सूचित करनेकेलिये फिर उपायकिया जावेगा सरजन्टवेलनटायनसाहब नेकहा मेरा उज्र बहुतसाफ है प्रथम साबितकरना चाहिये कियह चिट्ठियां उनकी दस्तखतसे लिखी गई और किसशख्सने लिखीं जबतक इसबात की तसदीक न होगी किसकानूनकी रूसे यह चिट्ठियां शहादत में दाखिल करसक्ते हैं ऐडवकेट जनरलने कहा मेरे विचारसे यह चिट्ठियां शहादतमेंदाखिलहोसक्तीहैंसाहबप्रेसीडेण्टनेकहाआपने अच्छेप्रकारसाबितनहींकियाकियहचिट्ठियांशहादतमेंदाखिलकरनेकेकाबिलहैऐडवकेटजनरलनेकहा पससाबूसहुवा किहुजूर के विचारसे यहचिट्ठियां शहादतमें दाखिल करने के काबिल नहीं हैं साहब प्रेसीडेण्टने कहा हां मेरीराययही है ऐडवकेट जनरल ने कहा आपअपनी याददाश्त में लिखलीजिये साहब प्रेसीडेण्ट नेकहा इसको अपनी याददाश्त में लिखलूंगा परंतु आपजानते हैं कि इस कमीशनकी अपीलनहीं है आपको यह कहनाचाहियेथा कि मैंअपनी याददाश्तमें लिखूंऐडवकेटजनरल नेकहा मैंनेकेवल आपसे इसीप्रयोजनसे अर्जकी थी कि मेरीवह गुफतगू लिखलेनी चाहिये साहबप्रेसीडेण्टने कहा आपकोमुझसेऐसी दरख्वास्त करना न चाहिये ऐडवकेट जनरलने कहा जो आपकी रायहो ॥

इजहार मुन्नीभाई जसभाई॥

मुन्नीभाई जसभाईजो रेजीडन्सीकेएक हिन्दुस्तानी असि-स्टण्टहैं बुलाये गये और मिस्टर अनशरारटो साहब ने उनके इजहारलिये उन्होंनेवर्णन कियाकि २९ नवम्बर को जब कि इमाम अलीकाग़जोंका एक पुलिन्दालायाथा मैं मौजूद था इसपुलिन्दे के स्थान २ पर बड़ौदे की फौजदारी के अदालत की मुहरेंलगीहुईंथीं और एकटिकट चिपकाया उसमेंलिखा था कि यह काग़ज सालिम के मकान से निकले जिससमय पुलिन्दा खोलागया मैं और सालिमबहीये मैंने इनकाग़ज़ों की कोईसूचीनहीं बनाई उसमेंसे जितने काग़ज़ निकालकर अलग रक्खेगये उनकी मैंने फेहरिस्त बनाईथी जो काग़ज़कि इसवक्त कमीशनमें पेशहै और जिसपर(ऐक्स) अक्षरकाचिह्नहै उसीपुलिन्देमेंका है उसकीपीठपर मेरे दस्तखतहैं औरजितने पुलिन्देसे काग़ज़निकालेगयेसबपरमेरे दस्तखतहैं ऐडवकेटजन-रलने कहा माईलार्ड-मैं चाहताहूं कि यहकाग़ज़ात पढ़ेजावें सरजन्टबेलनटायन साहबनेकहा कि किसवास्ते पढ़ेजावेंऔर क्या वजह उनके पढ़ेजानेकी है-ऐडवकेट जनरल ने कहा कि यह काग़ज उसीतरह पढ़ेजावें और अदालतमें दाखिलकिये जायें जिसतरह कि वहकाग़ज़दाखिलहैं जिसपर कि (ऐक्स) अक्षरका चिह्नहै इनसे विदित होताहैकि महाराजा साहब और रजीडन्सीके नौकरोंमें खतकिताबतथी साहब प्रेजीडण्टने ऐडवकेटजनरलसे कहाकिआपनेयहप्रतीत कियाकिजिस का-ग़ज़पर(ऐक्स)अक्षर का चिह्न है उसका लिखने वाला कौनहै परन्तुयह आपनेसाबित नहींकियाकि इनचिट्ठियोंका लिखने वालाकौनहै ऐडवकेटजनरलने कहामैं हुजूरके हुक्मबमूजिबबात विनयकरताहूं कियह चिट्ठियां गवाहीकी तौरपर दाखिलहो सक्तीहै क्योंकि सालिमरावजी और नरसूबराबर चिट्ठियांलिखा करतेथे और इसबातका इक़रार किया कि मंगल और बृह-स्पतिवार के सिवाय बराबर हम चिट्ठियां भेजा करते थे यदि

सें रक्खजाता था खानसाहबने देखनेके वास्ते मुझसे पट्टामांगा
था तथापि मैंने उनके हवाले किया कमीशनमें जोपट्टा रक्खाहै
वहीपट्टाहै इसमेंएकजेब है बल्कि उसे जेबनकहना चाहिये उस
सें तलवार लटकाई जातीहै मैं इसपट्टेको जेबसे वाकिफ नहीं
हूं सरजन्टबेलन टायनसाहबने उससे कुछप्रश्न न किये ॥

इजहार अकबर अली ॥

खानबहादुर अकबरअलीके इजहार मिस्टरइनवरारटीसा-
हबनेलिये उन्होंने वर्णनकिया किमैं बम्बईकी डिटेक्टिव(सुराग
रसां) पुलिसका असिस्टंट हूं मैंसूटर साहबके साथ इस मुकद्दमे
कीतहक़ीकातके वास्तेआयाथा मैंनेयह पेटी २५ दिसम्बरको
देखीथी मुझको उसमें एकपुड़िया मिलीऔर प्रथमसें रावजी
सेमैंने पूछाथाकिजो पुड़िया गायकवारके पाससेलायेथे उन-
को कहांरक्खा करतेथे उसनेमुझसे कहाकिमैं पेटीकीजेब में
रक्खाकरताथा मैंने उससे पूछाकि तुम्हारापट्टा कहांहै उसने
कहाकि भोदर केपास है उस समय हमचार मनुष्य मौजूद
थेखानबहादुर अब्दुलअली रावबहादुर गना नन्द वतिल और
रावजी और जिसस्थान पर मिस्टर सूटर साहब ठहरा करते
हैंहम भी उसी जगह अर्थात् रेजीडन्सी के बंगले में ठहरा
करते थे जब रावजी का पट्टा भोदर से मंगवाया भोदर
उसकोलेकर आयाऔर उसनेअपने गलेसे उतारकर मुझको
दियासरजन्ट बेलनटायनसाहबने कहाकि मैनेनहीं देखाकि
यहलोग क्योंकर पट्टापहिनतेहैं यदिगवाहपहिनकर दिखावे
तोदेखूं सोगवाहने पट्टापहिन करदिखाया और बयानकिया
किपट्टेवालेइस प्रकारसे पहिनतेहैंजबमैंने भोदरसे पट्टामांगा
उसने मुझको उतार कर इस भांति दिया मैंने उसको इधर
उधरदेखाऔर एक मुकाम पर उसको रावजीने कहा कि मैं
पुड़ियोंको उसी जेबमें रक्खाकरताथा जब हरएक जगह पर
देखातो मेरी अंगुली एक जगह परचलीगई टटोलनेसे कोई
कठोरसीवस्तु मालूम हुईउस समय मैंने मिस्टर सूटरसाहबको

बुलाया उस पहली की एकजेबसें एक मैला कपड़ाया भोदरने उसकोचन्दना कण्ड़ा बताया और एकजेबसें थोड़ासूत था जब मिस्टरसूटरसाहब आयेउनके सन्मुखपुड़िया निकालीगई इस पुड़िया में आटे की भांति कोई सफेद वस्तु थी मिस्टरसूटर साहबने उसको खोल करदेखा औरवह अपने साथ लेगये॥

सरजन् वेलन टायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—तुमअंगरेजी बोलसक्तेहो?उ०—मैंनहीं बोलसक्ता क्योंकिमैं अंगरेजी नहींजानता। प्र०—सौगन्द खाकर वर्णन करतेहोकि तुमकभी अंगरेजी नहींबोलते? उ०—जबकिअंगरेजीभाषा नहींजानताहूं तो किसतरहबोलसक्ताहूं साहबप्रेजीडन्टने कहासीधालाधा जवाबदोकितुमअंगरेजी बिल्कुल् नहीं बोलसक्ते? उ०-नहीं मैं कुछभीअंगरेजी नहीं बोलसक्ताहूं। प्र०—सरजन्ट वेलनटायन साहब (पेटी उठा कर) बोले इसी पाकिट में तुम कहते होकि पुड़िया मिली थी? उ०—हां। प्र०—जबतुम्हारे पासअव्वल पेटीआई थीतो कहतेहो कियह जेबफटी हुई नथी? उ०—नहीं। प्र०—दिखाओ कि यहजेब तुमनेकहांसे फाड़ीथी? उ०—गवाहने पेटीको उठाकर दिखायाकि उसजगहसे परन्तु यह नहीं कहसक्ता कि कितनी फाड़ीथी। प्र०—मैं यह बातपूछता हूं कि तुमनेजेब कोकिस लियेकाटा था? उ०—मैने देखाथा किकोई कठोर वस्तुरक्खी है मैंदेखना चाहताथा कि इसमेंक्या वस्तुहै। प्र०—परन्तुतुम कहतेहो कि मैंने सूटरसाहबको बुलालिया था? उ०—हां बाददेखने जेबके। प्र०—परन्तुजब तुमने देखा कि जेबमें एक पुड़ियाहै तो मिस्टरसूटरसाहबके बुलाने की क्या आवश्यकता थी और पेटीके फाड़नेके पीछे सूटरसाहब को तुमने क्यों नहीं बुलाया? उ०—मुझको भलीभांति पुड़िया के होनेका निश्चय नथा। प्र०—परन्तु तुमजानते थेकि कोई वस्तुहै क्योंकि उसमुकाम पर तुम्हारी उंगलियां थी? उ०—हां जानता था कि कोईकठोर वस्तु है परन्तु पुड़िया के होने का विश्वास न था

में रखजाता था खानसाहबने देखनेके वास्ते मुझसे पट्टामांगा था तबमैंने उनसे कहवालो लिया कमीशनसे जोपट्टा रक्खाहै वहीपट्टाहै इसलिएकजेब है बल्कि उसे जेबनकहा चाहिये उस में तलवार लटकाई जातीहै मैंइसपट्टेकी जेबसे वाक़िफ नहीं हूं उपकट्वेलन टायनसाहबने उससे कुछप्रश्न न किये॥

इजहार अकबर अली॥

खानबहादुर अकबरअलीके इज़हार मिस्टरइनवरारटीसाहबनेलिये उन्होंने वर्णनकिया किमैं बम्बईकी डकैटिब(सुराग रसां) पुलिसका अफ्सरहूं मैंसूटर साहबके साथइस मुकद्दमे कीतहकीकातके वास्तेआयाथा मैंनेयह पेटी २५ दिसम्बरको देखीथी मुझकोउसमें एकपुड़िया मिलीऔर प्रथमसें रावजी सेमैंने पूछाथाकिजो पुड़िया गायकवारके पाससेलायेथे उनको कहांरक्खा करतेथे उसनेमुझसे कहाकिमैं पेटीकीजेब में रक्खाकरताथा मैंने उससे पूछाकि तुम्हारापट्टा कहांहैउसने कहाकि भोदर के पास है उस समय इसचार मनुष्य मौजूद थेखानबहादुर अब्दुलअली रावबहादुर गजा नन्द वतिल और रावजी और जिसस्थान पर मिस्टर सूटर साहब ठहरा करते हैंहम भी उसी जगह अर्थात् रेजीडन्सी के बंगले में ठहरा करतेथे जब रावजी का पट्टा भोदर से मंगवाया भोदर उसकोलेकर आयाऔर उसनेअपने गलेसे उतारकर मुझको दियासरजस्ट बेलनटायनसाहबने कहाकि मैंनेनहीं देखाकि यहलोग क्योंकर पट्टापहिनतेहैं यदिगवाहपहिनकर दिखाये तोदेखूं सोगवाहने पट्टापहिन करदिखाया और बयानकिया किपट्टेवालेइस प्रकारसे पहिनतेहैंजबमैंने भोदरसे पट्टामांगा उसने मुझको उतार कर इस भांति दिया मैंने उसको इधर उधरदेखाऔर एक मुकाम पर उसको रावजीने कहा कि मैं पुड़ियोंको उसी जेबमें रक्खाकरताथा जब हरएक जगह पर देखाता मेरी अंगुली एक जगह परचलीगई टटोलनेसे कोई कठोरसीवस्तु मालूम हुईउस समयमैंनेमिस्टर सूटरसाहबको

हाअफ़सर वहांमौजूदथा इसलिये मैंने उनकोबुलालिया म-
तार नहोतेतोकुछआवश्यकतानथो। प्र०-नसतुम्हारीयहीगरज
थो और गवाहहोनेकी किसीको जरूरत नथो ? उ०-यदिमु-
झको गवाहकी आवश्यकता होतीतो तीनमनुष्य उससमयमौ-
जूदथे। प्र०-वह कौन २ मनुष्य थे ? उ०-रावजी। प्र०-द-
रबतुम जानतेहोकि रावजी मुअजिज गवाह नथा ? उ०-
खानबहादुर अब्दुलअली रावबहादुर गजानन्दवतिल और
मैंथुदथा। प्र०-तुमको पुड़िया मिलनेका कुछखयाल नथा ?
उ०-नहीं मुझको केवल इतनाही खयालथा कि इस पेटीमें
और कुछपताललो। प्र०-जबतुमको पुड़ियामिली होगी तोब-
ड़ाआश्चर्य्य हुवाहोगा ? उ०-हांजब रावजीने उसका होना
पेटीमें बयानकिया था। प्र०-रावजीने उसवक्त जबकितुमको
पुड़ियामिली कुछबयान नहींकिया ? उ०-मुझे उससमयतक
पुड़ियामें किसीचीजके होनेका खयाल नथा। प्र०-तुमकोकुछ
भीखयाल था कि इसपेटीमें कागजकी पुड़ियामिलेगी ? उ०
मुझकोकुछसन्देह नथा परन्तुपेटीमें कोई कठोरवस्तु विदित
हुईथी। प्र०-जेबके फाड़नेबिना तुमकोमालूमहोगया किजेबमें
कागजकी पुड़िया है ? उ०-उससमयतकमुझकोमालूम नहोहो-
ताथा कियहकागजकीपुड़ियाहै। प्र०-वहतसे मनुष्य कहतेहैं
कि तुमबड़ेचतुरहो क्यातुमको मालूमनहींहोताथा किकागज
कीपुड़ियाहै वानहो ? उ०-जबमैंने जेबमेंसइचीज देखीतो मुझ
कोनहींमालूमहोताथा किउसमेंक्यावस्तुहै। प्र०क्या तुमयहभी
नहींजानतेथे कियहकागजहै ? उ०-मुझकोकागजसामालूम
हुआथा। प्र०-क्यातुमको यह मालूमनहीं होसक्ताथा कि
किसीवस्तु पर कागज लिपटा है ? उ०-नहीयह नहीं मालूम
होताथा कि कागजमेंकोईवस्तु बन्दहै। प्र०-क्या तुमइतनाभी
उसवक्त जानतेथे कि केवलकागज का टुकड़ा है ? उ०-हमको
यहमालूम नहीं हुआकि केवलकागज है याकागजकिसीवस्तु
पर लिपटाहुवाहै। प्र०-जाकोई पुड़िया समझी इस वास्ते तुम

प्र०-जबतुमने जेबफाड़कर पुड़ियाकोनिकाला थातो उसवक्त भी तुम्हारी जानकारी वैसीही थी जैसी कि पहिलेथी? उ० नहीं उससमय मालूमहोगया था किपुड़ियाहै पहिलेके निस्बत मेरीजानकारी बढगईथी। प्र०—सूटर साहब के बुलाने कोक्या अवश्यकता थी जोबुलाना मंजूरथा तोपहिले भलीभांतिमालूम करलेनाचाहिये था? उ०—मैने सूटरसाहबको केवलइस प्रयोजनसे बुलायाथाताकि उसको देखेंकि कोईदवाहै वाक्यावस्तुहै। प्र०—क्यायहबात तुमनहीं जानतेथे कि मिस्टर सूटरसाहब बखूबीनिश्चय करलेंगे और तुम्हारे बयानपर उनकोकुछ शक नहोगा? उ०—रावजीने मुझसेपहिले कहदिया था। प्र०—हां मैंजानताहूं किरावजीने तुमसेकहदिया था परन्तुयह पूछताहूं किजबतुमने पेटीकोफाड़डाला औरतुम्हारी उंगलियां उसजगहथीं जहांसे किपुडियानिकलीतो फिरक्या वजहथी कितुमने पुडिया न निकाली और मिस्टरसूटरसाहब के आनेका इन्तिज़ारकिया? उ०—रावजीने मुझसेकहाथा किउनपुडियों मेंसे जोमुझेमिलींथीं किसीकदर दवाबाक़ीहै। प्र०—मेरेप्रश्नका उत्तरदीजिये कितुमने मिस्टरसूटरसाहबको पुडियानिकालने के पहिले किसवास्ते बुलाया? उ०—हां मैनेपुडिया नहींनिकाली वल्कि मिस्टरसूटरसाहबके आनेका इन्तिज़ारकिया। प्र०—शायद आपकीयहगर्ज़है किजबतुमने उसपुडियाको टटोला तोरावजीनेतुमसेकुछकहा?उ०-नहीं जबमैंने पुडियाको टटोलातो मैं और रावजी एकहीजगहबैठे थे। प्र०-उससमय तुमने मिस्टरसूटरसाहबकोबुलाया? उ०-हां प्र०—अबतक तुमनेमेरे प्रश्नकाउत्तर नहींदिया अर्थात् तुमने सूटरसाहबको क्योंबुलायाथा? उ०—इस वास्तेबुलायाथा कि वह अपने हाथ से जेबको खोलें। प्र०—क्या यह मतलब था किजब पुडियानिकले मिस्टरसूटरसाहब मौजूदहों? उ-हां प्र०—तुम्हारीयह गर्ज़थीकि जिसवक्त पुडिया निकले तो कोई मनुष्य गवाहकीतौपरमौजूदहो? उ०—हां चूंकि हमारा व-

था? उ०—एक सिपाही लाया था? प्र०—क्या उसने पहिलीमें ही विषदेनेका इक़बाल किया? उ०—पहिलीबेर उसने इक-बाल नहीं किया। प्र०—मैं ऐसाही खयाल करता हूं? उ० खान बहादुर अब्दुलअली और गजानन्द वितलसे उसनेकुछ कहाथा। प्र—० उसरोजके आनेके पहिले तुम्हारेपास कितनी देरवह हिरासत में रहा? उ०—भोरके आठ बजेसे संध्याके सातबजे पर्य्यन्त। प्र०—वहतुम्हारीरक्षा मेंरहा? उ०—नहीं। प्र०—तुमने उस क़ीमती चीज़को कहां छिपाया था? उ०—जहां और मौकूफ हुये हुये नौकर थे। प्र०—वहकहां थे? उ०—रज़ीडन्सीके बागमें अहातेके भीतर रहते थे। प्र०—जब वह तुम्हारे निकटआया तो उसने विषदेने का इकबालकि-या? उ०—हां। प्र०—यही बात ठीक है और कुलबातों की कोइ्वितिदा तुमसेहै औरतुमको भीइसबातकी इत्तिलानथी? उ०—रज़ीडन्सीके नौकर परस्परझगड़ा करतेथे उनकेझगड़ने में यहबात मालूमहुई। प्र०—मेरेप्रश्न का यहउत्तर नहीं मैं यहपूछताहूं कि तुमकोइसबातकी पहिलेसेखबरथीयानहीं? उ०—उसने मेरे रूबरूअपने आप इक़रारकिया। प्र०—उसके इकरारकरनेके पहिले तुमनेकोईबात किसीसे ऐसी नहींसुनी थी जिससे वह अपराधी होता मिस्टर अकबरअली सावधान होकरबयान करो? उ०—नहीं मैंने कोईबात ऐसी नहीसुनी थी केवल इतनाही सुनाथा कि वह रुपया खूब उड़ा रहाहै। प्र०—तुम सौगन्द खासक्तेहो कि तुमने कुछ नहीं सुनाथा? उ०—किसबात कीकसम खाऊं। प्र०—इस बातकी कि वहभी विषदेनेमें शरीक है? उ०—मैंने किसीसेनहीं सुनाथा किवह विषदेनेमें संयुक्त है। प्र०—तुमने किसीसे यहभी नहीं सुना था कि उसको विषकी पुड़ियांमिली थीं? उ०—नहीं। प्र० एकबात भी तुमनेनहीं सुनी? उ०—नहीं। प्र०—तुमने यहभी नहीं सुनाथा कि उसको विषकी पुड़ियां मिली जबकि उस-ने तुमसे बयान किया अर्थात् उस जगह जहां वह हिरासत

ने मालूम करने के लिये जेबको फाड़डाला ? उ०—हां। प्र० तुमने जेबके फाड़नेके पश्चात् रावजी को बुलाया ? उ०—हां जब रावजी वर्णन कर चुका था। प्र०—लेकिन देखो तुमने जेबको फाड़ा और पुड़िया न निकाली क्या तुम्हारी यह गरज है कि रावजीने उस वक्त तुमसे कुछ बयान किया था ? उ०—हां उस वक्त बयान किया था। प्र०—रावजीने उस वक्त तुमसे क्या कहा था ? उ०-रावजीने मुझसे कहा कि उन पुड़ियोंमेंसे जो मुझको मिली थीं कुछ दवा बाक़ी रहगई थी यह दवाभी उसी मेंसे है। प्र० सूटरसाहबके आनेके पहिले तुमने पूछ लिया था कि इस पुड़िया में क्या है ? उ०—हां जो न पूछता तो किस तरह जेबको फाड़ता। प्र०—यदि तुम रावजी से न सुनते तो जेबको न फाड़ते परन्तु मैं जानता हूं कि तुमने मिस्टर सूटर साहबको इस वास्ते बुलाया था ताकि वह देखें और दरयाफ्त करें कि इस जेबमें क्या वस्तु है या तुम खुद रावजीके बयान से जानते थे ? उ०—हां। प्र० तुमको रावजीकी बात पर इतना निश्चय था कि बगैर पुड़िया के निकाले सूटर साहबको बुलाया कि वह खुद आकर देखें कि जेबमें क्या है ? उ० हां मैंने जेबको नहीं फाड़ा क्योंकि हमारे साहब निकट थे। प्र० अब बताओ कि रावजीने तुमसे कहा था कि मैंने एक पुड़िया अपनी पेटीमें छोड़दी है या तुमने अपनी केवल बुद्धिसे मालूम किया था ? उ०—रावजी ने केवल इतनाही कहा था कि मैं जेबमें पुड़िया रक्खा करता था। गवाहने रुककर फिर कहा कि मैंने रावजीसे पूछा था कि तुम्हारी पेटी में जेब है वा नहीं। प्र० तुमने रावजी से यह बात कभी नहीं कही कि मैंने कुछ हिस्सा विषका रहने दिया है और एक पुड़िया विषकी पेटी में है ? उ०—यह बात उसने मुझसे नहीं कही। प्र०—रावजी तुम्हारी हिरासतमें कब आया ? उ०—२२ तारीखको आया था। प्र० रावजी को तुम्हारे निकट किसने भेजा था ? उ०—मैंने आपही उसको बुलाया था मैंने खानबहादुर अब्दुल अली, और राव बहादुर, गजानन्द वतिल, को भेजा था। प्र०—उसको कौन ला-

किसीसेबातें नकरे परन्तुयहां गवाहरुका औरकहा कि एक बातहुईथी। प्र०—वहक्या बातथी? उ०—इसमनुष्य से और जमादारसे मुकाबिला कराया गया। प्र०—किसने इस मनुष्य को लाकरसामना कराया? उ०—मैने औरराववहादुर गणानन्दवितल और खानवहादुर और अब्दुलअलीने एकसिपाही को आज्ञादीथी किरावजीको लेआओ। प्र०—जमादारसे उस समयक्या कहाथा? उ०—उससमय वहअब्दुलअली और गणानन्दवितल मेरेपास उपस्थितथे। प्र०—जबसिपाही रावजीको लाया तोतुमने जमादारका मुकाबिलाकराया यह मुकाबिला किसतरह करायाथा मैं सुनाचाहता हूं? उ०—राववहादुर गजानन्दवितल और खानवहादुर अब्दुलअली ने जमादारसे कहा कि रावजीने सबबातोंका इकबालकिया इसवास्ते मैंने रावजीको बुलायाहै। प्र०—तुमने जमादारसे प्रथम यहकहा कि तुमलोगोंसे रावजीने इकवाल करलियाहै? उ०—हां। प्र०—परन्तु यहभी तुमनेउससे कहाथा कि क्याकबूल किया है? उ०—नहीं। प्र०—उससमय तुमने रावजीको बुलाया? उ०—राववहादुरगणानन्दवितल औरखानवहादुर और अब्दुलअलीने कहाथा कि अगरतुमकहोतो रावजीको बुलायाजाय जमादारने कहा कि अगर चाहो बुलालो। प्र०—उससमय रावजीको तुमनेबुलवाया? उ०—हां। प्र०—रावजी अपनेमकानपरमिलाथा? उ०—अपनेमकान परनहीं किन्तुहमारे आदमीथे। प्र०—उसको तुम्हारेनिकट लाये? उ०—हांलाये। प्र०—जबउनदोनों का साम्हनाहुआ तो क्यावार्त्ताहुई? उ० रावजीने कहाकि ऐवाबामैने गलेगलेपानीमें कबूल करलिया प्र०—उसके पीछे जमादारने भी कबूलकिया? उ०—हांउस समय उसनेकहा कि अबठीक २ हालतुमको बतादूंगा? प्र० क्याउसने उससंध्याको सबबातोंका इकबालकिया? उ०-मुझ से नहींकहा। प्र०—किसमनुष्य से इकबालकिया? उ०—मैंने उससेकहा कि मेरेसम्मुख तुमकुछ बयानमतकरो साहबकेपास

मेंथा? उ०—जब उसने तुमसे बयान किया तो मैं उसके निकट गयाथा इससे पहिले नहीं गया। प्र०—इसके उपरान्त भी वह और नौकरोंके साथ कैद रहा? उ०—नहीं दूसरे कमरे में कैद रहा। प्र०—तुम कहते हो कि उसने २२ तारीख को बयान किया? उ०—हां। प्र०—तुम सौगन्द खासक्ते हो कि स रोजसे कि उसने विषदेनेका इकरार किया और वह नौकरोंसे अलग रक्खागया? उ०—२२-तारीख से २८ तारीखतक वह मेरे चार्जमेंथा। प्र०—मैंने तुमसे यह प्रश्न नहीं किया क्या तुम सौगन्द खासक्ते हो २८-तारीखके पीछे यह शख्स और और रजीडन्सी के नौकरोंसे अलग रक्खागया और सबसे अलग रहा? उ०—हां वह फिर अपने घरको नहीं गया। प्र०—मिष्टर अकबर अली मैंने कभी पहिले हिन्दुस्तानी पुलिस के आदमियों से प्रश्न नहीं किये हैं इंग्लिस्तानमें बहुधा इत्तिफाक हुआ है मेरे प्रश्न का उत्तर दो क्या तुम कसम खासक्ते हो कि २२-तारीखके पीछे जब उसने तुम्हारे सम्मुख इजहार दिये थे उससमयसे रजीडन्सीके और नौकरों के पास नहीं गया यह प्रश्न स्पष्ट है इसका उत्तरदो? उ०—यह मनुष्य रजीडन्सीके और नौकरों के निकट नहीं गया किन्तु वह मेरे चार्ज में था। प्र०—तुम सौगन्ध खासक्ते हो कि उसदिन उससे और दूसरे किसी रेजीडन्सीके नौकरसे बातें नहीं हुईं? उ०—मैं नहीं कह सक्ता कि उससे किसीकी बातें हुईं या नहीं परन्तु मेरी आज्ञा से उसपर सिपाहियोंका पहिरा नियत कियागयाथा। प्र०—शायद इस सूरतमें और नौकरोंसे बातें कीहों? उ०—मैं नहीं जानता मैं क्योंकर कहूं। प्र०—शायद उसने कीहों? उ०—मुझको ऐसे खयाल करने कीकोई वजह नहीं है। प्र०—हमको ऐसे खयाल करनेकी कोई वजह नहीं है कि उसने बातें कीहों? उ०—मेरी आज्ञाथी कि यह शख्स किसीसे वार्त्ता करने नपाये। प्र०—तुम सौगन्द खासक्ते हो कि तुमने ऐसी आज्ञा दीथी कि वह किसी से वार्त्ता न करने पावे? उ०—हां मैंने आज्ञा दीथी कि यह कैदी

उ०—मेरे हुजूर कमीन होंगये। प्र०—तुमने कभी सुनाथा कि
वह गयेथे? उ०—जो मैं सुनता तो आपसे वर्णन करता। प्र०
उनकोगवाही लेनेको आजलाइय करतेथे और जबवह कुछ
बयान नहीं करतेथे तो उनको फिरवुस जेलखानेमें भेजदिया
करतेथे? उ०—उनको ग्रहादतका हाल रावबहादुर गणा-
नन्दवतिल को मालूम होगा। प्र०—मिस्टर अकबरअली क्या
आप भलेप्रकार नहींजानते कि इनलोगों को हुजूर कोशिश
कीगई और हालपूछागया औरपूछते २ थकगयेतोआपने उ-
नको जेलखानेमें भेजदिया? उ०—मुझको याद करनेदोजिये
(गवाह चुपहुवाओर गौरकरनेलगा) प्र०—आपको स्मर्ण होगा
उ०—दामोदरपन्थने नूरहीनके पिताका नाम लियाथा। प्र०
मैं दामोदरपन्थका सब हाल जानताहूं परन्तु आपसे पूछता
हूं कि क्या आपके चार्जमें गवाहथे और जबआपको उनगवाहों
से कुछ हालमालूम नहुवा तो आपने उनको जेलखाने भेजदिया
उ०—हां मुझको याद आया जेलखाने में उनके भेजनेका यह
कारणथा कि संखियेके मुआइसेका उनसे कुछ तअल्लुकथा।
प्र०—आपको यादआगया? उ०—दामोदरपन्थने कहाथाकि
मैने एकबोहरोंकोदूकानसेविषमोल लियाथा। प्र०-दामोदर
पन्थके बयानपर इनदोनों शख्सोंके इजहार लियेगयेथे? उ०
मैनेबोहरोंके इजहार लियेथे। प्र०—मैंपूछताहूं कि पुलिसने
उनकेइजहार लियेथे? उ०—हांलियेथे। प्र०—क्यावहतुम्हा-
रीहिरासतमेंथे? उ०—हांपरन्तु दूसरे खेमेमें उसपर सरजन
वेलनटायनसाहबने कहा कि दूसराव्यावस्तु-मुतरज्जिम ने उस
शब्दसे कहा कि मैं—सरजन्टवेलनटायन साहबने कहा कि
कौवलतकारी—मुतरज्जिमनेकहा मैंतो स्पष्टरीतिसे कहताहूं
परन्तु आपनहीं सुनतेहैं कोशिशनहीं करताहूं। प्र०—क्यातुमने
कोशिशकी कि दामोदरपन्थके इजहारकी तसदीक़हो? उ०
यहबड़ा मुआमला है इसकीतहक़ीक़ात अबहोगी। प्र०—आप
मेहरबानी करके इसबातको यादरक्खें कि बड़ामुआमला हु-

चले। प्र०—उसने कोई बात भी तुमसे कहीथी ? उ०—नहीं। प्र०—मुझको बताओ कि तुम्हारी हिरासतमें इसजुर्म्म केवारे कितने मनुष्य क़ैद हैं ?उ०—मेरेपास गवाहहैं क़ैदीनहीं हैं। प्र० अर्थात् तुम्हारे निकट ऐसे गवाहहैं कि उनको कभी आने जाने नहीं देतेहो ? उ०—हां ऐसेही गवाहहैं कि वहकहीं चलेन जावें ताकि उनके मिलनेमें दिक्कतनहो। प्र०—वह कितनेहैं अर्थात् कितनेगवाह और कितनेक़ैदीहैं ? उ०—मेरे निकट कोई क़ैदी नहींहै। प्र०—कितनेगवाह हैं ? उ०-बीस या बाईसहोंगे उनके नामकी मेरेपास फेहरिस्तहै आपदेखेंगे। प्र०—मैंदेखना नहीं चाहता क्यातुम एकमनुष्यको जानतेहो जिसकानाम नूरुद्दीन बोहरा है ? उ०-हां। प्र०—नसीरुद्दीन बोहराको जानतेहो ? उ०—हां। प्र०—यहदोनों क़ैदहैं ? उ०—मेरेपास क़ैदनहीहैं वह जेलखानेमें क़ैदहै। प्र०—क्यादोनों जेलखाने में हैं ? उ० हां। प्र०—तुम्हारे चार्जमेंहैं ? उ०-मेरेचार्जमें क्योंकर होस-क्तेहैं वहजेलखानेमें हैं। प्र०—कभी तुम्हारे चार्जमें वह थे ? उ०—वह खानबहादुर अब्दुलअली और राव बहादुर गजानन्द-वतिलके चार्जमेंथे। प्र०—उनकोहिरासतमें कौनलायाथा ? उ०—जिनदो आदमियोंका नाम मैने अभीलिया। प्र०—क्या यह लोगभी और गवाहोंके साथ रहतेथे ? उ०—हां परन्तु दूसरी कोठड़ी मेंथे। प्र०—यहलोग जेलखानेमें कबगयेथे ? उ०—खान बहादुर अब्दुलअली जानते हैं आपसेबयान करेंगे उनकोयाददाश्तमें तारीख़ आदिलिखीहै। प्र०—लेकिनमुझसे तुमकहो कि वहलोग कबजेलखानेमें गयेथे ? उ०—१५ या बीसदिनहुये। प्र०—वहलोग कबतक गवाहोंके साथजेलखाने मेंरहे ? उ०—वहलोग गवाहोंसे अलग रहतेथे। प्र०—कितने दिनतक वह जेलखाने मेंरहे ? उ०-खानबहादुर अब्दुलअली दोनोंकी संख्या जानतेहै। प्र०—कभीसाहब मजिस्ट्रेटके रूबरू वहगयेथे ? उ०—मैंनहीं जानता। प्र०—तुम जानते हो कि मिस्टरसुटर साहब या और किसी हाकिमके सम्मुखगयेथे ?

निटक २२ तारीखको आयाथा ? उ०—हां। प्र०—वहकिस समय तुम्हारे निकट आया था ? उ०—सुबह के ८ बजे या ७ बजे मेरेपास आयाथा। प्र०—जबवह तुम्हारे निकट आयाथा तुमनेउससे कुछ प्रश्नकियेथे ? उ०—हां। प्र०—क्याइसी वास्ते रावजीको तुमने बुलायाथा ? उ०—हां। प्र०—तुमने रावजी को किसलिये बुलायाथा बयानकरो ? उ०—मुझको और साहब को उसपर बड़ासंदेह था। प्र०—किस सबब से तुमको उसपर संदेहथा ? उ०—मुझको चारों ओरसे खबर मिली कि रावजी ने बहुतसा रुपया खर्चकिया और अन्तको मेर उस कमरे में जहां कि शर्बतरक्खाथा यही मनुष्यआया था। प्र०—तुमकहते हो कि सुबहकेवक्त तुमनेउससे कुछप्रश्नकिये थे परउसने कुछ उत्तरनहीं दिया ? उ०—उसवक्त नहींदिया। प्र०—तुमनेप्रातः कालसे संध्यापर्य्यन्त फिरभीकभी देखाथा ? उ०—हां। प्र० तुमने उससेवार्त्ताकी थी ? उ०—नहींवार्त्ता करनेका समयनथा प्र०—उसदिन नरसू पकड़ा नहींगया ? उ०—नहीं उस दिन वहकामपर था। प्र०—किसकार्य्यपर ? उ०—बंगलेकी जमादारीपर। प्र०—क्यानरसू रावजीके साथ और नौकरों समेत हिरासतमें था ? उ०—नरसू मेरी हिरासत में न था। प्र० क्यावह उननौकरों के साथथा जो हिरासतमें थे ? उ०—नहीं प्र०—२२तारीखको कौन२मनुष्य तुम्हारीहिरासतमें था ? उ० मेरीहिरासत में कोई मनुष्यनथा केवल तहकीकातके लियेमेरे पास लोगआये थे। प्र०—वहरसूरत वहलोग आपके पासथे ? उ०—फैजू और मुग्गाजहां क़ैदथे उसजगहसे मेरेपास आये थे। प्र०—और कौनमनुष्य आयाथा ? उ०—रामाबरीक जिस को करनैलफियर साहबने क़ैदकियाथा। प्र०—तुमकहते हो कि रावजी तुम्हारी हिरासतमें २२ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक रहा ? उ०—हां प्र०—सिवाय उस दिनके जब कि तुमने रावजी और नरसूकामुकाबिला करायाथा औरभी उनदोनों में कभीवार्त्ता हुई उ०—बातोंके करनेकी फ़ाज्ञा नथी केवल

दरपेश है और उसकी तहक़ीक़ात हो रही है मेरे प्रश्न का उत्तर दो? उ०—यह एक बात है वह दूसरी बात थी। प्र०—मिस्टर अक० बरअली मेरे प्रश्नका उत्तर दो कि कभी कोशिश की गई थी कि यह दोनों शख़्स दामोदरपन्थके इज़हारकी सिदाक़त करें? उ० हां हुई थी और हो रही है (इस पर समाजमें हंसी उडी) प्र० अर्थात् तुम्हारा यह मतलब है कि वह जेलखाने भेजदिये गये? उ० हां इज़हार उनके लिये जांयगे॥

ऐडवकेट जनरल के प्रश्न॥

प्र०—तुम कहते हो कि तुमने पेटी को फाड़डाला था? उ०—हां प्र०—इससे पहिले वह सिली हुई थी? उ०—हां सिली हुई थी। प्र० तुमने उसकी सिलाई खोल डाली? उ०—हां। प्र०—तुम कहते हो कि जब तुमने पुड़िया पाई तो मिस्टर सूटर साहब करीब थे बतलाओ कि किस जगह थे? उ०—वहां से दस कदम पर थे। प्र०—किसी कमरे में या और किसी स्थान पर? उ० दूसरे कमरे में थे चिलमन बीच में पडी हुई थी। प्र०—रेज़ी डन्सी के मकान में? उ०—मिस्टर सूटर साहबने मुझसे कहाथा कि तुम ठहरो वह हाथ धोने के वास्ते गये थे। प्र०—जब तुमने सूटर साहबको बुलाया तो वह शीघ्र ही आये थे? उ०—हां जल्दी आ गये थे। प्र०—पेटी का तज़्किरह प्रथम तुमने रावजी से किया था वा रावजीने तुमसे कहा? उ०—मैंने पहिले रावजी से कहाथा। प्र०—तुमने प्रथम रावजी से कब तज़्किरह किया उ०—जब रावजी ने मुझसे कहा कि मेरा वह नियम था कि विषकी पुड़िया पट्टे के नेबमें रक्खा करता था उस समय कहा था। प्र०—क्या तुमने उसी समय उस पट्टे को मंगाया? उ० हां। प्र०—भोदरके आनेके पहिले यह पट्टा कभी तुम्हारे क़ब्ज़े में रहा था? उ०—मैंने उस पट्टे को देखा नहीं था और न भोदरसे कभी भेंट हुई थी। प्र०—जब तुमने पट्टेसे वह पुड़िया पाई तो तुमने सूटर साहबको बुलाना उचित समझा? उ० हां क्योंकि वह बड़े अफ़्सर हैं। प्र०—तुम कहते हो रावजी मेरे

या तो तुमने साहबके आनेसे पहिले पेटीको क्यों फाड़ा ? उ० क्योंकि मैं नहीं जानता था कि उसमें पुड़िया है या नहीं इसके उपरान्त कमीशनके अधिष्ठाता टिफनखाने के वास्ते उठ गये टिफनसे लौटने के पीछे इज़हार सन्तराम भिखारी रामके लिये गये ॥

इज़हार सन्तराम भिखारीराम ॥

इस मनुष्यके इज़हार ऐडवकेट जनरलने लिये उसने वर्णन किया कि मैं गायकवारका नौकर हूं बम्बई और बड़ौदा और सूरत में गायकवारकी दूकाने हैं उनका मैं अफ़सर हूं उनका हिसाब मेरे निकट रहता है मैं गायकवार के महल में रहता था और बहुधा महाराजा साहब को देखा करता था मैं यशवन्त रावको जानता हूं वह मल्हरराव के निकट जासूसके तौर पर नौकर है मैं सालिमको भी जानता हूं वह भी महाराजा साहबका नौकर है कभी महाराजा साहब के साथ यहलोग रहते थे और कभी नहीं और मैं एक और मनुष्यकोभी जानता हूं जिस का नाम दामोदर पिम्बक उर्फ दामोदर पन्थ है यहमनुष्य गायकवारका निजका नौकर है वह सिपाहियों और कारकुनोंको तनख्वाह बांटा करता था मुझे स्मर्ण है कि एकबेर श्री महाराज ने मुझको एक काग़ज़के पढ़नेके वास्ते बुलाया था वह छोटी चिट्ठी थी जिसस्थानपर श्रीमहाराजासाहब बैठे हुये थे बेंचपर यह चिट्ठी पड़ी हुई थी जो लोग महाराजासाहब के निकट खड़े हुये थे उनमें से एकने मुझसे कहा कि तुम इस चिट्ठीको पढ़ो सो मैंने उसको बड़े शब्द से पढ़ा जिसप्रकार मैं इस समय बोलरहा हूं, चिट्ठीके पढ़ने के उपरान्त श्रीमहाराजा साहबने कहा कि यह चिट्ठी दामोदरपंथको देदेना मैंने उस दिन मैंने चिट्ठी देदी मुझको मालूम नहीं वह चिट्ठी कहांगई यहचिट्ठी गुजराती भाषामें लिखी हुई थी जितना कि मुझको उसका मतलबयाद है वर्णन करताहूं उसचिट्ठीमें न तारीख थी न किसीके दस्तखत थे उसमें लिखाथा कि भाग्यप्रकाश

२४तारीख़ को उनसेबातें हुई थीं। प्र०—रावजीनेसिवायइस बातकेकि बाबासैनेगलेगले पानीसें कबूलकरदिया है और भी कुछ जमादार से कहाथा उ०—नहीं। प्र०—या किसी और मनुष्यने भी जमादारसे कहदियाथा कि रावजीनेक्याकहा? उ०-नहीं। प्र०-२२दिसम्बरसे किसमुकामपरबड़ौदेमें कैदया? उ०—जहांहमलोगरहतेहैं। प्र०--वहस्थानकहांहै? उ०—उस मैदानमेंहमरहतेथे जोरेज़ीडन्सी केनिकटहै। प्र०--रेज़ीडन्सी केअहातेमें? उ०—नहीअहाते केनिकट। प्र०—तुमनेउसकोकिस तरहरक्खा? उ०-थोड़ेदिनतकअखोरगवाहकेसाथ और चन्द-रोजतक अलगरक्खा एक२ पुलिसके सिपाही के पासकई २ गवाहथे। प्र०—फिरवहांसे तुमलोग कहांगये? उ०—कारनैल बिढ़न्स साहबके बंगलेकेपीछेगये। प्र०—तुमयहांसेकबगयेथे? उ० मुहर्रमकीदूसरीया तीसरीतारीखको। प्र०—उससमयसेराव जी तुम्हारे निकटहै? उ०—हां। प्र०—नरसूकहां रहा? उ० हिन्दुस्तानी पलटनके गार्डमें और थोड़े दिनगोरों के पहिरे मेंरहा। प्र०—उसकोकिस स्थानपररक्खाथा? उ०—जिसस्थान पररेज़ीडन्सीमें गोरोंका पहिरारहताहै। प्र०—नरसू तुम्हारे चार्जमें कभीरहा? उ०—नहींइजहार देनेके लिये वह मेरे निकट अयाकरताथा। प्र०—तुम्हारे चार्जमें कभीनहींरहा? उ०—नहीं। प्र०—पसतुमको इससुआमलेसे तअल्लुक नहीं है जिसमें तीनऔरहरहिरासतमेंहै? उ०—तअल्लुकहैगजान्दवति-लको। प्र०—जबरावजीने जमादारकेरूबरू इकबाल कियाकि ऐबाबा मैनैगलेगले पानीमें कबूलकिया उससमय जमादारने कुछकहाथा? उ०—उससमय कुछ नहीं कहा जब रावजी चलागया उससमय कहाथा। प्र०—उसने रावजी से कुछभी कहाथा? उ०—नहीं प्र०—सरदिनकर रावनेकहाइसमुकद्दमेमें तहक़ीक़ात करनेकाकौनमनुष्यअधिकारीथामिस्टर सूटरसा-हबथातुम? उ०-मिस्टरसूटरसाहबने मुझको इखतियारदिया था। प्र०-जबतुमको तहकीकात करने का इखतियार दिया

इजहार मिस्टर बोवी साहब॥

मिस्टरबोवी साहबके इजहार मिस्टर जनवरारटी साहबने
लियेउन्होंने वर्णनकिया कि मेरानाम अरथर विलियमकारो
लोबोवीहै गत नवम्बरमें रेजीडेन्सी बड़ौदेका कायम मुकाम
रेसिस्टन्टरेजीडन्टथा और मकानरेजीडन्सी में रहाकरता
था ९ तारीख नवम्बरको मुझको भलीभांति स्मर्णहै उसीदिन
वक्तसवेरे हवाखोरीको गयाथा पूर्वजो जब रेजीडन्सी को
लौटा तो सालिमसवार और यशवन्तराव और माधोराव
हालीकोदेखा यहतीनों मनुष्य बरामदेमें खड़ेथे मेर मतलब
यहहै कि जहां आवागमनका द्वारहै मुझको स्मर्णहै कि फैज
सालिमसे वार्त्ता करताथा जब९बजे वस्त्रपहिनकर मैं निकला
तो मैनेसुना कि करनैलफियर साहबकी शर्वतमेंकुछ डाल
दियागया जब महाराजा साहब चलेगये उससमय करनैल
फियरसाहबनेमुझसे यहबातकहीथी इसकेउपरान्त मैने तह
कीकातके करनेमें करनैलफियर साहबको सहायतादी जिस
समयरावजी का पट्टालियागया मैं मौजूदथा जबपट्टा मांगा
तो उसनेआपही उतारकर एकखूंटीपर करनैल फियरसाह
के निजकी कचहरीमें लटकादिया अमीनाआया कि जिसके
इजहार कमीशनमें होचुकेहैं मेरीमेस को आयाहै वह मेरे
पासव्यतीत एप्रिल वालईसे नौकरहै दोएक मरतबा आया
गैरहाजिरी हुईथी मुझेस्मर्ण नहीं कि वहकिस२दिनगैरहा
हाजिर हुई सरजन्टवेलनटायनसाहब ने कहाकि चूंकिवह
बहुधा गैरहाजिररही इससेमालूम होताहै कि वह अधिक
गैरहाजिररही गवाहनेफिर कहा कि मुझकोस्मर्णहै कि जब
अब्दुल्ला का पुत्रमरगया था तोवह गैरहाजिरहोगई थी और
करनैलफियर साहब के विपदिये जानेसे कईदिन पहिलेभी
वह गैरहाजिररही थी मुझकोस्मर्णहै कि १६दिसम्बरको म
सुटरसाहब यायाके कमरेमें गयेथे मैंभी उनकेसाथ गयाथा
मैं जानता हूं कि शायद गजानन्द शास्त्री और खानबहादुर

और नव्वाब साहबका कारकुन बात्तोंकरतेहैंमैं गायकवारके मन्दिरमें नजरबागहोकर जायाकरताथा। प्र०—क्या इसमार्ग से निकलेलोग जायाकरते थे ? उ०—बालाखानेपर यहकचहरीहै। प्र०—मेरे प्रश्नका उत्तरदो ? उ०—हां सबलोग इस मार्गसे जाते थे ॥

मिस्टर ब्रेन्सनसाहब के प्रश्न ॥

प्र०—उसकचहरी का हालवर्णन करो ? उ०—इसमहल के नीचे जोकोठड़ियांहैं उनमें मालरहताहै और उसकेऊपर दूसरी मंजिलपर जजसाहब की कचहरी है। प्र०—क्या तुम हिरासतमें हो ? उ०—हां। प्र०—इसी अपराधपर कि तुमने महाराजासाहब की चिट्ठीको पढ़ा ?उ०—हां। प्र०—१३—१४ जनवरीसे हिरासतमें हो ? उ०—मुझेस्मर्ण नहीं फिर कहा कि पौषसुदीषष्ठीसे हिरासतमें हूं ॥

ऐडवकेटजनरलने इसगवाहके दुबारह इज़हार लिये ॥

प्र०—दूसरी मंजिलसे जो ऊपरकामकानहै उनमें कुछभी मालरहता है ? उ०—नहीं वह खालीरहता है। प्र०—उस महलमें तीसरीमंजिलभी है ? उ०—हांतीन याचार मंजिल हैं। प्र०—तुम जानतेहो कितीसरी मंजिलपर किस तरफ से जातेहैं ? उ०—एकछोटे कमरेमेंहोकर उसकीसीढ़ी है। प्र० उसमें चौथादरजाभी है ? उ०—हांहोगा मैंने नहींदेखा। प्र० इस चौथेदरजेपर कोईजीनाहै उ०—कोई सीढ़ीनहीं हैलोग उसपरआयाजायाकरतेहैं। प्र०—उनदरजों परकभी तुमगये हो ? उ०—हां। प्र०—तुमकहतेहो किमैं अब हिरासतमेंहूं तुम किसस्थान पर रहाकरते थे ? उ०—जोगली छापे दरवाजे के निकट है मैं सेनापति की कचहरी में पौषसुदी षष्ठी से हिरासतमेंहूं। प्र०—किसकी हिरासतमें हो ? उ०—उनसिपाहियों की हिरासतमेंहूंजो कचहरीमें नियतहैं। प्र०—गायकवार के पुलिस के सिपाही ? उ०—हां ॥

हैं कि कुछ खबरें लाया करताथा और साहब रेजीडण्ट को महाराज गायकवारकी काररवाइयोंसे सूचित किया करता था ? उ०—मैं जानता हूं कि बहुतसी बातोंकी इत्तिलादिया करता था। प्र०—कोई और मनुष्यभी इत्तिला दिया करता था ? उ०—हां और लोग भी इत्तिला दिया करते थे। प्र० क्या भावपूनाकर ने भी कभी कोई खबरदी थी ? उ०—नहीं प्र०—रेसीडेन्सीमें संखिया वा कोई तांबेका विषरहता था ? उ०—मैंने कभीनहीं देखा। प्र०—आपने कभी किसीकामके वास्तेसंखिया नहींमंगाया ? उ०—कभीनहीं। प्र०—आपकी आज्ञासे कभीसंखिया नहींआई ? उ०—कभी नहीं आई ? प्र०—क्या इस हमलेके पीछेभी नहींआई ? उ०—नहींआई।

ऐडवकेट जनरल के प्रश्न ॥

प्र०—आप कहतेहैं कि भावपूनाकर कलक्टर सूरत का नौकर था क्यावह जुल्फिकार अलीअससर्यके इलाके काजो बड़ौदेमें है इन्तिजाम करताथा ? उ०—हां। प्र०—आपनेसर जन्टवेलन टायनसाहबसे कहा कि संखिया आपकी आज्ञासे कभीनहीं आई ? उ०—कभी नहीं। प्र०—९ नवम्बर वा उसके उपरान्त कभीनहीं आई ? उ०—नहीआई ऐडवकेट जनरलने कहाकि और गवाहोंकी शहादत बहुत तूलसे है औरचारदक गयेहैं अबबरखास्त होना चाहिये सोकमीशन बरखास्त हुई।

ग्यरहवें दिनका इजलास ॥

आजकेदिन ११बजेपर कमीशनका इजलास शुरूहुआ मिस्टर मेल्वर और सरल्यूइस पीली साहब और श्रीमान् महाराजा मल्हरराव मौजूदथेपरन्तु मध्याह्नकेउपरान्त श्रीयुतमल्हरराव और श्रीमहाराजा सेंधिया और सरल्यूइसपीलीचलेगयेइस मकानमें आजके दिनबड़ीभीड़थी सैंकड़ों मनुष्यदामोदर पंतके इजहार सुननेके लिये आयेथे जो तमाशाई उसअदालत में आनेके योग्यनथे वहमैदानमें खड़ेरहे जिससमय दामोदरपंत बलायागया तोवह निहायतबेकदरीतौरसे कमीशनमें हाजिर

पहिला और खान बहादुर दूसरा भी सूटरसाहब के साथ थे जिस समय उसने सूटरसाहब से कुछ कहाथा मैं वहां वर्त्तमानथा उस समय वह ज़ियादह बीमार मालूम होती थी प्र०—अनवरारटो साहब ने कहा आपको खबर है कि उसने क्या कहाथा सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा किमैं इन्कार करताहूं ऐसेसवाल करने का-ऐडवकेट जनरलने कहाआया के इनहारोंमें प्रश्नहुयेथे जोअबभी प्रश्न कियेजांय तोउनकी सिदाक़त होजाय सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहा।कि मुझे वही सवालात मंजूर है॥

साहब प्रेज़ीडेण्टने कहा कोई और गवाह उनबातों की तसदीक़ केवास्ते आसक्ता है फिर सरजन्टबेलन टायनसाहबने अपना उज्र वापिस लिया। प्र०—लिस्टर अनवरारटो साहबने कहाकि आयाने सूटरसाहबसे क्या कहाथा ? उ० उसने कहाथा किमैं कईबेर श्रीमहाराना साहब के मन्दिर में गई और मैने रुपया भी पाया उसने कुछ और भी बयान किया था परन्तु मुझे खबर नहीं १६—दिसम्बरको बड़ादेसे मैं रवाना हुआ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—भाव पूनाकर को आपभले प्रकारजानते हैं ? उ० हां खूबजानताहूं। प्र०—वहकबहुधा रेजीडन्सीमें आयाकरता था ? उ०—सदाआया करता था। प्र०—किस तरहका वह साहबरेज़ीडण्टका नौकरथा ? उ०—कोर्ट आफवार्डससे उस का तअल्लुक़ था-और लिस्टरहोप साहब सूरतके कलक्टरनेउसको रेजीडन्सीमें भेजाथा। प्र०—आप मेरा प्रश्ननहीं समझे मैं पूछताहूं किवह रेज़ीडन्सीमें नौकरथा ? उ०—वह रेज़ीडन्सीमें नौकर था किन्तु सूरत के कलक्टर साहब का नौकर था। प्र०—उसको कोई खास ख़िदमत साहब रेज़ीडण्टने सु पुर्द नहीं की थी ? उ०—नही। प्र०—उसको कुछ रेज़ीडन्सीसे मासिक मिलताथा ? उ०—नहीं। प्र०—आप जानते

कामर्में किया करताथा इस कचहरीमें २५-मुहर्रमके आधी-
नये-साधोराव रामकृष्णासरदफ़्तरथा-एक मनुष्य जिसकानाम
नानाजीवनितलहै जवाहिरखानेकाहाकिमथा और एक औरमनुष्य
जिसका नामबलवन्तरावजोहै खजानचीथा-आबाजीरामचन्द्र
मेरासरिश्तेदारथा मैंप्रात:कालके सातबजे महलमेंजाताथा
औररात्रिके दसबजेतकवहां रहताथा परन्तु तीसरेपहिर भो-
जनकेनिमित्तअपनेघरमें आयाकरताथा मैं महाराजा गायक-
वारकेमन्दिरकेसम्पूर्णकमरोंको जानताहूं गायकवार महलके
चौथेदरजेपररहाकरतेथे जिस मनुष्यकोकोईखास कामहोता
थावहपीछेकेरास्तेसेआताथा और दरबारकेसबलोग फाटकसे
आयाकरतेथे परन्तुबहुतसे मनुष्यजोजिनकी कचहरीमेंमहा-
राजा साहबकेनिकटआतेतो वहपीछेके जीनेसेआयाकरतेथे
सरजन्टपेलन टायनसाहबने कहा कि मैंगवाहका बयानकुछ
भी नहीं सुनता विश्वासहैकि महाराजासाहबभीन सुनतेहोंगे
गवाहसे कहा जायकि जोरसेबयान करे आज्ञाहुई कि गवाह
जोरसे वर्णनकरे गवाहने बयानकियाकि लोगगद्दीके कमरेको
जायाकरते हैंउनका आवागमन सगमनास दरवाजे सेथा।
एक और दरवाजा नजरबागकी ओरसेथा वह खासदर-
वाजा मशहूरहै मैंयशवन्तरावको जानताहूं वहजासूसके तौर
परमहाराजा साहबकेपास थे।

हुआसज्ज मखमल की सिरवाई पहिने हुयेथा इस मनुष्य का अति स्थूलशरीर है और अयोग्य मालूम होताहै उसके मुखका नकशा मोटा और चेचकरू है और उसकीखाल गज के चर्म के सदृश खुरदरीहै और गवाहोंसे उसकीआदत और प्रकारकी मालूम होती है॥

जोगवाही रावजीनेदी वह अति चातुरता के साथदीनरसूने कांप२ कर गवाहीदी और अपने अपराध को छुपाना चाहा परन्तु दामोदरपंथ बड़ा दुष्ट और डरपोक है जिससमय उसने गवाहीदेनी आरम्भकी तो धीरे२ नेत्रोंकोनीचे कियेहुये उत्तर देताथा मालूमहोता था कि वह अपने मनमें अति लज्जितहै परन्तुसरजन्ट वेलन टायन साहबने उससेकहा कि बड़े शब्द से वर्णनकरो जिस्से कि श्रीमान् महाराजा साहबभी तुम्हारे इजहार सुनें और शिर उठाकर महाराजा साहबसे चार आंखेंकरो और इजहार दोयहसुनकर उसने शिरउठाया और उच्चशब्द सेबोलने लगासर ल्यूइसपीली साहब(रेजीडराट) नेजो कहा थाकि दामोदरपंथके इजहार सुननेकेयोग्यहैं और कारआमदहैं वास्तवमें उन्होंनेसत्य कहाथा ऐडवकेट जनरलने उसके इजहारलिये और नीचे लिखेके अनुकूल उसनेइजहारदिया॥

दामोदरपंथ के इजहार।

मेरानाम दामोदरचिम्बकवा दामोदर पंथहै सरजन्टवेलन टायनसाहबने सुतरज्जिमसेकहाकि गवाहसेकहोकि बड़ेजोर सेबोले कि श्रीमहाराजा मल्हरराव भीसुनें गवाहने वर्णन कियाकि मैंब्राह्मणहूं और श्रीयुत महाराजा गायकवाड़ का प्राईवेट सीक्रेटरीथा मुझेइस अधिकारपर तीनवासाढ़ेतीन वर्ष बीते होंगे सम्पूर्ण सिपाहियों और कसवियों आदि की तनखाह बांटनेका काम मेरे सुपुर्दथा चिड़िया खानेके नौकरोंकी तनखाहभीमैं बांटाकरताथा महाराजा गायकवाड़ कीआज्ञाके अनुकूल यहसब रुपयाबांटा जाताथा मैंलड़ोपोल केदरवाजे पररहा करताथा और जिनकी कचहरी अपने म-

वह घोड़ोंकी खारिशकी औषधी बनायेगा सोमैने वहपुड़िया सालिमका देदी ॥

तिसपीछे श्रीमहाराजा साहबने मुझसे फिरकहाकि एक तोला हीरा मंगवाओ शायद यहसंखिया मंगानेसे आठदस दिनपीछे मुझसेकहाथा तथाच मैने नानावतिल से हीरेमंगवाकर महाराजासाहब को आज्ञासे यशवन्तराव को देदिये आठदसदिन पीछे मुझने महारासाहबने कहाकि यहशीशी हकीमके पाससेआईहै यहसालिमको देदेना यहशीशी राचिकेसमय महाराजासाहबने गजाबाकेहाथ मेरेपासभेजीपूछोतो गजाबानानाकंवलकरका नौकरहै नानाकंवलकर महाराजासाहबके सालेहैं वहशीशी जोराचिके समयआईथी मालूमनहीं उसमेंक्या था मिस्टरमैलवल साहबने मुतरज्जिमसे पूछाकि इथनोदे के क्याअर्थ है मुतरज्जिमने उत्तरदिया किइस शब्दकेअर्थ वजीरकेहैं मिस्टर मैलवलसाहबने कहाकि गवाह ने कहाथा कि नानाकंवलकर महाराजासाहबके सालेहैं और मैारूमी वजीरभीहैं मुतरज्जिमने कहा हां। तिसपीछे गवाह ने वर्णनकिया किउंगलीके बराबरशीशी थी मैनेयहदवा दूसरी शीशोमें करदी जिसमेंपहिले गुलाबजल इतरथा गवाहने शीशी को दो पुड़ियाके बराबर निशानकिया गजाबाने एकशीशी से दूसरीमेंदवा को कियाथा यह छोटोशीशी जिसमेंदवाथी मैने अपने पासरखली दूसरे दिन महाराजा साहबकी आज्ञाकेअनुकूलशीशी सालिमको देदीवहदिन दसहरेके थे थोड़े दिनों के पीछेमहाराजा साहबने मुझसेकहाकि एकतोलाहीरा और दोतोलेसंखियामंगाओ सोनूरुद्दीन बौहरेसे संखियालेनेकेलिये मैं आपही उसके मकानमें गया और संखियालेकर सालिम कोदेदी और एकतोले हीरेमें तीनमाशे पिसाहुआ हीराथा और नौमाशेहीरे के टुकड़े थे मैनेपुड़िया खोलकर नहींदेखी यह बातमानजी के कहनेसे मालूमहुई थीमहाराजा साहबने मुझसे कहा कि हीरे की पुड़िया यशवन्तराव को देदो और

महकमेको लिखा—उस समय एकचिट्ठी गवाहको दिखाईगई उसनेकहा कि वहचिट्ठी यहीहै और उसपर मेरेही दस्तखत हैं ऐडवकेट जनरलने वहचिट्ठी पढ़वाई उसमेंयहलिखाथा॥

श्रीमहाराजकी फौज़दारी के सम्पूर्ण अफसरों के नाम पर।

रामरावके उपरान्त मालूमहो। कि घोड़ेकी खारिशके लिये दो तोले संखिये की आवश्यकता है इजाजत दो कि संखिया मंगाई जाय॥

(द०)दामोदरत्रिम्बक खासगीवाला लिखाहुआ
भाद्रपद नवमी सम्वत् १९३१
4 अक्टूबर सन् १८७४ ई० के अनुकूल

गवाहने वर्णनकिया कि हांयहवोतारीखहैजबचिट्ठी लिखीगई और कहाकि फौजदारीसे संखिया नहींआई तो मैंने नरोत्तमपुरहसे संखियामंगाई परन्तुमंगानेके प्रथम महाराजासाहब और मुझसेकुछ बातेंहुईथी मैंनेकहाथाकि हरसुजनी वद्याकहताहै कि महाराजासाहबसे कुछबातें करके संखिया दूंगा हरसुजनी वद्याफौजदारथा यहसुनकर महाराजासाहबने कहाकि जयकरसे मंगालो मैंनेकहा जोआप जयकरसे संखियामंगावेंगे तोइजाजतीपरवानाभेजाजावेगा महाराजा साहबनेकहाकोशिशकरके कहींसेसंखियामंगाओ और कहा कि नूरुद्दीन बौहरे सेमंगवाओ(नूरुद्दीन महाराजा साहबके सिलेखानेमेंपहिलेनौकरथा) साहब प्रेजीडएटनेकहा सिलाखानेकेक्याअर्थहैंक्यादवाईख।नेकोकहतेहैं मुतरज्जिमने कहाहां॥

गवाहने वर्णनकिया कि अबदवाईखाना सिलहखानेमेंहै यहसिलहखाना उसकमरेके निकटहै जहांश्रीमहाराजसोया करतेहैं थोड़ेदिनोंके पीछे श्रीमहाराजा साहबने कहा कि एकतोला हीरामंगवाओ जबमैंने नूरुद्दीनबौहरेको संखिया के वास्तेलिखा तो वहएकपुड़ियामें संखियालाया मैंनेउसपुड़ियाको नहीखोला और महाराजासाहबसे पूछा इसकोक्या कियाजाय महाराजासाहबने कहाकि वहसालिमको देदोकि

मकानके निकटपहुंची महाराजा साहबने मुझको वहांउतार दियाउसदिन महाराजासाहबसे और कुछबातोंका होनाइस विषयमेंयादनहीं सोमवारको ११-बजे भोजनकरके महाराजा साहबके महलको मैंगया वहांजाकरदेखाकि महाराजासाहब लक्ष्मीबाईके पलंगपर बैठे हैं और नानासाहबखानवलकरसे विषकी बातेंकररहे हैं परन्तु मैंने यहनहीं सुनाकि वह क्या बातेंथी क्योंकि मैं पांचछः कदमकी दूरीपरथा और नमैं उसवार्त्तामें संयुक्तहुआ-इसकेउपरान्त महाराजासाहब और नाना और मैं गाड़ीमें सवार होकर घुड़दौड़को गये मार्गमें महाराजा साहब और नानाखांवलकरने मुझसे कहाकि इसबातकी खूब खबर रखना और जोखबरें मालूम हुआ करें उनकी मुझको इत्तिला दिया करना मैंने अपने घरमें जाकर कई मनुष्योंसे विषके दियेजानेका हालपूछा जोकुछ मैंने सुनायाकि दूसरे दिनभोरको महाराजासाहबको उसकी इत्तिलादी मैंने महाराजासाहब से कहाकि रावजी का पतानहीं है शायदकहीं भागगया महाराजा साहबने कहाकि यद्यपि रावजी बड़ाबुद्धिमान और चतुर है परन्तु झूठाभीहै उससमयमुझने और कुछनहींकहा बुधवारको मैंने सालिम और यशवन्तरावको महाराजासाहब के पास महलमेंदेखा महाराजा साहब ने मुझसेकहा कि विषकेदेनेका हालदरयाफ्तकरके मुझसेकहनाओ उसदिन मुझसे और महाराजासाहबने विषकेविषयमें

महाराजा साहबने कहा था कि इन हीरोंको खामी अकलकोटके ताजकेवास्ते आवश्यकताहै साहब मेर्जाडेरटने पूछा कि खामीके क्या अर्थ हैं मुतरज्जिमने कहा कि खामी पहिलेदरजे के पुजारीको कहते हैं गवाहने कहाकि वहपुड़िया यशवन्तरावको मैनेदेदी मैने यशवन्तरावसे पूछा कि इनहीरोंका क्या होगा यशवन्तरावने उत्तरदिया कि कारनैल फियरसाहबको विषमें मिलाकर दियाजावेगा मैने इतनाही कहाथा कि यह बातबहुत बुरीहै और मैने कुछनहीं कहा मैने२९ अक्तूबरको सुना था कि विषदिये जानेका उपाय किया गया जबसे कि यशवन्तरावको हीरेदिये उसकेआठ दसदिनके उपरान्त मैने सोमवार को यह खबर सुनीथी मैं महाराजा साहबके साथ आठबजे रेजीडेंसीको गयापरन्तु मार्गमें शिवाकी धर्म्मशाला पर उतरपड़ा और महाराजा साहबके लौटनेतक वहां ठहरारहा जबमहाराजा साहबरेजीडेंसी से पलटआये तो मुझको अपनी गाड़ी में बैठालिया और मुझको मेरे मकान पर उतार दिया मार्गमें श्रीमहाराजा साहबने मुझसे कहा कि रेजीडन्सी में एक शोर मचरहाहै मैने पूछा किसकारण वह शोरहै महाराजा साहबने कहा किनरसू प्रतिदिन मेरे निकट आताथा परन्तुआजनहीं आया रावजीने जल्दी करके डाल दिया मैनेपूछा क्या डालदिया था महाराजा साहबने कहा किनरसूडेवढ़ी पर बैठा रहा करता था जब कोई आता था तो वह शीशी बनादिया करताथा आजनरसूनथा इसीसे आज रेजीडन्सीमें शोर मचरहा है महाराजा साहबने मुझसे यह भीकहा कि सालिम रावजीके मकानको दौड़ागया हैताकि वह पुड़ियोंकोलावे और जहां एकबुढ़ियारोटी पकारही है उसमें डालदे॥

महाराजासाहबने यहभी कहाकि मालूमनहींकि सालिम ने रावजीसे पुड़ियोंको लेकर फेंकदियाहै या नहीं–और बड़ी खराबीकी बातहुईहै देखाचाहिये क्या होताहै जबगाड़ी मेरे

सालिम और यशवन्तराव रज़ीडन्सीको गये और फिर लौट आये उसी दिन सरल्यूइस पीलीसाहब रेज़ीडण्ट की आज्ञा पहुंची कि सालिम और यशवन्तराव को भेजदो—रज़ीडन्सी के जानेके पहिले उनको मैंने देखाथा वह ऊपर कोठ्ठतपर नानाकांवलकर के पासथे जब नानाकांवलकर मुझको मिलेतो मुझसे कहा॥

मिस्टरब्रैन्सनसाहबने कहा हमनहीं पूछतेकि उन्होंनेतुम से क्या कहा॥

ऐडवकेट जनरल ने कहा कोई मनुष्य और भी उस समय मौजूद था? उ०—सिवाय नानाकांवलकरके और कोई मनुष्य नथा॥

गवाहफिरवर्णनकरनेलगाकिजबसालिम और यशवन्तराव रज़ीडन्सीको चलेगये तो संध्याको महाराजासाहबसे फिरमेरी भेंट हुई महाराजासाहबनेकहाकि मैंनेदोनों मनुष्योंको समझा दियाहैकि तुमकिसीबातकाइकरार नकरना सिवाय इसबात के और जो कुछ महाराजासाहबने कहा मुझको स्मर्ण नहीं जिसदिन महाराजा साहब पकड़ेगये उसीदिन मैंभी संध्याके समय पकड़ागया ९ बजे एक पहिरा आया महलके कमरेबंद कर दियेगये और प्रतिस्थानपर पहिरा खड़ाहोगया जैकसन साहब और गजानन्दवतिलने मुझसेकहा कितुम अपनेदफ़्तर मेंचलो कितुम्हारे सन्मुख प्रत्येक वस्तु बन्द करके मोहरलगा दीजावे जिससमय प्रत्येकवस्तु पर मोहर लगाई गईमैंभीमौ जूदथा इसकेउपरान्त मैं अपने घर चला आया परन्तु पीछेसे फिरमैं बुलायागया और सेनापतीकी कचहरीमें मुझको क़ैद कियामैं दोदिनतक हवालातमें रहावहां केवलचौकीदारोंका पहिरा था सिपाही न थे वहां से फौजदारके सिपाही मुझको रेज़ीडन्सी में लाये और गोरोंके पहिरे में १६ दिनतक बन्दि में रहा फिरपुलिसकेसुपुर्द कियागया जबतक मैंने किसीबात काकबूल नहीं किया मुझपर गोरोंकापहिरा रहाजब मैंनेइक-

केवल नौसरीमें मेरी और उसकी भेंट हुई थी जब खिस्टर सूटर साहब बड़ौदेसे आये थे तो सम्पूर्ण नगरमें उनके आनेकी खबर प्रसिद्ध होगई थी उनके आनेके पीछे मुझने और महाराजा साहबसे विष दियेजानेकी कुछ वार्त्ता हुई थी—पहिले रावजी पकड़ा गया परन्तु फिर छोड़ा गया इसको सुनकर महाराजा साहबने मुझसे कहा था कि जो शख्स बानी खुब नीया वह छूट गया अब कुछ भय नहीं है परन्तु मुझको स्मर्ण नहीं है कि यह बातें मुझसे और महाराजा साहबसे किस दिन हुई थीं इतना याद है कि सूटर साहबके आनेके उपरान्त वार्त्ता हुई थी जब रावजी दूसरी बिर पकड़ागया तबभी मुझको खबर हुई थी और मैंने यहभी सुना था कि उसने इकबाल किया सो महाराजा साहबको मैंने खबर पहुंचाई महाराजा साहबने उसके उत्तरमें कहा कि मैंनेभी ऐसा ही सुना है अब रावजीने इकबाल किया तो उसको उसको बरीय्यतका सार्टीफिकट दिया गया मुझसे और महाराजा साहबसे इस विषयमें वार्त्ता हुई थी महाराजा साहबने मुझसे कहा था अगर वहां कोई तहकीकात हो तो कदाचित् किसी बातको कबूल नकरना मुझको और कुछ महाराजा साहबकी वार्त्ता स्मर्ण नहीं है मुझको सालिम और यशवन्तराव के पकड़ेजानेकी तारीख स्मर्ण है १५ मार्गशीर्ष थी लुतरजिसने कहा कि यह तारीख २३ दिसम्बरके अनुकूल है रावजी और सालिमके पकड़े जानेके उपरान्त साहब रजीडण्टने महाराजा साहबको लिखा था कि उनको हमारे पास भेजदो जबयह लेखमैं महाराजा साहबके निकट लेगया तो महाराजा साहबने कहा कि हमने सालिम और यशवन्तराव कोभी भेज दियाहै महाराजासाहब ने उससमय मुझसे नहीं कहा कि उन दोनों को किस वास्ते भेजदिया है परन्तु इसके उपरान्त मुझसे कहा कि मैंने दोनों को समझा बुझाकर भेजा है कि कदाचित् किसीबातका इकबाल न करना इसवार्त्ताके विशेष और कुछ महाराजासाहब ने मुझसे नहीं कहा—उससमय

भी दिखाया सिवा इसके उससमय मुझसे कुछनहीं कहा जब मैं नौसारी गयाथा मैंने रावजीको देखाथा रावजी महाराजा साहबके गुसलखाने के पासबैठा था सिवाय रावजीके सालिम और महाराजा साहबभी बैठेथे रात्रि के दस बजे होंगे और महाराजा साहबके बुलाने के अनुसार मैं गयाथा जबमैं महाराजा साहबके पास पहुंचातो महाराजा साहबने मुझकोएक कागज़ देकर कहा कि इसको पढ़ोसो मैंने उसे पढ़ा तो वह अर्जी स्वर्गवास यमुनाबाई खाण्डेरावजी कीस्त्रीकी ओरसे श्रीमान् गवर्न्नर जनरलके नाम थी उससमय महाराजा साहबने कहा कि इसअर्जी की नक़ल लिखलो जबमैंने नकल लिखली तोवह अर्जी रावजीको फेरदी मैं सब काग़जों को महाराजा साहबके रूबरू पढ़कर सुनाया करता थामैं दक्षिणी भाषा जानता हूं बहुधा हिसाब छोटे २ परचों पर रहा करते थे कोई किताब न थी और जिस मनुष्य को महाराजा साहब रुपया दिलाते थे मैं याद बना कर महाराजा साहबके दस्तखत कर लिया करताथा बहुधा श्री महाराजा साहब मुझको जुबानी आज्ञादिया करतेथे॥

एककाग़ज़ जबगवाहको दिखायागया तो उसनेकहा कि मेरेहाथका लिखाहुआ है उसमेंयह लिखाथा॥

श्री लक्ष्मी इत्यादि।

हिसाबतीसरे साहग्वाल अर्थात् महीना मार्गशीर्ष सम्वत् १९३० ई० (२४ नवम्बर सन् १८७४ ई० के अनुकूल)॥

याददाश्त॥

बाल किया तो पुलिसके सुपुर्द किया गया पहिलीबेर रेजीडन्सी के बागके नीचेमें बुलाया गया वहां दोनों खान और बलवन्त राव सीक्रेटरी वर्त्तमानथे यह बलवन्तराव कारकुनथा जोअहमदाबादसे बुलायागया था एकमनुष्य भावपूनाकर औरएक सिपाही पुलिसका वहांमौजूद था जबमैं वहां पहुंचातो खान बहादुरने कहा। कि मैंनेतुमको इसलिये बुलायाहै किमैं तुम्हारे संदूकके काग़ज देखाचाहताहूं उससंदूकमें महाराजासाहब के निजके काग़ज थे उसपर मेरे साम्हने मोहर लगाई गईथी उसपरबड़ी २ मोहरेंथीं और सबमुसल्लमथीं मैंनेपुलिससे कुछ नहींकहा परन्तु पुलिसके लोगोंने मुझसे कहाथा कि अगरतुम इकबाल करोगे तुम्हारेलिये अति उत्तमहोगा वहलोग आधे घंटेतक सन्दूकके काग़ज देखतेरहे उसके उपरान्त मैं गोरोंके पहिरेमें सुपुर्द कियागया बलवन्तराव और भावपूनाकर और दोनों खानबहादुरने देखाथा ऐडवकेट जनरलने कहा कि अब दोबजगये हैं टिफनका समयआगया यदि आज्ञा होतो थोड़ी देरकेलिये अदालत बरखास्त कीजावेसो कमीशनके मेम्बरटिफनखानेके वास्ते गये॥

जबटिफन खाकर लौटेतो गवाहने वर्णन किया कि सन्दूक के काग़जोंके देखनेके पीछेमेरा इजहारहुआ उससमय मिस्टर रिचीसाहब सरल्यूइस पीलीसाहब कप्तान जेकसनसाहब कप्तान सीग्रीव साहब दोनों खान बहादुर गजानन्दवतिल और बलवन्तराव सीक्रेटरी मोजूदथे जबमैंने अपना इजहार दिया तो सरल्यूइसपीली साहबने मुझसे मेरे अपराधके क्षमा करने का इकरार किया था किसीमनुष्यने मुझसे रावजी वा नरसू जमादारके इजहार का हालबर्णन नहीं किया मैंतो गोरोंके पहिरे मेंथा मुझे कौन सूचित करता जिसदिन मुझको सार्टीफिकट मिलातो गजानन्द वतिल और दोनोंखान बहादुर वर्त्तमान थे—गजानन्द ने मुझसेकहा कि जोसच २ कहोगेतो सरकारतुम्हारा अपराध क्षमाकरेगी और मुझको एक परचा

इसमें नमालका व्यौरा श्रीर नव्यौपारीका नामहै। प्र०—क्या इसपरभी तुम्हारेदस्तखत हैं? उ०—हां। प्र०—किसमनुष्यने इसयादका रुपयापाया? उ०—सालिम अरब ने। प्र०—क्या कोई वस्तु अहमदाबाद से खानेमें आई थी? उ०—नहीं॥

ऐडवकेट जनरलने कहामाईलार्ड मेरे बिचारसे जोयह सब यादेंगवाहों को दिखाकर पहिचानवाई जायें श्रीरउनसेकसम लेली जावेतो अतिउत्तम है॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा मेरी भी यही राय है मैने उन यादों की सूची बनाई है उनपर [ए]से [क्यू] पर्य्यन्त निशानहैं इनसब याददाश्तोंमें सातहजार रुपयादिया गयाहै प्रेसीडएट साहबने कहा कि मिस्टर जारडीनसाहब से कहा जाय कि इन याददाश्तों की क्रमपूर्व्वक सूचीनीय्यार करें—चारबजे अदालतबरखास्त हुई॥

वारवें दिनका इजलास।

ग्यारह बजे पर कमीशन के मेम्बर एकत्र हुये कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बर श्रीर श्रीयुतमहाराजा मल्हरराव समाज में सुशोभितहुये तीसरेप्रहर को श्रीमान्महाराजा सेंधियातशरीफनहीं लाये श्रीर सरल्यूइस पीलीसाहब दिन भर नहीं आये ऐडवकेटजनरल अर्थात् सरकारकेवडेवकी लदामोदर पंथका इजहार लेनेलगे—पूर्वोक्त साहबने गवाहसे पूछा कि तुमने हमसेकल कहा था कि दोवार नानाजीवतिल के पाससे मैंने हीरे मंगवाये थे परन्तु बयानकरोकि उनके मोलके देने का किसनेबन्दोबस्त कियाथा? उ०—श्रीमहाराजासाहबके आज्ञाकेअनुकूल बन्दोबस्त कियागया मैने महाराजा साहब से पूछाथा कि इन हीरों का मोलदेदिया जायसो आज्ञाहुई की किदेदो तोमैने हीरोंका मोलदेदिया—यहरुपया दूसरीबार श्रीर बचत मे दियागयाथा परन्तु इस रुपये को हीरोंके मोल में दिया जाना हिसाब में दर्ज नहीं हुआ किन्तु महाराज

यशवन्तराव ने दाखिल कीथी इस काग़ज़के साथ रक्खीगई॥

सरजन्स् बेलनटायनसाहबने कहाइन याददाश्तोंकेपेशकरने से ज्ञातहोता है ताकि साबितहो कि समय २ पररेज़ीडन्सी के नौकरोंको रुपयादिया गया और हिसाब में दूसरेनाम से रुपयालिखागया ऐडवकेटजनरलनेकहा इंहींबातकेसाबित करनेके वास्ते यह यादें पेशकी गईं प्रेज़ीडेण्ट साहबने कहा ऐडवकेट जनरल प्रगटकरना चाहतेहैं कि वास्तवमें समय २ पररुपया लोगों को दियागया और याददाश्तोंमें दूसरे नाम से लिखागया इसबार्त्ता के उपरान्त वह यादमिसल में संयुक्त कीगई और उसपर (ए) का निशान लगायागया और गवाह ने वर्णन किया कि प्रति दिन और प्रतिसप्ताह और मासिक औरवार्षिक हिसाबबन कर पेश हुआ करता था बलवन्तराव कारकुन प्रतिदिन का हिसाब रक्खा करतेथे और मैं हिसाबों परदस्तखत कियाकरता था मालूमनहीं कियशवन्तरावको क्या मासिक मिलताहै सिवातनखाहके जितना सालिमऔर यशवन्तराव को रुपया दियागया वहमेरे महकमेसे दियागया॥

ऐडवकेट जनरलने कहा जोयाद तुमने पढीउसमें तुमलिखते होकि उस असबाब के लिये जो बम्बई से आया तुम जानते होकि कौन असबाब बम्बई से आया था? उ०—कोई असबाब नहीं आया था। प्र०—फिर क्यों लिखागया कि बम्बईसे असबावआया? उ०—इसवास्ते लिखागयाकि रेज़ीडन्सीके सब नौकरोंको रुपयादेनामंजूरथा। प्र०-तुमको क्योंकरमालूम हुआ कि रेज़ीडन्सी के नौकरोंको रुपयादिया जायगा? उ०—महाराजासाहबनेआज्ञादी थीकिजबरुपया रेज़ीडन्सीकेनौकरोंको दियाजाय तो वहरुपया इसीभांति हिसाबमें लिखा जाययदि कोई वस्तु आती तो महाराजा साहब उस ब्योपारी कानाम लिख वातेजिसकी दूकान से आया था ऐडवकेट जनरलने एक औरयाद गवाह कोदी और पूछाकि यहरुपया भीयशवन्तराव को दियागया था? उ०—हां देखिये १८॥|=)कीदृहानीट है

हैं—साहब प्रेसीडण्ट ने कहा—जो कुछ बातें और कारर्वाई उस समय पर हुई वह सबगवाही में दाखिल है ॥

सरजन्द्र बेलनटायन साहब ने कहा आपकी राय में यह बातें शहादत में दाखिल हैं ॥

साहब प्रेसीडण्ट ने कहा मानने के योग्य हैं और जब उनकी तसदीक है। जायगी तो उस समय गवाही के भी योग्य हैं सरजण्ट बेलनटायन साहब मैं अपका मतलब समझा आप चाहते हैं कि सब हाल मालूम होजाय उसके पीछे देखाजायगा कि गवाही के योग्य हैं वा नहीं साहब ऐडवकेट जनरल ने गवाह से कहा कि तुमसे और नूरुद्दीन बौहरे से क्या बातचीत हुई थी गवाह ने वर्णन किया कि नूरुद्दीन ने मुझसे कहा कि पहिली पुड़िया संखिया की किसी के नाम लिखी नहीं गई है और दूसरी पुड़िया मेरे नाम लिखी गई है जिस बौहरे के पास से संखिया लाया था उसने कहा है कि मेरी किताबें हिसाब की जप्त हो गई और रजीडन्सी को गई हैं यदि तुम चाहते हो कि संखिये का बेचा जाना छिपा रहे तो दो सौ रुपये मुझको दो और मैं उस बौहरे को दे दूं कि वह मेरा नाम न बतावे—सरजन्द्र बेलनटायन साहब ने कहा क्या हुजूर ऐसी बात सुनने के मजाज हैं—साहब प्रेसीडण्ट ने कहा कि हां मुझको अधिकार है, क्यों कि इन बातों से मालूम होगा कि सच २ क्या हाल है ॥

सरजन्द्र बेलनटायन साहब ने कहा हजूर इस वृत्तान्त को सुनकर गवाही की तौर पर समझते हैं परन्तु मैं यह बातें केवल गुफ्तगू समझता हूं कुछ गवाही नहीं समझता जो वार्त्ता कि महाराजा साहब के रूबरू नहीं हुई वह समझो जाम की है कि बनाई हुई है ताकि एक मनुष्य दूसरे को फंसावे ॥

साहब प्रेसीडण्ट ने कहा इसी वास्ते आप यह वार्त्ता करते हैं कि यह बातें बनाई हुई हैं ॥

सरजन्द्र बेलन टायन साहब ने कहा मैं आपके सम्मुख यह बात पेश करता हूं कि आश्चर्य नहीं जो यह वार्त्ता बनाई हुई है। ऐसी

साहिबकी आज्ञासे महाराजा साहबके हिसाबमें इसप्रका।
लिखागयाकि ब्राह्मणोंके खिलानेके लिये रुपियादियागया।
जब गवाहसे एक और प्रश्नकिया तो मुतरज्जिम गवाह से
कुछ बार्त्ता करनेलगा सरजण्ट बेलनटायन साहबनेकहा क्या
कहतेहो मुतरज्जिमने कहाकि जो कुछगवाहने वर्णनकिया
मेरीसमझमें नहीं आयाथा इसलिये मैं पूछताहूं सरजण्टसा-
हबने कहा कि जो कुछ वह कहताहै मुझे सुनाओ प्रेजीडण्ट
साहबने कहाकि जबमुतरज्जिमही नहींसमझाहै तो तुम क्या
समझोगे-गवाहने वर्णनकिया कि महाराजा साहबने मुझसे
कहाथा कि इनहीरोंको दवाईकी मदमें दर्ज हिसाब करना
क्योंकि इनकी भस्मबनाईजावेगी उनकोमैने इसीप्रकार हिसाब
में लिखाया परन्तु जब करनैल फियर साहबके विषदिये जाने
का चर्चाओर चरचाहुआ तो मैंने महाराजा साहबसेकहा कि
हीरों की भस्म किस प्रकार हो सक्ती है महाराजा साहबने
कहा तुमने खाकहोना हीरों का लिख दिया है मैंने कहाकि
हां तब महाराजा साहब ने कहा कि उसवरक़ को हिसाबसे
निकालडालो इस विषय में मैने नानावतिल से सम्मत पूछा
उन्होंनेकहा किजब महाराजा साहबकी आज्ञाहै तो ऐसाही
करो—महाराजासाहबने मुझकोयहभी आज्ञादी कि जबइस
प्रकारकाखर्च लिखाकरोतो ऐसालिखो किकिसीको असलहाल
न मालूम हुआ करे नूरुद्दीन बौहरसे जो दोबेर संखिया ली
गई उसका मोल नहीं दिया गया केवल इतनाही इकरार
कियागयाकि दवाईखाना उसको फिरसौंपाजायगा जबकर-
नैलफियर साहबको विष दिये जानेका वृत्तान्त सर्वत्र प्रसिद्ध
हुआतो नूरुद्दीन बौहरेने मुझसे कहा कि जिस बौहरे की
दूकानसे संखियालाया था वह दोसौ रुपया मांगताहै—ऐडव-
केटजनरलने कहा उसने कुछ और भी कहाथा—सरजन्टबेल-
नटायन साहबने कहाकि ऐसे प्रश्नसेमें इन्कार करताहूं कि
वहबातेंजो महाराजाके पीछेहुई वहगवाहीमें दाखिल नहीं

हकीमसाहबकेनिकटभेजदीथी और हकीमसाहबनेएकशीशीमें कुछदवाबनाकरदीथीसाहब प्रेजीडेण्टनेकहाइसशीशीकीदवा कीवस्तुतोमालूम होगई परन्तुयहपूछाकि इसशीशी परडाटथी वा नहीं-एडवकेटजनरलने गवाहसे कहाकि तुमइसशीशीका हालबयानकरसक्तेहोगवाहने उत्तरदियाकि उंगलीके बराबर वह शीशीथी उसको गजाबामेरे निकट लायाथामुझको स्मर्ण नहींकिउसशीशीसेडाटथा वानहींपरन्तुमैंने उसशीशीकीदवा को दूसरीगुलाबकीशीशीमें रखदियाथाऔर उसशीशीपररूई औरमोमलगाकर सालिमकोदेदियाथा मैंजानताहूं कि जो व्यवस्था रेजीडेन्सीमें हुवाकरतीथी उसकोइत्तिला महाराजा साहबकोहुवाकरतीथी रावजी सालिमकेद्वारा उनचिट्ठियोंको महाराजा साहबके पास भेजाकरता और मैंउन चिट्ठियोंको महाराजासाहब के सन्मुख पढ़कर फाड़डालताथा गवाहको कुछचिट्ठियोंके पुलिन्दे दिखायेगये गवाहने कहा कियहरोज-नामचेहैंऐसे२चारपुलिन्दे अदालतमेंथे एकपुलिन्देमें ११९॥) का हिसाबहै यहहिसाब लिखाहुवाहै एककारकूनने मेरीआज्ञासे उसपर स्याही डालदीथी उसका नाम बलवन्तराव है और रावजीका पुत्रहै स्याहीडालनेका कारणयहथा कियह रुपया ११९॥) सालिमकेनामलिखा था जब विषदियेजानेका शोरपडा तोउससमय मैनेस्याही डलवादीथी इसीप्रकारऔर स्थानोंपरभी जहांऐसा रुपयालिखाथा स्याही डालदीगई थी साहब ऐडवकेटजनरलने उनपुलिन्दोंके कागजोंकोदेखा और जहां२ स्याहीपडीथी उसको तसदीककी ॥

बातोंकी सिदाक़त जबकि दूसराके।ई मनुष्य वहां न थाक्यों कर होसक्ती है परन्तु जो हुज़ूर उसको गवाही समझते हैं तो मैं चुप हूं ॥

प्रेज़ीडेण्ट साहबने कहा जबतक कि प्रतिमनुष्य का हाल न सुनाजाय तबतक ऐसे मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात कठिन है और जबतक कि प्रति मनुष्यकी बात न सुनूंगामेरी समझमें क्योंकर आवेगा ॥

गवाहनेवर्णनकियाकि नूरुद्दीन बौहरेसे मैनेकहाकिदोसौ रुपयेतुम अपनेपाससे देदोतुमको दवाईखानेका काममिलेगा तो यहरुपया मुजराहोजावेगा नूरुद्दीनयह बात सुनकरचुप होरहा और फिरमैने नूरुद्दीनको नहीदेखा—नूरुद्दीननेमुझसे नहींकहा किवह किस बौहरेकी दूकानसे संखियालायाथा मैनेनौसारी में केवल एक बेररावजीको देखाथामालूम नहीं कि वह गायकवारके पास आया करता था यानहीं ॥

जबकरनैलफ़ियरसाहबके फोड़ानिकलाथामुझेअच्छेप्रकार स्मर्ण है महीना सितम्बर सन् १८७४ ई० था इस फोड़े का हालइस कारण यादहै कि मेरेसम्मुख सालिमने महाराजा साहबसे कहा था और उसने अपनी उंगली से बताया कि माथेमें फोडा है करनैलफियर साहब रावजीसे मरहमलग- वाया करतेथे रावजीने एकलुटकी संखियेकी मरहममें डालदी थीजबमरहमके लगानेमेकरनैलफियर साहबकेफोड़ेमें सोजिश हुईतोउन्होंनेमरहमके फाहेको उतारडालायहबात सुनकर महाराजासाहब मेरेरूबरू कुछनहीं बोलेजब करनैलफियर साहबकेयह फोडाथातोमहाराजासाहबनेकुछ दवाईकेबनाने कोमुझको आज्ञादीथी उसीसमयमें सालिमकोमैने संखिया दीथीऔर महाराजासाहबने आज्ञादीथी कि हकीमसाहबके निकटबड़े २ चीटे, सर्प, और काले घोड़ेका मूत्रभेजदो वह कुछ दवाबनावेंगे मुझकोऔर कोईबात उसदिनकी जोमहा- राजासाहबनेकहीहो स्मर्णनहीमैनेयह सम्पूर्णवस्तु मंगाकर

मेरेपास सुबूत नथा। प्र०—जोप्रश्न मैं तुमसे करता हूं उसका यह उत्तर नहीं जो तुमनेदिया मैं पूछताहूं किसिवायतुम्हारे बयान और महाराजासाहबकी आज्ञाकेकोई लिखीहुई आज्ञा तुम्हारेपासहै ? उ०—ऐसी आज्ञाओं से महाराजासाहब के लाखोंरुपये खर्चहुयेहैं। प्र०—और हिसाबअशुद्धकियागया ? उ०-जबकभी गलतकरनेका मैाकाहुवा। प्र०-और तुमनेहिसाब गलत किया ? उ०—महाराजा साहबकी आज्ञासे कारकूनसे हिसाब गलतकिया और बदलायागया। प्र०—परन्तु मैंतुमसेयह बात पूछताहूं तुमउसका समझबूझकर उत्तरदोकि जोतुमपर महाराजासाहब अथवा कोई और मनुष्य यह अपराधलगाता कि तुम महाराज साहब के लूटेवाते होते। तुमकिस प्रकार साबितकरते कि तुमको महाराजासाहबने इसभांतिके हिसाब गलतकरनेका मजाजकिया था ? उ०-कागजात से आपही साबित होसक्ताथा। प्र०-सिवा कागजातके और किसी भांति सेभी साबितहोसक्ताथा ? उ०—कागज दिहानीदपर रसीदें लिखीहुई है।

वेलनटायनसाहब के प्रश्न ओदामोदर पथ गवाह से किये ॥

प्र०—तुम कहतेहो कि जितने हिसाब तुमनेबनाये वहसब बनावटीहैं? उ०—बहुतसे बनावटीहैं सम्पूर्ण हिसाब बनावटके नहीहैं और जानबूझकर बनावटी बनायेगये। प्र०—यहहिसाबमहाराजासाहबकी आज्ञानुसार बनावटी बनायेगये? उ० महाराजासाहबकी आज्ञासे बनायेगये। प्र०—ऐसेअशुद्धहिसाबोंके बनानेके लिये तुमको समय २ पर आज्ञा होतीथीया खास २ हिसाब केलिये। उ०—जैसा मौका होता था मुझको आज्ञामिलतीथी महाराजासाहबसे मैं पूछलेताथा कि अमुक विषय में क्या आज्ञा है। प्र०—तुम महाराजा साहबसे पूछ करके हिसाबों को गलत किया करते थे? उ०—हां जैसा मौका होताथा क्योंकि महाराजासाहब वाकिफहोतेथे जिस कामके वास्ते रुपयादिया जाताथा। प्र०—तुम वाकिफहोतेथे या महाराजासाहब? उ०—महाराजासाहब। प्र०—जब तुमने महाराजासाहबसे आज्ञा मांगी उन्होंने आज्ञादीथी? उ० हां। प्र०—यदि इन हिसाबों की तहकीकात होती तो तुम किसतरह साबित करसक्ते थे कि हिसाबों के गलत करने के लिये तुमने महाराजासाहबसे आज्ञालेली उ०—इससे अधिक और क्या साबित करसक्ता कि सम्पूर्णकार्य्य महाराजासाहब कि आज्ञानुकूल कियाकरता था। प्र०—यहबयान तुम्हाराहै परन्तु मैं पूछताहूं कि जैसे महाराजासाहब तुमपर यह अपराध धरते कि तुम उनको लूटतेहो और लूटनेके प्रयोजनसे तुम हिसाबको बदलते हो तो तुम क्योंकर साबित करते कि महाराजा साहब की आज्ञासे हिसाबको बदला? उ०—जो रुपया दिया जाताथा चार किताबोंमें लिखा जाताथा और इसके विशेष देने और लेनेवाला मौजूद था। प्र०—तुम इस हिसाबकेबदलनेमें महाराजा साहबकीआज्ञाकाहोना क्योंकर प्रकटकरसक्ते थे जो तुम कहतेहो वह तुम्हारा जुबानीबयान है? उ०—सिवा ऊक्त जुबानी महाराजा साहबके और कुछ

उ०—मुझको जोकुछ खबर मिलती थी महाराजा साहबको सुना देता था। प्र०—परन्तु तुमको भी तो यह बातें पसन्द आती होंगी? उ०—मुझसे उनबातोंका सम्बन्ध नथा। प्र०—इसविषय में हम फिर बात्ती करलेंगे—परन्तु खूनियोंके समूहमें तुमभी तो एकमनुष्यथे और तुमने मारडालनेके लिये सहायता भी की? उ०—हांमैंने सहायता की था। प्र०—पस मैं समझताहूं कि तुमको ऐसेहालातके सुननेका अपनातअल्लुकभीथा? उ०—हां अपने और महाराजासाहबके बचानेकेवास्ते मुझको तअल्लुक था। प्र०—शायद तुमको अपना खयाल कमहोगा महाराजा साहबके बचानेका अधिकखयाल होगा? उ०—हांमैंयहसमझा था कि चूंकि अब कुलकर्त्ती होगईहै मैंबचजाऊंगा। प्र०—जो तुमको अपना खयालकमथा और महाराजा साहबके बचानेका अधिक विचारथा तुमनेपूछाथा कि रावजी आदिने क्या इस-हारदिये? उ०—मैंनगर की खबरें सुनाकरताथा जबतकमालिम छूटारहा वहसम्पूर्ण वृत्तान्त मुझसेआकर कहाकरताथा। प्र०—तुमने उसशीशीका हालभीसुनाहोगा जिसकावर्णनराव-जीनेकिया? उ०—मैंक़ैदमेंथा किसतरह सुनता। प्र०—परन्तु मैंउससमयका जिक्रकरताहूं जबतुम क़ैदनथे अर्थात् रावजीके इजहारउस समय लियेथे जबतुम क़ैदनहीं ऊयेथे? उ०—मैंने कुछहाल शीशीका नहींसुना। प्र०—क्यातुम कहतेहो कि मैंने नहींसुना कि रावजीको शीशीदीगई सावधान होकरउत्तर दो उ०—नहींमुझसे किसीनेऐसा नहींकहा। प्र०—किसी मनुष्य ने तुमसे शीशीका हालनहीं कहा? उ०—नहींकहा। प्र०—तुमने पुड़ियाका कुछहाल सुनाथा कि करनैलफियरसाहबके गिलास में डालीगई? उ०—हां। प्र०—तुमनेसुनाथा कि उसमें संखिया थी? उ०—हां। प्र०—औरपिसाहुआ हीराउसमेंहै? उ०—हां प्र०—और यहकिरावजीने इसबात काइक़रार कियाहै किमैंने विषकी पुड़ियाकरनैलफियरसाहबके गिलासमें डालदी और उनके मारडालनेकाउद्योगकिया? उ०—हां मुझसे महाराजा

कागज मेरे सन्मुखके दस्तखत नहीं किया। प्र०—परन्तु मैं तुमसे पूछताहूं कि यदि तुमपर लेलेनेका अपराध क़ायमकिया जाताती तुमकिसप्रकार उससे छूटते? उ०—एक२ हिसाब पांचजगह लिखाजाताथा मैं उसीऐसाबिनकरता कि यह रुपया खर्च हुवाहै मैने तग़ल्लुब नहीं किया। प्र०—क्याक़र्ज़में महाराजासाहबके हाथकी लिखीहुई भी हिसाबमें हैं? उ०—जबजमाखर्चका कच्चाख़ातय्यार होताथा तो महाराजासाहब उसपर दस्तखत कियाकरतेथे यह नक़्शा महाराजासाहबके दस्तखतोंके वास्ते हरवर्षमें तय्यार हुआकरताथा। प्र०—ऐसे दस्तखतका कोई काग़ज तुम्हारे निकट है? उ०—हां। प्र०—तुमउसको पेशकरसक्तेहो? उ०—जो आप मंगवावें तो आसक्ता है। प्र०—अच्छा इसबातको फिर देखाजायगा तुमको कभी हिसाबकी जांचहोनेका सन्देह हुआ? उ०—किसमनुष्यसे। प्र०-शायदकोई मनुष्य जांचकरता? उ०-क़र्क़ी होनेके पहिले महाराजासाहबके सिवायकोई मनुष्यमेरे हिसाबकी जांचकरनेका अधिकारी नथा। प्र०—पुलिसनेतुमसे कहदियाथाकि तुम्हारे हिसावकी जांचहोगी? उ०—क़ुर्क़ीकेपश्चात् पुलिसने वहकागजमुझको दिखायाथा किजिसपर स्याहीपडीथी औरकहाथा किइन हिसाबोंकीजांचहोगी। प्र०—पुलिसवालोंने क्यातुमसे यहकहाथा किखासतुम्हारे हिसाबकी जांचहोगी? उ०—पुलिसने यहकहाथा किसबहिसाबोंकीजांचहोगी। प्र०—तुमकोक्या मासिकमिलताथा? उ०—मुझे दोसौरुपये मासिकमिलतेथे औरमेरेभाईको चारसौ रुपये मिलतेथे। प्र०—मैं पूछताहूंकि तुमनेवहसब बातें क्योंकर क़बूलकीं और तुमतो उसीदिन पकड़े गयेथे जिसदिन महाराणासाहब पकडेगयेथे? उ०—मैंउसी दिनसंध्याको पकडागयाथा। प्र०—तुमको मालूम होगा कि रावजी और नरसूआदिके इजहार मिस्टरसूटर साहबनेलिये हैं? उ०—हांमैं यहखबरें सुनाकरताथा। प्र०—मैंसमझताहूं कि यहखबरें तुमकोबहुत दिलचस्प मालूमहुवा करती होंगी

हुआ है यदि अलग २ करके देखे जावें तो उनकी संख्या कम है कौन सी बात बाधक थी कि तुमने कागज़ नहीं फाड़े । प्र० जो रुपया एक जगह दिया जाता तो फट सक्ते थे परन्तु भिन्न भिन्न समय और भिन्न भिन्न जगह पर रुपया दिया गया फिर किसतरह फटसक्ते थे । प्र०—परन्तु मैं जानता हूं कि एक प्रश्न का तुम उत्तरदो बयान करो कौनसी बात बाधक थी कि तुमने कागज नहीं फाड़े जिन कागजों ने तुम्हारे और महाराजा साहब के अपराधों की सिदाकत की ? उ०—मुझको इतना मावकाश न- हीं था कि उन कागजों को फाड़ता । प्र०—अवकाश से तुम्हारा क्या मतलब है ? उ०—मुझे ऐसा अवसर न मिला फिर मैं क्यों कर फाड़ डालता । प्र०—जो मनुष्य आपके नगर में किसी को विष देता है और उस पर अपराध साबित होजाता है तो उसको क्या दण्ड दिया जाता है ? उ०—दण्ड दिया जाता है । प्र०—यह तो मैं भी जानता हूं कि दण्ड दिया जाता है परन्तु यह बताओ कि फांसी दीजाती है वा कौनसा दण्ड दिया जाता है ? उ०—दण्ड दिया जाता है परन्तु मैंने क़ानून नहीं देखा । प्र०—तुमको कुछ भी खयाल है कि क्या दण्ड दिया जाता है ? उ०—मैं कुछ नहीं जानता । प्र०—मुझ को खयाल था कि तुम जानते होगे परन्तु बतलाओ कि तुम्हारे विचार से क्या दण्ड दिया जाता है ? उ०—जो कुछ कि जजलोग उचित समझते हैं दण्ड दिया जाता है । प्र०—कभी किसी को फांसी भी दीजाती है ? उ०—बड़ौदे में किसी को फांसी नहीं दी जाती है मैंने तो किसी को फांसी दिये जाते हुये नहीं सुना । प्र०—परन्तु तुम जानते हो कि तुमको अपनी गरदन का भी खौफ है ? उ०—मेरी गरदन का । प्र०—हां मदद परवाह नहीं रखा ? उ० मैं आपसे वर्णन कर चुका हूं कि जिस वक्त से मैं ने चाक नहीं किया । प्र०—मुझसे फिर बयान करो ? उ०—ऐसे कागज की गरकमों में थे मुझको फाड़ने का अवसर न मिला । प्र०—यह सब कागज तुम्हारे अधिकार में थे ? उ०—हां । प्र०—तुम सब कागज़

साहबनेकहाथा। प्र०—जबतुमको मालूमहुआ किरावजी आदिकपहिरेमेंहैं और उनहीलोगोंमेंसे तुमभीथे तुमनेवह कागज़ जिसमें इसप्रकारका जिक्रथा किसवास्ते फाड़नहींडाले? उ० क्याकौनकागजइसमुआमिलेकाथा। प्र०—मुझकोतुम्हारेउलटे प्रश्नकरने सेआश्चर्य्य नहींआया तुमनेवर्णनकियाहैकि कईकागजइसमुआमिलेकेथे? उ०—क्याआपउनकागजोंकीतरफइशारहकरतेहैं जिनकीनिस्बत मैंइजहारदेचुकाहूं। प्र०—क्यातुमको कुछसंदेह है कि उन कागजों की तरफमेरा इशारह नहीं है उ०—पहिले मुझको समझलेना चाहिये,जो वह कागज़ एक जगहहोतेतो मैं उनको फाड़डालता। प्र०—जो कुछवर्णनकरते होजो यहठीकहै तो तुम्हारी कारवाई से अच्छीतरह मालूम होताहै कि वास्तव में विषदिया गया? उ०—हां। प्र०—तुमने उनको क्यों फाड़नहीं डाला? उ०—केवल दो कागजों में रिशवतका जिक्रथा। प्र०—तुमयह जानतेथे कि रिशवत के विषय में तहक़ीक़ात होरही है? उ०—हां मैं जानता था। प्र०—क्या तुमइस विषय में सौगन्द खासक्तेहो कि तुमको मालूमथा कि मिस्टरस्लूटर साहब तहक़ीक़ात कर रहे हैं? उ०—हांमैं शपथ खासक्ताहूं। प्र०—उससमय तुमनेक्यों ऐसे कागज़नहींफारडाले क्योंकि वह सब कागज तुम्हारे अधिकार मेंथे? उ०—सबकागज चाकनहीं होसक्ते थे क्योंकि अलग २ मकानों मेंथे सर्व स्थानोंसे उनकोसंग्रह करकेफार डालना असम्भवितथा। प्र० कौनसी बात उसमें बाधकथी कितुमने उनकागजों को नहीं फाड़ा? उ०—जबरुपये कीदिहानीद होतीथीतो दश २ जगह लिखाजाताथा इससूरतमें निहायत दिक्कतथी, किसबजगह से कागज संग्रह होकर फाड़डाले जाते यह सुनकर सरजन्द वेलनटायन साहबने सिक्रेटरीसे सम्पूर्ण कागज मंगवाये और अपने रूबरू रख कर कहा कि यह कागज अलग २ थे और अबएक किताबमें सिलेहुये हैं और उनके साथ तर्जुमा लगा

महाराजा साहबने मुझसे कहाकि तुम इनरकमों को मग-
रूककरो तो मैंने स्याहीडालदी—सरजन्टबेलनटायन साहबने
गवाहसे कहाकि मेरी ओर देखो मैंभी यही प्रश्नकरूंगा जो
सरदिनकरराव ने किया । प्र०—जिसभांतिकी तुमरकमोंको
निकालतेहो अर्थात्बड़े २ धब्बे स्याहीके हिसाबपर डालकर
तो लोगोंका ध्यान शीघ्रही स्याहीके धब्बोंपरजायगा ? उ०
मुझको उससमय इसबातका खयालन था—श्रीमान् महारा-
जासेंधिया ने कहा—पांचजगह हिसाब रखाजाता था पांचों
जगहके हिसाब में ऐसेबड़े २ धब्बे पड़ेहुये हैं—परन्तु यहप्रश्न
गवाहसे नहीं कियागया । प्र०—सरजन्टबेलनटायनसाहब ने
कहा मैं तुमसे दो एक और प्रश्नकरूंगा क्या तुमको इसबात
का ध्याननथा कि स्याहीके बड़े २ धब्बे बुरे मालूमहोंगे ? उ०
अबमुझको भी वैसेही मालूमहोते हैं परन्तु उससमय कुछ
इसबातका ध्याननथा । प्र०—यदि तुमजानतेथे कि कुछतह-
क़ीक़ातनहोगी तो स्याहीकेडालने का क्या कारणथा ? उ०
यहसबब था कि किसी और आदमीको हाल न मालूमहो ।
प्र०—मुझसे वर्णनकरो कितुम अच्छीतरह जानते थे कि अब
तुम इकरार न करोगे जेलखानेसे बाहर न निकलोगे ? उ०
हां मैं जानता था । प्र०—प्रथम तुम गोरोंके पहिरे में थे ?
उ०—दोदिनतक सेनापतीकी कचहरीमेंरहा । प्र०—तुमअकेले
वहांक़ैद रहे या कोई और भी मनुष्यतुम्हारे साथथा ? उ०
मेरेसाथ केवलएक सिपाहीथा । प्र०—केवलदोदिन और दो
रात क़ैदरहे ? उ०—हां । प्र०—मैंजानताहूं कि रातको तुम
पलंगपर सोतेहोगे ? उ०—जिसजगह मैंदिनको बैठायाथा वहीं
रात्रिको सोरहा । प्र०—सिपाहीतुम्हारे साथरहनेकेवास्ते मिला
था ? उ०—उस सिपाहीका मुझ पर पहिरा था ताकि मेरी
हिफाज़तकरे और मैं भागनजाऊं । प्र०—उसके उपरान्ततुम्हारे
साथक्या सुलूकहुआ ? उ०—मैं वहां से रेज़ीडेन्सी में
आया । प्र०—वहांके तुम्हारे साथ लोगोंने क्याकिया ? उ०

मंगा सक्ते थे? उ०—जब २ महाराजा साहबको किसी बातके दरयाफ़ करनेकी अवश्यकता होतीथी तोसंगालिये जाते थे। प्र०—महाराजा साहबका नाममतलो परतुमको कौनसी बात बाधकथीकि तुमनेनहींमंगवाये? उ०—वह मेरे क़ब्ज़े में थे। प्र०वहकागजकि तुम्हारे क़ब्जेमेंथे औरतुम जानतेथे किउन्हीं कागजोंसेमारनेके उद्योगसेपकड़े जाओगे तोतुमने क्योंउनको नहींफाड़ा? उ०—मुझको खयालथाकि कुर्की नहोगी और नमैं जानताथा किऐसासमय कभीआवेगा जोआजहै। प्र०—इसी कारण तुमने कागज़ न फ़ाड़े इसके सिवा कोई और कारण नथा? उ०—हांकोई औरऐसाहेतुनथा। प्र०—मेहरबानीकरके मुजको उत्तरदो कि तुमनेक्यों खयालनहींकियाकितुमपरऐसा समयनआवेगाजोतुमने कागज़ नहींफाडेजोकुछ कागजमशकूक करदियेथे?उ०—मैंनेकई हिसाबोंपर स्याहीडाल दीथी। प्र० किसी बातकेछिपानेकेवास्ते?उ०—हां।प्र०—इसबातकातअल्लुक कुछसालिमसेभी था? उ०—हां। प्र०—औरइसबातकेछिपाने का तअल्लुक इस काररावईसे था? उ०—हांछिपाने केलिये। प्र०—तुमने कुछकिस वास्ते मशकूककिये और सब कागज़ात क्यों नहींफाड़े? उ०—मैंने कारकुन को आज्ञादेदी थी कि जैसाउचितहो करो। प्र०—परन्तु एक प्रश्न तुमसे करता हूं जोसब बातोंका सारांशहै अतलाओ कि तुमजानतेहो कि तुमने यहसबबातें महाराजासाहबके फंसानेकेवास्ते ईजाद कीथीं? उ०—मैंने यहसबबातेंइसलिये कीथीं कियदिमहाराजासाहब पकड़ेजावें तो छूटजावें। प्र०—तुम सौगन्धखासक्तेहोकि यह सबउपाय तुमने महाराजासाहबके माखूज करने को ईजाद नहीं किये? उ०—नहीं—महाराज के अपराधी ठहरने के लिये यह उपाय नहीं किये। प्र०—सरदिनकररावने कहा कागज़ोंकी पहिली हालतसे महाराजासाहब माखूज नहीं होसक्तेथे परन्तु जबतुमने रक़मों पर स्याहीडालदी तो अपराधी बनने का कारणहोगया तुमने ऐसा क्यों किया? उ०

तुम इकोमको दवाकहते हो उसमें क्या था ? उ०—उसमें कालेसर्प और कालेचीटोंकासतथा। प्र०—इसशीशीकाकौन साहमलाथा पहिला, दूसरा, तीसरा, चौथा, वा पांचवां,? उ०—मुझेस्मर्ण नहींकि कौनसाथा। प्र०—यादकरोकि कौन सा हमलाथा ? उ०—मैं किसतरह याद करसक्ता हूं। प्र० मैं उसबयान को देखरहा हूं जो तुमने मिस्टररिचीसाहब के रूबरू बयानकियाथा कि तीनबेर करनैलफियरसाहबके मारने के वास्ते उद्योगकियागया--प्रथम उसदवासेजोइकोमने बनाई थी, द्वितीय फोड़ेके मादमें विष डालागया, तृतीय, संखिये के जरियेसे शर्बतमें विषडालागया ? उ०—हां मैंनेयही वर्णनकिया था। प्र०—क्या यह बातठीक है ? उ०—गलतकिसतरहहोसक्ती है। प्र०—किस तारीख को इकोमकेपास से तुम्हारेपास शीशीआईथी ? उ०—मुझेस्मर्णनहीं। प्र०—कोई तारीख तो याद होगी तुम्हारी यादबहुतअच्छी है वर्णनकरो उ०—शायद आश्विनका महीना था॥

मुतरज्जिमसे पूछागया कि आश्विन कबहोता है—मुतरज्जिमने कहाकि अक्टूबर और नवम्बरमें होता है। प्र०—दिवालीके कितनेदिन पहिले ? उ०—इतना मुझको स्मर्णहोता तो मैं तारीख बयान करदेता॥

सरजन्टवेलनटायनसाहब ने कहा कि माइलार्ड—मुझको गवाहसे और भी प्रश्नकरनेहैं परन्तु अबदोबजगयेहैं इसलिये टिफनका समय आगया. तोकमीशनके मेम्बर टिफनखाने को लियेगये, जबटिफनखाकर आयेतो सरजन्टवेलनटायनसाहब फिर प्रश्न करने लगे॥

प्र०—क्या संखियेके बेचने का निषेध था और महाराजा साहबकी आज्ञाकेबिना नहीं बेचा जाताथा ? उ०—संखिया फौजदारीके महकमे में मिला करती थी। प्र०—महाराजा साहबकी आज्ञासे सदा मिलती थी ? उ०—जो मनुष्य कि फौजदारीका प्रधानहै वह इसबात को जानता होगा। प्र०

मुझको एक कमरेमें रक्खा जहां सिपाहियोंका पहिराथा। प्र०—पुलिसके हवालेकबसे कियेगये? उ०—१६—दिनकेपश्चात् जब मैंने सब बातोंका इक़रार किया। प्र०—आजकल जबतुम अदालतमें नहीं होते हो। क्या२करतेहो? उ०—मैं एक डेरे मेंरहा करताहूं जबवहां मनुष्य कहतेहैं बैठजाओ। बैठजाता हूं जबखड़े होनेको कहतेहैं खड़ाहोजाता हूं। प्र०—अबतुम पुलिसकी हिरासतमें नहीं हो? उ०—जहांमैंहूं वहांपुलिस के लोगोंका पहिराहै। प्र०—उनका क्यानाम है? उ०—मैं नहींजानता चौथेदिन पहिराबदला जाताहै? प्र०—जबयह मुकद्दमापूर्ण होजायगा तोतुम्हारा क्याहोगा? उ०—जोसाहब जजतजवीज करेंगेवही होगा। प्र०—स्पष्टरीतिसे कहोकिइस के क्याअर्थहै हैं? उ०—जो क्रिजण साहिबों की रायहोगी वहीहोगा। प्र०—हम नहीं समझते कि तुम्हाराक्या मतलब है? उ०—मेरा यह अपराध हैकि मैंनेसब बातोंका इक़रार कर लिया यदि मैं निर्दोष हूं तो मैं छूटजाऊंगा नहीं तो जो कुछदण्ड होगामालूम होजायगा। प्र०—तुम्हारामतलब यहहैकिजिस प्रकार तहकीक़ातकी रूदादहोगी उसीप्रकार दण्डहोगायदिकमीशनके मेम्बरतुम्हारी एकबातका भीनिश्चय नकरेंतो क्या होगा? उ०—मुझकोदण्ड मिलेगा। प्र०—यदि तुम्हारे बयान पर निश्चय करेंतो क्याहोगा? उ०—मुझको छोड़देंगे और छूटने का सारटीफिकटदेंगे। प्र०—मुजसेवर्णन करोकि प्रथममें किसतारीखको करनैलफियर साहबकोविषदे नेका उद्योग हुआ था और इसविषय मेंकौन २ उपाय किये गयेथे? उ०—जोउपाय कियेगये उनकामैं इज़हारमें वर्णन कर चुकाहूं। प्र०—परजो तुमने मिस्टररिचीसाहब के सम्मुख वर्णन कियाथा वहमेरे रूबरूभी वर्णनकरोकि कितने उपाय विषके देनेमें हुये? उ०—पांचउपाय कियेगयेअर्थात् चार तोले संखिया दो बेर करके और दोतोले पिसा हुवा हीरा और एक शीशीदवा की तय्यारकी गई। प्र०—जिस शीशीमें

मोलली गई। प्र०—क्या उसने तुमसे कहा था कि तुम झूठ बोल-
ते हो ? उ०—मेरे रूबरू उसने कुछ नहीं कहा था। प्र०—उसने
तुम्हारे रूबरू इन्कार नहीं किया ? उ०—वह मेरे रूबरू पेश
किया गया और फिर उसको लेगये। प्र०—तुम्हारे रूबरू कि-
सने पेश किया था ? उ०—एक अफ्सर था परन्तु मैं उसको नहीं
जानता कि कौन था। प्र०—हिन्दुस्तानी अफ्सर था ? उ०—हां
प्र०—अकबरअली था ? उ०—स्मर्ण नहीं। प्र०—अब्दुलअली ?
उ०—याद नहीं। प्र०—ध्यान करके याद करो अकबरअली था
उ०—इस समय क्योंकर याद आसक्ता है। प्र०—गजानन्दवतिल
था ? उ०—वह न था। प्र०—शायद अकबरअली या अब्दुल-
अली होगा ? उ०—मुझको स्मर्ण नहीं शायद हो। प्र०—पमयह
अफ्सर नूरुद्दीन को तुम्हारे सम्मुख लाये और कहा कि इस
मनुष्य से तुमने संखिया मोलली थी ? उ०—हां प्र०—उसको
फिर जेलखाने को लेगये ? उ०—मुझको मालूम नहीं कि कहां
लेगये। प्र०—उसको कोई अफ्सर लेगया ? उ०—हां। प्र०—तु-
म्हारे सम्मुख गजाबाभी लाया गया ? उ०—हां प्र०—अकबर-
अली उसको लाया था ? उ०—अकबरअली नहीं लाया। प्र०
फिर कौन लाया था ? उ०—गजानन्दवतिल लाया था। प्र०
जो कुछ उसकी निस्बत तुम्हारा बयान था उसके रूबरू भी तुमने
उससे कहा था ? ०—हां मैंने कहा और वह बैठा हुआ
सुना किया। प्र०—उसको भी फिर तुम्हारे पाससे लेगये ?
उ०—हां वह भी भेजदियागया। प्र०—तुमने वर्णन किया है कि
तुमने सालिसको गोगोटो दी थी ? उ०—हां। प्र०—तुम जानते थे
कि उसमें विष है ? उ०—हा। प्र०—तुमने वर्णन किया है कि
गोगोटो गई उस समय महाराजासाहब उपस्थित थे ? उ०
गजाबा महाराजासाहब की आज्ञानुकूल गोगो लाया था
प्रेजीडन्टसाहबने पूछा क्या महाराजासाहब उस समय उपस्थित
थे गवाहने कहा कि अपने इजहार में मैंने बयान किया है कि
गजाबा मेरे घरपर गोगोलाया था जिसका मैंने दम्मसाहब ने कहा

तुम इसबातको नहीं जानते ? उ०—मैंने कभी फौजदारी का काम नहीं किया इसलिये मैं नहीं जनता। प्र०—तुम यह नहीं जानते कि महाराजासाहब की आज्ञासे जितनी कि संखिया की आवश्यकता होती थी मिलसक्ती थी ? उ०—हां महाराजासाहबकी आज्ञासे संखिया मिलसक्ती थी। प्र०—फिर किस वास्ते महाराजासाहबकी आज्ञासे तुमने संखिया न मंगवाई उ०—हुज़ूरखुलासेवदयाने कहा कि महाराजासाहब से आज्ञा लेकर मैं संखिया दूंगा। प्र०—परन्तु जब तुमको महाराजासाहबने आज्ञादीथीतो फिर संखियेका मंगाना कौन कठिनथा उ०—महाराजासाहबने केवल जुबानी आज्ञादीथी कोई लेख न था। प्र०—तुमने तहरीरी आज्ञाक्यों नहीं लेली ? उ०—महाराजासाहबने मुझसे कहा था कि तुमलिखभेजो कि घोड़े को दवाकेलिये संखियेकी आवश्यकता है। प्र०—तुमने नूरुद्दीन नौकरको हालमें नहीं देखाया ? उ०—इस हालके पूछने से आपका क्या मतलब है। प्र०—तुम जानते हो कि इसहालके पूछनेसे जोकुछ मेरामतलबहै ? उ०—जबमैं छूटाहुवाथा या जबसे कि मैं क़ैदहूं। प्र०—तुमने नूरुद्दीनको अन्तमें कबदेखा था ? उ०—मैंआपका मतलब नहींसमझा। प्र०—तुममेरेप्रश्न को टालतेहो और उत्तरदेना नहींचाहते साहबप्रेजीडेण्ट ने कहाकि गवाहसे साफजवाब लियाजाय ? उ०—जबमैंक़ैद था उससमय नूरुद्दीनको मेरे निकट लायेथे। प्र०—इसबात को कितनासमय बीता? उ०—मुझेस्मर्णनहीं। प्र०—इसबातसे तुम्हारा क्यामतलबहै कि दोतीनदिनसे तुमनेउसकोनहींदेखा उ०—नहीं। प्र०—अखीर हफ्तेमेंउसको देखा ? उ०—नहीं। प्र०—जबतुम्हारा उसकासाम्हनाहुवातो उसनेतुमसे कहाथा कि तुम बराबर झूठबोलतेहो ? उ०—उसने कोईबात मुझसे ऐसी नहींकही जोकुछ उसनेमुझसे कहाउसको मैंवर्णनकरचुका। प्र०—तुमनेउसके रूबरू संखिये के मोललेनेका वर्णनकियाथा? उ०—हांमैने उसकेरूबरू कहाथा किसंखिया

साहबके मारडालनेको गई थी उसका तुमने क्या किया ? उ० कभी नहीं पूछा ? प्र०—क्या तुमको पूछनेकी कुछ आवश्यकता नथी ? उ०—नहीं ॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह इज़हार दामोदरपंथके लिये ॥

तुमने अभी मेरे साथीसे कहा है कि पांच जगह हिसाब लिखा जाता था ? उ०—हां साहब कहा है। प्र०—वह पांच जगह किस वास्ते हिसाब लिखे जाते थे ? उ०—साहब आपको इससे क्या मतलब है। प्र०—मैं इस वास्ते पूछता हूं कि मेरे साथीने तुमसे पूछा था कि तुमने उन पांचों जगहके हिसाबोंको देखे। क्यों न दिया और अब वे क्यों डाल दिये? उ०—महाराजा साहब जुबानी मुझको आज्ञा दिया करते थे और उनके आज्ञा पालन की याददाश्त लिखी जाती थी और याददाश्त जहांसे रुपया मिलता था वहीं हिसाबमें दरज होती थी और फिर कच्चे खाते में दर्ज होती थी फिर पक्के खाते में दरज होती थी फिर थैलीबन्द हिसाबमें दर्ज होती थी। प्र०—क्या यह सब हिसाब तुम्हारे अधिकार में थे ? उ०—हां साहब। प्र० तुमने तो वर्णन किया है कि जबसे तुम नौकर हुये हो एक लक्ष रुपया तुम्हारी तहवीलसे खर्च हुआ है क्या यह बात सच है? उ० हां साहब यह बात सच है। प्र०—क्या सम्पूर्ण खानगी हिसाब महाराजके तुम्हारे द्वारा होते थे ? उ०—हां साहब होते थे। प्र०—इन चार वर्ष तुम्हारी नौकरीकी अवधिमें जो महाराजने हर मनुष्योंको रुपया दिलवाया किसीके दिलवानेकी तहरीरी आज्ञा भी महाराजने तुमको दी थी ? उ०-नहीं। प्र०—महाराज तुम्हारी हिसाबकी फर्दोंमें भी दस्तखत किया करते थे ? उ०—हां साहब थैलीबन्द हिसाबकी फर्द पर दस्तखत करते थे। प्र०—थैलीबन्द हिसाब क्या वस्तु है ? उ०—रोज़मर्राके खर्चका खाता है। प्र०—तुमने कभी कहा कि एक हिसाब तुमने छोड़ डाला ? उ०—हां साहब वह हीरों का हिसाब था। प्र०—तुम्हारे इज़हार होनेके पहिले तुमने सरजू और रावजीके इज़हार करनेका हाल सुना था ? उ०—हां साहब सुना था। प्र०—मालूम होता है कि तुमने भी

गवाहसे इसतरह पूछाजायकि तुमने वहशीशी कब दीथी? उ०—मैं महाराजासाहबके साथथा जिससमय अपनेघर को सालिमगया वहशीशी देदीथी। प्र०—सरजन्ह बेलनटायनसा- हबनेकहाक्यातुमनहीं कहसक्तेकि जिससमय शीशीदीगई उस समय महाराजासाहब वर्त्तमानथे? उ०—उससमय महारा- जा साहब मौजूद थे मैंने अपने घरपर सालिमको शीशी दी थी। प्र०—शीशीके देनेकेसमय तुमने सालिमसे क्याकहाथा? उ०—मैंने कहाथा कि इसशीशीको रावजीके पासलेजाओ। प्र०—क्या तुमने कहाथा कि रावजी इसशीशी को क्याकरें? उ०—कुछकहनेकीआवश्यकतानथी वहजानताथा जिसवास्ते भेजीगई। प्र०—तुमनेउससे पहिलेकभी कहाथा? उ०—नहीं। प्र०—तुमजानतेथे कि शीशी किस वास्ते दीगई? उ०—हां। प्र०—बयानकरो किसवास्तेथी? उ०—इसवास्ते किशीशीको दवाजल में डालदी जायकि स्नान करतेही शरीर में फफोले पड़जावें। प्र०—इससे तुम्हारा यहमतलबहै कि करनैलफियर साहबकी देहमें फफोलेपड़जावें? उ०—हां। प्र०—किसतरह से फफोलेपड़जाते? उ०—जबशीशीकी दवापानीमें पड़तीतो निस्संदेहफफोलेपड़जाते। प्र०—तुमने फिर सुना कि शीशीकी दवाजलमें डालीगई? उ०—मैंने नहींसुना मालूमनहीं कि डालीगई वा नहीं। प्र०—यादकरो कि यहबात कबहुईथी? उ०—दसहरेके कईदिनपहिले या थोड़ेदिनपीछे। प्र०—तुमने कभीनहींसुनाकि उसशीशीकीदवाक्याहुई? उ०—मैंनेकभी नहींसुना। प्र०—न तुमने कभीपूछा? उ०—नहीं। प्र०—यश- वन्तसदैव महलमेंआयाकरताथा? उ०—जबकोई कामहोता उसदिन आताथा और सोमवार और बृहस्पतिवारको सदा आयाकरताथा। प्र०—और सालिम भी आयाकरताथा? उ०—हां जबकभी सवारीहुआ करतीथी आताथा अथवाजब कभी चिट्ठीजाती तो दरमियानमें भी आया करताथा। प्र० तुमने सालिमसे कभी नहीं पूछा किजो शीशी करनैलफियर

उ०—नहीं। नानाजी वतिलने तुमसे अन्तके दसहरेमें कुछ हीरे लियेथे ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने कुछ रुपया हीरोंके मोलका पायाथा ? उ०—मैंनेकुछ रुपयानहीं पाया। प्र०—तुमनेदसहरेके दिनोंसेभी नानाजी वतिलसेभी कुछरुपया नहींपाया ? उ०—हांमैंने कुछरुपया पायाथा परन्तु वहरुपया कार्तिकके महीने आया॥

गवाहने वर्णनकिया कि मैंविनायकराव व्यंकटेशको जानताहूं-आषाढ़वदी ७ वा ८ को उनकेपास कुछहीरे लेगयाथा वहगुलाबीहीरेथे और ऐसे २ छोटेथे कि एकरत्तीमें छः सात हीरे चढ़तेहैं मैनेउनसे कुछरुपया पहिलेकाभी पायाथा—और गवाहने कहा कि मैंने सात हजार रुपयेकी हुण्डी शिवचन्द खुशहालचन्दके नामकीदी थी दो हजार रुपये एक मरतबा चारहजार एकमरतबा और दो हजारएक मरतबा और फिर दो हजारएक मरतबापाया इसप्रकार दसहजार रुपयापाया जबमैं सहिलसे लौट आया तो जिन २ लोगोंके हीरेथे मैंने उनको लौटादिये उनदिनों मैंनेदामोदर पन्थको कभी नहीं देखा न मैंनेउनके हाथकभी हीरेबेचे और न मैंने नानावतिल और विनायक राव के हाथ कभी बेचे मिस्टर सुटर साहबने जो मेरे इजहार लियेथे वहमुझे स्मर्णहैं मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा कि माईलार्ड—यदिआज्ञा होतो उन इजहारातसे जो इस गवाहने मिस्टरसुटर साहबके रूबरू दिये हैं प्रश्नकिये जावें—साहबप्रेसीडण्टने कहाकि उन इजहारातको आपशहादतकी भांतिक़रार नहीं देसक्ते सरजन्ट बेलनटाइन साहबनेकहा मैंऐसेसवालपर इन्कारकरताहूं साहबप्रेसीडण्ट नेकहा जो इजहार इस गवाहने मिस्टरसुटरसाहबके रूबरू दियेहैं वहपढ़कर गवाहको सुनादिये जावें सरजन्टबेलनटाइन साहबने कहा उसका उचित समझतेहैं कियह इजहार पढ़कर सुना दियेजावें प्रेसीडण्टसाहबने कहाकिजांपढ़कर सुना दिये जावें पृश्नगवाहसे गवाहजबाबी दे नेसे तामुन्यवरता है परन्तु

सबबसे वह कागजतलफ करडाला ? उ०—नहीं साहब। प्र० उससमयसे जबसेकितुमने इकारार कियाहै और तुम कैदहो तुमने रावजी औरनरसूके मुंहसेकुछहालसुनाथा ? उ०—नहीं साहबकुछनहींसुना। प्र०—तुम्हारेइजहार जोलियेगये तोक्या मरहठीभाषामेंलियेगयेथे? उ०—नहींसाहब उसकाअंगरेजी भाषामें उलथा कियागयाथा। प्र०—तुमकोवहहरुफ सुनादिया गया था ? उ०—हां साहबसुना दिया गयाथा। प्र०—तुमने उसपर दस्तखत कियेथे ? उ०—हांसाहब किये थे॥

इज़हार हेमचन्द फतह चन्द जोहरी॥

मिस्टर अनवरारटी साहबने इस गवाहके इजहार लिये उसनेवर्णन किया कि मैं बड़ौदेमें रहता हूं औरपेशा जौहरी का करता हूं मैंने नानाजीवतिल को बहुधा देखाहै वहगायकवाड़ का नौकरहै ना.ना.जीवतिल के पास मैं कभी जवाहिर नहीं लेगया। प्र०—जो तुम नहीं लेगये तो कौन लेगयाथा ? उ०—किस क़ीमतके। प्र०—तुम याकोई और मनुष्य तुम्हारी दूकान से कुछ जवाहिरात लेगये थे ? उ०—किसवक्त। प्र० आखिर दसहरे में ? उ० मैंआखिर दसहरे में कभीजवाहिरात नहीं लेगया। प्र०—नानाजीवतिल के पास तुम कभी हीरे नहीं लेगये ? उ०—नहीं। प्र०—महाराजा साहबके महल्ल को कभी हीरे नहीं लेगये ? उ०—क्या आप हाल का ज़िक्र पूछतेहैं। प्र०—हांहालका ज़िक्रपूछताहूं ? उ०—नहींमैंहाल में कभीनहीं लेगया। प्र०—व्यतीत दसहरेमें लेगयेथे ? उ० हांलेगयाथा। प्र०—किसने मंगायेथे ? उ०—नानाजीवतिल नेकहा कि कुछहीरे लाओ। प्र०—तुमकुछहीरे लेगयेथे ? उ०—हांलेगयाथा परन्तु मुझेवापिसमिले। प्र०—तुम किसके पासलेगयेथे ? उ०—नानाजी वतिलके पास लेगयाथा। प्र० उसके उपरान्तभी फिरकभी लेगये ? उ०—नहीं। प्र०—तुम कभीमहाराजा साहबके महलमें हीरेलेगयेथे ? उ०—नहीं। प्र०—उसकेपीछे महाराजा साहबके महलको हीरेलेगयेथे ?

दस्तखत होनेसे पहिले क्या इन्कार कियाथा मुतर्ज्जिमनेकहा कि हां दस्तखतसे और उनटोलकीरोंसे जो दस्तखत के ऊपर हैं इन्कार किया था, साहबप्रेजीडराटने कहा क्या इसगवाह ने कहाथा कि मेरेदस्तखत नहीं हैं, मुतरज्जिम ने कहा हां, गवाहने यही कहा था मिस्टर अनवरारटी साहब गवाह से फिर पूछनेलगे। प्र०—यहदस्तखत और जोलकीर दस्तखत के ऊपर हैं तुम्हारी लिखीहुई है? उ०—हां मुतरज्जिमसे कहा गयाकि दस्तखतकेऊपर जोसतरलिखीहै उसको पढ़ो सोमुतरज्जिमने उसकोपढ़ा उसकामतलब यहथाकि मेरे रूबरू इजहारपढ़ेगये और सुटरसाहबके रूबरू दस्तखतकरता हूं, इजहारठीकहै, लिखाहुआ ८ वीफरवरी सन् १८७५ ई० ॥

गवाहने वर्णनकिया किमैंने लिखाया परन्तु मुझपर बड़ा अन्यायहुआ था लाचारहोकर मुझको दस्तखतकरने पड़े मैं गुजरातीभाषा में भलीभांति लिखपढ़ नहीं सक्ता मैं उसको यथायोग्य समझा भी नहीं कि इजहारों में क्या लिखागया मिस्टर अनवरारटी साहब मुतरज्जिम से बोले कि गवाह से पूछोकितुमनेमिस्टर सूटरसाहबकेरूबरूयहकहाथाकिदो तीन दिनपीछेदसहरेके नानाजीवतिलने जिनके आधीन गायकवार काजवाहिरखानाथामुझसे औरऔरजौहरियोंसे कहलाभेजा किहीरोंकी कुछकमीहै तुमलाओसोमैं और जौहरीउसीदिन हीरोंकी कनीलेगयेथे परन्तु दूसरेदिन वापिस देगये दोदिन के उपरान्त फिर नानाजीवतिलने मुझसे हीरे की कनीमंगवाईसोमैं लेकरगया औरकीमतके ठहरनेके उपरान्तवहकनी मोललीगई इसके पांचचारदिन के अनन्तर नानाजीवतिलने फिर हीरेकी कनी मंगवाई परन्तु उसदिन जवाहिरखाने में खिजनचे विनायकराव नानाजीकेसाले बहांथे उन्होंने हीरों को तोला और मोल चुकाकर दामोदरपन्थके निकट लेगये दामोदरपन्थनेकहाकि मोलअधिकहै परन्तु उनकोमेरेनिकट रखजाओ अगरजरूरत होगी तो मोललियेजावेंगे दोघड़ीके

वेजनटायन साहबनेकहा मेरामतलब इसइन्कारसे यहहै कि चूंकिअव्वल गवाहशहादत देनेमेंतामुल करता है इसलिये सरकारी कौंसलियोंके तजवीजके अनुसार उसके रूबरूपहिले के इजहार न पढ़े जावें॥

साहब प्रेसीडण्टने कहा मैंने कौंसिलके मेम्बरोंसे सलाह ली उनकीरायहै किजो ऐडवकेटजनरल गवाहको याददिलावें किउसने मिस्टर सूटरसाहबके रूबरू क्याइजहार दियेथे तोकुछमुजायका नहीहै—मिस्टर अनवरारटी साहबनेगवाहसे प्रश्नकिया कि तुमने मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूजो इजहारदिये थे वह गुजरातीभाषामें थे वा अंगरेजी में थे वा दोनोंभाषाओंमें? उ०—मेरेइजहार गुजरातीभाषामें हुयेथे प्र०—वहइजहार तुमकोपढ़कर सुनादियेगयेथे? उ०—वह इजहार आपही सूटरसाहबने लिखेथे। प्र०—तुमकोपढ़कर सुनादिये गयेथे वा तुमने आपही उनकोपढ़ा? उ०—संध्या को इजहारलिखेगये और मुझसे दस्तखत करायेथे परन्तुसुनायेनहींगये मैंजानताहूंकि उसदिन मेराबयान ठीकरनहीं लिखागया मुझसेजबरदस्ती दस्तखतकरालियेथे। प्र०—तुमने सरल्यूइसपोली साहबके रूबरूदस्तखत नहींकिये? उ०—गजानन्दवतिलने मुझसेकहाकि तुमकुछ नबोलो और मुखसेकुछ बात न निकालो और दस्तखतकरदो गवाहसे फिरयही प्रश्न कियागया उसनेकहा कि सरल्यूइसपोली साहबकेरूबरू मुजको पढ़कर नहींसुनायेगये। प्र०—क्या तुमने सरल्यूइस पोली साहब के रूबरू अपनेइजहार दस्तखत नहींकिये? उ०—नहीं गवाहको एककागज़ दियागया और पूछागया कियहइजहार तुम्हारा और दस्तखततुम्हारेहैं वानहीं गवाहने कहाकिनमेरे यह इजहार हैं नमेरेयहदस्तखत हैं गवाहसे फिरकहा गया अच्छीतरह ध्यानकर कहोसो गवाहनेबहुतदेरके पीछे कहा कि हां यह मेरे दस्तखत हैं॥

साहब प्रेसीडन्टने मुतरज्जिमसे कहा कि गवाहने अपने

में हीरे थे उनमेंसे एकपुडिया रक्खोगई और दोतीन दिनके पीछे दूसरी पुडिया वापिसोमिलो॥

गवाहने वर्णनकिया कि मैंने मिस्टरसूटर साहबके रूबरू यह इजहार नहीं दियेजो उन्होंने चाहाकुमसे लिखालिया जोकुछ कि मुजको इसमय इजहार सुनाये गये सब अशुद्ध हैं मैंने सूटर साहबके सम्मुख कदापि ऐसावर्णन नहींकिया॥

मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा तुमनेयह इजहार नहीं दियेहैं कि दो तीन दिनके उपरांत जब कि मालूम हुआ कि कारनैलफ़ियर साहबके विष दिये जानेका उद्योग किया गया नानाजीवतिल ने मुजसेकहाथा कि तुमनेजो हीरोंकीकनीको हिसाबकी किताबमें लिखाहै उसवरक़ोंको फाड़डालो क्योंकि किसीमनुष्यको यहसन्देहनहोकि कारनैलफियरसाहबकोहीरें कीकनी दीगईयहबात सुनकरमुझे बड़ाभयहुवा उसवरक़ोंको जिनमेंहीरेकी कनीका हिसाबथा उसीसमय निकलवा डालें और वहांनये पन्नेलगा दिये—यहसुनकर गवाहने कहा कि मैंने कभीऐसा बयानमिस्टर सूटरसाहबके सम्मुखनहीं किया मेरीं किताबेंडेढ़ महीनेसे मिस्टरसूटर साहबके पासहैं॥

मिस्टरअनवरारटी साहबनेकहा तुमने मिस्टर सूटरसाहबसे नहींकहा कि जो किताबें इससमय मेरेसाम्हने रक्खी हैं और जिनपर (ए) (बी) (सी) अक्षरोंका चिह्नहैं यहवही किताबेंहैं जिनमेंनवीन पन्नेलगायेगये॥

गवाहनेकहाकि मैंनेनहीं कहा-मिस्टरअनवरारटीसाहबने कहा तुमनेमिस्टर सूटरसाहबसे यहनहींकहा कि असुकरकम असुकपृष्टमेंमिलेगीगवाहनेकहाकिसरकमकाआपवर्णनकरते हैंमिस्टरअनवरारटीसाहबनेकहाकोईरकमजोकिताबमेंलिखी हो ? उ०—मैंने कुछनहीं लिखा। प्र०—तुमने मिस्टरसूटरसाहबके सम्मुख यह भी बयान नहीं किया कि हीरेकी कनीका मोल ३२७०/ सिक्के बड़ौदाथे उनमेंसे ३०००/ मुजकोनानाजी वतिल

नानन्दवतिलने जबरदस्ती बदलडाली । प्र०—अच्छा १० और २४ बहीका पन्नापढ़ो ? उ०—हांसाहब बहांदोहजार रुपये कीरसीद है । प्र०—यहदोहजार रुपयेतुमने किससेपाये ? उ० नानाजीवतिलसे पायेथे । प्र०—यहरुपया तुमको नानाजीवतिलसे किसके मद्दे मिलाया ? उ०—साहब मुझको झगड़ेका बाकीरुपया मिलाया । प्र०—बहझगड़ो कितनेरुपये कीहै ? उ० सातहजार रुपयेकीहै । प्र०—गजानन्दवतिलकेपासक्यासबतुम्हारे कागजथे ? उ०—हांसाहब मेरेबारह बही खातेहैं सरजन वेलनटायनसाहबने लाथाक्या यहकिताब तुम्हारीहै ? उ०—हां मेरीहै । प्र०—यहझगिड़यां तुम्हारी दूकानकी हैं ? उ०—हां मेरीदूकानकीहैं । प्र०—पहिली झगड़ेकी क्यातारीखहै ? उ० पहिलीझगड़ेकी तारीख १० आषाढ़सुदीहै और वह ३०००) रुपयेकीहै और दूसरीझगड़ी ४०००) रुपयेकीहै । प्र०—यह कौनसम्बत्की झगिड़यांहैं ? उ०—सम्बत् १९३० कीहैं । प्र० तीसरी झगड़ीकौनतारीखकीहै ? उ०—तीसरीझगड़ी४५००)रु० की है और वहकार्त्तिक सुदी ३० तिथि की लिखीहै ॥

होते वक्तमें जोडवटसाहबने पूछाकिहमनेसुनाहैकि इजलास कावक्त तोआप दूसरा बदलना चाहतेहैं क्या यहबातदुरुस्त है—हांमेरी इच्छाथी परन्तुसमयका बदलना अच्छा नहोगा और चूंकि हमने अब काम शुरूकर दिया है इसी वक्त को रखनाचाहिये इसकेउपरान्त इजलास बरखास्त हुआ॥

तेरहवेंदिन का इजलास॥

आजके दिन कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बरान् उपस्थितथे श्रीमान्मल्हरराव दिनभर नहींआयेमहाराजा सेंधियामध्यान्ह केउपरान्त चलेगये सरल्यूइस पीली साहब थोड़ी देर सुबह केवक्त रहेहेम चन्द फतहचन्द का इजहार फिरशुरू हुआ मिस्टरअनवरारटी साहब फिर इसमलुष्यके इजहार लेनेलगे गवाहको एकहिसाबकी किताबदीगई और पूछागयाकियह रकम किसके हाथकी लिखी हुईहै? उ०—मेरेहाथकी है। प्र०—तुमनेयहरक्कम कबहिसाबमें दरजकीथी? उ०—जबमैंने और रक्कमें लिखीथीं। प्र०—तुमने यह रक्कम क्यों लिखीथी? उ०—गजानन्दने कहा कि तुमइस रक्कमको लिखो कि और रक्कमेंअशुद्धनहों-मिस्टरअनवरारटी साहबनेमुतरज्जिमसे कहा कि इस किताबकी रकम तर्जुमाकरके पढ़ो सो मुतरज्जिमने पढ़कर सुनाई॥

जोशीपरमानन्दनरोननेएक अंगूठी चुन्नियोंकीजड़ीहुईमोलली जिसपर मीनाकियाहुआथा उसकीक़ीमत २१) रु० है॥

सरजन्‌टबेलनटायनसाहबके प्रश्न॥

सरजन्टबेलनटायनसाहबने कहा कि यदि आज्ञा हो तो मुतरज्जिम से किताब की कुछ रकमें को पढ़वाऊं—आज्ञा होने के उपरान्त मुतरज्जिमनेपढ़ा कि मल्हररावगायकवार के नाम खर्चमेंलिखाहै १६७०) रु० हीरोंके लिये जो दामोदरपन्थको दियेगये—सरजन्टबेलनटायनसाहबने गवाहसे प्रश्न किया प्र०—गुलाबी औ दूसरेरंगके हीरोंमें क्या अन्तरहोता

गजानन्दवतिलने जबरदस्ती बदलडाली । प्र०—अच्छा १० और २४ वहीका पन्नापढ़ो ? उ०—हांसाहब यहांदोहजार रुपये कीरसीद है । प्र०—यहदोहजार रुपयेतुमने किससेपाये ? उ० नानाजीवतिलसे पायेथे । प्र०—यहरुपया तुमको नानाजीव-तिलसे किसके अर्थ मिलाया ? उ०—साहब मुझको झगड़ीका बाक़ीरुपया मिलाया । प्र०—वहझगड़ी कितनेरुपये कीहै ? उ० सातहजार रुपयेकीहै। प्र०—गजानन्दवतिलकेपासक्यासबतुम्हारे कागजथे ? उ०—हांसाहब मेरेबारह वही खातेहैं सरअन वेलनटायनसाहबने लिखाक्या यहकिताब तुम्हारीहै ? उ०—हां मेरीहै । प्र०—यहझगड़ियां तुम्हारी दूकानकी हैं ? उ०—हां मेरीदूकानकीहैं । प्र०—पहिली झगड़ीकी क्यातारीखहै ? उ० पहिलीझगड़ी की तारीख १० आषाढ़शुदीहै और वह३०००) रुपयेकीहै और दूसरीझगड़ी ४०००) रुपयेकीहै । प्र०—यह कौनसम्वत्की झगड़ियांहैं ? उ०—सम्वत् १९३० कीहैं । प्र० तीसरी झगड़ीकौनतारीखकीहै ? उ०—तीसरीझगड़ी४५०) रु० की है और वहकार्त्तिक शुदी ३० तिथि को लिखीहै ॥

आषाढ़शुदी १३ को नाना साहबकेहाथ २८०००) रुपयेके हीरेबेंचे गये उसके उपरान्त तौल आदिका ब्यौरा लिखाहै। प्र०-२८०००) रुपयेकेहीरेजो तुमनेबेंचे किसी आभूषणमें जड़े हुयेथे या अलगथे? उ०-उनहीरोंका हारथा। प्र०-हीरोंका हारबनकरकिसकोदियाजाताथा? उ०-विनायकरावऔरनाना वतिलको ऐसीबस्तु दीजातीथी जोमनुष्य जवाहर खानेमेंमौजूदहोताथा वहउसको लेलियाकरताथा। प्र०-यहहारकिस के लियेबनाथा? उ०-किसी को दियागया या फेंकदियागया मुझको मालूम नहीं। प्र०-विनायकराव गजानन्द ने किसके हिसाबमें यहहार लिखाहै? उ०-सरकारके हिसाबमें सररिचर्डमीड साहबने मुतरज्जिमसे पूछा कि किसकेहिसाबमें यह हारलिखाहै मुतरज्जिमने बयानकिया किगायकवारके हिसाब मेंलिखाहै-दूसरीरकमके लियेमुतरज्जिमने कहा कि एकरकम और भी लिखीहै आठसौ रुपयेएक मोतीके नगकेहैं। प्र०-तुम कहतेहो कि मिस्टरस्कूटर साहबने तुम्हारी गवाहीनहींलीदेखो मिस्टरस्कूटर साहब वह बैठे हुयेहै? उ०-मुझको स्मर्ण नहीं। प्र०-तुमको स्मर्ण नहीं कि इनसाहबने कुछप्रश्न तुमसेहिन्दुस्तानी भाषामें कियेथे। प्र०-जबमेरे इजहार नहीं हुयेतो प्रश्न कैसे करते-साहब प्रेजीडेण्टने मुतरज्जिम से कहा कि इस गवाह से कहो सीधा २ उत्तर देतथाचप्रश्न किया गया उसने उत्तर दिया कि नहीं ऐडवकेट जनरलनेकहा तुम हिन्दुस्तानी भाषा समझते हो वा नहीं? उ०-मैं गुजराती समझता हूं और हिन्दुस्तानी नहींसमझता हिन्दुस्तानीको मुसल्मानी कहतेहैं। प्र०-तुम्हारा मतलब यह है कि मैं हिन्दुस्तानी नहीं समझता? उ०-मैं केवल गुजराती भाषा समझता हूं। प्र०-क्या तुम हिन्दुस्तानी भाषा कुछ भी नहींसमझते? उ०-नहीं। प्र०-कुछ भीनहीं समझते? उ०-मैं नहीं जानता कि आप किस बोली को हिन्दुस्तानी कहते हैं हिन्दुस्तानी कैसी जबान होती है

सुतरञ्जिमने ऐडवकेट जनरल से कहा कि यदि अज्ञा होतो गवाहसे हिन्दुस्तानीभाषामें कुछवार्त्ता करूं ऐडवकेटजनरल ने कहा नहींमैं आपकोतकलीफ नहींदेता सुतरञ्जिमने कहा कल मैंनेकईप्रश्न हिन्दुस्तानीमें कियेथे और गवाहने गुजराती भाषामें मुझको उत्तर दिया था—ऐडवकेटजनरल ने गवाहसे मुखातिबहोकरकहाकि कलतुमसे कुछप्रश्न हिन्दुस्तनीभाषामें क्यानहीं कियेथे ? उ०—नहीं मैं गुजरातीभाषा समझताहूं। प्र०—इनतीनपंक्तियोंकोदेखो जो तुम्हारे दस्तखतकेऊपर लिखी हैं यहतुमने किसमुकाम पर लिखी हैं? उ०—मरल्यूइसपीली साहब के बंगलेमें लिखीथीं। प्र०—क्या मरल्यूइसपोलीसाहब के रूबरू? उ०—हां। प्र०—तुमने मरल्यूइसपोलीसाहब से कहा था कि गणानन्दवतिल ने तुमसे कुछ कहाथा? उ०—नहीं। प्र० तुमने नहीं कहाकि गणानन्दवतिलने मुझपर अन्याय किया? उ०—नहींकहा क्योंकि मुझकोधमकोदीथी। प्र०—तुमने कोई शिकायत मरल्यूइसपीलीसाहबसे नहींकी? उ०—मुझसेगणानन्दवतिलने कहा था कि अगरचुपचाप दस्तखत नकरोगे तो तुम्हारेलिये अच्छा न होगा। प्र०—तुम कहतेहो कि मुझको सिपाहियोंने बड़ा दुःखदिया और हरदिन मुझको हिरासतमें रखतेथे? उ०—हां सुबहके आठबजेसे और रातके ८ बजेतक मुझको हिरासतमें रखतेथे। प्र०—किसजगह तुमको हिरासत में रखतेथे? उ०—कभी रजीडन्सीके बंगलेमें कभीदफ्तरकिनीचे जो गणानन्दवतिलके मकानके निकटहैं किन्तु कलरातको भी में अपनेघर आया तो तीनसिपाही रातिके समय मेरेघरपर आये। प्र०—किसवास्ते वह आये थे? उ०—मेरे बुलानेके वास्ते। प्र०—इसबातके जानेके वास्तेकि आज तुम अदालतमें हाजिरहो? उ०—उन्होंने फौजदारीकेपास जानेके वास्ते जानेके लिये कहाथा। प्र०—वहां तुमगयेथे? उ०—जब सिपाहीआयेथे मैं घरपर मौजूदन था मेरे गुमाश्ते को पकड़लेगये थे। प्र० फौजदारकेरूबरू पकड़कर लेगयेथे? उ०—रामचन्द्रफौजदार

आषाढ़सुदी १३ को नाना साहबकेहाथ २८०००) रुपयेके हीरेबेचे गये उसके उपरान्त तौल आदिका ब्यौरा लिखाहै। प्र०-२८०००) रुपयेकेहीरेजो तुमनेबेचे किसी आभूषणमें जड़े ज़ुयेथे या अलगथे? उ०-उनहीरोंका हारथा। प्र०-हीरोंका हारबनकरकिसकोदियाजाताथा? उ०-बिनायकरावऔरनाना वतिलको ऐसीबस्तु दीजातीथी जोमनुष्य जवाहर खानेमेंमौजूदहोताथा वहउसको लेलियाकरता था। प्र०-यहहारकिस के लियेबनाथा? उ०-किसी को दियागया या फेंकदियागया मुझको मालूम नहीं। प्र०-विनायकराव गजानन्द ने किसके हिसाबमें यहहार लिखाहै? उ०-सरकारके हिसाबमें सररिचर्डमीड साहबने मुतर्जिमसे पूछा कि किसकेहिसाबमें यह हारलिखाहै मुतर्जिमने बयानकिया किगायकवारके हिसाब मेंलिखाहै-दूसरीरकमके लियेमुतर्जिमने कहा कि एकरकम और भी लिखीहै आठसौ रुपयेएक मोतीके नगकेहैं। प्र०-तुम कहतेहो कि मिस्टरसूटर साहबने तुम्हारी गवाहीनहींलीदेखो मिस्टरसूटर साहब वह बैठे ज़ुयेहै? उ०-मुझको स्मर्णनहीं। प्र०-तुमको स्मर्णनहीं कि इनसाहबने कुछप्रश्न तुमसेहिन्दुस्तानी भाषामें कियेथे। प्र०-जबमेरे इजहार नहीं ज़ुयेतो प्रश्न कैसे करते-साहब प्रेजीडेण्टने मुतर्जिम से कहा कि इस गवाह से कहो सीधा २ उत्तर देतथाचप्रश्न किया गया उसने उत्तर दिया कि नहीं ऐडवकेट जनरलनेकहा तुम हिन्दुस्तानी भाषा समझते हो वा नहीं? उ०-मैं गुजराती समझता हूं और हिन्दुस्तानी नहींसमझता हिन्दुस्तानीको मुसल्मानी कहतेहैं। प्र०-तुम्हारा मतलब यह है कि मैं हिन्दुस्तानी नहीं समझता? उ०-मैं केवल गुजराती भाषा समझता हूं। प्र०-क्या तुम हिन्दुस्तानी भाषा कुछ भी नहींसमझते? उ०-नहीं। प्र०-कुछ भीनहीं समझते? उ०-मैं नहीं जानता कि आप किस बोली को हिन्दुस्तानी कहते हैं हिन्दुस्तानी कैसी जबान होती है

मालनानावतिलको दिया था। प्र०—क्या तुमने नानाजीवतिल
के हाथ यह माल अपने हिसाबमें बेचा था या दूसरे मनुष्यके हि-
साबसे? उ०—मैने अपने हिसाबमें बेचा था। प्र०—यह जो हुण्डियां
तुमको नानाजीवतिलने दी हैं क्या उस मालके बदलेमें दी हैं?
उ०—हां साहब। प्र०—शिव चरणसे जो माल मोल लिया था
क्या यह हुण्डियां उस मालकी पूरी कीमत थी? उ०—पूरी नहीं
थी कोई सौ या डेढ़ सौ रुपया बाकी रह गया था। प्र०—क्या यह
बाकीका रुपया शिवचरणको तुम्हारी बम्बईकी दूकानसे दिया
गया था? उ०—हां साहब। प्र०—क्या यह सब रुपया जौलाई सन्
१८९४ ई० में दिया गया? उ०—हां साहब। प्र०—सिवाय इन दो
हुण्डियोंके जिनकी संख्या ३००० और ४००० है तुमको कोई
और हुण्डी शिवचरणकी देन है? उ०—कोई हुण्डी नहीं। प्र०
अच्छा इन हुण्डियोंकी तारीख बताओ? उ०—ज्येष्ठ बदी १२ वीं
और १३ वीं तिथि है। प्र०—अब यह बताओ कि तुमने इन हुण्डियों
की निस्बत कितना रुपया वसूल पाया है? उ०—दस हजार रु-
पया पाया है। प्र०—सात हजारकी तो हुण्डी तुमको दस हजार
क्योंकर मिले? प्र०—उसमें नारायण व्यङ्कटेशका भी रुपया है
प्र०—तुमने नारायणव्यङ्कटेशका रुपया क्यों मिला दिया? उ०
वह नानाजीका माल है और नानाजीवतिलका वह हिसाब
था। प्र०—अपनी किताबका दसवां पृष्ठ देखो उसमें दो हजार
रुपए कैसे लिखे हैं? उ०—हां यह भी शिवचन्द खुशालचन्द के
रुपये हैं। प्र०—यह किसके हाथ लिखे हैं? उ०—मेरे हाथ के
लिखे हैं इसका अर्थ यह है कि मैने नानाजीवतिलसे दो हजार रुपये
पाए और शिवचन्द और खुशालचन्दके हिसाब में जमा किये।
प्र०—क्या यह दुरुस्त हिसाब है? उ०—हां साहब यह हिसाब
दुरुस्त है। प्र०—दमोला कौन मनुष्य है? उ०—वह नानाजी
वतिलका नायब है प्र०—इसका क्या कारण है कि अब यह हिसाब
नानाजीवतिलका था तो तुमने शिवचन्द खुशालचन्दके हिसाब
में जमा किया? उ०—इसवास्ते कि यह हिसाब साहबका था। और को

के सम्मुखलेगये थे। प्र०—क्या फौजदार शहरमें रहता है? उ०—हां मुकाम मराडी में नगरके भीतररहता है। प्र०—तुम कितनीबेर रजोडन्मोकोगये? उ०—एकबेर। प्र०—और कितनी दफादृक्षोंकेनीचेगये जोगजानन्दके घरनिकेकटहैं? उ०—हर-दिनमुझको लेजातेथे और दृक्षोंके नीचे बैठाया करतेथे। प्र० कितने दिनतुम्हारे साथयह बदसलूकीहुई? उ०—डेढ़महीने। प्र०—क्या प्रतिदिन तुमको इसीप्रकार लेजाया करतेथे? उ० हां। प्र०—इसकिताबकोदेखो क्यातुमने इसमेंनवीनवरकलगाये हैं? उ०—मैंने कोईनयापत्रानहीं लगाया। प्र०—नतुमनेइसमें पत्रेनिकालेन नयेपत्रे लगाये क्यायह बातठीकहै? उ०—हां ठीकहै। प्र०—तुमनेकिसी मनुष्यके मारफत वरकनिकलवाये? उ०—नहींमेरी किताब दो महीनेसे कुर्क है। प्र०—तुमको मालूमहै किकिसीऔर मनुष्यने भीइस किताब मेंसेनये वरक नहींनिकाले? उ०—मालूमहोताहै किसातया आठवरक़नये लगाये गये हैं। प्र०—इसकिताबके किसभागमेंसे वरक़निकाले गयेहैं? उ०—देखिये यह वरक़नये लगेहैं औरयह पुरानेहैं। प्र०—किसजगहसे वरक़ निकाले गयेहैं जहांअंगूठोकी फरोख़ लिखीहै? उ०—हांमालूम होताहै कियह रकम इसमें नहीं है। प्र०—तुमको मालूम नहीं कि किस मनुष्यने यहवरक़नि-काले? उ०—मुझको मालूमनहीं। प्र०—तुमकोक्योंकर मालूम हुआकि वरक़निकाले गये? उ०—वरक़ोंकी रंगतमें अन्तरहै। प्र०—जो दो हुण्डीलिखी गईं अर्थात् तीन हजार और चार हजारकी उनकोकिसने लिखाथा और किसदूकानपर लिखा था? उ०—हेमचन्द फतहचन्दकीदूकान बम्बईमें लिखीगई। प्र०—यह दूकान भीतुम्हारी बम्बईमें है? उ०—हां। प्र०—यह रुपया किसको दियागया? उ०—शिवचन्द खुशालचन्द पूना के रहने वालों को यह रुपया दिलाया गया था। प्र०—येह कौनहै? उ०—वहभी एक जौहरीहैं। प्र०—इसमनुष्यको हु-ण्डियोंकारुपया किसवास्तेदिलायाथा? उ०—शिवचन्दने कुछ

दामोदरपन्थने मुझसे फिर कहा कि फतहचन्द की कोठीसे
पुखराजो हीरोंकी कनीसंगवाओ मैंनें हेमचन्दको कहलाभेजा
वहआपको हीरेकीकनी लेकरमेरे निकटआया वहनिहकार
था वे। सत्तररत्ती तौलमेंथी दामोदरपन्थकी आज्ञानुसारवह
मोतीलाल लोगईदून कनीका जो मूल्यठहराया वहमुझे मर्म
लड़ी जौहरी को दिखावेंगे जो ३०००) रुपया कीमत लिखे
हैवहठीकहै उनहीदिनोंमें कोईछोरा एकरत्तीकाथा और बहुत
कहेदेते कि एकरत्तीमें दोतीनचारपांच तकतौलमेंथे तीन-
हजाररुपया दो दफेकरके पूर्वोक्त जौहरी को मैंने दिये और
एकबेर दोहजार रुपयेदिये एकबेर एक हजार रुपया दिया
वहरुपया दामोदरपंथ से एक याददाश्त के अनुकूल जिसपर
मैंनेभी दस्तखत किये थे दिलाया और नानचन्दके द्वारा वह
रुपया हेमचन्द फतहचन्द को दियागया नानाचन्द दामोला
सुहागके सर्राफहैं उनतीनहजार मेंसे एकहजार रुपयाअपने
मकानपर खुद मैंने दिया ॥

खिज़रीजो तुम्हारी वहांसे लिखीहै यहदुरुस्त है ? उ०—साहब मुझे खबरनहींहैजोकुछ किताबमें लिखाहै वह दुरुस्तहै । प्र० तुम इनकिताबोंमेंसेकिसकाअपनाकामकरतेथे? उ०—पहिलेइसी से कामकरताथा अबतोपौनेदोसाल होनेसेछुट्टीहै । प्र०—अगरतुम नेयहोकेवरक़ानहीं बदलेतो गजानन्दको वरक़ाबदलनेसे क्यामत-लबथा ? उ०—साहबमुझको खबरनहींहै किउसनेयहछलकि-सवास्ते किया । प्र०—कलजो तुमघर जानेलगेतो किसीपुलिस वालेने तुमसेकुछ कहाथा ? उ०—हांसाहब एकसिपाहीनेमु-झको रोका और कहाकि तुमठहरो हम साहबसे या गजा-नन्दवतिलसे पूछलेंतो जानेदेंगे परन्तु फिरमुझको जानेदिया ग्रीसान् महाराजा जयपुरने पूछा कितुमसे और उससिपाही से और क्याबातचीतहुई ? उ०—और कुछबात नहींहुई ॥ सम्पूर्ण समाज टिफनखानेके लियेबरखास्त हुई ॥

इज़हार नानाजीवतिल गवाह ॥

जबकमीशनके सम्पूर्णमेम्बर टिफनसे सुचितहोकर आयेतो नानावतिल बुलायागया ऐडवकेटजनरलने इसकेइज़हारलेना शुरूकिये उसनेबर्णनकिया कि मैंब्राह्मणहूं और गायकवारके जवाहरखानेकादारोगाहूं मैंदामोदरपन्यको जानताहूं अन्तके दसहरेके में दमोदरपन्यने मुझेआज्ञादीथी कि कुछहीरेभस्म करनेके लियेदरकारहैं सोमैंने तीनचार जौहरियोंसे मंगवाये घेल शाह—प्रतापशाह—और हेमचन्द तीन जौहरी मेरे पास हीरेलाये फ़तहचन्द हेमचन्दके हीरे दामोदरपन्यके दिखाने केवास्तेएक दिनको रखलिये उसकेदूसरे दिनजब और जौहरी हीरेलाये उनकोभी रखलिया जिससमय दामोदरपन्यको वह हीरेदिखाये गयेतो हेमचन्द फ़तहचन्दकी कोठीकेहीरे उन्होंने पसन्दकरके रखलिये और बाक़ी जौहरियोंके हीरेमैंने लौटा दिये हेमचन्दके हीरेतौलमेंअडसठ या साढ़ेअडसठ रत्तीहैंगे उनकोतौलकर दामोदरपन्यके हवालेकरदिये औरएक याद-दाश्तदफ़्तरमें रखनेकेवास्ते कारकुनोंनेबनाई छःसातदिनकेपीछे

कोई जुर्म है? उ०-मुझको जवाहरखानेका कामथा जबमहा-राजा साहबकैदहुये मुजकोभीकैदकरलिया। प्र०-तुमने जो ई-मचन्दसेहीरेसोलहलिये थेउसका हालपहिलेकिससेकहाथा? उ०-मुजको लोग कमकरमें लायेथे जिस मनुष्यने पूछाउससे कहदियाउससेपहिले पन्द्रह यासोलह दिनतक मकानबारह मेंथा। प्र०-विस्तार पूर्व्वकवर्णन करो किपन्द्रहसोलहदिनतक तुमवहांकैदरहे? उ०-पन्द्रहबीसदिन तकनगरमें रहामुजसे किसीनेनहीं पूछा। प्र०-मैं पूछताहूं कि तहकीकात के पहिले तुमपन्द्रह सोलहदिनतक कैदरहेथे? उ०-हांमकानपरपहि-रेमें कैदथा। प्र०-तुमकिसकी हिरासतमें थे? उ०-सेनापती की कचहरी में था। प्र०-तुमपर किनलोगों कापहिरा था? उ०-परदेसोसिपाहियों कापहिराथा। प्र०-जबतुम पन्द्रहबीस दिनतक कैदरहे तुम्हारे निकट कोई दूजहार लेने आयाथा? उ०-कोई मनुष्य नहीं आया मुजको बुलाया था। प्र०-कौन मनुष्य बुलाने आयाथा। उ०-कुछ सिपाही आयेथे। प्र०-तुम उनकेसाथगयेथे

उ०—जवाहरखानेका मोहतमिमहूं। प्र०—तुम्हारे अधिकारमें कौन कामहै? उ०—मैं जवाहिरात और जेवरकी रक्षा कर ताहूं जब महाराजा साहब पहिनते हैं उनको देदेता हूं। प्र०—कोई काम और भी तुम्हारे सुपुर्द है? उ०—जवाहरखाने से जो जवाहिरात की अवश्यकता होतीहै तो मेरेद्वारा मोल लिये जातेहैं। प्र०—तुम वाकिफ़हो कि यहहीरे किसलिये मोललिये गयेथे? उ०—मुझसे यह कहाथा कि यहहीरे भस्म करनेके वास्ते दरकार हैं। प्र०—तुमसे किसने कहा था? उ० दामोदरपन्तने। प्र०—इस भस्मकी क्या ज़रूरतथी? उ०—दवाके लिये। प्र०—तुमने कभी पहिलेभी सुनाथा कि हीरोंकी भस्म दवाके वास्ते बनाई जातीहै? उ०—मैंने कभी नहीं सुना। प्र० तुमने अपनी सम्पूर्ण आयुमें हीरोंकी भस्म देखीहै? उ०—चार वर्ष से मैंनौकर हूं उससे पहिले कभी हीरेभीन देखे थे। प्र०—तुमनेअपनी सम्पूर्ण आयुमें सुनाहै किहीरों की राखहो तीहै?उ०—मैंने कभी नहीं सुना। प्र०—न तुमने कभी सुना न तुमनेभस्म देखी? उ०—मैं नहीं जानता। प्र०—न तुमनेसुना? उ०—न मैंने सुना नमैंने देखा। प्र०—आजकल तुम कहां रहते हो? उ०—बड़ौदेमें रहता हूं। प्र०—तुमपर कोई गार्ड नियत है? उ०—मैंखानबहादुरकी हिरासतमेंथा। प्र०—इससे तुम्हारा यहमतलब हैकि तुमक़ैद थे?उ०—जिसदिन महाराजा साहब क़ैदहुयेहैं पुलिसवालोंने मुझकोबैठा रक्खाहै। प्र०—बैठाने से तुम्हाराक्या मतलबहै क्यातुम क़ैदमेंहो? उ०—पुलिस वालोंने मुजको बैठारक्खाहै मैंइसीको क़ैद समझता हूं। प्र०—क्योंबैठा रक्खा है? उ०—मैंनहीं जानता। प्र०—तुमने पूछा कि तुमको क्योंबैठायाहै? उ०—मैंकिससे पूछता। प्र०—जिसनेतुमको बैठा-याथा उससेपूछते? उ०—जिसने मुझको बैठायाथा उसनेहीरों का हिसाब मांगासो मैंने बता दिया। प्र०—तुमपर और कोई जुर्म है या जहर खूरानी का जुर्म है? उ०—नहीं। प्र०—तुमपर

इच्छाहो वह दण्डदे। प्र०—मैंजानताहूं कि जबपुलिसके पंजे सेनिकलोगे तो बहुतप्रसन्न होगे? उ०—सरकारकी जोमरजी है उससेखुशहूं। प्र०—गजानन्द ने तुम्हारे इजहार लिखेथे वा तुमनेलिखकर अपनेइजहार उनकोदियेथे? उ०—मैंनेलिखकर नहीं दिये जुबानी बयान कियेथे। प्र०—जबतुम अपना बयान करचुके तो तुमकोलोग कहांलेगयेथे? उ०—साहबकेनिकट लेगयेथे। प्र०—साहबसे तुम्हारामतलबसुटरसाहबहै? उ०—उस समयसूटर साहबवहां नहीथे। प्र०—तुम्हारे इजहार किसने लियेथे? उ०—और साहबलोग जोबंगलेमेथे उन्होनेमेरे इज-हारलियेथे। प्र०—कुछपता बतलाओ जिस्से स्पष्टवृत्तान्त विदित हो कि वहसाहबलोग कौनथे? उ०—मैंनही जानता परन्तु इतना जानताहूं कि सरल्युइसपेली साहब भी उपस्थितथे। प्र०—सावधानहोकर वर्णनकरो कि सरल्युइसपेली साहबउस समय उपस्थितथेजब कि तुमनेबयान कियाथा? उ०—जिस समय मेरे इजहार लिखे गये थे पेली साहब उपस्थित थे प्र०—तुम्हारे इजहार किसनेलिखेथे? उ०—दूसरेसाहब जोवहां बैठेथे उन्होने लिखेथे। प्र०—तुमनेदोनों साहिबोंके सन्मुख अपने इजहार दियेथे? उ०—हां। प्र०—तुमकोदामोदर पन्तकेइजहारों का कुछहालमालूमहै? उ०—नहीं। प्र०—तुमकितने दिनकेउपरान्त सरल्युइसपेली साहब के निकटइजहारों केलियेगयेथे? उ० तीनदिन केउपरान्त गयाथा॥

उ०—मैं कुछ नहीं जानता। प्र०—मैं ममसे तु पूछता हूं कि तुमने उनके इजहारों का कुछ हाल सुनाथा? उ०—मैं उनको नहीं जानता न मैंने उनको कभी देखा। प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो तुमने नहीं सुना कि रावजी और नरसू की गवाही हुई? उ०—मैने कभी नहीं सुना। प्र०—तुम सौगन्द खाओगे कि मैंने कभी नहीं सुना? उ० जब यहां तहकीकात हो चुकी तब मैंने सुनाथा। प्र०—मेरा प्रश्न यह भी नहीं है मैं पूछता हूं कि तुमने सुनाथा कि नरसू और रावजीने क्या इजहार दिये? उ०—मैनेनहीं सुना न मैं जानता हूं कि उन्होंने क्या इजहार दिये। प्र०—तुमने यह भी नहीं सुना कि नरसू और रावजीने हीरोंके क्या इजहार दिये थे? उ०—मैने देवाली के उपरान्त सुनाथा कि विष दिये जाने का उद्योग हुआ है। प्र०—यदि तुम मेरे प्रश्न का उत्तर न दोगे तो प्रलयपर्य्यन्त तुमसे प्रश्न किये जाऊंगा मैं पूछता हूं कि तुमने सुनाथा कि रावजी और नरसू के इजहार विष दिये जाने के विषय में लिये गये थे उ०—उसी समय मैने नहीं सुना पीछे सुनाथा कि वह क़ैद हैं प्र०—अपने बयान के पहिले तुमने सुनाथा कि वह क़ैद है? उ०—मैने नहीं सुना। प्र०—गजानन्द वतिलने भी तुमसे कहा कि उन लोगों ने क्या इजहार दिये? उ०—नहीं कहा। प्र०—गजानन्द वतिल ने तुमसे कहाथा कि सच बोलना और सिवाय सच के और कुछ न कहना? उ०—हां। प्र०—उसने तुमसे कहाथा कि अगर सच न कहोगे तो क्या नतीजा होगा? उ०—हां, मुझको धमकाया था और कहाथा कि अगर सच न बोलोगे तो झूठ का मज़ा चक्खोगे। प्र०—इस बात के कहने से तुम क्या समझते थे? उ० मैं समझताथा कि मुझको क़ैद करेंगे या कहीं और भेज देंगे। प्र०—यदि हम तुम्हारे वर्णन पर निश्चय न करें तो तुम जानते हो कि तुम्हारे लिये क्या दण्ड होगा? उ०—सरकार को जो कुछ इच्छा होगी उससे क्या इन्कार है। प्र०—परन्तु तुम क्या समझते हो कि ऐसी हालत में तुमको क्या दण्ड हो? उ०—जो सरकार की

इच्छाहो वकीदगड्दे। प्र०—मैंजानताहूं कि जबपुलिसके पंजे सेनिकलोगे तो बहुतप्रसन्नहोगे? उ०—सरकारकी जोमरजी है उससेखुशहूं। प्र०—गजानन्द ने तुम्हारे इजहार लिखेथे या तुमनेलिखकर अपनेइजहार उनकोदियेथे? उ०—मैनेलिखकर नहींदिये जुबानी बयान कियेथे। प्र०—जबतुम अपना बयान करचुके तो तुमकोलोग कहांलेगयेथे? उ०—साहबकेनिकट लेगयेथे। प्र०—साहबसे तुम्हारामतलबसुटरसाहबहैं? उ०—उस समयसुटर साहबवहां नहींथे। प्र०—तुम्हारे इजहार किसने लियेथे? उ०—और साहबलोग जोबंगलेमेथे उन्होंनेमेरे इज-हारलियेथे। प्र०—कुछपता बतलाओ जिस्से स्पष्टवृत्तान्त विदित हो कि वहसाहबलोग कौनथे? उ०—मैंनहीं जानता परन्तु इतना जानताहूं कि सरल्युइसपोली साहब भी उपस्थितथे। प्र०—सावधानहोकर वर्णनकरो कि सरल्युइसपोली साहबउस समय उपस्थितथेजब कि तुमनेबयान कियाथा? उ०—हांजिस समय मेरे इजहार लिखे गये थे पोली साहब उपस्थित थे प्र०—तुम्हारे इजहार किसनेलिखेथे? उ०—दूसरेसाहब जोवहां बैठेथे उन्होंने लिखेथे। प्र०—तुमनेदोनों साहिबोंके सन्मुख यह इजहार दियेथे? उ०—हां। प्र०—तुमको दामोदर पन्तके इजहारों का हालमालूमहै? उ०—नहीं। प्र०—तुमकितने दिनकेअन्तर पर सरल्युइसपोली साहब के निकटइजहारों कोलियेगयेथे? उ० तीनदिन के उपरान्त गयाथा॥

पहिले गजानन्द वतिलने लियेथे सरदिन कर रावने पूछा कि तुम जवाहरखानेके मुखतार हो? उ०—हां साहब मैं जवाहरखाने का दारोगा हूं। प्र०—तुम्हारे पास कोई हिसाब हीरे के मोल लेने का है? उ०—कोई नहीं। प्र०—जो जवाहरात मोललिये जाते हैं क्या उसका हिसाब तुम जवाहर खानेमें नहीं रखते? उ०—हमारे यहां हिसाब नहीं रहता वह खजाने में रहता है। प्र०—तुम कोई याद्दाश्त रखते हो? उ०—हां साहब रखते हैं। प्र० यदि वह याद्दाश्त अशुद्ध हो तो उसका क्या निश्चय? उ०—जो कुछ सरकार फरमावे वही दुरुस्त है साहब प्रेजीडण्टने कहा कि अब साढ़े चार बजे का समय है जलसा बरखास्त किया जाय सो जलसा बरखास्त हुआ॥

चौदहवें दिनका इजलास॥

आजके दिन कमीशन शुरू हुई कमीशनके सम्पूर्ण मेम्बरान् उपस्थित थे मल्हरराव बिल्कुल नहीं आये महाराजा सेंधिया दोपहर से चलेगयेथे. सरल्यूइस पीली साहब भी मध्यान्ह केपश्चात् चलेगये रघुनाथके पुत्र आत्मारामके इजहार शुरू हुये सिस्टर अनवरारटी साहबने गायकवारके जवाहरखानेके कारकुनको बुलाभेजा उसनेवर्णन कियाकि मैं रियासत गायकवारके जवाहरखाने का कारकुन हूं मेरा अफ्सर नानाजीवतिल है मुझे स्मर्ण है कि देवालीसे आठदिन पहिले कुछहीरे लोललियेगयेथेचारजौहरीहीरे लायेथे तीनजौहरियोंके हीरे लौटादिये गये और हेमचन्द्र के हीरे रखलिये गये थे—एक याद्दाश्त दफ्तरमें रखनेकेलिये बनाईगईथी परन्तु दो तीन दिनके उपरान्त नानाजीवतिलने उसको मुझसे लेलिया था फिर मैंने सुना कि करनैलफियरसाहबके विष दियेजाने का उद्योग हुआ है॥

सरजनवेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—अबभी तुमको जवाहरखानेसे तअल्लुक है? उ०—हां।

प्र०—जवाहरख़ाने का अब कौन दारोग़ा है? उ०—गणपति राव लक्ष्मण। प्र०—बयान करो कि हीरेकी कनी क्या वस्तु होती है? उ०—छोटे २ हीरोंको कनी बोलते हैं। प्र०—क्या कनी उसको कहते हैं कि जब हीरा तराशा जाता है और उसके छोटे २ टुकड़े करते हैं? उ०—हां। प्र०—तुमने देखा वा सुना है कि हीरेकी खाक होसक्ती है? उ०—नहीं॥

साहबप्रेज़ीडण्टने कहा पस मालूम होता है कि तुमने कटा हुआ हीरा नहीं देखा? उ०—नहीं। प्र०—जवाहरख़ाने में कितने वर्षसे हो? उ०—बारहवर्षसे हूं। प्र०—महाराजासाहब बहुधा हीरे ख़रीदा करतेथे? उ०—हां। प्र०—छोटे और बड़े? उ०—दोनों प्रकारके मोल लिया करतेथे। प्र०—ज़ेवरमें जड़े हुये मोल लेतेथे या अलग? उ०—दोनों प्रकारके मोल लेते थे। प्र०—महाराजासाहबके जवाहरख़ानेमें बहुतसे हीरे थे? उ०—हां बहुत हीरे थे। प्र०—तुम्हारा बयान है कि जो लोग हीरे लायेथे उनमेंसे हेमचन्द्रके हीरे मोल लियेगये तुम क्योंकर जानतेहो कि केवल उसीमनुष्यके हीरे मोल लियेगये? उ० नानाजीवतिलने पसन्दकरके उन हीरोंको मोल लियाथा। प्र०—सिवा नानाजीवतिलके और भी किसीमनुष्यने तुमसे हीरोंका हाल कहाथा? उ०—जब हीरे मोल लियेजातेथे तो नाना-जीवतिल मुझको बुलालेतेथे।

पहिले गजानन्द वितलने लियेथे सरदिन लरावने पूछा कि तुम जवाहर खानेके मुखतार हो ? उ०—हां साहब मैं जवाहर खाने का दारोगा हूं। प्र०—तुम्हारे पास कोई हिसाब हीरे के मोल लेनेका है ? उ०—कोई नहीं। प्र०—जो जवाहरात मोललिये जातेहैं क्या उसका हिसाब तुम जवाहर खानेमें नहीं रखते ? उ०—हमारे यहां हिसाब नहीं रहता वह खजाने में रहता है। प्र०—तुम कोई याददाश्त रखते हो ? उ०—हां साहब रखते हैं। प्र० यदि वह याददाश्त अशुद्ध हो तो उसका क्या निश्चय? उ०—जो कुछ सरकार फरमावे वही दुरुस्त है साहब प्रेजीडण्टने कहा कि अब साढ़े चारबजेका समय है जलसा बरखास्त कियाजाय सो जलसा बरखास्त हुआ॥

चौदहवें दिनका इजलास॥

आजके दिन कमीशन शुरूहुई कमीशनके सम्पूर्ण मेम्बरान् उपस्थित थे मल्हरराव बिल्कुल नहीं आये महाराजा सेंधिया दोपहर से चलेगयेथे. सरल्यूइस पीली साहब भी मध्यान्ह केपश्चात् चलेगये रघुनाथकेपुत्र आत्मारामके इजहार शुरूहुये मिस्टर अनवरारटोसाहबने गायकवारके जवाहरखानेके कारकुनको बुलाभेजा उसनेवर्णन कियाकि मैं रियासत गायकवारके जवाहरखाने का कारकुनहूं मेरा अफ्सर नानाजीवतिलहै मुझे स्मर्ण है कि देवालीसे आठदिन पहिले कुछहीरे मोललियेगयेथे चारजौहरीहीरे लायेथे तीनजौहरियोंके हीरे लौटादिये गये और हेमचन्द्र के हीरे रखलिये गये थे—एक याददाश्त दफ्तरमें रखनेकेलिये बनाईगईथी परन्तु दो तीन दिनके उपरान्त नानाजीवतिलने उसको मुझसे लेलिया था फिर मैंने सुना कि करनैलफियरसाहबके विष दियेजाने का उद्योग हुआ है॥

सरजनवेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—अबभी तुमको जवाहरखानेसे तअल्लुक है ? उ०—हां।

जवाहरखाने में बहुत से हीरे मौजूद थे? उ०—नानाजीवतिल की जोजवाहरखाने के दारोगा हैं यह हालमालूम होगा। प्र०—तुम्हारा यहमतलबहैकि तुमको कुछ हालमालूम नहीहै? उ०—हांमैं कुछ नहीं जानता—सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा (साईलार्ड) इसगवाहसे यह सवालकियाजावे कि उससमय सभो एकतलवार का क़बजा हीरों से जड़ाजाताथा? उ०—हां,तलवार का क़बजा और मियान हीरों से जड़ाजाताथा और छोटे २ हीरे उसमें लगायेजाते थे। प्र० छोटे २ हीरे लगतेथे याबडे २ हीरे जडेजातेथे? उ०—छोटे हीरे। प्र०—एक सिरजाई भी तय्यारहोतीथी? उ०—हां,एक सिरजईमें भी छोटे २ हीरे जडेजाते थे। प्र०—तुम जानतेथे कि यहहीरे कहांसे आयेथे? उ०—जवाहरखानेमें थे। प्र० जवाहरखानेमें यहहीरे कबसेरक्खेथे? उ०—हमेशामोललिये जातेथे और इसी प्रकार हीरोंका जमाखर्चरहाकरताथा॥

बलवन्तराव रावजीके इज़हारात॥

बलवन्तराव रावजीने अपने इजहारात ऐडवकेटजनरल के साम्हने दिये कि मैं खानगी खजाने सरकार में नौकर हूं मैं दामोदरपन्थके आधीन कामकरताथा हिसाबों के ऊपर जो स्याहीडालीगई मुझको नहींमालूमकि किसनेडालीहै सरजन्ट बेलनटायनसाहबने उससे प्रश्न नहीं किये॥

रामेश्वरमोरा के इज़हारात॥

मैंस्वामी नारायणके मन्दिरका चेलाहूं मैंसबचेलोंका अफ्सर हूं मैने कोई रुपया ३१ दिसम्बर सन् १८७३ ई० का नहीपाया और मैनेकिसी समयमें ३३२) रु० नहींपाया यदि मैनेकभी रुपयापायाहै तो उसकीरसीद महाराजा कोदीहै उसकोरसीद दिखाई उसने इन्कारकिया कि यहमेरी रसीद नहीहै यहरसीद भोलानाथ पींचारामको लिखीहै॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबके प्रश्न॥

तुमने एक मरतबा कहाहै कि तुमने ११००) रु० पायाहै

साहबके पासजाताथा मैनेकरनैलफियर साहबसे खबरोंकेवर्णन करनेमें कभीकुछभी रुपयानहीं पायामैनेसुना कि करनैलफियरसाहबको विष दिये जाने का इरादाहै अब करनैल फियर साहबने दोतीनदिनके पश्चात्‌मुझसे जिकर कियातोमैनेउनसे कहा कि बलवन्तरावसे सुनाहै कि जोविष आपको दियागया उसमेंतीन वस्तुथीं अर्थात्–हीरेकोरेत–तूतिया–औरसंखिया सिन्टरकैम्बल साहबने पूछा कि रेतके क्याअर्थहैं गवाहने कहा कि मैंपिसेहुये हीरेको रेत कहताहूं–मैनेजो कुछबलवन्तरावसे सुनाथा करनैल फियर साहब से कहदिया कि बलवन्तरावकोभी फियरसाहबके निकटलेगयाथा ॥

साहबप्रेज़ीडेण्टने पूछाकि बलवन्तरावको करनैलसाहबके निकटतुम लेगयेथे–गवाहने कहाकि हांलेगयाथा औरकरनैल साहबसेमुलाकात कराईथी ॥

अठारह महीनेसे गायकवार ने आज्ञादीथीकि हमारीआज्ञा बिना संखिया नहींजायाकरे॥

दत्तेगिया रामचन्द्र का दुबारह इज़हार लियागया॥

प्र०—अच्छा यह बताओ कि इस याददाश्त में गायकवार केदस्तखतकहांहैं ? उ०—साहब इसयाददाश्तमें दस्तखत नहीं है प्र०—अच्छाकौनसी याददाश्त पर गायकवाड के दस्तखत हैं ? उ०—१९तारीखकी यादाश्तपर दस्तखत हैं॥

भावपूना कारके इजहार॥

रामकृष्ण सदाशिवजो भावपूनाकरके उपनामसे विख्यात है बुलायागया और ऐडवकेटजनेरल ने उसके इज़हारलिये उसनेवर्णन किया कि तीसवर्ष से मैं वडौदेमें रहता हूं इस समय मुझको मीरजुल्फ़िक़ारअलीकी रियासतसे तअल्लुकहै॥

मिस्टर होप साहब की ओर से मैं नौकर हूं मीरजुल्फिक़ारअली सूरत के रईस नव्वाब जाफरअलीके पुत्र हैं और सरकार उनकी मुतवल्ली अर्थात् मालकहै उनकी कुछ रियासत वड़ौदे में भी है मीरजुल्फिक़ारअलीकी रियासतके देख भालके सिवायकुछ और काम भी मेरे आधीन है और कई सरदारोंकी ओरसे मैंमुख्तारभी हूं करनैल फ़ियर साहबकोमैं जानताहूं दीवान साहब अर्थात् नानाकंबलकर ने करनैलफियर साहबसे मेरी मुलाकात कराईथी जब पूर्वोक्त साहबवड़ौदेके रेज़ीडएटथे मैंबहुधा उनके निकटजायाकरता था एक चिट्ठी मिस्टर होप साहबकी करनैल फियर साहबके नाममैंलायाथा वहचिट्ठी मीरजुल्फिक़ारअलीके मुआमिलेसे सम्बन्धित थी मीरजुल्फिक़ारअलीका मुक़द्दमा उन दिनोंमें बम्बईमेंदायरथा इसदफ़ामैं करनैलफियर साहबके पासजरूरतसे गयाथा और बहुधा बिना प्रयोजनभी जाया करताथा और कभीकभीकरनैलफियरसाहबको नगरकेहालकहसुनाता था जब करनैल साहब हवाखोरीसे वापिस आतेथेउससमय बहुधाऐसी बातोंकी इत्तिला दिया करताथा दसग्यारहबजेमैं

कि तुमको कुछ न मिलता था तौभी उनको खबरें पहुंचाया करतेथे ? उ०—जो हालठीक २ मुझको मालूम हुआ करता था मैं कर्नैलफियरसाहबसे कहदियाकरताथा। प्र०—तुम्हारी खबरें बहुतसनाकरते थे ? उ०—हां सुनने न सुननेका उनको अखतियारथा सिवामेरे औरमनुष्यभी खबरेंपहुंचायाकरतेथे। प्र०—परन्तु जो खबरेंतुमपहुंचातेथे उनको कर्नैलफियरसाहब अच्छीतरह सुनतेथे ? उ०—मेरीही खबरों कोनहीं किन्तुऔर मनुष्योंकी खबरोंको अच्छीतरह सुनतेथे। प्र०—तुमय हखबरें पहुंचायाकरते थे कि नगर और गायकवारके महलमें क्या होताहै ? उ०—जबसाहब हवाखानेजातेथे तो जोखबरें सुना करतेथे उनको वापिसआकर मुझसे पूछतेथे—मुझको जोकुछ मालूम होताथा मैं कहदिया करताथा।

साहबप्रेसीडेंटने कहायह प्रश्नका उत्तरनहींहै गवाहने कहा कि बहुतसे लोगोंकाहक्क गायकवारने छीनलियाथाजो ऐसा न कियाजाता कि तो लोगोंको हक न पहुंचता॥

प्र०—क्या हरएकमुकद्दमेमेंतुमगायकवारके बरखिलाफथे? उ०—मुझको केवल चारमुकद्दमोंसे तअल्लुकथा और मुकद्दमोंसेकुछप्रयोजननथा। प्र०—हां, मैं पूछताहूं किजो मुकद्दमा तुम नेकिया वह गायकवार के बरखिलाफ था? उ०—हां, लोगों का रुपया गायकवार परचाहियेथा और वहनहीं देतेथेजो ऐसा न करता तो रुपया भी न मिलता। प्र०—परन्तु मेरे प्रश्नका उत्तरदो—तुमको जब अवसर मिलातो गायकवार के बरखिलाफ काररवाई की? उ०—जो मेरे विचार में दुरुस्त बातथी उसीतरह मैंनेकाररवाईकी। प्र०—मैं तुमसे यहनहीं पूछता मेरेप्रश्नकाउत्तरदो? उ०—मैने कोईबातऐसी नहींकी जिससे गायकवार की हानि हो। प्र०—मेरे प्रश्नका अबतक तुमने उत्तर नहीं दिया तुमने कुल काररवाई गायकवार के प्रतिकूल की॥

प्र०—मैं नहींसमझा किआपक्यापूछते हैं, सरजन्टबेलन-टायनसाहबने अदालतसे मुखातिबहोकर कहाकि मेरा प्रश्न तो स्पष्टहै उसका उत्तर मिलना चाहिये॥

साहब प्रेजीडण्ट नेकहा तुम मुस्तहक उत्तर पाने केहो परन्तु मैं नहीं देखता कि तुमको किसतरह से जवाब साफ मिलेगा। प्र०—मैं पूछताहूं जोमुकद्दमें तुमने कमीशनमेंपेश किये वह बरखिलाफ गायकवार के थे? उ०—यह मुकद्दमे ऐसे नथे जिनसे गायकवारकी कुछहानिहोकिन्तु वहमुक-द्दमे उसमुकद्दमेकी बाबतथे जोगायकवारसे लोगोंकारुपया चाहिये था। प्र०—करनैलफ़ियरसाहब जानतेथे कितुमउन मुकद्दमोंकी पैरवीकरतेहो? उ०—हांजानतेहोंगे। प्र०—कर-नैलफ़ियरसाहबके पासतुम बहुधाजाते थे? उ०—हां, अकसर जाता था और अबभी जाताहूं। प्र०—तुम्हारी यहीप्रकृतिथी

है। प्र०—तुम निश्चयकरके कहसक्ते हो कि उसको सिवा मासिक के और कुछदावा नहीं है? उ०—सिवाय तनख्वाहके और कुछदावानहीं करताहै। प्र०—तुमसे गायकवारसेहाल और पहिलेनेभी कभी रंजिश होगई है? उ०—थोड़ेदिन मुझको हिरासतमें रक्खाथा। प्र०—किसकारणसे? उ०—मिस्टरमा-लसनसाहब एसिस्टेन्टरजीडण्ट को भावसेंधिया ने कुछशिका-यतदीथी इसलिये भावसेंधियाको सरकारने मैाकूफकरदिया प्र०—मुझसे साफ २ कहोकि गायकवारहालने तुमपर कुछ जुर्मकायम किया था? उ०—मुझपर कोई जुर्मक़ायम नहीं किया नमुझको कभी क़ैदकिया॥

जब करनैलफियर साहबसे प्रश्न कियागया कि तुमनेभावपूना करसे इसखरीते का हालजो दूसरी नवम्बरको भेजागया था सुनातो उन्होंनेवर्णन कियाकि हां मैंने सुनाथा—पसकरनैल फियरसाहबने तो इकरार किया कि तुमसे सुनाथा तुमकिसतरह कहतेहोकि मैंने नहींकहा? उ०—मुझे स्मर्ण नहीं। प्र०—तुम सौगन्दखासक्ते हो कि मैंने नहीकहा ? उ०—मुझे स्मर्ण नहीं कि मैंने करनैल फियर साहबसे कहा या नहीं। प्र०—तुमको औरखरीतोंकीभी इत्तिला नहींहुई नतुमनेकरनैलफियरसाहबसे उसका जिक्रकिया ? उ०—जब मैंनेसुनाकि खरीताजाने वालाहै मैंने कनैलफियर साहबसे कहा परन्तु सजमूनकेमालूमन होनेसे कुछमुफस्सिल हालखरीतेका नहीं कहा। प्र०—तुम क्योंकर जानते थेकि खरीतेलिखे जातेहैं ? उ०—लोग दरबार में बातें किया करते थे वहां मैं सुनाकरताथा। प्र०—तुम गायकवार के नौकरों को जानतेहो। उ० मैं बड़ौदे के सम्पूर्ण निवासियों को जानता हूं। प्र०—तुमसालिमको जानतेहो ? उ०—हां इतना जानताहूं कि वहरजीडन्सीमें आयाकरताथा प्र०—तुमकभी गायकवार केमहल में सालिम की भेंटके लिये नहीं गये ? उ०—नहीं। प्र०—तुमभी महलको नहींगये ? उ०—जबकोई कामहोताथा चलाजाता था परन्तु जबसेकमीशन बैठीहै नहींगया प्रेजीडण्टसाहब ने कहा कौनसी कमीशन का जिक्र है ? उ०—करनैल मीड साहबकी कमीशनका, उससे पहिले इससे अधिकन हींगया। प्र०—तुम दामोदरपन्थको जानतेहो ? उ०—हांदूरसेदेखा है बातीनहींकी प्र०—वर्णन करोकि बापसाहब कौन हैं ? उ० खाण्डेरावमहाराजाकी अविवाहितास्त्रीसे यहलड़काहै। प्र० यहमनुष्यगद्दीका दावीदार है ? उ०—नहीं वह उसतनख्वाह का दावीदारहै जोउसको मिलाकरती थी। प्र०—परन्तु तुम जानतेहोकि अबउसको गद्दीका दावानहींहै ? उ०—उसको क्योंकर गद्दीकादावाहोसक्ताहै क्योंकिवहमदखूला औरतसे

सरजन्टवेलनटायन साहबने कहा कि यह इजहार किस कानून और कायदेके अनुसार गवाहीमें दाखिल होसक्ते हैं होसक्ते हैं अगरआसकायदेके अनुसारगवाहीमें दाखिलकिये जाते हैं तोयहकायदा आसनहीं है॥

प्रेजीडराट साहबने कहायह इजहार गवाहीमें दाखिलहो सक्ते हैं क्योंकितहकीकात कीतरफ आपकोगौरकरनाचाहिये सिवा इसकेमिस्टर रिची साहब इजहार लेनेके अधिकारी थे औरउनके लियेहुवेइजहार काफीसमझे जासक्ते हैं फिर वह इजहार पेश होकर गवाही में दाखिल किये गये और उनके इजहार भीदाखिलेहुये जिनकी तसदीक होचुकीथी॥

सरजराट वेलनटायन साहबके प्रश्न।

प्र०—दमोदरपंथ आपकेचार्जमेंहैं? उ०—नहीं। प्र०—गजानंद वतिलके चार्जमेंहै? उ०—मिस्टरसूटर साहबके चार्जमेंहै प्र०—आपजानतेहैं किवह खास किस कीहिरासतमेंहै? उ० मैंनहीं जनता॥

इज़हार अब्दुल अली॥

खानबहादुर अब्दुल अलीकेइजहार मिस्टरअनवरारटीसाहबने लियेउन्होंने वर्णनकियाकि मैं बम्बईकी पुलिस काइन्स्पेक्टरहूं दिसम्बरकेमहीनेमें मिस्टरसूटरसाहबके साथ बड़ौदेको आयायाशायद ९ दिसम्बरथी उसीदिनसे मैंबड़ौदे मेंहूं और मिस्टरसूटरसाहब कीसहायताकरताहूं यहसुनकर सरजराट वेलन टायनसाहबने कहाकितुमठहरोहमकरनैल फियरसाहब कोबुलाते हैं॥

करनैल फियर साहब बुलाये गये।

प्रेजीडराट साहबनेउनसेकहाकि आपकुरसीपर बैठें सरजन्ट वेलनटायन साहबने कहाहां कुरसीपर बैठें परन्तु ऐसेस्थान परजहां मैंभी उनको देख सकूं करनैल फियरसाहब नेकहा हां मैं ऐसीही जगहपर बैठूंगा सरजराट वेलनटायन साहबने

उ०—मैं इङ्गलिस्तानमें था। प्र०—जबकि रैजोल्यूशनगवर्न मेरा
नारीहुआ तोतुमको उत्तरदेनेका मौकाथायानहीं ? उ०-
इङ्गलिस्तानमेंथामौकाकहांसेपाता। प्र०—तुमकोदूसरेजोल
शनकी खबरथी किकोईऐसा रैजोल्यूशन नारीहुवाहै ? उ
साहब मुझेखबरनथी जबमैं इङ्गलिस्तानसे आयातब मुझको
खबरहुई। प्र०—जबतुम इङ्गलिस्तानसेआये तोउससमयक्यास
कारने तुम्हारेनिकट रैजोल्यूशन उत्तरदेनेकेलिये भेजा
उ०—नहीं हमनेआप दरख्वास्तकरके मंगायाथा। प्र०—जब
रैजोल्यूशन तुम्हारेमंगानेके अनुकूल आयातो तुमनेजो इ
जामतुम्हारेऊपरलगायेथेसबका उत्तरदिया ? उ०—हांमा
मैंनेसबका उत्तरदिया। प्र०—जबतुमइङ्गलिस्तानसे आयेतो
पहिले पालनपुरमें ठहरेथे ? उ०—हांसाहब पालनपुरमें
ठहराथा और जिसदिनसे मैंहिन्दुस्तानमें आया उसदिनमें
महामारीसिकपाया। प्र०—बड़ौदेमें जोतुमआयेतो अपनीनौ
पर आयेथे ? उ०—हांसाहब तरक्कीपर आयाथा॥

परन्तु वहभी नहा किगो खास २ और उत्तम २ बातें हैं वह छोड़दीगई हैं इसकेउपरान्तसरजरट वेलनटायन साहबने पूछा कि आप नूरुद्दीन बोहरे को जानते हैं? उ०—मैं नाम नहीं जानताहूं परन्तु एकबोहरेका मुकद्दमा उसकमीशन लेंद्रायर था जोपिछले वर्षमें जमाहुईथी। प्र०—शायद वहयही मनुष्य होगाआपजानते हैंकि गायकवारने इसमनुष्यको बहुतभारी दण्डदिया था? उ०—हां यदिवही मुकद्दमा और उसीमनुष्य कोउसमुकद्दमेसे तअल्लुकहै तोयहवहीमनुष्यहै। प्र०—उसके एक सम्बन्धीको गायकवारने बहुतसे बेदलगवायेथे और यह दण्डदेकरभीपांचहजाररुपयाजुर्मानाकिया? उ०—हां उसपर जुर्माना हुवा था परन्तु मुझे जर्मानेकी संख्या स्मर्ण नहीं सरजरट वेलनटायन साहबने अधिष्ठाताओंसे कहाकि मैंनहीं चाहताकियह कागजकरनैल फियरसाहबका आसमें समझर कियाजाय करनैल फियरसाहब जिसप्रकारसे चाहें इसका- गजको रक्खें साहब प्रेजीडेरटने कहा कि नूरुद्दीन बोहरे के मुकद्दमेका करनैल फियरसाहबने कुछउत्तर नहींदिया सर- जरट वेलनटायन साहब ने कहा कि करनैल फियर साहब उत्तर देचुके हैं इसके उपरान्त सरजरट वेलनटायन साहबने करनैलफियर साहबसे पूछा कि इस बोहरेने गायकवार के ऊपरनालिशकीथी वा नहीं? उ०—हांउन दिनोंमें नालिश कीथी-प्रेजीडेरटसाहबनेपूछा कि जिनदिनोमें कमीशनएकत्र हुईथी उसने नालिशकीथी? उ०—मैंनाम खूबनहीं जानता परन्तु एक बोहरेको जानताहूं॥

ऐडवकेटजनरलने दुबारह इज़हार करनैल फियर साहब के लिये॥

प्र०—यहफिकरेजोतुम्हारेसम्मुखपढेगयेयहगवर्न्मेरटरेजो- ल्यूशनसेचुनेहुयेहैं उ०—हांसाहबगवर्न्मेरटरैजोल्यूशनसे चुने गयेहैं। प्र०—मालूमहोता है कितुम्हारे मुफादमतलबके फिकरे उसमेंसेनहींलियेगयेहैं? उ०—हां साहब नहीं लियेगये। प्र० उस समयरैजोल्यूशन गवर्न्मेरटसेजारीहुवाथा तो तुमकहांथे?

इसलिये सम्पूर्ण वृत्तान्त विस्तार से स्मर्ण नहीं जो कागजात निजकी कचहरीकेथे वहकईदिनतक वन्दरहे फिरजौडन्सी में मंगायेगये कुछकागज अवभी गायकवारके महल में बंद हैं जो कागजरेजीडन्टीमें मंगायेगयेवहपुलिसके पहिरेमें रक्खेगये ॥

साहबप्रेजीडेन्टने पूछाकियह कागजरेजीडन्सी में किसने मंगवायेथे? उ०-सरकारकी आज्ञानुसार गयेथे औरजबयह मोहरेंतोड़ी गईं तो सम्पूर्ण कारकुन निजके महकमेके और मिस्टरसूटर साहब उपस्थितथे जिसदिन दामोदरपंथ पकड़ा गया मुझको याद है कि पकड़ेजानेके पीछे मैंने उसको देखाथा मैंनेउससेकहाथा किअगरतुमसही २ हालबयान करोगेतो तुम्हाराअपराध क्षमाहोजावेगा किन्तुताजीरात हिंदकीजिस दफामें अपराधके क्षमापनका वर्णनलिखाहै वहभीमैंने उसको दिखाईथी इसके विशेष मैंने उससे यहभी कहाथा किनाना जीवतिल आदि ने तो अपने २ अपराधों का इकरार किया यहीबातेंदामोदरपंथसेमैंने कहीथीं और कहाथाकिभलेप्रकार समझकर इसका उत्तर दो-इसके उपरान्त कमीशन के मेम्बर टिफनखाने को गये भोजन से सुचित होकर फिर एकत्र हुये साहबऐडवकेटजनरलनेप्रश्नकियाकि तुमनेकहाकि दामोदर-पंथकोदेखा और उसकोसमझाया था तुमने उसकेपीछे भीउसे देखा? उ०-मैंनेदोतीन घण्टेके उपरान्त फिरउस को देखाथा जबसरल्यूइस पीलीसाहबने उसकाअपराध क्षमाकरदिया तो उसकेइजहारहुयेथेयहमनुष्यडेरेमेंबुलायागयावहांमैंनेउसको देखाथा सरल्यूइसपीली साहब भी उसडेरेमें थे उसवक्त उसने इजहारदियेऔरमिस्टररिचीसाहबने उसकाइजहारलिखा था मैंहेमचन्दगवाहकोजानताहूं दामोदर पंथके इजहार केपहिले मैंनेउसकोदेखाथा।प्र०-कितनीमुद्दतकेपहिलेतुमनेउसकोदेखा था?उ०-पांचछःदिनपहिलेमैंनेउसकोदेखा उसकाबयान सब अशुद्ध है किमैंनेउससे जबरदस्तीइकरार कराया।और यह भी गलतहैकि जोकुछजीचाहा मैंने लिखलिया और यह बयानभी

कागजों परस्याही पड़ीहै ते। मैंने सूटर साहबसे इत्तिला की जबसूटर साहब आयेतो मैंनेसम्पूर्ण कागजोंको देखाकईबातें और भी उसमें से मालूम हुईं। प्र०—आप उसकिताब की तहरीर का हाल बयान करसक्ते हैं? उ०—हां, कुछ वरक उसकिताबसेनिकालकर नयेवरक़लगा दियेगयेथे। प्र०—कि- ताबदिखाओ कि तुम्हारी क्यागरजहै? उ०—देखिये इसपंक्ति कालेख और पंक्तियोंकी निस्बत अलाहिदाहै। प्र०—परन्तुयह वरक़ एकदूसरेसे जोड़ेहुये हैं जब तुमने किताबों को कुरक किया इसकिताबकी यहीहालत थी? उ०—हां यहीहालत थी परन्तु उससमय वरक़ऐसे मैलेनथे अब क्योंकि लगने से मैलेहोगयेहैं। प्र०—तुमको क्योंकर मालूमहुआ कि बनिस्बत और पंक्तियोंके यह सतरनई लिखीहुई है? उ०—यह सतर हालकीलिखी मालूमहोती है।

हूसेरी। उ०—इनलोगोंका साम्हनाइसलिये करायागया था कि ठीक २ हाल मालूम हो जावे। प्र०—यदि नरसूहर एक बातका इन्कार करता तो आपक्याकरते ? उ०—अगरकोई सुबूतन होता तो छुड़ादिया जाता। प्र०—तुम्हारामतलब यह है कि तुमनरसू को रिहाकर देते ? उ०—हां जब साहब आज्ञा देते। प्र०—तुम बालाओ कि जबतुम महल में गयेतो सबकागजकुर्क करलिये थे ? उ०—हां। प्र०—मिस्टर सूटर साहब वाकोई दूसरा अफ्सर मौजूदथा जबकि किताबों की मोहरें तोड़ीगई ? उ०—उससमय मिस्टरसूटर साहब मौजूदथेऔर मैंभी था। प्र०—मैं तुमसे यह प्रश्नहीं करतामेरा प्रश्नयहहै कि जबकागज तुम्हारे अधिकार में थेतो मिस्टरसूटर साहबने उनको देखाथा ? उ०—जिससमय मैंने उनकागजों कोदेखा तोमिस्टरसूटर साहबकोभी दिखादिया था। प्र०—कितनीमुद्दततक तुम्हारे कब्जेमें यहकागजात रहे ? उ०—मेरेकब्जे में कभी यहकागज नहीं रहे पुलिस और जंगीगार्ड में थे। प्र०—ऐप्यारेसमझ करउत्तरदो जबतुमनेखोलकर कागज देखे तोउससे कितनी देरपीछे मिस्टरसूटर साहब आये थे ? उ० तुरन्तही मिस्टरसूटरसाहब आयेथे। प्र०—तुरन्तसेतुम्हाराक्या मतलबहै ? उ०—दस पन्द्रहमिनटकेपीछे। प्र०—तुमने उनसब कागजोंको कुर्ककिया था ? उ०—हां। प्र०—कुर्क से कितनी देरपीछे मिस्टरसूटर साहब आयेथे ? उ०—किन कागजोंको आप कहते हैं। प्र०—वह कागज जो आपने कुर्क किये थे ? उ०—जितने दफ्तरथे उनकेसब कागजों को बन्दकरके मोहर करदीगई थी। प्र०—उनदफ्तरोंमें कोई मनुष्य जाभी सक्ता था ? उ०—मैं और कप्तान जेकसन साहब दफ्तरमें जासक्ते थे। प्र०—तुम हर एक कागज कोदेख सक्ते थे ? उ०—हां। प्र०—तुम कहते होकि पाव घंटेतक मैं कागज देखता रहा उसके पीछे मिस्टरसूटर साहब आये ? उ०—हां। प्र०—इस अवसरमें तुमनेसब कागजदेख लियेथे ? उ०—जब मैंने देखा कि

है—सरजन्ट बेलनटायन साहबने तीनबेर कहा, अब, अब, अब ? उ०—अबगणपति रावसहायक मोहतमिमहै। प्र०—वहमनुष्य तुम्हारे करीब कारिश्तेदार है ? उ०—यह मेरा सम्बधी है। प्र०—तुमको अपनी आबरू का बड़ा खयाल है और लोगोंको यहसंदेह है किगवाही तुम्हारी बनावट की है ? उ०—ऐसा खयाल मेरे लिये कभी नहीं हुआ। प्र०—आयु भर में ऐसा इलजाम तुमपरकभी नहीं लगा ? उ०—नहीं। प्र०—जबरियासत कोटाकीगद्दी नशीनीका मुकद्दमा था तो तुमवहां उपस्थितथे ? उ०—हांमैं वहां उपस्थित था। प्र०—वहांबड़ेदरजेके अफ्सर पुलिसतुमथे ? उ०—हांमैंअफ्सरपुलिसथा औरमैंने कुलतहकीकातकी। प्र०—वहमुकद्दमा प्रथम मिस्टरकागलन साहबके सन्मुखपेशहुआथा ? उ०—जो मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके रूबरू पेशहुआ थामैंने उसकीतहकीकातनहीं की। प्र०—इससे तुम्हारायह मतलबहैकिजो मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके रूबरूपेश हुआ था।उसमें तुमखास अफ्सर पुलिस थे ? उ०—उसमुकदमे कीतहकीकात मैंने नहींकी। प्र०—क्या तुमने उस मुकद्दमे कीभी तहकीकात नहीं कीजो मिस्टररिची साहबके रूबरू पेशहुआ था ? उ०—मैं एकदफा मिस्टर रिची साहबके रूबरू गयाथा मिस्टरमैलवल साहब ने मुतरज्जिमसे कहा कि गवाह ने मिस्टर कागलन साहब कानाम भी लिया था॥

सरजण्ट बेलनटायन साहबने कहा अफ्सोस है कि तुमसब कासब तर्जुमा नहीं करते तुमने मिस्टर कागलन साहब का नामनहीं लिया॥

गवाहने कहाकि यदिमैंआपका प्रश्नअच्छीतरहसमझूंतो उसकाउत्तर देसकूं। प्र०—मुझेआश्चर्यहै कितुम क्योंकरजवाब साफदोगे मैंपूछताहूं कितुमउसमुकद्दमेमें जोमिस्टर कागलन साहबके रूबरूपेशहुआथा पहिलेदरजेकेअफ्सर पुलिसथे ? उ०—नहींमैंने उसमुकद्दमे कीपूरीतहकीकात नहींकीथीकेक्छ

मुस्तग़ीसहैपरन्तुमुक़द्दमेकीसमाअतकेसमयमैंमौजूदनथा।प्र०
लेकिन बरवक़्ततहक़ीक़ात मुक़द्दमेके तुममौजूदथे ? उ०—मैं
मौजूदनथा जबमुक़द्दमा दौरासुपुर्द हुआ उस समय मुझको
तअल्लुक़ हुआथा। प्र०—इसवर्णनसे तुम्हारा क्यामतलब है
कितुमको उनमुक़द्दमेसे कुछतअल्लुक़ नथा जिसकी समाअत
मिस्टरजस्टिस वैसटके रूबरूहुईथी ? उ०—जबमुक़द्दमे की स-
माअतहुईथीमैं वहांनथापरन्तु मुक़द्दमेको मैनेमुरत्तिबकिया।
प्र०—तुमको स्मर्ण होगा कि मिस्टर जसटिस वैसट साहबने
कहाथाकि सैकड़ों मुक़द्दमेमेरे सामनेआये औरमैंने उनका
निर्णयकिया परन्तु ऐसामुक़द्दमाकोई नहींआया जैसा कि
यहमुक़द्दमाहै साफ़मालूम होताहैकि यहमुक़द्दमा बनावट
काहै ? उ०—मैं आपके इसप्रश्नको नहीं समझा। प्र०—मेरा
प्रश्न यहहैकि तुमजानते होकिमिस्टर जस्टिसवैसट साहबने
इजलासमें यहकहाथा ? उ०—कहाहोगा मैं उससमय वहां
नथा। प्र०—तुमनेसुनाथा औरप्रकारसे तुम्हेंइत्तिलाहुईहोगी
कि साहबने तुमारी निस्बत ऐसा कहाथा।उ०—मुझको कुछ
ख़बरनहीं सिवाइसकेमैंसाबित करसक्ताहूं किमुद्दाअलेहकी
बातोंपरजस्टिस वैसट साहब आगये यदि अदालतको
स्वीकारहोतो उनकाग़ज़ातसे जो मेरे पास वर्त्तमान हैं इस
बातको प्रतीतकरादूं ॥

गजानन्द वतिलके दुबारह इजहार हुये ॥

प्र०—दरमियान उसवक़्तके जबसेकि उनकाग़ज़ोंपर मोहर
लगाईथीऔरफिर वहमोहरतोड़ीगईतुम्हारेक़बज़ेमें कभीवह
काग़ज़आये? उ०—नहींआये।प्र०—तुमनेउनकाग़ज़ोंकोक्या
किया?उ०—साहबमैंनेउनकाग़ज़ोंको दोघण्टेतकदेखा। प्र०
जबतुमनेउनकाग़ज़ोंको आजमाइशकीथी उससमयकोईकार-
कुनभीथा ?उ०—हांकारकुनथे। प्र०—जबतुमने उन काग़ज़ों
परस्याहीके धब्बे देखे तोतुमने क्याकिया ? उ०—मैंनेउनका-
ग़ज़ोंको सुटरसाहबके पासभेजदिया। प्र०—तुमरिचीसाहबके

करदिये। प्र०—यह बताओ कहांकहां दूसरी स्याहीसे लिखा है? उसने शीघ्रही जहां२ दूसरी स्याहीसे लिखाथा बतादिया॥

मूटर साहब के इज़हार॥

साहब ऐडवकेट जनरल ने फ्रैंक हैनरी सूटर साहब को बुलाकर उनके इजहार लेना शुरू किये उन्होंने वर्णन किया कि मैं कमिश्नर पुलिस और कम्पीनियन आफदी स्टार आफ इण्डिया का हूं ९ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को इस मुक-द्दमेकी तहकीकातके लियेबड़ौदेको आयाथा जिसमें कि प्र-सिद्धथाकि करनैलफियरसाहब को विषदिया गया मेरे साथ खानबहादुर अकबरअलीऔर उनका पुत्र खानबहादुर अब्दु-लअलीऔर रावबहादुर गजानन्दवतिलयेमैंभूलगया रावग-जानन्दवतिल मेरेपहुंचनेके कईदिन पीछेआयेथे मुझेस्मर्णहै किमैने इसमुकद्दमेमें अमीनाआयाका इजहार लियाथा१९ दिसम्बरको पूबजेके समयउसके मकान पर जो बोवी साहबके अहातेमेंहै देखाथा उसदिनउसने विस्तारसे वृत्तान्तवर्णननहीं कियान मैने उसदिन उसके इजहार लिये क्योंकिवह बहुत बीमारथी जोकुछ आयाने उसदिन मुजसे कहाथा मुझेस्मर्ण है अर्थात् उसनेवर्णन कियाथाकिमैंश्रीमान् मल्हररावके पास दोदफागईथीऔररुपयाभीपाया क्योंकिउसेउससमयबड़े वेगसे ज्वरथामुजसेहाथजोड़करकहाकिमेरे इजहारफिरलीजियेगा मुजको बोलनेकी सामर्थ्य नहींहै मुझेस्मर्ण है किमेरे जानेके पहिलेकोई पुलिसका आदमी आयाकेपासनहींगया था १८ दिसम्बरको मैंनेआया का इजहार लियाथा अदालतमेंजो इ-जहार है मेरे लिये हुयेहैं औरमेरे हाथके लिखेहुये हैं मुज को मुतरज्जिम की जरूरत नहीं है मैं हिन्दुस्तानी भाषाभले प्रकार समझताहूं २१ दिसम्बरको मैनेअस्पतालमेंजाकरफिर आयाकेइजहार लियेइनदोनो इजहारों पर [डी] अक्षर का चिन्हलगायागया डाक्टर सीवर्डसाहब १९दिसम्बरको रेजी-डन्सीमें आयेऔर मुजसेकहा किआयाको अबआराम है वह

सरजन्ह वेग्गनटायन साहबने कहा क्या आपनेउसके इज़हार हिन्दुस्तानी भाषामें लिखेथे ॥

गवाहने कहा मैने हिन्दुस्तानी बोलीमेंपूछेथे परन्तुअंगरेज़ीभाषामें लिखेगये जबउसके इज़हार लिखेगये तो उसको हिन्दुस्तानी भाषामें सुनायेगयेथे ॥

मुझेस्मर्णहै किउसने अपनेइज़हार परदस्तख़त भीकियेथे उसकोकिसी प्रकारकी धमकी नहीदी नकुछलालचकी सिवाइन इज़हारोंके औरभी कुछ बातें उसने मुझसे कीथीं उसके कानमें बालेपड़ेहुयेथे वहअति उत्तमथे औरउसने होरेभी पहरे थेयदि मैने ऐसेबालेकभी बनेहुये नहीदेखे थे मैनेउससेपूछा यहबाले कहांके बनेहुयेहैं उसनेकहा बड़ौदेके बनेहुयेहैं येह बातें उसके इज़हार होनेके पहिले हुई थीं इनपर मैने (ए) (बी) (सी) अक्षरोंके चिन्ह करदिये थे अदालत में जोकितावें रक्खीहैं वहीहैं उनपर मेरेदस्तख़त भीहैं ॥

पहिले इजहार लियेगये तोमैं बड़ौदे में मौजूद नथा मैंने बम्बईसे फिरवापिस आकर३-४-५फरवरी सन् १८७४ ई० को इसके इजहार लिये इसके इजहारयहहैं मोसूटर साहबसे इजहार लेकर शामिल मिसल ऊये और उसपर नम्बर२ (जी) अक्षर का चिन्ह कियागया फिर गवाह ने बयान किया कि मुझको थोड़े से हिसाब के कागज दिखलाना याद है उसमें कहीं कहींस्याहीके धब्बे पड़े ऊये थे २० फरवरी को यह कागज़ हिसाब के देखे थे याशायद जनवरी मेंदेखेहों तारीख अच्छी तरह स्मर्ण नहीं॥

एकपुलिन्दा कागज़कागजानन्द मेरेनिकट लायाथाऔर मुझसे कहाकि डेरेमें चलोहिसाबके कागज़ देखे जाते हैमैं दूसरे एकडेरेमें रहताथा औरहिसाबके कागज़ दूसरे डेरे में रहतेथे जबमैं वहांगया तोक्या देखा किकाई हिन्दुस्तानी कारकुन अर्थात्क्लार्क उनहिसाबके कागजों कोदेखरहेहैं मैंने कुछकितावेंऔरभी वहांरक्खी देखींजिसमें कई जगह परसि याहीपडीऊईथी वहांदेरतकमैंबैठारहा जोकारकुन उनका- गजोंको देखरहेथेवह उन्हींकेलिखेऊये कागजथे और महल मेंआयेथे उनमेंएकका नामबलवन्तराव थामैंने हेमचन्दऔर फतहचन्द काइजहार लियाथा मुझको स्मर्णहैअदालतमें जो इजहार रक्खेहैं मेरेही हाथके लिखे ऊये हैं ६ फरवरी को करनैल वारटनसाहबके अहातेमेंयह इजहार लियेथेसररि- चर्ड मीडसाहबने पूछाकि किसतारीखकोतुमने यह इजहार लियेथे गवाहने कहाकि ६ फरवरीको लियेथे उसनेहिन्दु- स्तानीभाषामें इजहार दियेथे जिसदिन अंगरेजीमें मैंने उस केइजहार लियेथेउसीदिनमरहटीया गुजराती बोलीमेंउसके इजहार लिखे गये थे मैंने पूछा कि तुम हिन्दुस्तानी बोली जानतेहो तबउसने कहाकि मैं जानताहूं तोमैंने हिन्दुस्ता- नी भाषामें उससे प्रश्नकिये॥

सरजन्ट वेलनटायन साहबने कहा क्या आपनेउसके इज़-हार हिन्दुस्तानी भाषामें लिखेथे॥

गवाहने कहा मैंने हिन्दुस्तानी बोलीमेंपूछेथे परन्तुअंगरे-जीभाषामें लिखेगये जब उसके इजहार लिखेगये तो उसको हिन्दुस्तानी भाषामें सुनायेगयेथे॥

मुझेस्मर्णहै कि उसने अपनेइजहार परदस्तखत भीकियेथे उसकोकिसी प्रकारकी धमकी नहीदी नकुछसख्तीकी सिवा-इन इजहारोंके औरभी कुछ बातें उसने मुझसे कीथीं उसके कानमें बालेपड़ेहुयेथे वहअति उत्तमथे औरउसने हीरेजड़ेथेयदि मैंने ऐसेबालेकभी बनेहुये नहींदेखे थे मैनेउससेपूछा यहबाले कहांके बनेहुयेहैं उसनेकहा वड़ौदेके बनेहुयेहैं यह बातें उसके इजहार होनेके पहिले हुई थीं इनपर मैंने (ए) (बी) (सी) अक्षरोंके चिन्ह करदिये थे अदालत में जोकिताबें रक्खीहैं वहीहैं उनपर मेरेदस्तखत भीहैं॥

जबहेमचन्द फतहचन्दकेइजहार कमीशनमें लियेगयेइसी हेमचन्द केइजहार मैंनेलियेथे सोउसके अंगरेजी इजहार अदालतमें दाखिल किये॥

औरउनपर(एच)अक्षर नम्बर२कानिशानकियागयासाहब प्रेसीडण्टने कहा यह इजहार दिये हैं जिनकी निस्बत सर-जन्ट वेलन टायन साहब उज्ररकरते हैं॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहानहीयहवहइज़हारनहीं है सरजन्ट वेलनटायन साहब मरहठी बोलीपरउज़र करतेहैं परन्तु उनइज़हारों कोभीथोड़ी देरके पीछे दाखिल करूंगा इसकेउपरान्त सुटरसाहबनेवर्णन कियाकि बलवन्तरावजिसने हिसाबकी जांचकीथीकभी हिरासतमें नहींरहामैंउसकेनाम सेवाकिफ नहींहूं दोतीन दिनहुये किउसके इजहार कमी-शन के सम्मुख हुये थे॥

सरजण्ट वेलन टायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—मैंने यहबात समझीहै किपहिले आपने नरसूसे बातें

कोंफिर उसको आपसरल्यूइस पीलीसाहबके हुजूर लाये और यहपूर्बीक्त साहबके हुजूर राजोक्त आ किजोकुछ मैं जानता हूं वर्णनकरूंगा ? उ०—हां। प्र०—तुमने उसदिन उसके इज-हारनहीं लिखे ? उ०—उसदिन उसने केवल बयानकिया था लिखे नहींगये थे। प्र०—उस दिन जो वार्त्ता हुई कोई लेख आपके पासनहींहै ? उ०—उसदिनका लिखाहुवा कुछ हाल मेरेपास नहीं है। प्र०—उस दिन उसके इजहारों का लिखा जाना कुछकठिन था ? उ०—मैंइस मुकद्दमे में और २तहकी-कात करता था उससमय मुझको अवकाश नथा। प्र०—मा-लूम होताहै किआपकी वह तहकीकात जरूरीथी ? उ०—हां बहुत जरूरीथी। प्र०—उसतहकीकात सेबढ़कर औरकोईबात नथी ? उ०—हां बढ़कर न थी जोआपचाहें तोमैं अपनारोज नामचा दिखा सक्ताहूं किउसदिन मुझकोक्याकाम था। प्र० मिस्टर सूटर साहब मैं जानताहूं किउसदिन आप को बहुत कामहोगा रोजनामचेके दिखानेकी कुछ आवश्यकता नहींहै क्याआपने केवल इसीकारण इजहारनहींलिखे ? उ०—हांइसी कारणनहीं लिखेऔर मैंजानता था कि नरसूजंगीगार्ड में है औरकोई उसके पासनहीं जासक्ताहै नकुछसिखासक्ताहै। प्र० क्याआपके पुलिसके आदमीनहीं जासक्तेथे ? उ०—हांपुलिस केआदमी। प्र०—फिरआपके इसबातके कहनेसे क्या मतलब है किकोई मनुष्यनहीं जासक्ताथा ? उ०—मेरा मतलब यहहैकि कोईदूसरा मनुष्यउसकेपास नहींजासक्ताथा। प्र०—जबतुमने तीनदिन केपीछे उसकेइजहार लियेतो उसकाबयानवही था जोउसने पहिलेदिन वर्णनकिया ? उ०—हांवहीथा जोउसने २३ दिसम्बरको वर्णन कियाथा और २५ दिसम्बर कोउसको लिखलिया॥

गजानन्दवतिल फिरबुलाया गया॥

मिस्टर अनवरारटोसाहबने फिरउससे प्रश्नकिये उसनेवर्णन कियाकि मैं हेमचन्दफतहचन्दको जानताहूं कि उसने सूटर

कीफिर उसको आपसरल्यूइस पीलीसाहबके हजूर लाये और यह पूर्व्वीक्त साहबको खबर थी कि आ किमैं कुछ मैं जानता हूं वर्णन करूंगा ? उ०—हां। प्र०—तुमने उस दिन उसके इज़हार नहीं लिखे ? उ०—उस दिन उसने केवल बयान किया था लिखे नहीं गये थे। प्र०—उस दिन जो वार्त्ता हुई कोई लेख आपके पास नहीं है ? उ०—उस दिन का लिखा हुआ कुछ हाल मेरे पास नहीं है। प्र०—उस दिन उसके इज़हारों का लिखा जाना कुछ कठिन था ? उ०—मैं इस मुकद्दमे में और २ तहक़ीक़ात करता था उस समय मुझको अवकाश न था। प्र०—मालूम होता है कि आपकी वह तहक़ीक़ात जरूरी थी ? उ०—हां बहुत जरूरी थी। प्र०—उस तहक़ीक़ात से बढ़कर और कोई बात न थी ? उ०—हां बढ़कर न थी जो आप चाहें तो मैं अपना रोज़नामचा दिखा सक्ता हूं कि उस दिन मुझको क्या काम था। प्र० मिस्टर सूटर साहब मैं जानता हूं कि उस दिन आप को बहुत काम होगा रोज़नामचे के दिखाने की कुछ आवश्यकता नहीं है क्या आपने केवल इसी कारण इज़हार नहीं लिखे ? उ०—हां इसी कारण नहीं लिखे और मैं जानता था कि नरसूजंगी गार्ड में है और कोई उसके पास नहीं जासक्ता है न कुछ सिखा सक्ता है। प्र० क्या आपके पुलिस के आदमी नहीं जासक्ते थे ? उ०—हां पुलिस के आदमी। प्र०—फिर आपके इस बात के कहने से क्या मतलब है कि कोई मनुष्य नहीं जासक्ता था ? उ०—मेरा मतलब यह है कि कोई दूसरा मनुष्य उसके पास नहीं जासक्ता था। प्र०—जब तुमने तीन दिन के पीछे उसके इज़हार लिये तो उसका बयान वही था जो उसने पहिले दिन वर्णन किया ? उ०—हां वही था जो उसने २३ दिसम्बर को वर्णन कियाथा और २५ दिसम्बर को उसको लिख लिया॥

गजानन्द वतिल फिर बुलाया गया॥

मिस्टर अनवरारटो साहब ने फिर उससे प्रश्न किये उसने वर्णन किया कि मैं हेमचन्द फतहचन्द को जानता हूं कि उसने सूटर

हमसाथचलेंगे-मिस्टरसूटरऔररिचीसाहब नेरावजीके बयान का मुझसेज़िक्रकियाथा मैनेकहाकि रावजीको मैंभी देखना चाहता हूं जब मैने उसको देखातोउसने मुझसे वही बर्णन कियाथाजो अबकमीशनके सन्मुखइजहार दियाजोकुछ उसके मनमें आयामुझसे कहाऔर किसी मनुष्यने रावजीसे एतिराजनहीं कियादूसरे दिन बृहस्पतिवार थी जबमैं सीढीसे उतरता था मैने सूटर साहब से कहाकि आपमेरेसाथ चलियेमैं शीघ्रही महाराजा साहबसे कहूंगाकि विषदिये जानेमें आपका नामभी आयाहै तबमिस्टर सूटरसाहब ने कहा कि नरसूनेभी सबबातोंको क़ुबूल कियाहै जब महाराजा साहब मेरेनिकट आयेसूटर साहबमेरेसाथ महाराजासाहबके पास गयेमैने महाराजासाहबसे सबबातें वर्णनकीं और कहा कि आपभीहरतरहसे तहकीकातमें सहायतादीजिये जिससेसब हालस्पष्ट मालूमहोजावे महाराजने सहायता देनेकाइकरारकिया जब महाराजा साहबचले गयेतो मैने नरसूको देखा वहखानेके कमरेमेंबैठाथामैं नियतसमयपर उसकमरेमें गया और जमादारसे मैनेकहा यदि तुमको यह खयालहो किसब हालवर्णन करनेसे तुम्हाराअपराध क्षमाहोजायगातोयहबात कदाचित् न होगीमैं अपनीयथाशक्ति तुमको दण्ड दिलाऊंगा फिरमैंने कहाकितुमथोड़ीदेर अलगबैठकर अच्छीतरह सोचो और समझोफिरजो तुम्हारेमनमें आवे वर्णनकरना मैंनेसूटर साहबसेभीकहाकि जमादारकोभी समझादोकि उसकाअपराधक्षमानहोगा थोड़ीदेरतकजमादार चुपबैठारहा फिरएक होवेर मेरेपैरोंपर पगडी डालदी और उसने और भीकुछ बातें खुशामदकी कहीं वह मुझसे क्षमाचाहता था नहीं उसनेकहा किसरकार चाहेमुझको मारें अथवा जीतारक्खें मैंजोकुछ सचहै सरकार केसन्मुखवर्णन करदूंगा सोउसने उससब बयानकिया परन्तु उसकावयान लिखानहीं गया जोकुछउसने कमीशनके सन्मुख

खतकिये? उ०—हांसाहब उसने अपनेहाथसे उसपर दस्तखत किये साहब मिस्टर जीडग्गने कहा कि हेसचन्द्र नेक्या हिन्दुस्तानीभाषा मेंअपनेइज़हार दियेथे? उ०—हांसाहब कुछ हिन्दुस्तानी भाषा मेंइजहारदिये और कुछ गुजराती बोलीमें। प्र०—तुमतो कहते थे कि किसी और मनुष्यने अंगरेजीमेंलिखकर गुजरातीभाषा में उल्था किया था—एडवकेटजनरलने कहा कि सरल्यूइसपी-लीसाहबको बुलाओ औरहम उनसे कुछ प्रश्नपूछेंगे और सर-ल्यूइसपोली साहब अपनीकुरसी परबैठेंऔरअपने इज़हारदें॥

मरल्यू इसपीलीसाहबके इजहार॥

सरल्यू इसपीली साहबके इजहार ऐडवकेट जनरलने लिये उन्होनेवर्णन किया कि मैं एजण्ट गवर्न्नर जनरल हिन्द और इस्पीशियल कमिश्नर बडौदेका ३० चौथी दिसम्बर कीसंध्याको बड़ौ मेंपहुंचाथा बडौदेके पहुंचनेके पीछेपहिलेकामसेरा यह थाकिमैने मिस्टरस्वटर साहबको उससुकद्दमे की तहक़ीक़ात केलिये बुलायाजो करनेल फियर साहबके विष दिये जाने का उद्योग हुवाथा औरयह कारस्वाई उसहिदायतके अनुसार मैनेकी जोमुजको गवर्न्नमेण्टसे मिलीथी सो मिस्टरस्वटरसाहब मेरेपास नियतहुये और२८दिसम्बर कोवह मेरे पास पहुंचेमैने उनकेरहने केलियेएक रेजीडन्सीमें कमरादेदियाथा जोकमरा इनदिनों खानेकाहै उन्होंनेअपनी तहकीकात शुरू की मुझे स्मर्ण हैकिमैनेउससमय सुनाथा किरावजी हवालदारनेशेकुछ वर्णनकियाहै मैनेइसमुकद्दमे कीसबतहकीकात मिस्टरस्वटर साहबके सुपुर्द करदीथी २३ दिसम्बर के सुबहको मिस्टरस्वटर औररिची साहबमेरेपास आयेथेमेरी इच्छाथीकिवड़े दिनकी छुट्टियोंमें बम्बईकोजाऊंगव मुझेमालूम हुवाकि बहुतबड़ीएक बातप्रगट हुईहैतोमैंबम्बईन गया मिस्टरस्वटर साहब भी २१ दिसम्बरको बम्बईजानेवालेथे मैनेउनसेकहाकि २३तारीखतक आपभी नजाइये उसदिन खानाहोने वालाहै फिरआप और

और मैं उसपरतसदीक लिखदेताथा दामोदरपन्थ कोपकड़े जानेकेपहिलेसे मैंजानताहूं एकबेरपहिलेउसकोदेखाथाऔर शायददोतीनबातेंभी मैंनेउससेकहीथींउससमयजबकिमैंउस-सेवार्त्ता करताथा गायकवार भीआयेथे मैंउनसे वार्त्ता करने लगा जबगायकवार मुझसे बिदाहोनेलगे तोकहा कि दामो-दरपन्थ मेरेप्राईवेटसिक्रेटरी हैं मैंने गायकवारसे यशवन्तराव और सालिमके भेजदेने की दरखास्त कीथी यहदोनों मनुष्य रेजीडन्सीके अहातेमें क़ैदहैं दो बेर मैंनेउनको बुलायाथाजब पहिलीबेर उनको बुलायातो मैंकुछकाम करताथा वह गफ़्ती से शहर को वापिस आया जबवह भूल मुझको मालूम हुई तोमैंनेउनको शीघ्रहीफिर बुलाया श्रीमान्‌महाराजासाहबके वकीलउनकेपास आतेजातेथे कुछमनाहीन थीमैंयशवन्तरावको अपनीजातसेनहींजानताहूं यहकहता हैकि मैं गायकवारका सर्राफहूं इस मनुष्यपर कोईअपराध लगे हैं गवर्न्नमेण्टहिन्दकी आज्ञानुकूल उसकी तहकीकात मुलतवीरक्खी है जब कमीशन का निर्णय मालूम होजावेगा तबदेखाजावेगा॥

सरजनबेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—सरल्यूइस पीली साहबजब गायकवार आजाद थे तो आपनेउनकोबहुधादेखा होगा? उ०—निस्सन्देह मैंनेउनको देखा है श्रीमान्‌महाराजा मल्हरराव प्रतिदिन वाहूसरेदिनमेरेपास आतेथे। प्र०—जबआप बड़ौदे में आयेतो श्रीयुत वाइसरायके लेखसेविदितहोताहैकिआपको श्रीमान्‌ल्हरराबकेप्रबन्धमें स-हायता करनीअति कठिनमालूम हुई? उ०—मुझे हिदायतथी किजहांतक सम्भवहो श्रीमान्‌मल्हररावके प्रबन्ध में सहायता दूंऔर यहभी मुझकोआज्ञाथीकि करनैलफियर साहबने जो विष दियेजानेकीतहकीकातकीथी उसकोमैंपूर्ण करूं प्र०—सर ल्यूइसपीलीसाहब जबआपसे और श्रीमल्हरराव से वार्त्ता हुई तो आप को मालूम होता था कि वह आपका मत मानते थे

बयानकिया वहीमुझसे कहाथा और जो इज़हार श्रीमान्‌ग-
वर्न्नरजनरलको सेवामेंभेजेगये उसकामतलब उस इज़हारके
सदृश्याजो २६ दिसम्बरको मिस्टरसूटर साहबनेलियेथे मेरे
कहनेसे पहिलेदिन मिस्टरसूटर साहबने उसके इज़हारनहीं
लियेथे मैनेकहाथा किअभी उसेध्यान करनेदो फिरमैनेउस
विषयसेकोई काररवाई नहींकी २६ दिसम्बरको संध्याकेसमय
बाहरजाने केलियेकपडे पहिनताथा और अपनेकमरेमें टहल
रहाथा उससमय मैनेनरसूको देखाकि एकपुलिसके सिपाही
केसाथ रेजीडन्सीके बागकीओर जाताहै थोड़ीदेरके पीछेबड़ा
शब्दसुनपडा लोगरस्त्रियां और सहायता चाहतेथे जिसतरह
से हो सका मैं शीघ्रही सीढ़ी से नीचे उतरा जब बरासदे में
पहुंचातो क्यादेखा कि नरसूदोतीन सिपाहियों समेतभागा
हुवाआताहै मैने सिपाहियों से पूछाकि क्या हालहै उन्होंने
उत्तरदिया कि यहमनुष्य कुवेंमें गिरपड़ा था॥

प्र०—यह कुंवाकुछ गहराहै और आपनेवह कुंवादेखाहै?

उ०—हांमैं उस कुंवेको जानताहूं और कुंवोंसे वहगहिराहै
यहकुंवा पक्काबना हुआहै दूसरेदिन रविवारको मैनेनरसूको
देखाउसके किसीसंबन्धीने अरजीभेजीथी कि बगवर्न्नर इण्डिया
केपाससे मुजको गायकवारके पकड़े जाने की आज्ञा हुईतो
गायकवारके महलमें जितनेकमरेथे सबपर मोहर लगवादी
थीमैने कप्तान जेकसन साहब और एकपुलिसके हवालदार
कोइस कामपरनियत कियाथा मुझको उसहवालदारकानाम
स्मर्णनहींहै गायकवारकी गिरिफ्तारी केउपरान्तजोखास २
गवाहोंकेइज़हार लियेगयेउनइज़हारोंकीतसदीकमेरेसन्मुख
हुई कायदायह थाकि जबकिसी मनुष्यके इज़हार होतेजाते
थेतो पुलिसके लोगइज़हार कीसिदाकत के लिये गवाह को
मेरेपासलातेथे जो गवाहपढ़ा लिखाहुवा तो अपने इज़हार
कोआपहीपढ़लेताथा।जो अनपढ़हुवा तो उस को पढ़कर उस
इज़हार सुना दियेजाते थे वह सुनकर दस्तखत करदेता था

आपकेपास से और कोई चिट्ठी आवे जिसकी मैं तामील करूं॥

दस्तखत-दादाभाई नूरूजी।

सरल्यूइस पीलीसाहब ने उत्तर दिया कि दादाभाईने यह चिट्ठी शायद इसलिये लिखी कि सालिम और यशवन्त राव नगरको लौटकरगयेथे॥

सरजसटवेलनटायन साहबने फिर एक चिट्ठी पढ़ी वह यहहै॥

दादाभाई नूरूजीके नामपर॥

साईडियरसर—मेहरबानी करके महाराजासाहबसे कहिये किसालिम और यशवन्तरावके घरकी तलाशीकी जायक्योंकि मालूमहुवा कियहलोग पूर्वकेरेजीडरट के विष देनेमें संयुक्त हैं औरजोकि पुलिसकेकमिश्नर तहकीकात करतेहैंइसीसेतलाशी की आवश्यकता है पुलिसकेकमिश्नर यहभी चाहतेहैं किआप अपनी कचहरीकेकिसी अफसरके द्वारा उनके घरकीतलाशी करावेंइसचिट्ठी कोपुलिसकेकमिश्नरकेदो मनुष्यआपके निकट लेजावेंगे इनलोगों के सामने घरकी तलाशीहोनी चाहिये॥

दस्तखत ल्यूइसपीलीसाहब
लिखा हुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ई० ॥

फिरसरल्यूइस पीली साहबनेऔर दूसरी चिट्ठीभेजी और महाराजा साहबनेफौरन् उसकी तामीलकी॥

दादाभाई नूरूजीके नामपर॥

साईडियरसरसाहब कमिश्नर पुलिसनेमुझको इत्तिलादीकि यशवन्तराव और सालिमजो गायकवारके नौकरहैं जिनको कि आपनेभिजवा दियाथा वह बिलाहाजिरी और इशहार साहबकमिश्नर पुलिसकेपाससे लौटकर शहरकोगये कमिश्नर साहबकहते हैंकिइन लोगों परविषदेनेका अपराध साबित है इसलिये पुलिसके कमिश्नरसाहब चाहतेहैं किउनलोगोंको हिरासतमें रहनेकेवास्ते भेजदीजिये मेरीसलाह श्रीमहाराजा गायकवारको यहहैकि इसमुकद्दमेकी तहक़ीक़ात मेंहर

और अपने आधीनी देशका उत्तम प्रबन्धकरना चाहते थे ?
उ०-महाराज गायकवार तनमन से चाहते थे कि देशका अच्छाप्रबन्धहो और जोकुछमैं हिदायत करूं उसको वहकरें सरजन्ह वेलनटायन साहबने कहा मेरेसाथी ऐडवकेट जनरलने आपसे यशवन्तराव और सालिमके विषयमें कुछ पूछा थाइस लियेमैं आपकेकुछ कागजपेश करताहूं और निश्चय है कियह कागज ठीक और दुरुस्त होंगे यदिमैं गलतीपर हूं तो उससे मुजको इत्तिला दीजिये सो सरजरट बेलन टायन साहब यह कागज पढ़ने लगे॥

चिट्ठी दादाभाई नूरूजी के नामपर॥

माईडियर सर-यदिआप सालिम और यशवन्तरावकोमेरें निकट भिजवा दीजिये तो मैं आप का गुण मानूंगा-मिस्टर सूटरसाहब इस मुकद्दमेसे जिसकी किइन दिनों तहकीकात होरही है उनकी गवाहीलेना चाहते हैं॥

दस्तखत ल्यू इसपीलो साहब मुकाम रेजीडन्सी
लिखाहुआ २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० का॥

सरजरट साहबने कहाकि सरल्यू इसपीली साहब क्याआपने नीचे लिखीहुई चिट्ठी उसी दिन पाई॥

चिट्ठीबनामसर ल्यू इसपीलीसाहब महल
बड़ौदा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई०॥

माईडियरसर-आपकी आज्ञानुकूल जोइस समय मेरेपास पहुंची मैनेसालिम और यशवन्तराव को गवाही देने केलिये भेजदिया॥

आधीन दादाभीनूरूजी॥

और एक और चिट्ठी भी आपकेपास दादाभाई नूरूजी की आई है वह यह है॥

सरल्यूइस पीलीसाहबके नामपर॥

माईडियरसर-मैने सालिम और यशवन्तराव को आपके पास भेजदिया निश्चयहै किवह पहुंचे होंगेमैंमुन्तजिरहूं कि

सालिम और यशवन्तरावको गवाहीदेनेके लियेभेजदिया मैंने पुलिसके कमिश्नरसे आपहीकहदियाहै कि यहलोगहिरासत में रक्खेजांय परन्तु इनलोगों को किसीतरहकीतकलीफनहो और कलउनकीगवाही अवश्यलीजाय जो पहरेवालेनेउनलोगों सेसलामबोलने और चलेजानेको कहदियाथातोमेरीइत्तिला बिनाकहाथा मेरीओरसे श्रीमान् गायकवारका शुकरिया अदाकीजिये कि वहमेरा भरोसाकरतेहैं और हरप्रकारसेवह मेरी सहायता करेंगे यदि सम्भवहो तो कलसुबहके आठबजे आपमुझसे मुलाकात कीजिये॥

दस्तखत ल्युइसपीली॥

यहचिट्ठियां सुनकर सरल्यूइसपीलीसाहबने उत्तरदियाकि भूलका होना तो साफ प्रकट है उचितथा कि सालिम और यशवन्तराव पुलिसके कमिश्नर साहबके पासजाते—श्रीमान्महाराजा गायकवारने मेरीचिट्ठियोंके जल्दी२ उत्तरदिये प्र० क्याइसबातका निश्चयकरूं किजब गायकवारपर विषदियेजानेका सन्देहहुआ तो वहआपही आये और उन्होंनेअपने तईं सुपुर्द करदिया? उ०—नाखवसें उन्होंनेवैसा नहींकिया।प्र० अबआप अपनीतौरसे वर्णनकीजिये कि क्याहुवाथा? उ०—पहिलीबेर २३ दिसम्बर को मैनेसुना कि गायकवार भी विष दियेजानेके मुकद्दमेमें संयुक्तहैं जबवह २४ दिसम्बरको मेरी मुलाकातके लियेआये तो पुलिसके कमिश्नरसाहबके उपस्थित होनेके वक्त मैंने जो सबहाल बीताथा उनसे कहदियाथा और दरख्वास्तकी कि जहांतक होसके आपइस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात में सहायताकरें उन्होंने कहामैं प्रत्येक समय पर सहायताकरनेकेलियेतय्यारहूं।प्र०—जबसेआपनेयहबातउनसे कही और जबतकवह गिरिफ़ार नहीहुये उनको किसीतरह की रोकटोक थी? उ०—कौन।प्र०—गायवार? उ०—नहीं। प्र०—आपनेउनकोक्योंकरगिरिफ्तारकिया? उ०—जबश्रीमान् वैसरायने मुझको हिदायतकी तबमैंनेउन्हें गिरिफ्तार किया

प्रकारसे सहायता करें जिससे मुकद्दमा साफ होजावे यदि श्रीमहाराजा गायकवार इनलोगोंको गार्डमें भेजेंगे तो उचित होगा ॥

दस्तखत ल्यूइस पीली ॥

इसके उपरान्त दादाभाई नूरूजीने नीचे लिखी हुई चिट्ठी सर ल्यूइसपीली साहबके नामभेजी ॥

करनेल सर ल्यूइस पीली साहबके नामपर
बड़ौदा लिखाहुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० ॥

जिससमय आपकी चिट्ठीपहुंचीतो तुरन्त महाराजा साहब ने यशवन्तरावको बुलवाया और उससेपूछाकि तुम और सालिम इजहार हुयेबिना रेजीडन्सीसे लौटआये यशवन्तरावनेकहा कि हमनेएक चिट्ठीपहुंचानेवालेको दीपहुंचानेवालेने लौटकरकहाकि साहबनेकहाकि सलामबोलोयह सुनकरसालिमने उत्तरदिया कि साहबनेहमको किसीअवश्यकताकेलिये बुलायाहै साहबसे पूछोकि किसवास्ते हमको बुलाया है उससमय नाना जीपहुंचे वालेनेआकर कहाथाकि तुमलोग लौट जाओ परइसप्रकार से मालूमहोता है कि कुछगलतीहुई मैंने उनलोगों सेनहीं कहाकितुम पुलिसकेकमिश्नर साहबके पासजाना मैंने केवल आपके पासभेजाथा जबमैंनेमहाराज को आपकीचिट्ठीकामतलबसमझायातो उन्होने कहाकिअफसोसहै जोऐसीगलतीहुई सो महाराजासाहबने आज्ञादी कि तुरन्त वहलोगआपकेपास हाजिरहों औरअबमैं एककारकुनके साथभेजताहूं वहकारकुन उनको आपके सुपुर्द करेगा श्रीमान्महाराजा साहब सदैव आपकीसहायता करनेकेलिये तय्यारहैं और चाहते हैं कि यह मुकद्दमा अच्छीतरह साफहोजाय ॥

दस्तखत—दादाभाई नूरूजी

दादाभाई नुरूजीके नामपर
रेज़ीडन्सी लिखाहुआ २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० ॥

माईडियरसर—मैं अतिगुणजानताहूं किआपनेइतनीजल्दी

सोलहवें दिनका इजलास ॥

ग्यारह बजे कमीशनके मेम्बर एकत्र हुये सम्पूर्ण मेम्बर श्री-युत मल्हरराव और सरल्युईसपीलीसाहब सहित उपस्थित थे ॥

सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा लाईलार्ड यदि आपकी आज्ञाहो तो मैं सूटरसाहब से कईप्रश्न और पूछूं सो सूटर साहबगवाहीकेलिये बुलायेगये प्र०—आपने क्यों कररावजीको पट्टा लेनेकेलिये भेजाथा ? उ०—मैंने रावजी को नहीं भेजा प्र०—परन्तु तुमको मालूमहै कि तुम्हारेआनेके पहिलेपट्टाआ-गयाथा ? उ०—हांआगया था ॥

साहबप्रे जीडण्ड ने सरजन्टबेलनटायन साहबसे कहाकिमैं आपकेप्रश्नका मतलबनहीं समझा ? उ०—मेरे प्रश्नका मतलब यहहै कि सूटर साहबने किसीको पट्टालेने के लियेभेजा था सूटरसाहब ने उत्तरदिया कि मैंने एक मनुष्य को भेजाथा प्र०—तुमने आपही अपने हाथसे उस पट्टे को देखा ? उ०—हां मैंनेआपही अपने हाथ से देखा ॥

सरजन्टबेलन टायन साहबने कहाकि श्री मान् महाराजा मल्हरराव चाहतेहैं किएक लिखाहुआ बयान हमारा कमीशनके सन्मुखपढ़ा जावेमुझे निश्चयहै कि आपसब साहबमर हटीभाषा जानतेहोंगेयदिमेरा बिचार ठीकहै तो मुतरज्जिम मरहटी भाषा में उस बयान को पढ़े सररिचर्ड मीडसाहब ने कहाकिश्रीजान् महाराजा जयपुरमरहटी भाषाको नहींसम-झते हैं उल्थाकरने की आवश्यकता होगी ॥

सरजन्टबेलन टायन साहबने कहा इससूरत में हिंदुस्तानी भाषामें उल्था होजावेगा ॥

साहबप्रे जीडण्ड ने पूछा कि यह बयान किस भाषा में है सरजन्टबेलन टायन साहबने कहा कि मरहटी भाषा में है ॥

साहबप्रे जीडण्ड के कहापरंतु आप कहते हैं कि आपके पास इसलिखेहुये बयानका अंगरेजी में उल्था भीहै सरजन्ट

प्र०—क्या आपको वह रेज़ीडन्सी में आये ? उ०—हां वह आप को रेज़ीडन्सी में आये थे और मैंने सब हाल उनसे कह दिया था प्र०—उस समय उन्होंने अपना निर्दोष होना बयान किया था और आपसे कहा था कि मैं तथ्यार हूं मुझको इस समय क़ैद कर ली-जिये मैंने सुना है कि किसी कार्य्य देका वर्त्ताव हुवा था ? उ० हां मैं रेज़ीडन्सी की हद्द तक गया जब उनकी अमलदारी में पहुंचा तो श्रीमान् वैसराय का इश्तिहार पढ़कर सुनाया और उनको गिरिफ़्तार किया यह सब बातें प्रतिष्ठापूर्व्वक हुई। प्र० और बातों में गायकवारने यह भी कहा था कि मेरे वैरी बहुत रहे हैं ? उ०—हां कहा था और यह भी कहा था कि पृथिवी से रे पाओं के नीचे है वह भी मेरी दुश्मन है। प्र०—उस वक्त से गायक-वार हिरासत में हैं ? उ०—हां हिरासत में हैं परन्तु प्रतिष्ठा सहित प्र०—उनका असबाब सरकार ने सब ज़ब्त कर लिया ? उ०—जो असबाब महल में था वह आरियतन् कुर्क़ हुवा है। प्र०—सम्पूर्ण असबाब कुर्क़ हुवा है ? उ०—हां और मैंने सम्पूर्ण असबाब पर इस वास्ते मोहर लगा दी कि नष्ट न हो और रक्षापूर्व्वक रहै जिस मनुष्य की ओर सरकार हिदायत करेगी उसको वह सब अस-बाब वापिस दूंगा॥

ऐडवकेट जनरल ने कहा अब शहादत ख़त्म होगई जो कमी-शन के सन्मुख होनेवाली थी बेलनटायन साहबने कहा यदि सर रच्चूड़ इस पेंली साहबको गवाही कुछ पहिले से पूर्ण होजाती तो मैं ऐडरेस शुरू करता परन्तु अब ज्यादा देर होगई इस लिये कलको दिन निवेदन करूंगा॥

साहब प्रेज़ीडन्ट ने कहा अच्छा कल पेश कीजियेगा सर जन्ट बेलनटायन साहबने कहा यदि आप आज्ञा देंगे तो मैं एक लिखा हुवा बयान गायकवार का ऐडरेस के आरम्भ होने से पहिले पेश करूंगा—आज अदालत बरख़ास्त हुई॥

———

हाल पेश किया जायगा तो मेरी दरखास्त पर बखूबी लिहाज होगा सो यही विचार मेरा और मेरे सम्पूर्ण वजीरों का था इस विचार को जियादह तरमजबूती इस कारण होगई थी कि एक वेरगवर्न्नमेण्ट बम्बई ने कारनैल साहब पर बड़तबड़ी चश्मनुमाई की थी हमारा खयाल गलत न था क्योंकि २५ नवम्बर सन् १८७४ ई० को उनकी बदली का हुक्म आगया॥

इस सूरत में मुझको न तो कोई तरफदारी थी और न कोई पोलो टीकल वजह थी जिसके सबब से इस अपराध का उद्योग करता जिसका दोष मुझपर लगाया गया है मैं सौगन्द खाकर वर्णन करता हूं कि न मैंने अपने आप और न किसी और करिन्दे के द्वारा करनैल फियर साहब के देने के लिये विष मंगाया ताकि उनकी जान लीजाय और न मैंने अपने आप और न किसी कारिन्दे से यह कहा कि ऐसा इरादा कियाजाय और मैं कहता हूं कि असीना और नरसू और राबजी और दामोदर त्रिम्बक की गवाही इस मुकद्दमे में गलत है॥

और मैं यह भी वर्णन करताहूं कि मैंने स्वत: किसी रेजीडन्स के नौकर को नहीं बहकाया कि वह जासूस की तौरपर मुझको खबरें दें और न मैंने किसी मनुष्य को इस कार्य्य के लिये रुपया दिया यह बात मैं नहीं कह सक्ता कि रेजीडन्सी के नौकरों को कभी इनआम नहीं दियागया क्योंकि जब कभी कोई विवाह कार्य्य अथवा खुशी वा तेहवार हुआ तो उस समय पारितोषक दियागया अगर कभी किसी खफीफ असर की इत्तिलाअ हुई तो उसका जिम्मेदार नहीं हूं यह बात लोगों की बनाई हुई है मैंने स्वत: किसी नौकर से ऐसी खबरों के लाने को नहीं कहा न मैंने ऐसा उपाय किया कि रजीडन्सी से खफीफ खबरें मंगाई जावें॥

मैं अपने तई अक्षय होकर कमीशन के रूबरू पेश करताहूं आशा है कि जो मेरे प्रतिष्ठित मित्र श्रीमान् वैसरायने मेम्बर नियत किये हैं वह हरसूरत से मेरे मुकद्दमे का न्याय करेंगे और जो कुछ मुझसे प्रश्न किया जावेगा मैं उसके उत्तर देने में मौजूद

वेलनटायन साहबने कहा-हां अंगरेजीसेंभी उल्था है उचित है कि यह बयान अंगरेजी से पढा जाय और उसका उल्था हिंदुस्तानीभाषामेंहोता जाय साहबप्रेजीडण्टने कहाउत्तम है कि प्रथम अंगरेजी भाषामें पढाजाय और श्रीमान्महाराजा जयपुरकहते हैं कि अंगरेजीभाषामें पढ़ाजाना काफीहैफिर उसकाहिन्दुस्तानीभाषामें उल्थाहोताजावेगामिस्टर ब्रान्सन साहबने कहाअगरहुजूरहूजाजत देंतोइसलिखे हुयेबयानको मेंपढूं सोइजाजत होनेके उपरान्त पूर्वोक्तसाहबने पढ़ना शुरू किया मेरेप्रतिष्ठितमित्रश्रीमान् गवर्न्नरजनरलने अपनाइरादा जाहिरकियाहैकिमुझको हरतरहसेमौकामिलेकिमैं उसबहु-तवड़े कलंककोखण्डन करूं जो मुझपर लगायागयाहै अर्थात् करनैल फियरसाहब जो मेरेयहां रेजीडेण्ट थे उनके विषदेने का उद्योगकिया गया अबमैं बपास खातिर वैसराय के उस इच्छासे कि मैं अपनेतईं सम्पूर्ण दृष्टि के रूबरू इस अपराध से साफ करूं नीचेलिखा हुआबयान करताहूं॥

मुझकोकभीकरनैल फियरसाहबसे वैरनथा नअबहैऔरयह बातभीसच्ची है किमैं और मेरेवजीरभलेप्रकारजानते थे कि करनैल फियर साहब ने ओहदे रेजीडंसी पर ऐसी कार-वाईशुरूकीथीकि रियासतका उत्तमप्रबन्ध होना असम्भवित था मैं श्रीमान्वैसराय के खरीते २५ जूलाई सन् १८७४ ई० के लिखे के अनुकूलसबअपना कार्य्य करताथा और यहखरी-ता सन् १८७३ई०की कमीशनकी रिपोर्ट के अनुकूल मेरे पास आयाथा मैंने दादाभाई नूरूजीऔर बाला मुगेश्वाकल और हुरनजी और अरदासियरदोवा और काजीशमसुद्दीनआदि अपनेवजीरों की सलाहसे २—नवम्बर सन् १८७४ ई०को करनैलफियर साहब के द्वारा श्रीमान्गवर्न्नर जनरल को खरीता भेजाहरचन्दकरनैल फियरसाहब नेउज्रकियेपरन्तु मैंअच्छी तरहजानता थाकि जब हुजूरगवर्न्नरजनरलके सन्मुखठीक ठीक

ऐसाकोई मुकद्दमा किसीअदालतमेंपेशहुआ और यहबात मैं बेतामुलजाहिर करताहूं कि जोगवाह जुर्मकेसुबूतकेलिये पेशकियेगये उनकोकुछभी अपनेबचन और प्रतिष्ठाका विचार नहीं श्रीमान्महाराजा गायकवार की ओरसे जोमैं इसीच कहरहा हूं वह सबलोगों के दिलोंपर नक्शकरनाचाहताहूं किसही मुआमला क्या है मुझको एक २ गवाह की गवाही दूसरेके बयानसे मुख़्तलिफमालूम होतीहै और हरएक आदमीकी गवाही बेईमानी के साथ पाईजाती है और हरएक आदमीकी गवाहीसे झूठजाहिर होताहै जिनलोगोंने गवाहों के बयानको सुनाहै वहकहसक्ते हैं कि गवाहोंने बिल्कुलझूठी सौगन्दखाई कोईप्रतिष्ठित गवाहोंकी गवाहीपर निश्चय नहीं करसक्ता—माईलर्ड मैं वर्णनकरचुका हूं कि कुलशहादतजो कमीशन में लीगई ऐसी मुख़्तलिफ है कि कभी सुनीनहीं गई हालके जमानेमें ऐसाकोई मुकद्दमा मेरीनजरसे नहींगुजरा मुझको यहांकी अदालतोंसे वाकफियत नहीं है शायद यहां की अदालतोंमें ऐसीबदजातीके मुकद्दमेदायरहोतेहों परन्तु और मुल्कोंकी अदालतमें ऐसेमुकद्दमेके दायरहोनेका हाल नहीं सुनागया मैं इसबातसे अफ्सोसकरताहूं कि उसबेचारे राजाकी आजादगीनिहायत बदनामीकेसाथलीनलीगई और इसकेविशेष उनकीबहुतबड़ी रुसवाईहुई औ इसअप्रतिष्ठाका उनकोबहुतबड़ा खयालहै—जबमैंशहादतपरनजरडालताहूंतो झूठ और बनावटका ढेरमालूम होताहैजबमेरे रूबरूगवाहों केइजहारहुयेथे तोमुझकोअति आश्चर्य होता थाकि यहलोग किस २ तरहझूठ घड़तेहैं और चाहतेहैं कि एकझूठसे दूसरे झूठकी सिदाकतहो और ऐसेझूठके बोलनेवाले समझतेथे कि सुननेवाले बेवकूफहैं जो कुछ हम कहेंगे वह निश्चय करलेंगे क्योंकि वहजानतेथे कि यहझूठ उसके विषयमें बोलतेहैं जिससेसरकार नाराजहै कायदायहहै कि जबकोई शख्समग़लूब होजाताहै और उसकीनिस्बत यह विचारा जाताहै कि वह

हूं—और मैं फिर सौगन्द खाकर इकरार करता हूं कि मेरे शत्रु लोग कुतबड़ा अपराध मुझपर लगाना चाहते हैं वह सब गलत है ॥

सरजानटवेलनटायनसाहब की स्पीच ॥

खराडन

सरजान्वेलनटायन साहब कमीशन के मेम्बरों के रूबरू स्पीच कहने के लिये श्रीमान् महाराजा मल्हररावकी ओर से इसभांति वर्णन करने लगे—कि श्रीयुतलार्ड और महाराजान् और कमीशनकेमेम्बरोंपर प्रकट हो कि मैंनिश्चयमान कर खयालकरताहूं कि श्रीमान्महाराजा गायकवारपर बड़ी अनीतिसे बिना किसी मूलके मुकद्दमा खड़ा किया गया है अब श्रीमान् मल्हररावको ऐसी अवसर मिलीहैकि वहऐसी अदालतमे अपने इन्साफकेदादखाहहों—अबयह बात जाहर हुई कि किस कदर बेबुनियाद यह तोहमत है—और यह बातप्रकटहुईकि किस छोटेमूलपर उनसे उनकी आज़ादगी छीनलीगई और वह अपनी प्रजाकीदृष्टिमें न्यूनहोगये और उसमनुष्यके सदृशजोसंगीन जुर्ममें क़ैदहोताहै उन्होंने तक-लीफें उठाईं औरअबयहभी मालूमहुवाकि किस२गवाहीसेयह अपराधउनपरक़ायमहै और वहशहादत किसतरहहासिल कीगई—मालूमहुआ कि वहलोगजोइसमुकद्दमेकेपैरोकारहैं ऐसेदिलसेमुहई बनगये जिसकावर्णननहींहोसक्ता और मैंका-हताहूं कि पुलिसनेनिर्भयहोकर बहुतसीकाररवाइयां कीं ॥

अबहमको मालूमहुआकि इसमुकद्दमेका क्यामूलहै और किसतरहकी शहादत है और कैसे २ गवाह इसमुकद्दमे में गवाहीदेनेको आयेहैं—मैं निर्भयहोकर और स्पष्टरीतिसे वर्णन करताहूंकि कोई दूरअन्देश आदमी मेरे वर्णनाकोखराडन न करेगा किमुखतलिफ बयान कदाचित् विश्वासके योग्यनहीं हैं और वह बातें जो असम्भवित हैं और वह मुआमिले जो खयालसे बाहरहै सबकासनमूआकियागया और एक ऐसा जुर्मक़ायम कियागया जो जमाने हालमें सुना नहीं गया न

कहूंगा यहांतक कि हरशख्सकी रायमेरी रायसे इत्तिफा करे और जैसामैं चाहताहूं वैसाही फैसलाहो—माईलार्ड आपने बहुत कमसुनाहोगा कि किसी वकीलने ऐसेइतमोनानके साथ बयानकियाहो अदालतइसबातका खयालन करे कियहतकरीर मेरी अदालतकी अप्रतिष्ठा मेंहै यदि अदालतका फैसलामेरी रायकेप्रतिकूलहुआ तोमैं समझूंगाकि पहिलेसे मुझको कच्चा खयालथा परन्तु मुझको दृढ़निश्चयहै कि आपसब साहबमेरी बात्तोंको बखूबी समाप्तकरेंगे ॥

माईलार्ड—जिस इश्तिहारको श्रीमान् वाईसरायने जारी कियाहै उसमेंइस तहक्कीक़ातकी एकहद्द करदीहै उसमेंबात खासलिखीहै कि कोईतहक्कीकात जबरदस्ती कीनहो केवलदो बातोंकी तहक्कीक़ातकी जावे कि गायकवारने रेजीडन्सी के नौकरोंसे साजिशकी या नहीं—दूसरेयहकी कि जो अपराध गायकवारके मढ़ेहै वह ठीकहै या गलत पस इनदो बातोंके विशेष किसीदूसरे अम्रकी तहक्कीक़ात नहोगी मैनेइन दोनों बातोंपर कमीशनके मेम्बरोंको इसवास्ते ध्यान कराया कि मैं जानताहूं कि गायकवार झूठ और दुष्टताके बादलमें छिपा हुआहै मैंबड़ौदेमें इसलिये नहीं आयाहूं कि गायकवारकी पिछलीकारखाइयों परउज्रकरूं न इसलिये आयाहूं कि जो हरकतें व्यतीतसमयमें गायकवारनेकीं उनकोखण्डन करूंउन बातोंको यहांके निवासी अच्छी तरह जानतेहोंगे परन्तु इस बातका मैंविश्वास करताहूं कि कई बातें गायकवारकी आय सेंऐसी हुईंजिससे उनको और लोगोंपर भरोसा करनापड़ा और आपहीकारखाई करनेका उनकोकम मौकामिला और न उनबातोंका वहप्रबन्ध करसके जिनका उनको चाहियेथा मैंकहता हूं कि यहबात केवल हिन्दुस्तानमेंही नहीहै किन्तु सम्पूर्णदेशों मेंहै कि बहुधा रईसोंके पास खुशामदी और दुष्ट नौकरहोतेहैं और वहनौकर रईसको लूटना और धोकादेना चाहते है और जबउनको मौकामिलताहै अपने इरादेसे

अपनी जगह पर फिर वापस नहीं होगा तो यह नापाक कुत्ते भौंकते और घुर्राते हैं और जहां तक होसक्ता है बुराई करते हैं—एक जमाने में यरूपकी यह रीति थी कि कभी किसी मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात नहीं करते थे और उसी ज़माने में एक प्रतिष्ठित मनुष्य को दो दुष्ट मनुष्यों की गवाही पर फांसी देदी गई एकका नाम ओटस और दूसरे का डंगस फील्ड था यद्यपि यहां के लोग पुनर्जन्म्मसरणपर निश्चय करते हैं इसलिये मेरे विचार मेरा वजी और नरसू आदिकने जो गवाही दी है उनके शरीरमें उन्हीं गवाहों तात्पर्य्य डंगस फील्ड और ओटसके जीव प्रवेश करगये हैं इन लोगोंने बिल्कुल झूठी गवाही इस बेदारमग़ज़ कमीशनके रूबरू दी ॥

लार्ड—आपको निश्चय करना चाहिये कि मैं इस मुकद्दमेको बहुत बड़ा मुक़द्दमा समझता हूं और उसके खण्डनका अपनेतई ऐसा जिम्मेदार समझता हूं कि मेरी तक़रीरमें फर्क आगया शायद मेरे समान और लोगोंको यह खयाल न हो जितनी तक़रीर इस मुक़द्दमेमें होना चाहिये मेरी जिह्वामें उसके करने की शक्ति नहीं है ॥

मैं निहायत अफ़सोसके साथ इस बेचारे रईसकी हमदर्दी करता हूं और अधिकतर इस बातके खयाल करनेसे कि उसकी रिहाई मेरी तक़रीरपर मौकूफ़ है मुझको निश्चय है कि इस मुक़द्दमेका निर्णय मेरी इच्छाके अनुकूल होगा क्योंकि ऐसेही फैसलेमें इन्साफ़ और सच्चाई रहै मैंने जो यह काम अपने तअल्लुक़ किया है वह निहायत बड़ा है और जिस समय से अदालतमें एडरेस कह रहा हूं मेरा दिली और खास मन्शा यह है कि सच्चाई ज़ाहिर हो जब मुझको मददकी ज़रूरत हुई तो मेहरबानीसे मुझको मदद दीगई और इस कमीशनमें हरतरहका मौका दियागया पसउन मौकोंके मिलनेसे बखूबी अदालतमें एडरेस पेश करूंगा और जो बात मेरे मनमें है हर मनुष्यके मनपर नक्श करदूंगा और हरएक तक़रीर को दलीलके साथ बयान

हैं तो हरतरहसे उनको आजादगी हासिल है मुझको आशा है कि श्रीमान् मिस्टर नीडवड्ट सच्चाईसे कदाचित् मुंह न मोड़ेंगी और सिवाय नीतिके और कुछ अपने अफ़सरकी तरफ़से उनको खयाल न होगा। मैं इसबातपर प्रसन्न हूं कि यूरपके प्रधान अतिनीतिमान होते हैं और न्यायके मार्गके विशेष दूसरी ओर नहीं झुकते हैं ऐसे मेम्बरोंके साबिक़ा होनेसे मैं अपनेको बड़ा भाग्यवान समझता हूं यद्यपि मेरी जिह्वामें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि कमीशनके साहिबों के सन्मुख तक़रीर करूं परन्तु उनके न्यायसे मुझे भले प्रकार निश्चय है कि मेरे मनका मनोरथ सिद्ध होजावेगा॥

साईलार्ड-हुजूरको स्मर्ण होगा कि पहिले इसबातकी गवाही सुनली थी कि गवाह सिखाये गये परन्तु इससमय इस विषय में वर्णन नकरूंगा क्योंकि जो अपराध गायकवारको लगाया गया उसमें तक़रीर करनेकी इच्छा नहीं है॥

गायकवार पर जो विष देनेका अपराध लगाया गया निस्संदेह उसकी शुफ़्तगू करनी जरूर है-मैंने पुलिसकी ओर ध्यान किया था मैं देखता हूं कि पुलिसवालोंके लिये कोई क़ानून नहीं है और जो इजहार-पुलिसमें होते हैं उसके लियेभी कोई क़ायदा नहीं है—आम क़ायदा यह है कि जो इजहार पुलिसके रूबरू हों जब तक उनकी सिदाक़त दूसरा मनुष्य न करे वह गवाही में नहीं समझे जाते इसलिये अगर कोई मनुष्य पुलिसके सन्मुख किसी बातका इक़रार करे तो वह बिश्वासके योग्य नहीं है जबतक कि दूसरा मनुष्य उसकी तसदीक़ न करे इसबातका क़ानूनके बनाने वालोंको बड़ा भय है कि गवाहोंको पुलिसवालोंसे बहुत बड़ी इज्जतहो जाती है—हिन्दुस्तान के पुलिसवालों को हर प्रकारका अधिकार दियागया है जो वह चाहते हैं करते हैं सो एक क़ानून इसबातका जारी होना चाहिये जिसमें पुलिस के अधिकारोंकी हद्द करदीजावे मैं नहीं देखता कि कोई जज अथवा मजिस्ट्रेट पुलिसके अखतियारोंको रोकसके छोटेसे छोटा पुलिसका सिपाही जो चाहता है सो करता है इसमुक़द्दमेमें

नहींहटते और रईस ऐसेहीलोगोंपर अधिक निश्चय करतेहैं
पसविनासोच समझके ऐसाविचारना चाहियेकिआगेकेरईस
नौकरोंने कोईहरकत कीतो मानो आपहीरईसने उसकोकिया
ईसविषयमें कुछऔर वार्त्ता न करूंगा क्योंकि मुझको और
विषयोंमें तकरीर करना बाकीहै परन्तुजो वार्त्ता कि मैंकर
चुकाउससे इसबातके जाहिर करनेकी इच्छाथीकि गायक-
वाड़के नौकर किसतरहकेहैं उनलोगोंको जिनके व्यवहार में
बड़ा अधिकार पाअवमैं इस बात की प्रार्थना करता हूंकि
नीतिसे जोयूरपके साहबोंकी समझहैं मेरीतकरीरको सुनें
मैं पोलीटीकल मुआमिलों परवार्ता नहींकरना चाहता क्यों
किश्रीमान् वैसरायने जोकुछ कारर्वाई कीहै उसमें पोली-
टीकल मुआमलोंका कुछ जिकनहीं औरपूर्व्वोक्तसाहब सबपर
ज़ाहिर करनाचाहतेहैंकिहिन्दुस्तानकीअमलदारीका प्रबन्ध
प्रतिष्ठा पूर्व्वक होसक्ताहै यद्यपिसरकार ब्रिटिशको और किसी
रईससेबैरहो और ऐसेअमरकाफैसलाइसप्रकारसेहोकिसम्पूर्ण
प्रतिष्ठितमनुष्यउससेप्रसन्नहोंवैसरायनेइसइजलासमेंऐसेमनु-
ष्योंकोनियतकियाहैकिजोबड़ेनीतिमानहैं अर्थात्हिन्दुस्ता-
नीरईसोंको जो अपनेसाथीकी प्रकृतिकोभलीभांति जानतेहैं
झूठीगवाही देनेकेविषयमें मेम्बरोंका खयालरुजूकरूंगाऔर
उनलोगों के रूबरू साबित करूंगा कि जितनी गवाहियां
गुजरीहै वहगलतहै औरनिश्चय माननेके योग्य नहींहिन्दुस्ता-
नी रईसोंके रूबरू यहबात पेशकरूंगा किउनको आजऐसे
अधिकार दियेहैं और उनपर सच्चाई औरइन्साफकेकरनेका
भरोसाकिया गयाहैजोकुछ वहइन्साफ करेंगे उससे सम्पूर्ण
हिन्दुस्तानमेंधूमहोजावेगीऔरअपनेखदेशियोंसेयहचाहताहूं
किमुजको आपलोगोंसे हरप्रकार कीसहायता और न्यायकी
आशाहै यदिप्रेजीडण्ट साहब इंगलिस्तान के निवासी हैं इस
वजहसे मुझे बहुतहीखुशीहैऔरजब इंगलिस्तानके रहनेवाले

उसको ऐसेमुआमिलेमें सोंपे जावें बहुतसे इजहार जो मैंने देखे उनसे यहबातप्रकटहै कि जबरदस्ती से इजहार लियेगये और जोमुख्यबयानथा वहइजहारोंमें नहींहै हरचन्द सैकड़ों झूठबोलेगये परन्तु झूठका झूठहीरहा इनबातोंकी सिद्धान्त मैं अच्छीतरह कर सक्ताहूं और मेरे वर्णनसे आपलोगों को अच्छीतरह विदितहोजावेगा कि मेराबयान ठीक है-हरएक इजहारमें पुलिसकीकाररवाई मालूम होतीहै-माईलार्ड अब एकदूसरामुआमिला पेशकरताहूं साहबप्रेजीडण्टका ध्यान उनबातोंपरदिलाताहूं वहबातेंकानूनऔर नीतिके सम्बन्धित हैं बहुधालोगपरस्पर अपनेघरोंमेंवार्त्ता कियाकरतेहैं किकुछ संदेहनहीं कि अमुकमनुष्य वास्तवमें अपराधीहै पसऐसेही विचार अंगरेजसाहिबोंके तबीयतोंमेंहैं जोआजकल बड़ौदेमें स्थितहैं अबउनसे यहबातपूछने के योग्यहैकि वह किसवजह से जानतेहैं किवहवास्तवमें अपराधीहैजबउनसे पूछाजायगा तो उनको मालूमहोजायगाकि हमारा विचार गलतथा ॥

मैंने बहुधा देखाहै कि लोगइसप्रकारके विचारवर्णनकरते हैं यद्यपि उनको असल हालसे कुछ वाकफियत नहीं बहुधा मैंनेयहभी देखाहै कि काल्पित बातोंको सच्चीबातें समझते हैं और उनकल्पितबातोंको तहकीकनहींकरते अदालतकेसन्मुख कईबेर ऐसीबातें पेशहुईहैं जो निपट कल्पित हैं और उनके लियेपूछा नहींजाता कि उनकामूल क्या है इसबातके कहने से मेरामतलब उसबयानसेहै जोलोग कहतेहैं कि हमअमुकअमुकजुर्म्ममें अमुक मनुष्यके साथ संयुक्तथे मैंजानताहूंकि जब लोग इसतरहकाबयानकरें तो अच्छीतरहतहकीकात कीजाय और खासइस मुकद्दमेलोगोंकी कल्पितगवाही मंजूरनहो जब तककिवखूबीसमझ नलीजाय मैं जानताहूंकिसम्पूर्ण अंगरेजी अदालतोंमें किन्तु उनअदालतोंमेंभी जहांअंगरेजी सरकार के कानून के अनुसार काररवाई होतीहै कायदा है कि जो मनुष्यअपने तईं अपराधीका शरीक जाहिरकरताहै उसकी

नहीं कहसक्ता हूं कि कितने लोग हिरासत में रहे जिसकी निस्बत पुलिसवाले कहते हैं कि मुकद्दमे की तहक़ीक़ात के लिये वह लोग हिरासत में रक्खे गये सो जब उनको ऐसे बे प्रमाण अधिकार प्राप्त हैं तो ख़ाहमख़ाह लोगों के दिलों में किसक़दर दहशत होगी ज़ाहिर है कि कोई मनुष्य अपने घर और शरीर को अपना नहीं कहसक्ता जब पुलिसवाला चाहै गिरिफ़्तार करले और जबतक चाहै उसको हिरासत में रक्खे प्रकट में उसका कोई उपाय नहीं है कोई मजिस्ट्रेट इसमें दख़ल नहीं करसक्ता है मजिस्ट्रेट को यह अधिकार नहीं दियागया कि ऐसी बातों में मुदाख़लत करे उस मनुष्य को कुछ हरजा दे जो हिरासत में रहा हो॥

मेरे विचार से शायद यही हिन्दुस्तान का क़ानून है इसमें संदेह नहीं कि बड़ौदे में ऐसीही कारस्वाई होती है हमने बहुधा देखा है कि पुलिसको जिनलोगों की शहादत दिलानी मंजूर थी उनके साथ ऐसाही किया विशेषकर इस मुकद्दमे में उनकी कारस्वाई प्रकट है मुझको पुलिसकी कारस्वाई पर बहुतसी वार्त्ता करनी पड़ेगी परन्तु एक बात कमीशन के मेम्बरों के ज़ेहन नशीन करना चाहता हूं वह यह है जिससे बहुत बड़े अन्याय का संदेह है कि एक अफ़सर पुलिस मुकद्दमे के क़ायम करने का अधिकारी है और अपराधी को दण्ड होने के वास्ते वह हरप्रकार के उपाय करता है और भी ऐसे अफ़सर पुलिस को इज़हार लेने के अधिकार हैं और वह इज़हार गवाही के लायक समझे जाते हैं मनुष्य की यह भी प्रकृति है कि जिस किसी बात में कोशिश करता है अथवा किसी वस्तु के पीछे दौड़कर उसको पकड़ता है यदि वह वस्तु उसके हाथ नहीं आती है तो धोखे से पकड़ना चाहता है पुलिस के कानस्टेबल यही आदमी हैं जब उनमें इन्सानियत है वह भी ऐसीही कोशिशें करते होंगे यह बात दुरुस्त नहीं है कि एक काग़ज़ जूडिशियल के महकमे का ऐसे लोगों को सौंपा जावै जिसके मिज़ाज में वह बातें हैं जिस का ऊपर मैं वर्णन करचुका हूं जिस मनुष्य के मिज़ाज में तरफ़दारी हो

सुननेके योग्य है लोगोंकोमैंनेबहुधाकहतेहुये सुनाहै किबैरेस्टर
औरकानून केजाननेवाले केवल जबानीतकरीर करतेहैं और
प्रायः लोग कहतेहैं कि ऐसी गुफ़्तगू करनी चाहिये जो सबके
समझमें आवे नऐसीबातकरनी चाहिये जिसको कोईनसम-
झसके मेराखास यहअभिप्रायहै किमेरी बातको हरकोई स-
मझे किन्तु इस मुकद्दमेके लियेतो मुख्ययही आशाहै कि बि-
ल्कुल क़ानूनी कारवाईनहो और इसतरहसे कारवाई की-
जायकि जिस प्रयोजनसे कमीशन एकत्रहुई वह मतलब प्राप्त
हो इसविषय में गुफ़्तगूको ज़ियादह नहीं बढ़ाना चाहता जिस
हालतमेंकि आजकलगायकवारहैं उसकोमैंपहिले बयानकर
चुकाहूं जिनलोगों कीवजहसेउनकी यहदशाहै वहइसहालत
केजिम्मेदारसमझे जावेंगेनिश्चयहै किऐसेलोगोंकीकारवाई
सेकमीशनमें कुछफ़र्क न होगा परन्तु उनकीकारवाईपर मैं
केवलइतनी गुफ़्तगू करूंगाजिससे तजवीज कमीशनको सहा-
यतामिले-कमीशनके मेम्बरोंका इसबात परध्यान दिलाताहूं
किजबसे सरकारने गायकवारकीजायदादकुर्क़ करलीहै और
जिसकेलिये सरल्यू इसपीलीसाहबरेजीडण्टने कहाथाकिथोड़ी
देरकेपीछेछोड़दी जावेगी परन्तु अबतक छोड़ीनहींगई और
गायकवार बहुत तंगदस्तहैं औरयहांतक किवह मुकद्दमेका
खण्डनभी जैसा कि चाहिये नहींकर सके इससमय वह बड़े
कष्टमेंहैं इतनाही इशारह कमीशन के गौरकरनेके लियेका-
फीहोगा परन्तु मैं निहायत नम्रतापूर्व्वक कमीशनके रूबरूयह
कहताहूं कि कमीशन इसबातकाबखूबीलिहाजकरै क्योंकि
गायकवार झूठीसौगन्धखाने वालोंके मण्डलमेंहैं और कमी-
शनके मेम्बरों कोविचारना चाहिये किजबसे करनैल फीयर
साहबको कमीशन बैठीथीउससमय मेरेमवक्किलने कैसीकार
रवाईकी उसकमीशनमें जोकुछ कारवाई हुईथी मेरे और
कमीशनके विचारमें उसकापूछना उचितनहींहै क्योंकिवह
तहक़ीक़ात ऐसे मनुष्य की है (अर्थात् करनैलमीड साहब)

शहादतकी समाप्त नहीं होती जबतक कि उसके बयान की अच्छीतरह तसदीक न होजावे यहबात अति आवश्यक और गौरकरने के लायकहै॥

इसविषयमें फिरभी गुफ्तगूकरूंगा कोई क़ानून ऐसा नहीं है यदिकोई मनुष्य अपनेतई अपराधीका शरीक ठहरावे और वर्णनकरे तो उसके बयानपर जिसकेलिये अपराधी होनेका संदेहहै वहदण्ड से छूट नहीं सक्ता किन्तु उसकोभी दण्डहोगा

साहब चीफजस्टिस इसबातपर अच्छीतरह ध्यानकरेंगेक्यों कि यह बहुत बड़ी बातहै आशाहै कि मेरी इसरायसे सम्पूर्ण कानून जाननेवालोंकोरायमुत्तफिक़है।गो उचितनहींहैकिजो मनुष्य दूसरेकी निस्बत गवाही देता हो उसकी गवाही अपराधीके सम्मुखलीजाय जैसेकिएक प्रतिष्ठित गवाहकामिलना जिसनेदेखाहो कि रावजीने करनैलफियर साहबके गिलासमें विषडाला बहुतकठिनहै यदिऐसा कोईगवाह मिलतातोउस से रावजीकी नि.बत जुर्मसाबितहोता न गायकवारके निस्बत मेरेविचारसे दामोदरपन्थका इजहार कुछ सहीनहींहै और शायदसहीहो किउसनेनूरुद्दीनसे संखियामंगवाईऔरनूरुद्दीन सेउसकोसिदाक़तकीजाती अथवा उनलोगोंसेतसदीककीजाती जिससेकि हीरेमोल लियेगयेतो इनबातों से दामोदरपन्थके निस्बतजुर्मसाबित होतान गायकवारपरआप शहादतमेंप्रथम सेअन्ततक देखेंगे नकोई गायकवारकी लिखीहुई चिट्ठीहै न किसीतरहसे साबितहोताहैकिगायकवार विषदेने में संयुक्त थेऔरकिसी प्रतिष्ठित गवाहने साफ२ नहींकहा कि इसविष दिये जानेमें गायकवार कोकुछसम्बन्धथा इसविषय में मुजको बहुतबडी तकरीर करनी पड़ेगी मैं कमीशन के रूबरू साबित करदूंगा कि गवाहों की गवाही निश्चय मानने केयोग्य नहीं है मैं कमीशन के रूबरू ऐसी तकरीरन पेशकरूंगा जिसको कमीशनके मेम्बरसुनेवा उसकोतकरीरमन्तक़ी तात्पर्य्य वाचालता कहे मैंवही तकरीर पेश करूंगा जो कानूनी हो और

मौकादेंगे फिर गायकवार को क्याप्रयोजन था कि अपने उत्तम प्रबन्धकी लियाकत कोसाबितकरनेके पहिलेऐसी हरकतकरते सरल्यूइसफीली साहबने अपने इजहारमें वर्णन किया है कि गायकवार हरएकमेरीतकरीरको सुनतेथे और उसपरबर्त्ताव करतेथे और श्रीमान् वैसरायने जोर हिदायतें कीउनपरअ-मलकरना चाहतेथे ॥

जबसेसरल्यूइसफीलीसाहबयहां नियतहुये वह किसीतरह सेगायकवारसे अप्रसन्ननहुये इसलिये विचारा जाताहै यदिक-रनैल फियरसाहब रक्षोकरनेके विना उत्तम प्रबन्ध कराना चा-हतेतौभी मुमकिन था करनैल फियर साहबसे बढ़कर कोई बदतरअफसर रेजीडन्सीकी पदवीके लियेदूसरा नहोगा उन्होंने निहायत खराबकारवाई की और सोचेसलके बिना हरकाम कोकरबैठतेथे गायकवारको उनकीहरकतों की शिकायतक-रनेका बहुतबड़ा मौकाथा मुझको उसमेंसेथोड़ासाजो मालूम हुआहै वहयहहै कि फियरसाहब प्रतिक्षण औरप्रतिपलभाव-पूनाकरसे बातें किया करतेथे और उससे बहुतबड़ी मित्रता कावर्त्ताव रखतेथे औरयह मनुष्यगायकवार के प्राणकावैरी थाइससूरतमें गायकवारको किसतरह निश्चय होताकि मेरे मुआमिलेमें इन्साफहोगा औरमैंभी यहबातजानताहूं कि इस अवस्थामें गायकवार कोनिश्चयहोनेकी वजहनथी यद्यपिकर-नैलफियरसाहब कहते हैं कि भावपूनाकर अतिप्रतिष्ठित और सच्चाआदमीहै परन्तुमेरी रायउनकेवर्णनसे अतिकूलहै मैंउस कोएक जासूस समझताहूं किवहसदैव गायकवार के बरखि-लाफ बातोंको ढूंढाकरताथा चाहेयहबात ठीकहो किकर-नैलफियर साहबउसकोखबरोंके सुननेके वास्तेकुछ रुपयानहीं देतेथे परन्तु करनैल फियर साहब का उसको मुंहलगाना उसकी जेबरुपयोंसे भरनेके वास्तेकाफीथा क्योंकि लोगजानते हैंकि यहमनुष्य साहबके कानमेंबातें करताहै और साहबउ-सकीबातोंको सुनतेहैंयह बहुतबड़ा मर्जहै गायकवारजानते

जोवड़े लायक अफ़सर हैं और उनका फ़ैसला अति प्रशस्य है पूर्वोक्त नाइबने श्रीमान् वैसरायको जो कुछ सहायता दी वह बहुत उसदा तौरसे दी होगी परन्तु उस कमीशनके बरखास्त होनेके पीछे जो गायकवारने कारवाई की उसपर विचार करना चाहिये जबसे कमीशन खतम हुई उस समयसे देखा चाहिये कि गायकवार का चाल चलन कैसा रहा उन्होंने अपनी प्रजाके लाभ के लिये क्या क्या प्रबन्ध किया॥

जब पहिले कमीशन बैठी थी शायद वह भी गायकवारके नौकरोंकी वजहसे कारवाई की थी कोई मुख्य सम्बन्ध गायकवार का उससे न था उस कमीशन से जो कुछ फ़ैसला हुआ अच्छा हुवा परन्तु मैं आपलोगोंसे पूछता हूं कि जिस मनुष्यने ऐसा बड़ा जुर्म्म किया हो जिसको तो हम तगायकवार पर है वह ऐसी कारवई करेगा जैसे हालमें गायकवारने की है नहीं कदाचित् नहीं करेगा गायकवारने सम्पूर्ण कारवाई उसके प्रतिकूल की यदि कोई मनुष्य किसी के प्राणका वैरी होता है तो अपनी शत्रुताको प्रगट नहीं करता है क्योंकि जो जाहिर करेगा तो सब लोगोंको मालूम होजावेगा यदि गायकवार करनैल फ़ियर साहबके विष देनेका उद्योग करते तो वह उनसे अतिप्रीति करते और जिन कागजोंसे शंका पाई जाती है तो शीघ्रही उनको फाड़ डालते और कोई बात ऐसी बाक़ी न रखते जिससे किसी बात का पता लगता परन्तु गायकवारने सब बातें स्पष्टरीतिसे कीं उनके पास एक खरीता श्रीमान् वैसरायका करनैल मीड़साहबकी रिपोर्टके पीछे पहुंचा करनैल मीडसाहबने अपनी रिपोर्टमें सम्पूर्ण तहकीकातके करनेके उपरान्त लिखा था कि गायकवारको कुछ मुहततक और मावकाश दियाजावे और उनसे प्रार्थना की जावे कि उत्तम प्रकारसे प्रबन्ध करें पस श्रीमान् वैसरायने सन् १८७५ के अन्ततक मावकाश दिया कि गायकवार उत्तम प्रबन्ध करें॥

गायकवार को उस खरीतेके आनेसे भरोसा होगया था कि हुजूर समझ भलेप्रकार इन्साफ करेंगे और उत्तमप्रबंध का

क्योंकि उन्होंने श्रीमान् महारानी विक्टोरिया के क़ायम मुक़ाम से ऐसीहरकत की और सरकार को इतने बन्दोबस्त की आवश्यकता नथी परन्तु मेरे विचार में बिल्कुल गलत है कि विष दिया गया क्यों कि जब प्रकट में गायकवार और रेज़ीडण्ट साहब से इतना रंज था कि उन्होने रेजीडण्ट साहब की बदली के लिये खरीतामेजा था तो फिर विषदेने की क्या हाजत थी—यह बातभी असम्भवित मालूम होती है कि जब गायकवार खरीतामेजचुकेथे तो जवाबके इन्तिजार के बिना विषदेने और इल्ज़ामहोनेकी कोशिशकरते क्योंकि वहजानते थे कि जोमैं विषदूंगा तो जो दरखास्तखरीते में मैंने की है वहमंजूरनहोगी और वह यहबातभी जानतेथेकि अगर इस रज़ीडण्ट को मैंने मारडाला तो दूसरा रज़ीडण्ट नियतहो जावेगा और जो उनकी बदलीके लिये खरीता भेजागयातो विषदेनेकी क्याज़रूरतहै और गायकवारयहभी खूब जानतेथे कि अगर मैं विषदेने में संयुक्तहूंगा तो तहक़ीक़ात होने के समयकैसी मुश्किलेंहोंगी और तहक़ीक़ातहोकरजोसाबित हो जावेगा तो उसका परिणाम क्या होगा॥

अबगायकवारकी कारवाई पर ध्यानदेनाचाहिये कि जब सरल्युइसपीलीसाहबने उनसे कहा कि तुमपर किसीतरह की निगरानीनहीहै जोचाहोसो करो और तुम्हारे इन्तिजाम में कोई बाधा न करेगा तहक़ीक़ात होतीहै जो मुख्य अपराधी मालूमहोगातो वहपकड़ाजावेगा उससमय दामोदरपन्त उनका सेक्रेटरीभी हिरासतमें नथा चाहो दामोदरपन्तकैसाही आदमीहो परन्तु चालाकी और समझमें उसकेसंदेहनहीं वह अवश्य गायकवार सेकहताकि रावजी और नरसूपकड़ेगयेहैं और तहक़ीक़ातहोरहीहै उससमय गायकवारकेपास रुपया था और हरप्रकारसे उनको अधिकारथा उसजलानेमें उन्होंने ऐसी कारवाई नहीं की जैसाकि कोई अपराधी करता है किन्तु ऐसीकारवाई करतेरहे जैसाकोई निर्दोषमनुष्यकरता

फेरीदि ऐसेमुस्तक चार्य मेंटारनैल फियरसाहबकी वकील है जिसने उसको दाकताके फेरदेता है और जो बातें कारनैलफियर साहबसेरे विपरीत करते हैं इसी मनुष्यके कहनेसे करतेहोंगे गायकवारने जो २-नवम्बरको खरीता लिखा उसके लेखसे कोई आश्चर्यकीबात नहीं है कमीशनके मेम्बरोंको समतारीखेंमालूम होंगी परन्तु मैं केवल जिकरको तौरपरउनकोवर्णनकरताहूं क्योंकि २-नवम्बर याद रखनेके योग्य है यह खरीता अच्छे प्रकार सोच विचारकर लिखागया क्योंकि उसकी इबारत निहायत उमदा है और उसमेंऐसामामलापेशकिया गयाहै किश्रीमान्वैसरायकी मंजूरीके सिवाय औरकोई चारहनथा उसमेंदोतीनमुकदमोंके दृष्टान्त भीदियेगयेहैं और कई मुकद्दमों काजिक्र है जिससे अनीतिकुई लोगवाहोंकी गवाहीसे मालूम होताहै कि उधर यहखरीतातय्यारहोतापा औरइधरसंखिया और हीरा पीसाजाताथाऔरएकबोतल औरएकशीशीमें दवातय्यारहोती थी जिसका जिक्रसिवाय अलिफलैलाके और कहीं सुनानहीं गया ऐसीबात का जिक्र उन्नीसवीं सदीमें सुना जानावड़ा आश्चर्यकी बातहै किगायकवार परतो इलजाम है कि वह बदमआशोंसे मिलतेथे और उनको कारनैल फियरसाहबके विषदेनेके लिये वहकातेथे और बयानहै कियह तरगीब उससमय गायकवार नेदीथी जबकि खरीताभेजनुकेथे और जवाबके मुन्तजिरथे उसकाजिक्र मैं फिरकरूंगा और उससमय विस्तार पूर्वक दृष्टान्त वर्णनकरूंगा मुझको अभीबहुत बड़ीबातोंका जिक्र करनाहैमैं आशारखताहूंकि जोमुख्यअपराधीहै उसकापतालगजाय अब जो गायकवार केजिम्मे अपराध लगागया है वह किसी तरह साबित नहींहोता कि उन्होंनेकिया हो जब श्रीमान् वैसरायके निकटखरीता पहुंचातोशीघ्रही गायकवार बड़ौदेको श्रीमान् वैसराय नेउत्तरदिया यदिगायकवाररेजीडन्ट साहबको विष देतेतो उनकोकुछहाल पूछनेकीक्या जरूरतथी औरजोवास्तव मेंगायकवारने विषदिया तोइस तहकीकातकीक्या जरूरतथी

ज्ञातकरते हैं—हरचन्द लोगोंने बयानकिया कि गायकवारको इच्छाकरनैलफियरसाहबके मारडालनेकी थी परन्तु आश्चर्य्य है कि उन्होंने इसमुकद्दमेको तहकीकात में किसीतरह का दखलनकिया न लोगों को रिशवतदी और न किसीको कुछ सिखलायाकि अमुकबात इस प्रकारसे कहनाकिन्तु सालिम और यशवन्तरावको भेजदिया और आपभीलिखभेजाकि जो बात मेरे योग्य हो उसके अंजाम को मैं मौजूद हूं आदिसे अन्ततक गायकवारकी ओरसेकोई काररवाई ऐसीनही हुई जिससेमालूम होकिउनके जिम्मे कुछकसूरहै और किसीबात को गुप्तकरना चाहते हैं॥

माईलार्ड अबइसबातपर आपको ध्यानहोना चाहियेआशा हैकि आप गायकवारपर रहमकरेंगे—जिस जमानेमेंकि मुक-द्दमेकी तहकीकात होतीथी सालिम और यशवन्तरावगायक वारके नौकर और उनके अधिकारमेंथे यदिउनदोनों मनुष्यों को गायकवार कभी अलग करदेते कुछकठिनबात नथी इस के विशेष गवाहों के बयान से प्रतीत हुआ कि कुछ२ रुपया आयाआदिक को खबरोंके मिलनेके वास्ते अगस्त और सितम्बर में दियागया जब गायकवार खबरों के मिलने के वास्ते रुपया खर्चकरतेथे तो क्या उनलोगोंको रुपया नही देसक्ते थे जिन को करनैलफियरसाहबके मारडालनेके लियेतय्यार कियाथा उनलोगों को रुपयेकादिया जाना किसीके बयानसे जाहिर नहींहुआ और गवाहोंमें एकअद्भुतबातयहहैकि नरसू और रावजीने कभी गायकवार से रुपया नहीं मांगा शायद इस-लिये नमांगाकि अगरहम रुपयालेकर खर्चकरेंगे तो हमको हिसाबदेनापड़ेगा और सबसेबढ़कर यहबात है कि इरदईस ने अपनेतईं केवल पांचछः आदमियोंको सुपुर्दकरदिया और हरमनुष्यसे कहताथा कि ऐसाउपाय करो कि करनैलफियर साहबको विषदियाजाय इससूरतमेंमानो गायकवारने अपने जिम्मे मुकद्दमा लेलियाथा उनको क्या जरूरत थी कि प्रति

है और यहबात प्रकटनहीं कीगई कि नरसू और रावजी से उसजमानेमें महाराजासाहबने कुछ बातेंकीं और न किसी ने यह वर्णन किया कि महाराजा साहबने अपने विश्वसित मनुष्योंकेद्वारा उनको अलगकरदेनाचाहा नयह जाहरकिया कि महाराजासाहबने रिश्वत देनेका उद्योग कियाहो अगर यह जुर्मउनकी निस्बतसच्चाहै तो वहइसतरह बैठेरहे जैसे कोईमनुष्य जानबूझकर सुरंग परबैठाहै और अपनेउड़जाने का कुछभयनहींकरता वहसदैवसरल्यूइसपीलीसाहबसे मिल-तेरहे और अपनी रियासतके उत्तम प्रबन्धकेकरनेकी कोशिश करतेरहे और सम्पूर्णकार्य्य पीलीसाहबकेसम्मत और श्रीमान् वैसरायकी हिदायतके अनुकूल करतेथे रोजमर्री के काममें उनके कुछफर्क नहींआया जब वहसरल्यूइसपीली साहब की मुलाक़ातको जातेतोहमेशा वहांरावजी और नरसूको देखा करतेथे यहतो अप्रगटकारकुन गायकवारके प्रसिद्धहैंपरन्तुगा-यकवारनेउनसे कोईबात नहींकी और इसीतरहपर हरएक काररवाई करतेरहे जिसतरह कोईनिर्दोष मनुष्य निर्भयता से करताहै यहबात सरल्यूइसपीलीसाहबकी गवाहीसे स्पष्टहै क्योंकि उन्होंने गायकवारकोलिखाकि सालिम और यशवन्त रावको भेजदो और उन्होंने शीघ्रहीदोनों को भेजदिया उस खतकितावत पर कमीशन के मेम्बर गौरकरें—सरल्यूइसपीली साहबने जाहर करदियाथा कि उनदोनों मनुष्यों को किस वास्तेबुलाते हैं सो यहबात देखना चाहियेकि गायकवार ने उनदोनोंमनुष्योंको बेताम्मुलभेजदिया यदिवास्तवमें विषदिया था तो उनदोनो शख्सोंके भेजनेमें कुछखयाल नहुवा किन्तु गायकवारने उनसे कहदियाथा कि जो कुछतुमसे पूछाजावे और उसको तुमजानतेहो तो बयानकरदो यहबात भीप्रकट है कि सालिम और यशवन्तरावको किसीमनुष्यने तरगीबभी नदीथी और इसबातपर खयाल करना चाहियेकि सरकारी क़ानूनकैसाहै और पुलिसके अधिष्ठाताकिस सख़्तीसे तहक़ी-

इसबातको उन्होंने नहीं बयानकिया-सोअबमें वर्णनकरता हूं कि गायकवारको कारनैलफिथरसाहब कोविषदेनेकी कोईवजह नथीशायद ऐडवकेटजनरलमेरेदोस्तने उसकीवजह वखूबीमालूमकी होगीपरन्तु जबकुछमालूमनहुवा इसलिये उन्होंनेअपनी इस्पीचमें जिक्रकिया कि गायकवारने रेजीडन्सी केनौकरोंको वहकाया उन्होंनेयह नहींकहाकिनरसू और रावजीसेपरस्पर क्यावास्ताथाऐडवकेटजनरलनेअपनीइस्पीचमेंएकमनुष्यजिसका नामपेडरूहै जिक्रकियाकि आयाआदि नौकरोंकोएकसलाह थी और पेडरूको; और सलाहथी पेडरूकारनैलफियर साहबका खानसामांहै और २५ वर्षसे उनकेपास नौकरथा पेडरूकेइज़हारपर जोग़ौर कियाजाय तोउसके बयानसे गायकवार जुर्मसेबरीहोतेहैं जोउनपर लगायागयाहै इसलिये यहबात ध्यान करनेके योग्य है कि ऐडवकेट जनरलने अपनीइस्पीचमें पेडरू कीनिसबत किसतरह जिक्रकियाहै उन्होंनेजान बूझकर पेडरू का इसतरह जिक्र किया कि यह मनुष्य बड़ा प्रतिष्ठित और विश्वसित है मैं भी कहता हूं कि इन सम्पूर्ण झूठे गवाहों में जिन्होंने अदालतके सम्मुख गवाहीदी है पेडरू की गवाहीपर किसी प्रकारका एतिराज नहीं होसक्ता जोपेडरूकी गवाही सहीसमझी जावेतो यह मुक़द्दमा खतमहोगया और जो कुछ गवाहोंने झूठीगवाहीका महलखड़ा कियाहै वहबिल्कुलगिर जावेगा रावजीजो झूठे गवाहोंका सरदारहै उसकी गवाही काएक २ अक्षरखण्डन कियागया रावजी और पेडरू केवर्णन मेंकितना अन्तरहै—पेडरू २५ वर्षसेकारनैल फियर साहबका विश्वसित नौकर था उसका प्रतिष्ठित होना साहब ऐडवकेट जनरलभी मानतेहैं उसने कमीशनके सम्मुखवर्णन किया कि रावजीने मेरेविषयमें जोवर्णन कियावह गलतहै और सरासर उसकीबनावटहै॥

माईलार्ड—मैं नहीं कहसक्ता कि रावजीकी गवाही किस प्रकारसे घड़ीगई पेडरूकी गवाहीने रावजीकी गवाहीकोडहा

मनुष्य के अनेसन का हाल कहते इस इच्छा के पूर्ण होने के लिये एक मल्हकारी था पांच छः मनुष्योंके एकत्र करनेसे क्या प्रयोजन था अब्बारा बिल्कुल बुद्धिके विरुद्ध मालूम होती है कि गायकवार ने ऐसा किया हो नरसू की गवाही से प्रकट है कि रावजी के साथ सध्यस्तरहा रावजी ने जितना झूठ बोला उसने उसकी सिदाक़्त की जब उसको गायकवार के पास लाये थे तो गायकवार को उससे कुछ लाभ नहीं हुवा जितनी कारवाई की तौ रावजी के बयान के अनुसार आपही रावजीने की मालूम होता है कि नरसू ख्वाहमख्वाह जुर्म में संयुक्त होता है और नरसू बड़ा भाग्यहीन मालूम होता है वह कहता है कि मैं अपनी अभाग्यता से ऐसी २ बातों में फंस जाता हूं हरकदम पर उसको फन्दे नज़र आते हैं वह अपने अपराध को बड़ी लज्जा से प्रकट करता है यह मनुष्य अपने तई बड़ा धर्म्मिष्ठ प्रकट करता है यह लुकहदा इतना लंबा है कि मुझको भय है कि कोई बात छूट न जावे परन्तु मैं इस बातका भलीभांति विचार रक्खूंगा आशा है कि अगर मुझसे कोई भूल हो तो आप सब साहब उसको बतादें-इस मुकद्दमे के शुरू होने के समय जो ऐडवकेट जनरल ने इसी- च की थी अब उसपर सब साहबों का ध्यान कराता हूं—पूर्वोक्त साहबकी इस्पीचनिस्सन्देह अति उत्तम और उनकी पदवी की लियाकत के अनुकूल थी उन्होंने किसी बातपर बहुत पक्ष नहीं किया किन्तु बड़ी नम्रता और दृढ़ता के साथ कही थी॥

मुझको गायकवार की ओर से उस स्पीच में कोई शिकायत नहीं है किन्तु जहांतक सम्भव था उन साहबने मुझे सहायता दी॥

अब मैं मतलबकी तरफ ध्यान देता हूं जिस समय ऐडवकेट जनरल साहबने स्पीच कही थी और दरख्वास्त की थी कि मीशन के मेम्बर गायकवारपर जुर्म कायम करके दण्ड विचारें॥

उन्होंने अपने विचारसे गायकवारपर दो अपराध ठहराये थे परन्तु उन्होंने अपनी सम्पूर्ण इस्पीच की कोई वजह कारनैल फियरसाहबको विष देने की नहीं बयान की शायद जानबूझकर

सा थे होगा कि रावजी ने अपने इजहार में ६ और ७ नवम्बर का जिक्र नहीं किया किन्तु उसने कहा है कि मैंने ६ और ७ नवम्बर को विष नहीं डाला परन्तु फिर भी करनैल फियर साहब की ऐसी ही दशा होगई जैसा कि विष के खाने से होती है अगर ६–७ नवम्बर को विष दिया गया तो चकोतरे की शर्बत में दिया गया रावजी का बयान है कि जो पुड़ियां मुझको मिली थीं उनको मैंने ८ नवम्बर को शर्बत में डाल दिया कुछ संदेह नहीं कि बहुधा झूठ के बोलने वाले अपनी बात को भूल जाते हैं और झूठ बोलने वाले मनुष्य बड़े भुलक्कड़ होते हैं जब ऐडवकेट जनरल ने प्रथम में इस्पीच कही थी उस में वर्णन किया था कि रावजी ने ६ और ७ नवम्बर को विष डाला परन्तु मैं नहीं कह सक्ता कि रावजी ने मिस्टर सूटर साहब के रूबरू यह जिक्र किया था वा नहीं परन्तु उसने किसी न किसी अफ्सर के रूबरू अवश्य कहा होगा परन्तु जब अदालत में उसके इजहार लिये गये तो उसने ६ और ७ नवम्बर का कुछ वर्णन नहीं किया किन्तु उसने गलती से कहा कि ८ नवम्बर को सब पुड़ियां शर्बत में डाल दीं फिर ऐडवकेट जनरल ने हेमचन्द और फतहचन्द का जिक्र किया इस गवाह का दामोदर पंथ की गवाही के वक्त वर्णन करूंगा॥

ऐडवकेट जनरल कहते हैं कि संखिया और हीरा कूट कर सा लिम को रावजी के देने के लिये दो दफे दिया गया परन्तु रावजी केवल एक पुड़िया के देने का जिक्र करता है पहिले उसको सितम्बर के महीने में एक पुड़िया दीगई और दूसरी बेर उसको दो पुड़ियां दीगईं रावजी ने उसके तीन भाग किये उन दोनों पुड़ियों में से एक सफेद और दूसरी में गुलाबी कोई वस्तु थी गुलाबी वस्तु के निस्बत रावजी ने इसलिये कहा था कि उसने सुना होगा कि गुलाबी रंग के हीरे होते हैं परन्तु जब संखिया और हीरे एक जगह कूटे गये तो फिर गुलाबी किस तरह आगया और जो पुड़िया उसकी पेटी में मिली तो अपनी बात के सही होने के लिये उसने बयान किया कि संखिया और हीरे मिलाये नहीं गये रावजी की प्रकृति अजब तरह की है इसने करनैल फियर साहब को मार

दिया और ऐडवकेट जनरल की आवलियत भी उसको खड़ा नहीं रखसक्ती अब यह बात मालूम होना बाक़ीहै कि आपकी रायभी इस विषयमें मेरी रायके अनुकूल है वा नहीं—साहब ऐडवकेट जनरल सरकारकी ओरसे इसविषयमें बखूबी सोच करेंगे और पेडरूकी गवाहीका भलेप्रकार वर्णन करेंगे॥

मेरे विचारसे चाहे ऐडवकेट जनरल हजार तकरीर करेंगे परन्तु मेम्बरोंके जेहनपर बैठना बहुतही कठिनहोगा कि आया मुमकिनहै कि पेडरूकी गवाहीपर निश्चयकियाजाय यारावजीकी गवाही ठीक समझीजाय और तुर्फातमाजरा यहहै कि पेडरूकी गवाही प्रथम बम्बई के एक नम्हित आफंदीपोस और डिपुटी कमिश्नर पुलिस मिस्टर एडगव्टन साहब ने लीथी इसलिये पेडरू और रावजी की गवाही में देखना चाहिये कि कितना अन्तरहै ऐसा नहीं होसक्ता कि दोनों मनुष्यों की गवाहीपर विश्वास कियाजाय जरूरहै कि एक मनुष्यकी गवाही झूठहो और दूसरे की ठीकहो पेडरूकी गवाही में सुणकोकोई बातकहनी बाक़ीनहींहै परन्तु रावजीकी गवाही परमुजको एतिराजहै रावजीके निस्बतऐडवकेट जनरलसाहब नेउसका प्रतिष्ठित होनानहींकहा ऐडवकेट जनरलने मुकद्दमेके प्रारम्भ होनेके समयअपनी स्पीचमेंवर्णनकियाकिकरनैल फियर साहबको शुरूमेंविषदिये जानेका उद्योगबहुतवाराव-जीनेअपनी गवाहीमें प्रथमअपने इरादोंकाबखूबी इजहारदि-याकिमुजको तारीखें स्मर्णनहीं है परन्तु कमीशन के सन्मुख फिरबयान करूंगा परन्तु अजब बातहै कि साहबऐडवकेटज-नरलनेउसका जिक्रनहीकिया शायदअकस्मात् उनसेयहबात छूटगई अथवा उन्होंनेयहसमझाहोगा किरावजीकाबयानऐसा बेमूलहै किकमीशनके सन्मुखउसका वर्णननकरसके यदिऐडव-केटजनरलसाहबकायहीविचारथातोबहुतठीकहैऐडवकेटसा-हबसितम्बरके उद्योगका कुछवर्णननहींकरतेहैं उन्होनेकेवल ६ और ७नवम्बरके उद्योगका जिक्रकिया औरकमीशनकेमेम्बरोंको

है उसको क्षमा किया जाय परन्तु नरसू में अपराधी और निर्दो-
ष होना दोनों बातें पाई जाती हैं यह अपने अपराध से ऐसा
लज्जित हुआ कि कुवें में डूबना चाहा था और उसने वही
ससलपूरी की कि कुवें से सच्चाई मिलती है परन्तु सच्चाई के बदले
उसको कांस्टेबल मिला क्योंकि उसके कूदने के उपरान्त कां-
स्टेबल भी कुवें में कूदा था—फिर ऐडवकेट जनरल गायकवार का
जिक्र करते हैं जब कि वह ९ नवम्बर को करनैल फियर साहब के
पास आये थे उन्होंने वर्णन किया कि करनैल फियर साहब का
जो मत लाता था और जो विष खाने वाले की दशा होती है वही
उनकी हालत थी लेकिन डाक्टर सीवर्ड साहब से करनैल फियर
साहब ने चाहा नहीं सुना कि तलछट के इमतिहान का क्या परिणाम
हुआ परन्तु जब करनैल फियर साहब की मुलाक़ात गायकवार
से हुई तो करनैल फियर साहब को सुनकर आश्चर्य हुआ कि जो
दशा उनकी थी वैसी ही बहुत से लोगों की शहर में दशा है किन्तु
गायकवार ने भी कहा कि मेरी तबीयत का भी यही हाल है हालांकि
करनैल फियर साहब ने विष का उनसे कुछ भी जिक्र नहीं किया उस
समय तक करनैल फियर साहब को मल्हरराव से कुछ संदेह नथा
मालूम हुवा होगा कि मुझको विष दिया जावेगा यदि दामोदर
पन्थ का बयान ठीक है कि उस समय मल्हरराव खूब जानते होंगे
कि करनैल फियर साहब की क्या दशा है क्योंकि दामोदर पन्थ
कहता है कि मल्हरराव ने मार्ग में मुझसे यह वार्त्ता की थी जब
गायकवार ने करनैल फियर साहब से बयान किया था कि नगर
में इस प्रकार का रोग है तो उनको मालूम न होगा कि डाक्टरी
से मालूम हो जाता है कि जो मनुष्य विष खाता है उसकी क्या
दशा हो जाती है करनैल फियर साहब ने जो डाक्टर सीवर्ड साहब
को चिट्ठी लिखी थी उसमें उन्होंने लिखा था कि पेट में पीड़ा और सिर
घूमता है और मुख में तांबे का स्वाद है इस विषय में ऐडवकेट
जनरल वर्णन करते हैं कि गायकवार करनैल फियर साहब को
निश्चय कराना चाहते हैं कि यह बीमारी किसी सबब से थी जब मैं

नाकीचा हाय और उसको दयाभी आतीथी पेटीका जिक्रभी मैं फिर करूंगा उससे स्पष्टप्रगटहोताहै कियह मुकद्दमा बनाया गयाहै ऐडवकेट जनरलसाहिब पुलिसकी तहकीक़ातके विषय में कहते हैं किगवाहोंमें परस्परकुछ वार्त्ता नहीं होतीथी इस वजह से वह कहते हैं कि गवाहों की गवाही बनावट की नहीं परन्तु मेरे विचार से यह सब बातें निरर्थ है निस्संदेह इतना ऐब गवाहोमेंहै किवहबेमूल है वास्तव में गवाहों की वार्त्ता नहीं हुई परन्तु इन गवाहों को एक प्रतिष्ठित मनुष्य अर्थात् अकबरअलीने बुलायाथा और बखूबीउनको सिखार करकर एक बात को पूछा उनगवाहोंने २४ घण्टे के उपरान्त सबहाल बयानकरदिया यहकाररवाई अकबर अलीकी मेरी समझ में नहीं आती कि किसतरह सब लोगोंने बेचैन होकर अपने मनका भेद उनसे वर्णन करदिया मेरेविचारसे यहसब गवाहियां बनाईहुई हैं और बनावट को मैं साबितकरदूंगा और सबगवाह इसीवास्ते एकजगहकिये गयेथे कि उनकीगवा- हियांघड़ीजावें गजानन्दकी निस्बतभी इससेअधिक और कुछ नहींकहसक्ता मुजको हरएक बातपर गजानन्दयाद आता है औरयदिकोई मनुष्य कहे किगवाहों की गवाही कैसी हैतो उसकेउत्तरमें मैंकेवलयही कह सक्ताहूं (गजानन्द) यहगवाह आपहीनहीं जानतेथे कि हम क्या वर्णन करतेहैं जैसीकिउन- कीगवाही बनाई गई उसीतरह उनकी याद भी दुरुस्त होती तोमैंकिसतरह गवाहीमें तकरीरकरता परन्तु मैं ऊपर कह- चुकाहूं किझूठोंका स्मर्णबहुत खराबहोताहै यहगवाह मुत- तलिफ बयान करते थे अकबरअली अब्दुलअली गजानन्द ने अपनेमुल्कके हितकेलिये जो काररवाई कीहै विश्वासहै कि उसपरकमीशनकेमेम्बर कदाचित् निश्चयनकरेंगे इसकेउपरान्त ऐडवकेट जनरलनेइसतौर से जिक्रकियाथा किदामोदरपंथ रावजीनरसू बड़ेदुष्टहैं और इसवजहसे अपने इजहारमेंइक्र- रारकियाहै किखतामुआफहो और जो २ उन्होंनेदुष्टताकी

है उसको क्षमा किया जाय परन्तु नरसू में अपराधी और निर्दोष होना दोनों बातें पाई जाती हैं यह अपने अपराध से ऐसा लज्जित हुआ कि कुवें में डूबना चाहा था और उसने वही ससलपूरी को कि कुवें से सच्चाई मिलती है परन्तु सच्चाई के बदले उसको कांस्टेबल मिला क्योंकि उस के कूदने के उपरान्त कांस्टेबल भी कुवें में कूदा था—फिर ऐडवकेट जनरल गायकवार का ज़िक्र करते हैं जब कि वह ९ नवम्बर को करनैल फियर साहब के पास आये थे उन्होंने वर्णन किया कि करनैल फियर साहब का जो हाल जाता था और जो विष खाने वाले की दशा होती है वही उनको हालत थी लेकिन डाक्टर सीवर्ड साहब से करनैल फियर साहब ने चाहा न हीं सुना कि तकलीफ के इस तिहान का क्या परिणाम हुआ परन्तु जब करनैल फियर साहब की मुलाक़ात गायकवार से हुई तो करनैल फियर साहब को सुन कर आश्चर्य हुआ कि जो दशा उनकी थी वैसी ही बहुत से लोगों की शहर में दशा है किन्तु गायकवार ने भी कहा कि मेरी तबीयत का भी यही हाल है हालांकि करनैल फियर साहब ने विष का उनसे कुछ भी ज़िक्र नहीं किया उस समय तक करनैल फियर साहब को मल्हरराव से कुछ संदेह न था मालूम न हुआ होगा कि मुझ को विष दिया जावे गा यदि दामोदर पन्थ का बयान ठीक है कि उस समय मल्हरराव खूब जानते होंगे कि करनैल फियर साहब की क्या दशा है क्योंकि दामोदर पन्थ कहता है कि मल्हरराव ने मार्ग में मुझ से यह वार्त्ता की थी जब गायकवार ने करनैल फियर साहब से बयान किया था कि नगर में इस प्रकार का रोग है तो उनको मालूम न होगा कि डाक्टरी से मालूम हो जाता है कि जो मनुष्य विष खाता है उसकी क्या दशा हो जाती है करनैल फियर साहब ने जो डाक्टर सीवर्ड साहब को चिट्ठी लिखी थी उसमें उन्होंने लिखा था कि पेट में पीड़ा और सिर घूमता है और मुख में तांबे का स्वाद है इस विषय में ऐडवकेट जनरल वर्णन करते हैं कि गायकवार करनैल फियर साहब को निश्चय कराना चाहते हैं कि यह बीमारी किसी सबब से थी जब में

करनैलफियर साहबकी गवाहीपर ध्यान करताहूं तोमैं कह सक्ताहूं कि गायकवार उसदिन कोकरनैलफियर साहबकी मुलाकातके लियेगयेथे वहदिन उनकी मुलाक़ात काथा कोई नईबात गायकवारने नहींकीथी और न गायकवारकी बातों सेकुछफिक्र मालूमहोतीथी उसदिन मामूली वार्त्ता हुई यहां तकअपनेमित्र ऐडवकेटजनरल की दूसीचपर गुफ़्गूकी वहबि-ल्कुलक़ाबलियतसे भरीहुईथी अबवहकहतेहैंकि यहमुक़द्दमा नरसूऔर रावजीऔरदो मनुष्योंकी गवाहीपरहै वहइसबात कोमानतेहैं किरावजीऔरनरसूने जुर्ममेंमदद की वहकहतेहैं कि इस मुक़द्दमेका निर्णय रोयदादपर होगा पूर्वोक्त साहब तीनप्रकारसे गवाहोंकी सिदाक़त करते हैं प्रथमयह कि वह अलग २ रक्खे गये इस विषयमेंमैं पहिले गुफ्तगू करचुकाहूं जिस मनुष्यने नरसू की गवाही सुनीहोगी क्या वहकह सके-गा कि उसकी गवाही ठीक है उसकी गवाही से यह बात प्रगटहै कि एक समयमें वहबहुत बदज़ातथा परन्तु अबअपने कियेपर पछताताहै दासोदरपंथरावजी और नरसूकी गवाही केलिये बहुतकुछ सिदाक़त दाकारहै मेरेमित्र(एडवकेटजनर-लसाहब) ने उसकीसिदाक़त नहींकी यदिपेडरू की गवाही ठीकहैतो रावजीको दरोगहल्फ़ी अर्थात्झूठी सौगन्दखानेके अपराधमें दण्डहोना चाहिये केवल तीनमनुष्यों कीगवाहीपर इसमुक़द्दमेका दारमदारहै और उन्हीतीन मनुष्योंकीगवाही से गायकवारकीप्रतिष्ठा और मालऔर असबाब हरलियागया क्या उनलोगोंकी ऐसीगवाहीहै कि जिसकी समाअतहो और गायकवारको उसकीगद्दी औरउसकी जायदादछीनकर मुफ़-लिसकरदिया जायआपलोग जो कमीशनकेमेम्बरहैं केवलजूरीके तौरपरहैं क्या आपसाहिबों को यहउचितहै कि सोचेसमझे बिना छोटे२ गवाहोंकी गवाहीपर गायकवार को फांसीदेदें ऐडवकेटजनरल चाहतेहैं कि गायकवारको दण्ड दियाजावे

इनलोगों की गवाही बिल्कुल बेमूलहै सबसे पहिले कारनैल फियरसाहबकी गवाहीका जिक्रकरूंगा—माईलार्ड ऋटुजेपल-टनेऐसेरी आवाजाज़ाइसेंनहीं है कारनैलफियरसाहब इसअफ़-फिसाने में नामवर शख्सहैं मैने उनके विषयमें एकशब्द भी सिवाइसके जो मुझेकहना आवश्यक है न काहा तो क्या और ऐसीबातनकहूंगा जिससे कारनैलफियरसाहब खेदको प्राप्तहों कारनैलफियरसाहब निस्संदेह प्रतिष्ठित और सत्यवादी और वीरहैंपरन्तु जिसपदवीपर वहनियतथे वहउसके योग्यनथेइस ओहदेका कामसहासूक्ष्मथा गायकवारज नतेथेकि उनपर किसीसमयमें ऐसी चहलनुमाईहुईथी कि उनकीप्रतिष्ठा और काररवाई में फर्क आगया था और मालूमहुआथा कि वह प्रबन्ध नहीं करसक्ते हैं मुझको आशा है कि यहबातें कारनैल फियरसाहबके विषय में जियादहसख्त नहींहैं—फिर गवर्नर बम्बईनेउनको उसतेवरीकिया जोकि राजा कारनैलफियरसाहब के पासगया और जिसको मैने अदालत में पेशकिया उससे कारनैलफियर साहबके बदानाम करनेकी मेरीइच्छा नहीहै केवल इसीलिये पेश किया था ताकि साबितहो कि कारनैल फियरसाहबउसपदवीके योग्यनथे जिसपरकिवहनियतथेऔर गायकवार इनबातोंको खूबजानते औरसमझतेथेकिजबउनकी शिकायतहोगी शीघ्र हीबदलाये जावेंगे कारनैलफियरसाहबने ऐसेलोगोंसेमुलाकातरक्खीजिनसेकि गायकवारमहाअप्रसन्न थे औरवहलोगगायकवारकेप्राणकेबैरीथे जैसेकि उनमेंसे एक भाऊपूनाकरथाउनलोगोंकाबयानहै किहमकोकारनैल फियर साहबनेकुछरुपयानहींदियापरन्तु कारनैल फियरसाहबकीस-रपरस्तीउनकेकमाखानेकेलियेकाफीथीमालूमहोताहैकिकार-नैल फियरसाहबउनसेऐसामेलजोलरखतेकिजोकुछ वहलोग कहतेथेथेवहीकारनैलफियरसाहब करतेथे फिर कारनैलफियर साहबक्योंकरकहतेहैं किभाऊपूनाकर प्रतिष्ठितमनुष्यहैमैंक-दाचित्नहींकहसक्ताकिउनकोक्योंकरमालूमहुवा किभाऊपू-

करनैलफियर साहबकी गवाहीपर ध्यान करताहूं तोमैं कह सक्ताहूं कि गायकवार उसदिन जोकरनैलफियर साहबकी मुलाक़ातको लियेगयेथे वहदिन उनकी मुलाक़ात काथा कोई नईबात गायकवारने नहींकीथी और न गायकवारकी बातों सेकुछफिक्र मालूमहोतीथी उसदिन मामूली वार्त्ता हुई यहां तक अपनेमित्र ऐडवकेटजनरल की दूसीचपर गुफ़्तगूकी वहबिल्कुलक़ाबलियतसे भरीहुईथी अबवहकहतेहैं कि यहमुक़द्दमा नरसू और रावजी और दो मनुष्योंकी गवाहीपरहै वहइसबात कोमानतेहैं कि रावजी और नरसू ने जुर्ममेंसदद की वहकहतेहैं कि इस मुक़द्दमेका निर्णय रोयदादपर होगा पूर्वोक्त साहब तीनप्रकारसे गवाहीकी सिदाक़त करते हैं प्रथमयह कि वह अलग २ रक्खे गये इस विषयमेंमैं पहिले गुफ़्तगू करचुकाहूं जिस मनुष्यने नरसू की गवाही सुनीहोगी क्या वहकह सकेगा कि उसकी गवाही ठीक है उसकी गवाही से यह बात प्रगटहै कि एक समयमें वहबहुत बदज़ातथा परन्तु अबअपने किये पर पछताताहै दामोदरपंथरावजी और नरसूकी गवाही केलिये बहुतकुछ सिदाक़त दाकारहै मेरेमित्र(एडवकेटजनरलसाहब) ने उसकीसिदाक़त नहींकी यदिपेडरू की गवाही ठीकहैतो रावजीको दरोगहलफी अर्थात् झूठी सौगन्दखानेके अपराधमें दण्डहोना चाहिये केवल तीनमनुष्यों कीगवाहीपर इसमुक़द्दमेका दारमदारहै और उन्हीतीन मनुष्योंकीगवाही से गायकवारकीप्रतिष्ठा और माल और असबाब हरलियागया क्या उनलोगोंकी ऐसीगवाहीहै कि जिसकी समाअतहो और गायकवारको उसकीगद्दी और उसकी जायदादछीनकर मुफ़लिसकरदियाजाय आपलोग जो कमीशनकेमेम्बरहैं केवलजूरीके तौरपरहैं क्या आपसाहिबों को यहउचितहै कि सोचेसमझे बिना छोटे२ गवाहोंकी गवाहीपर गायकवार को फांसीदेदें ऐडवकेटजनरल चाहतेहैं कि गायकवारको दण्ड दियाजावे

हुई इस फोड़े की दवा डाक्टर साहब किया करते थे करनैल साहब उस जमाने की शिकायत करते हैं कि बहुधा मेरा जी मतलाता था और फोड़े में अति पीड़ा होती थी और उस पीड़ा का यह कारण मालूम हुवा कि डाक्टर सोवर्ड साहब फोड़े पर क्लोडियम नाम औषधी लगाया करते थे और क्लोडियम का यह गुण है कि लगाते ही बहुत पीड़ा होती है ऐडवकेट जनरल बयान करते हैं कि रावजी ने चकोतरे के शरबत में कुछ पुड़ियां डाल दीं और बिला किसी शिकायत के करनैल फियर साहब उस को पीगये हालांकि अगर कोई चकोतरे का खराब शर्बत पियेगा तो वेशक शिकायत करेगा परन्तु करनैल फियर साहब ने उस को चुपचाप पीलिया और किसी प्रकार की शिकायत न की मालूम होता है कि करनैल फियर साहब के मिजाज में अति संतोष था तीन दिन तक उन्होंने शर्बत नहीं पिया यह भी नई बात मालूम होती है कि जब किसी मनुष्य को किसी खास वस्तु का अभ्यास होता है तो उस के इस्तैमाल के बिना उस को चैन नहीं पड़ता आप साहिबों का मत मेरे वर्णन के अनुकूल होगा कि करनैल फियर साहब ने शर्बत न पीने की कोई माकूल वजह बयान नहीं जो कारण उन्हों ने वर्णन किया वह मेरे विचार से काफी नहीं है अगर रावजी का बयान देखा जावे तो मालूम होगा कि उस ने केवल हीरे की कनी डाली थी सो उस के निस्बत डाक्टरों ने वर्णन किया कि उस से कुछ दुःख नहीं पहुंचता पस ऐसेही खयालों से उन का शिर घूमने लगा और जी मतलाने लगा और जो दशा सितम्बर और अक्तूबर में हुई थी वैसीही दशा होगई रावजी का बयान है कि ६, और ७, नवम्बर को मैंने संखिया नहीं डाली फिर किस तरह करनैल फियर साहब की तबीयत बिगड़ गई फिर भी करनैल साहब चुप होरहे और किसी से उन्होंने शिकायत नहीं की ९—नवम्बर को उन्होंने शिकायत की और संखिये के दिये जाने का संदेह हुवा परन्तु दो तीन बातें मेरे विचार में नहीं आतीं उन में से एक यह है कि कोई माकूल वजह करनैल फियर साहब को विष दिये

ना कर सत्यवादी है क्योंकि वह गायकवार के बिल्कुल प्रति कूल था फेर कारनैल साहब को यह ख्याल हुआ कि जिन लोगों पर गायकवार ज़ुल्म करते हैं उनको नालिश सुनाना चाहिये इससे मालूम हुआ कि सैकड़ों मनुष्य गायकवार की शिकायत किया करते थे जब हवा बाने जाते उस समय में लोग शिकायत शुरू करते थे निदान जो मनुष्य गायकवार की शिकायत करता था उसको बखूबी कारनैल फियर साहब सुनते थे कोई २ शिकायतें बिल्कुल झूठ होती थीं परन्तु साहब उनको भी समाअत करते थे जब लोगों को यह मालूम हुआ कि साहब हरएक शिकायत को सुनते हैं और गायकवार से अप्रसन्न हैं तो लोगोंने जा बेजा अरज़ियां देनी शुरू करदीं मैं अब कहचुका हूं कि जब गायकवारने देखा कि कारनैलफियर साहब कि न २ प्रकार के लोगों से मिलते हैं और प्रतिसमय और हर लगान भावपूना कर सेवा करते हैं और जिस से यह बात साबित होती थी कारनैलफियरसाहब बिल्कुल भावपूना करके बश में हैं समझे कि उत्तम प्रबन्ध का होना असम्भवित है जो ऐसा न होता तो कोई कठिनता आगे न आती जिस २ उत्तम प्रबन्ध के लिये श्रीमान् वैसरायने दो वर्ष की उनको मोहलत दी थी अगर कारनैल फियरसाहब ऐसा न करते तो कोई दिक्कत न थी परन्तु इस हालत में अच्छे इन्तिज़ाम का होना असम्भवित था कारनैलफियर साहब को यह संदेह था कि मुझ को विष दिया जावेगा परन्तु मालूम नहीं कि किस मनुष्यने उनको यह पट्टी पढ़ाई थी और किस तरह उनको यह खयाल हुआ कि कारनैल फियर साहब को इस प्रकार के खयाल थे और गायकवार के मिज़ाज में दूसरी तरह की बातें थीं प्रकट है कि भावपूना कर बाजारी गप कारनैलफियर साहब को आकर सुनाया करता और कारनैलफियरसाहब हरबात का निश्चय कर लेते थे सितम्बर वा अक्टूबर में फियरसाहब के माथे पर फोड़ा निकला था इस मुकद्दमे में फोड़े के विषय में भी बहुत बड़ा ज़िक्र है और बहुत कुछ काररवाई फोड़े के निस्बत बयान

हुईदूसफोडेकीदवा डाक्टरसाहबकियाकरतेथे करनैलसाहब उसनमानेकी शिकायतकरतेहैं किबहुधामेराजीमतलाताथा और फोड़ेमेंअति पीड़ाहोतीथी और उसपीडाका यहकारण मालूम हुवा किडाक्टर सोवर्डसाहब फोड़े पर लौडियम नाम औषधी लगाया करतेथे और लौडियमका यहगुण है किलगातेही बहुतपीड़ाहोतीहै ऐडवकेट जनरलवयान करते हैंकि रावजीने चकोतरेके शरबतमें कुछपुडियां डालदींऔर बिलाकिसी शिकायत के करनैल फियरसाहब उसको पीगये हालांकि अगरकोई चकोतरेका खराबशर्बत पियेगातो वेशक शिकायत करेगापरन्तु करनैलफियरसाहबने उसकोचुपचाप पीलिया और किसीप्रकारकी शिकायतनकी मालूम होताहै किकरनैलफियरसाहब केमिजाजमें अतिसंतोषथा तीनदिन तकउन्होंने शर्बतनहीं पियायहभी नईबातमालूम होतीहैकि जबकिसीमनुष्यको किसीखास वस्तुकाअभ्यास होताहैतोउसके इस्तैमालके बिनाउसको चैननहीं पड़ताअ.प साहिबोंकामत मेरेवर्णनके अनुकूलहोगा किकरनैलफियरसाहबने शरबत न पीनेकी कोईमाकूल वजहवयान नकी जोकारण उन्होंनेवर्णन कियावहमेरे विचारसे काफीनहीं है अगररावजी का वयान देखाजावेतो मालूमहोगा किउसने केवलहीरेकी कनीडाली थीसो उसकेनिस्बत डाक्टरोंने वर्णनकिया किउससेकुछदुःख नहीं पहुंचतापस ऐसेही खयालों से उनका शिर घूमनेलगा और जीमतलानेलगा और जोदशा सितम्बर और अक्तूबर में हुईथी वैसीही दशाहोगई रावजी का वयानहै कि ६, और ७, नवम्बरको मैने संखियानहीं डाली फिरकिसतरह करनैलफियरसाहबकी तबीयत विगडगई फिरभी करनैलसाहबचुप होरहे और किसीसे उन्होंने शिकायत नहीं की ९—नवम्बर को उन्होने शिकायतकी और संखियेके दिये जानेका संदेह हुवा परन्तुदोतीनवातें मेरे विचारमेंनहीं आतींउनमेंसे एक यहहैकिकोई माकूलवजह करनैलफियर साहब को विषदिये

जानेकी नथी इसबात का ख्याल और लोगोंके दिलोंमें भी आया होगा ऐसेख्यालोंके विषयमें मैं बहुतसी बातेंकहूंगा मुझको इसबात का भी आश्चर्य्यहै कि जिनलोगों को संखिया मिलसक्तीथी वह कारनैलफियरसाहबके कमरेमें भी जासक्तेथे और कारनैलफियरसाहबकी सबआदतों कोभी जानतेथे फिर क्यों अच्छीतरहसे विषदिये जानेका बन्दोबस्त नहींहुवा सब से अधिकआश्चर्यकी यहबातहै कि मुद्दततक उद्योगहोतारहा और भलेप्रकार विष न दियागया जब शर्बतमें विष मिलाया गया तो कारनैलफियरसाहब यहकहतेहैं कि तलछटका रंग स्याही माइलभूराथा और गवाहोंका यहबयानहै कि स्याही माइल नथा किन्तु हलकाभूराथा जबतलछट का इमतिहान कियागया तो जो सूरत कारनैलफियरसाहब बयान करते हैं उसके प्रतिकूलथी कारनैलफियर साहब ने गिलास कोमेजपर रखदिया थोडीदेरके उपरान्त उनकोसंदेहहुवा और तलछट को देखा आपको स्मर्णहोगा कि डाक्टरसीवर्डसाहबने उसके निस्बतक्याकहा मैनेउनसे इतनेप्रश्नकियेकि वहअप्रसन्नहोगये और कहा कितुमयहांक्या प्रलयतक रहोगे मैं भी जानताहूं किजोप्रश्नउनसे मैनेकियेउनसेउनकोआश्चर्यहुवाहोगाक्योंकि तलछट डाक्टरसाहबनेदेखा उसकारंग हलका भूराथा और जिस तिलछट के निस्बत कारनैल फियरसाहब वर्णन करते हैं उनकीरंगत स्याहीलायल भूरीथी यहबात ठीक है किरंगत केविषयमें बहुतसेलोगोंके बयानमेंअन्तर होजाताहै परन्तुइतना अन्तरनहींहोता जोकिडाक्टर सीवर्डसाहबऔरकारनैलफियर-साहबके बयानमेंहै जिसप्रकारडाक्टर सीवर्डसाहबने संखिये की आजमाइशकी वह तरीका भी अच्छानथा किन्तु जिसप्रकार डाक्टर ग्रेसाहबने इमतिहान कियावहभी अच्छा नथा यूरूपमें जब इसतरहका इमतिहान होताहै तोडाक्टरलोग संखियेको दूसरीवस्तुओंसे पृथक् करकेउसको मूलरूपमें लाकर दिखा देते हैं और ऐसा नहीं करते कि भातका सा छल्ला

करनेकी इच्छा नथी वहबात गिलासकी तलछटकेविषयमेंहै इस
केलिये करनैलफियरसाहब आपहीवर्णनकरतेहैं किमैंनेथोड़ा
शरबतपीकर रखदियाथा गवाहोंकी गवाहियांदेखतेही मालूम
होताहै किपांच वा छः बेरविषदेने का उद्योगहुवा और एक
दफेकरनैल फियरसाहबको कोईनकोई बातबाधक हुई और
थोड़ीसीशरबतपीकरछोड़दिया करनैलफियरसाहबकाबयानहै
किजबकभीशर्बतमें विषडालागया है उसमें उसकास्वादबदलगया
इसीहेतुसे उन्होंने शर्बतनहीं पियाऔरउनका बयान हैकिसं-
खियाऔरहीरेकाचूर्ण शर्बतमेंपड़ाथा औरइनदोनों वस्तुओंमें
किसीभांतिका स्वादनहींहै सो कुछसंदेहनहीं है कि अगर
यहचीजें शरबतमें डालीगईहोती तो अवश्यकरनैलफियरसाहब
पीजाते और बादमें कुछफर्कनहोताऔर घण्टे आधघण्टे के
उपरान्त उसकी कैफियत मालूम होती क्योंकि डाक्टरों की
भी रायहैकी घण्टे आध घण्टे के उपरान्त विष अपना गुण
करजाताहै इसविषयमें शनिवारको इत्तिफाकसे जिक्र नहीं
कियाकमीशनके मेम्बरोंको मालूमहै कि जब दामोदरपन्त के
इजहार आदिपर बातीकर चुकूंगा तो इसविषयमें भी तक़-
रीरकरूंगा अबदामोदरपन्तके इजहारसे खण्डनकरना शुरू
करताहूं साफजाहिरहै कि दामोदरपंत से हरएक बातका
मूलहै और विषआयातो इसीके द्वारा आया यहबात कहीं
जाहिरनहींहुईकि किसीऔर मनुष्यने विषमंगानेमें कोशिश
कीहो और दूसरेकिसी मनुष्यनेविषदियाकेवल इतनाहीमता
मिलताहै कि दामोदरपंतने विषमंगाया इसके विशेष और
किसीमनुष्यपर संदेहनहीं इसलिये उचितहै कि इसी मनुष्य
के खण्डनसे प्रारम्भकियाजावे ॥

जानेकी नथी इसबात का खयाल और लोगोंके दिलोंमें भी आया होगा ऐसेजहालोंके विषयमें मैं बज्जतसी बातेंकहूंगा मुझको इसबात का भी आश्चर्यहै कि जिन लोगों को संखिया मिलजाती थी वह कारनैलफियरसाहबके कालमें भी जासक्ती थी और कारनैलफियरसाहबकी सवआदतें को भी जानतेथे फिर क्यों अच्छीतरहसे विषदिये जानेका बन्दोबस्त नहींज्जवा सब से अधिकअचम्भेकी यहबातहैकि मुद्दततक उद्योगहोतारहा और सबप्रकार विष न दियागया जब शर्बतमें विष मिलाया गया तो कारनैलफियरसाहब यहकहतेहैं कि तलछटका रंग स्याही माइलभूराथा और गवाहोंका यहबयानहै कि स्याही माइल नथा किन्तु हलकाभूराथा जबतलछट का इमतिहान कियागया तो जो सूरत कारनैलफियरसाहब बयान करते हैं उसके प्रतिकूलथी कारनैलफियर साहब ने गिलास कोमेजपर रखदिया थोडीदेरके उपरान्त उनकोसंदेहज्जवा और तलछट को देखा आपको स्मर्णहोगा कि डाक्टरसीवर्डसाहबने उसको निस्बतक्याकहा मैंनेउनसे इतनेप्रश्नकियेकि वहअप्रसन्नहोगये और कहा कितुमयहांक्या प्रलयतक रहोगे मैं भी जानताहूं किजोप्रश्नउनसे मैंनेकिये उनसेउनको आश्चर्यज्जवाहोगाक्योंकि तलछट डाक्टरसाहबनेदेखा उसकारंग हलका भूराथा और जिस तिलछट के निस्बत कारनैल फियरसाहब वर्णन करते हैं उनकी रंगत स्याहीमायल भूरीथी यहबात ठीक है किरंगत केविषयमें बज्जतसेलोगोंके बयानमेंअन्तर होजाता है परन्तुइतना अन्तरनहींहोता जोकिडाक्टर सीवर्डसाहबऔरकारनैलफियर-साहबके बयानमेंहै जिसप्रकारडाक्टर सीवर्डसाहबने संखिये की आजमाइशकी वह तरीकाभी अच्छानथा किन्तु जिसप्रकार डाक्टर ग्रेसाहबने इमतिहान कियावहभी अच्छा न था चूंकि-पयमें जब इसतरहका इमतिहान होताहै तोडाक्टरलोग सं-खियेको दूसरीवस्तुओंसे पृथक् करकेउसको मूलरूपमें लाकर दिखा देते है और ऐसा नहीं करते कि घातका सा छल्ला

को नहीं है जब तक कि हम पुलिस को खास हिंश बयान न करेंगे हिन्दुस्तान के शहरों में ऐसी बात कदाचित् नायक न रक्खी जाती परन्तु इस शहर में जो हिन्दुस्तान से अलग और कानून को नहीं जानता है रक्खी गई यहां के लोग बिल्कुल नहीं जानते कि अपने छूटने का कौनसा उपाय करें वह अपने तई बकूतको आश्राक्तसमझते हैं और जानते हैं कि पुलिस को सब प्रकार की सामर्थ्य है और हमपर प्रबल है ॥

पुलिसने अपनी कार्रवाईके लिये कोई बात न भुलाई मैंने खूब गौर करके इस तकरीर को पेश किया है मुझको आशा है कि जो कुछ मैंने वर्णन किया है उसकी बखूबी सिदाकत होगी अब दामोदरपंथ के इजहारों को खण्डन करता हूं मालूम होता है कि हरएक बात का मूल इसी मनुष्य से है यह शख्स बयान करता है कि मुझको गायकवार ने इस मुकद्दमे में मुख्य एजण्ट बनाया था सो उचित है कि बड़ी सावधानी के साथ इस शख्स की गवाही मंजूर की जाय और पूछा जाय कि आया एक शख्स की गवाही निश्चय जानने के योग्य है वा नहीं जिस तरह कि मैं गुफ्तगू करता हूं उसी तरह और लोग भी उनसे वार्त्ता करें मैं नहीं चाहता कि इस मुकद्दमे में कोई कठोर वचन मेरी जिह्वा से निकले केवल उन्हीं शब्दों को बरता हूं कि जो उचित माना और लिखने के योग्य हैं जो बातें मेरे मन में हैं वही कमीशन के मेम्बरों के भी जहन नशीन हो जावें तो दृढ़ निश्चय है कि गायकवार चैन से रहेगा और यह सम्भव होगा कि किसी देश के नीतिज्ञ गायकवार के प्रतिकूल मुकद्दमे का निर्णय करेंगे गायकवार तो क्या किसी कोर्ट आफ ला का फैसला भी ऐसी हालत में प्रतिकूल नहीं हो सकता जिस तरह कि गवाही गुजरी है जो वकील की जावे तो अफसोस का मुकाम है कि वह अपना सिंहासन और राज मुकुट अपने हाथ से खोवे मालूम होता है कि जिस दिन गायकवार नजरबन्द किये गये उसी दिन दामोदरपंथ भी कैद किया गया परन्तु मजिस्ट्रेट के सन्मुख उसको नहीं लाये और न उन लोगों ने उनका

वर्त्ताव होताहै वैसीही गवाही होती है उनकी गवाही ऐसे लोगोंके द्वारा लीगई जोआपहीसुकद्दमेको तूल देना चाहतेहैं॥

मैं ऐसीबात नहींकहना चाहताकि किसीमनुष्यको मुझसे जरदपहुंचे परन्तु लाचारहोकर कईलोगोंका नाम इसमुक- द्दमेसेंजरूरीसमझताहूं जिस्टरसूटरसाहब बड़ेलायक अफसरहैं और बम्बईमें बड़ेदरजेके ओहदेदार हैं उनको बखूबी मालूम होगाकि पुलिसके और अफसरोंमेंसे गजानन्दवतिल—अकबर अली अब्दुलअलीको अपने सावकिसबाल्हेलाना सुनासिब हुवा और यहबातभी उनको बखूबीमालूम होगी कि बम्बईके बहुत बड़ेअफसरने इनलोगोंकी कारवाईपर बहुत बड़ीचम्मलसाई की थी चाहे। वह चम्मलसाई ठीक थीयागलत परन्तु सूटर साहबको इसविषयमें शंकाकरनी चाहियेथीकि इसमुकद्दमे में भी वैसीही कारवाई यह लोग नकरें क्या। बम्बईमें और कोई अफसरपुलिस नथा जोउन्होंने दूसरीजगहसेएकपुलिस के अफसरको बुलायाउनकेबुलानेका प्रकटमेंकोई हेतुमालूम नहींहोता सूटरसाहबको इनलोगोंको इतना अधिकारदेना उचितनथा जिसतरहकि इनगवाहोंनेगवाहीदीहैमें खासकर मेम्बरान् कमीशन का ध्यान इस बातपर दिलाता हूं क्योंकि इसबातपर तमामलोगोंका ध्यानलगेगा इनपुलिसके अफसरों को अखतियार था कि जिस मनुष्यको जबतक चाहें हिरासत में रक्खें औरजिस्टर सूटरसाहबने जोचाहा उनगवाहोंकेइज- हारलिये॥

जिसप्रकार गवाहोंके इजहारलियेगये हरएकका अलग२ जिक्रकरूंगा और यहभी प्रकट करूंगा कि गवाहों पर जुल्म हुआहै और गवाहोंने यह गवाही दीहै॥

यठीकहैकि गवाहलोगशिकंजेमें नहीखैंचेगयेकिन्तुउनको भयदिखाया गयाहै और कईगवाह चेहरेसे भयमान मालूम होतेथे वहलोग जानतेथेकि हमारेधन और प्राणकीकुशल नहींहै और जबतकहमहिरासतमें है कोईसूरतहमारे बचाव

ने कैसे २ लोगोंसे मुलाक़ातकी उनकमीशनके मेम्बरोंकानें ख़याल रुजूकरताहूं कि जो हिन्दुस्तानीहैं और ऐसे मुआम लोंको खूबसमझतेहैं कि उनकोराय दरबारमें मुलाक़ात गायकवारके और लोगोंकेसाथ क्याहै पूर्व्वोक्त मेम्बरोंसे इसबतकी प्रार्थनाकरताहूं कि हिंदुस्तानकी व्यवस्थाजानकारोंके कारण एकमुत्तिफ़क़ानइरायदें यदिइन्साफ़केसाथरायदेंगे तो गायकवारको बहुत बड़ी सहायतामिलेगी अगरकमीशनके मेम्बरकिताबके ११२ पृष्टको देखेंगे तोअजीबक़ैफियतमालूमहोगीअर्थात् में गायकवारकी आज्ञाफ़ौजदारकेनाम संखियेके वास्तेलिखी है दामोदरपंथका वर्णनहै कि गायकवारने आज्ञादीथी कि खारिशकेलिये संखियामंगाईजावे सोउसनेफ़ौजदारको चिट्ठी लिखीपरन्तु संखिया नमिली यदि कमीशनके मेम्बर थोड़ासा गौरकरेंगे तो यहबात सबस्फ़ुटमालूम होगी अगर वहचाहते तोथोड़ी संखियाआसक्तीथी जबफ़ौजदारकी गवाहीअदालत में लीगई तो उसनेवर्णन कियाकि दामोदरपंथकी चिट्ठीसब तरहसे ठीकहै मालूम नहींकि क्यों संखिया नहींमिली सो दामोदरपंथका यह बयानसाफ़ ग़लतठहरताहै और दूसरी बेर जबचिट्ठीभेजीगई तो दामोदरपंथका बयानहैकि गायकवारने दस्तख़तकिये परन्तु कदाचित् विचारमें नहीं आताकि उन्होंनेदस्तख़त कियेहों जब लोगोंने पूछा कि संखिया किस लिये मंगाई जातीहै तो दामोदरपंथ का बयानहै कि मैंने कहदियाकिरफ़ीडरट साहबको विषदेनेकेलिये मंगाई जाती है—मैं दामोदरपंथके इज़हारकोविचारताहूं कि पुलिस का सिखायाहुआहै उनलोगोंने उससेकहदिया होगाकि अगर तुम गायकवारपर अपराध साबितकर दोगे तो तुम्हारे लिये अच्छाहोगा इसलिये अपनेफ़ायदेकेलिये उसनेयहसब गवाही दी है अगर वास्तवमें मंगाईगई तो उसने अपने किसीख़ास कामकेलिये मंगाई होगी दामोदरपंथको हालत इसवक़्त देखना चाहिये क्योंकि कर्नैलफ़ियरसाहब सदा तरक़्क़ीकात

मुकाबला कियागया जो उसपरअपराध धरतेथे उसबातकी बाबू बीतक्तकोकात नहींहुई परन्तु होसे वहसिपाहियों केपहि-रेमें क़ैदकियागया सवह दिन तक वह क़ैद किया गया दसवें दिनतक वह क़ैदरहा यदिके। इसबुध्य एतिराजकर्दे कि सिपा-हियोंकापहिरा होनाकोई खौफकासुकाम नहींहै परन्तु यह बात विचारनीचाहिये किउसके मनमेंक्या २ सोचहोते होंगे और रोजबरोज उसकी तबीयतकैसी दूसरी तरह परहोती गई होगी॥

मैं इसतरह का क़ैदकरना भी एक प्रकार की सख़्ती सम-झता हूं इस शख़्सने बयान किया कि मैंने यहबयान इसलिये दिया कि क़ैदसे छुट्टीपाऊं और जोकुछ उसने बयानकिया उसकी निस्बत सहीहोने का शुबह नहीं है यह बात उसने सच और ठीक वर्णन की है—उसने यह भी बयान किया कि फिरमैं पुलिसकीगार्डके सुपुर्दहुवा उस समय उसको रावजी और नरसूकी गवाहीसे इत्तिला हुई—वहखुदइक़रार करता है जोवह इन्कार भी करता तो यह इन्कार उसका निश्चय माननेके योग्यनथा औरउसको मालूमहुवाथा किगायकवार परकौनसा अपराधहै अर्थात्उसको मालूमहुवाथा कि विष दिये जानेका अपराधहै जिसमें संखिया और हीरेके चूर्णका जिक्रहै सिवाइसके एकशीशीकाभी जिक्रहै यहीशख़्सकहता है किमैंने शीशी दीथी और कहताहै किशीशीके देनेके उप-रान्तमालूम हुवा कि शीशीमें क्याहै यह इजहार उसने भले प्रकार निश्चयकर रक्खेथे इन बातोंपर कमीशनको मेम्बरोंको खूबग़ौर करनाचाहिये इसगवाहकी हालतयहहै किजोकोई मनुष्यकिसीसे कहे कि अगरतुम गायकवारको क़ैदकरादोतो तुमबरी होजावो और अगर गायकवार बरी होजावेंगे तो तुमक़ैद होजाओगे—पुलिसने शायदयहभी सिखादिया होगा कि क़ैदहोना और छूटजाना तुम्हारेही आधीनहै यदिगाय-

करते थे कि गायकवारके महलोंमें क्या कारवाई होती है वह जानता था कि अगर करनैल फियर साहब मेरी किताबें मंगा-कर देखेंगे तो मुझपर बड़ी खराबी पड़ेगी यह शख्स कुछ बद-नामभी था गायकवार उसको रेजीडन्सीमेंभी नहीं लेजाते थे उसको सदा फिकर रहाकरती थी पन आगेको इस बातपर ध्यानकरना मुनासिब होगा कि आया दामोदरपंथका बयान बनायाहुवा है वा उसनेही करनैलफियर साहबको मारडा-लनाचाहा था कई बातें खूबखूनहींआई उनकी निस्बतकमी-शनका खयाल रुजूकरूंगा कई मुआमिलेइस प्रकारके हैं कि उन पर बहुतही गौर कमीशन को करना होगा और अगर बखूबी ग़ौर किया जायगा तो कमीशन को भी संदेह होगा और जो मुख्यहालहै वह प्रकट होजावेगा यदि दा-मोदरपंथ ने संखिया मंगाई थी तो अपने किसी काम केलिये मंगाई होगी और अगर फौजदार से संखिया नहीं मंगाई तो किसीवजहसे उसने आज्ञालिखालीहोगी जो गायकवार आपही संखिया मंगाना चाहते तो अवश्यही अपने आज्ञा पत्रपर दस्तखतकरते और आश्चर्यहै कि गायकवारको कहीं संखियानहींमिलतीथी जबदामोदरपंथने गायकवारसे कहा कि संखियानहीं मिलतीहैतो गायकवारजरूरहीताकीदकर के मंगाते जो गायकवार आप संखियामंगाते तो लिखीहुई आज्ञाकोकभीदफ्तरमें नरहनेदेते क्योंकिउनकोखयालहोता कि जबकभी इसमुकद्दमेकी तहक़ीक़ातहोगी तो यहकाग़ज़ गवाहीकी तौरपरहोजावेगा उनकोइसबातके कहनेकी क्या जरूरतथी कि जोसंखिया नहींमिलतीहै तो नूरुद्दीन बोहरे के पाससे मंगलो—नूरुद्दीनके बयानसेपुलिसकीएकऔर कार-रवाई प्रकटहोतीहै क्योंकि नूरुद्दीनने किसीसमयमें गायक-वारपर नालिशकीथी अर्थात् गायकवारनेकिसीहेतुके बिना उसकोबेंतोंसे पिटवादिया और पांचहजाररुपये जुर्मानेकी लिया इससे प्रकट है कियहशख्स गायकवारके प्राणकावैरी

जातेहैं वह हकीम के पास फौजदार के द्वारा भेजदो मैंने नरायणराव कानकर से कहा कि अमुक प्रकार की मक्खियां इकट्ठी करके हकीम साहब के पास लेजाओ ॥

दूसरे दिन महाराजा साहब ने मेरे साम्हने हरबियासे कहा कि हकीम साहब को दवा बनाने के लिये काले सांपों की जरूरत है सो हरबिया सपेरों को बुलालाया और कुछ सांप और मक्खियां हकीम साहब के पास पसन्द करने के लिये भेजीगईं तब हकीम साहब ने सर्प और मक्खियों को पसन्द करके रखलिया तब महाराजा साहब ने कहा कि हकीम साहब को काले घोड़े के मूत की आवश्यकता है सो बापाजी को जो मुख्य घोड़ों के कामदार हैं आज्ञा दी कि काले घोडे का पेशाब हकीम साहब के पास भिजवा दो यह बयान सुनकर बड़ा आश्चर्य होता है इस देश के मनुष्यों को मैं नहीं जानता हूं यह बयान कहानी की तौर पर मालूम होता है मैं इस विषय में कोई राय न दूंगा जो लोग यहां के रहने वाले हैं उनकी राय इस विषय में बहुत अच्छी होगी मालूम होता है कि ऐडवकेट जनरल जो मेरे योग्य मित्र हैं उनको इस प्रकार के इजहार से कुछ लज्जा प्राप्त हुई होगी क्योंकि उन्होंने यह सब बातें दामोदरपन्त से सुनीं और उन्होंने किसी और प्रकार से सिद्धांकित नहीं कराई मैं जानता था कि वह सपेरों को बुलाकर पूछेंगे कि किस प्रकार से सांपों का विष निकाला जाता है और फफोले वाली मक्खियों का क्योंकर बर्त्ताव किया जाता है और उन लोगों को भी बुलावेंगे जो इन वस्तुओं के संग्रह करने और पहुंचाने के लिये नियत हुये थे परन्तु साहब ने इन बुद्धिमानों को अदालत में नहीं बुलाया गवाही की हुसे मालूम हुवा कि किसी सफेद वस्तु ने इन सब वस्तुओं का अरक निकाल कर मिलाया गया और दामोदरपन्त के वर्णन के अनुकूल उसका इस प्रकार से बर्त्ताव कियागया ॥

श्रीमान् महाराजा साहब ने नाना कांवलकर से कहा कि घोड़ी दवाई शीघ्र लाओ सो दोतीन दिन के उपरान्त गजाबाशी-

न जौहरियोंके इज़हारसे मालूमज़ुवा किगायकवारसे और उनसे कुछबातेंज़ुईं सो किसीभांतिसे साबित नहीं होताकिगायकवारइसखेने देनेमें संयुक्तथे॥

लाईलार्ड—दामोदरपंथके इज़हारके विषयमें मैंने अपना बयानखतम किया अब दामोदरपंथ के उस वर्णन के विषयमें गुफ्तगू करताहूं जोवह कहताहै कि करनैलफियर साहबके विष दिये जानेके विषयमें मुझसे और गायकवार से वार्त्ता ज़ुई उसका यह बयान बिल्कुल गलत है और किसीतरह से उसकी तसदीक नहीं होती और जब दामोदर पंथ के इस बयानकी तसदीक नहींज़ुई तो गायकवार साफइन्कार कर सक्तेहैंकि कभीऐसीबातें मुझसेनहींज़ुईं मेम्बरान् कमीशनका खयालइसबातपर रुजूकरताहूं कि दामोदरपंथ की गवाही प्रथमसे अन्त पर्य्यन्त कैसीहैकि उसको गायकवारकी कुछ भी परवानहींहै परन्तु वहहरप्रकारसे अपनीबरीयतकरताहै और गायकवारपर अपराध साबितकरताहै परन्तु मेरेविचार से उसके इज़हार उसी केबयानसे गलत ठहरते हैं हरएक काग़ज़गायकवारका जप्त करलियागयादामोदरपंथके इज़हारसे हीसाबितहोताहैकि कोईकाग़ज़फाड़ा नहींगयाऔर कोईकाग़ज़ इसप्रकारका नहींमिला जिससेखुद गायकवार माखूज़हों परन्तु ऐसेकाग़ज़निस्संदेहमिलेहैं जिससेदामोदर पंथ आपही माखूज़होसक्ता है क्योंकि वह काग़ज उसी के लिखेज़ुयेहैं और गायकवार केहाथके नहीहैं जो गायकवार इनबातोंमें संयुक्तहोते तो अवश्यही उनकेहाथका कोईकागज निकलताकिन्तु प्रकटहै किगायकवार इनबातोंकोजानते भीनथे और दामोदरपंथ कीबाकिफकारी बखूबीसाबित ज़ुई किप्रथमसेअन्ततक साफसाबितहैकियहमुकद्दमा गायकवार परखड़ा कियागयाहै आप साहबों को उचितहै कि इसबात परखूबगौरकरें—जबइस मुकद्दमेके इज़हारलिये जाते थे मेरे

भिखाऊत्रा हीराहै और नौसाम्रोहीरे हैं फिरयह बयानहैकि मैंने यहहीरे यशवन्तराव को देदिये और उससेकह दिया कि कारनैलफियरसाहबकी शर्बत में डाल देना परन्तुउसका यहभी बयानहैकि मैंनेउससमय कहदियाथाकि यहबातकुछ अच्छीनहींहै वाहक्या दर्दसन्दीहै कि विषदेना और यहभी कहना कि यहबात अच्छीनहीहै परन्तु इसजगहपर यशवन्त राव और दामोदरपंथकी गवाही प्रतिकूल है जिससेमालूम होताहै कि यशवन्तरावने कोईपुड़िया नहींपाई यशवन्तराव वर्णन करताहै कि मुझकोएक पाकिटमिली थी और कहाथा कि इसके तीनभाग किये जांय—अब मैं इसविषयमें तकरीर करताहूं कि गायकवारपर जो संखियेके देनेकादोष लगा है वहबिल्कुलगलतहै मैंकमीशनके साहिबोंसे पूछताहूं किअगर गायकवारको हीरोंकेकटवानेकी इच्छाहोतीतो इतने मनुष्यों से वार्त्ता करनेकी क्याजरूरतथी और गायकवारकोउसमनुष्य से कहने की क्या हाजतथी जिसने हीरे मोललिये कि तुम अपनी किताबको मशकूककर दो और ऐसे शकके डालने की कोईजरूरत नथी क्योंकि उससमय गायकवारकेपास छोटे २ हीरे मौजूदथे जोतलवारकीमूठ औरम्यानपरजडेजातेथे उनको कटवालेते—जन्मभर वह हीरे मोल लियाकिये और हजारों रुपयेका हीराउनके पासमौजूदहोगा इतनातूलदेनेसे उनको क्याप्रयोजन था और संखियेके मंगानेमें जो इतना तूलहुवा यहभीबनायाहुवाहै सैकडों झूठमिलाकर एकझूठबातकोसा-बितकरना चाहाहरचन्द यह सबकाररवाई हुईपरन्तु कोई गवाहउसकी खिदाकतनहीं करता दामोदरपंथ बड़ाचतुरहै उसनेखूबसोचकर बयानकिया कि ऐसीगुफ्तगू दूसरे मनुष्यके आगेक्योंकरते इससबकाररवाई का बयानकेवलदामोदरपंथ केइजहारसेहै जौहरियोंकी निस्बत बयानहुवाहैकि उनसेहीरे ले लियेगये और उनको विदाकरदिया यहबात जाहिरनहीं की कि जौहरियों से और गायकवार से कुछ वार्त्ता हुई हो

माईलार्ड—दामोदरपंथ पकड़े जानेके पहिले खूब जानता था कि रावजी और नरसूने क्या इज़हार दिये हैं और इसबात कोमानताहैकि मैंनेसुनाहैकि करनैलफ़ियर साहबको जोविष दियागया उससेहीरे और संखियेका चूर्णथा सोअपनाइज़-हार खूबघड़सक्ताथा जिससे हीरे और संखियेका मुख्यकरके वर्णनहोता और दामोदरपंथसे भीभीकाभी जिक्र सुनाहोगा उसकेलिये भी एकबातबनाली मैंनेदामोदरपंथके इज़हारकी सम्पूर्णकैफ़ियत कमीशनके सम्मुख बयानकी मुझकोदृढ़ आशा हैकि कमीशनके मेम्बर नीतिपूर्व्वक मुकद्दमेका निर्णय करेंगे जितनामुझकोस्मर्णथा मैंनेठीक२वर्णनकिया औरनिश्चय हैकि अप-साहबऐडवकेट जनरल जोवड़ेयोग्यऔरवड़े बुद्धिमानहैं जो सोचमें न्यायकोन छोड़ेंगे क्योंकि वह इस प्रयोजन से यहां नहींआयेहैं किएकनिर्दोष मनुष्यकोसिंहासनसे उतारें उनसे जियादहऔरकिसीमनुष्यसे मुझेआशानहीं हैकि वहअपनी सोचमें इन्साफ़ जाहिरकरें औरनिश्चयहैकिवहअपनीइसीच सोचमें किसीकापक्ष न करेंगे न केवल हिन्दुस्तानी किन्तु यूरूपके वासिभी उनकीइसीचकेमुन्तज़िररहेंगे॥

माईलार्डअबफ़तहचन्द हेमचन्दकेइजहारोंकेविषयमेंवार्त्ता करताहूं कमीशन कोस्मर्णहोगा किजबयह मनुष्यअदालतमें आयाथा उसकेमुखसेकुछ भयप्रतीत होताथामैंनेअपनीसम्पूर्णआयु मेंऐसाडरपोक गवाह नहींदेखाथा इससेप्रथमउसने पुलिसके सम्मुखअपने इजहारदियेथे अब उसने वयान किया कि सूटरसाहबके रूबरू जोमैंने इजहारदिये वहगलतथेऔर यहभी कहाकि मैंनेभय खाकर ऐसे इजहार दियेथेयहमनुष्य बहुतदिनों तकपुलिसकी हिरासतमें रहाजब उस पर बहुत सख्तीकीगई औरवह काबूमेंआगया तबउसकेइजहारलियेगये उसनेवर्णन कियाकि मैंनेएक वरक़फाड़डालाथा औरपुलिस केकहनेसे नईरक़में उसपर लिखदीथीं उसनेयह भीकहाकि जबसूटर साहब केपासअपनेइजहार कोतसदीक करनेके वास्ते

विचार झूठहोना उसी समयसे ज्ञातिया जहां २ स्याहीो-
डली गई है वहां २ दामोदरपंथका निकाया॥

दामोदरपंथ ने वर्णन किया है कि यह स्याही मैंने अपने
हाथसे नहीं डाली किन्तुजो लोगकारकुनहैं उनसे कहदिया
था जिसकारकुनका दामोदरपंथनामलेतेहैं वह इन्कारकरता
है इस कारकुनका नाम बलवन्तराव है उसने सूटरसाहबके
सम्मुख इस बातका इकरार किया था (मिस्टरब्रैन्सन साहबने
बलवन्तरावके इजहार सरजन्हवेलनटायनसाहबको दिखाये)
सरजन्हवेलनटायन साहबने कहा कि मुझसे भूलहुई उसने
सूटरसाहब के रूबरूभी इकरार नहीं कियाथा किन्तु उसने
बिल्कुलइन्कार कियाकिमैंनेकभी हिसाबपरस्याही नहींडाली
औरनमैंजानताहूं कि किसमनुष्यनेकितावोंकोमशकूककिया॥

साईलार्ड—मुझको यहभी निश्चयनहींहै कि दामोदरपंथ
ने स्याहीडालीहो हरसूरतमें दामोदरपंथ ने किसीसे स्याही
डालनेको कहाहोगा और इस प्रयोजनसे कहाहोगाकि जब
स्याही डाली जावेगी तो हरशख्स का ध्यान इन्हीं धब्बोंपर
जावेगा जो वास्तव में किसी रकमके बदलनेकी इच्छा होती
तो मैंने सुना है हिन्दुस्तानी लोगबडे दस्तकार होतेहैं इस
तरहरकमको बदलाते हैं कि बनावटका संदेहभी नहींहोता
तो स्याहीके डालनेकी क्याजरूरतथी परन्तु इसबातपर मैंफिर
तक़रीर करताहूं कि अगर दामोदरपंथको इसबातकेछिपाने
की इच्छाथीतो कितावें क्योंनजलादीं और जोउसको रकमों
के बदलने का सावकाश नथा तो जलानेके लिये तो बहुतथा
यहसबबनावट है एक निर्बुद्धिमनुष्य भी मालूमकरसक्ता है कि
अदालत के धोकादेनेके लियेयहसबबातेंबनाईगईहैंदामोदर-
पंथकोखयालहोगाकि इसमुकद्दमे कीतहक़ीक़ात ऐसीअदा-
लत केरूबरू नहोगीजैसीकी अबहुई यहमुकद्दमाबहुतही सूधाहै
और अपनेइजहारोंको अपनेहीबयानसे खण्डनकरताहै किसी
भांतिसे उसके इजहार निश्चय माननेके योग्य नहीं हैं॥

एकपुड़ियावापिसमिली और रखलीगई उससमय उसनेकहा था कि एकपुड़िया रखलीगई और एक वापिस मिलीपरन्तु अब कहताहै कि दोनोंपुड़ियां वापिसमिलीं मालूमनहींकि पहिलाबयानठीकहै वा दूसराबयान इसकेसिवाय एकगवाहने वर्णनकियाहै कि कारनैलफियरसाहबको विषदेनेसे दोतीनदिन पीछेनानावतिलने मुझसेपूछा कि तुमने इनहीरोंकाबेचना किताबमें लिखाहै मैंनेकहाहां उन्होंनेकहा कि जोकिताबमें लिखलियाहै तो उनवरक़ों को निकालडालो क्योंकिउन्होंने कहा था कि कारनैल फियर साहब के विषदिये जाने में इन हीरोंका बर्तावहुआ यहबात सुनकर मुझेबड़ा भयहुआ इस लियेमैंने वह वरक़जिनमें हीरोंका बेचना लिखाथा निकाल डाला और उनकी जगहपर नवीनवरक़ लगादिये इनहीरों का मोलजो मिलनेवालाथा उसकी यहसंख्याहै ६२७०/रु० है उनमेंसे ३०००/नानावतिलने मुझकोदिये जो१० और२४ रोजनामचेके सफेमेंजमाहैं उसमेंलिखाहैकिशिवचन्दखुशहाल चन्दसेरुपयेपाये परन्तुमैं कमीशनकेसम्मुख यहबात जाहरकर नाचाहताहूं कि यह गवाहबयान करताहै कि कुछ लेनदेन नहींहुआ दोपुड़ियां हीरोंकीगई थी दोनोंलौटादी गईंपरन्तु मिस्टरसूटरसाहबके रूबरू इसमनुष्यने कहाहै कि जिनवरक़ों में लेने देनेका जिकथा वहफाड़डालेगये और उनकी जगह नयेवरक़ लगादियेगये परन्तु उनके सम्पूर्ण इजहारोंसे मालूमहोता है कि पुलिसने उनपर सख्तीकरके खूबसिखाया है पुलिसने इस गवाहके साथ ऐसी काररवाई की है किहमने कभीनहीं देखी परन्तु हेमचन्द फतहचन्दने अदालत मेंइन-कारदियाकि १० और २४ सफेकाजिक जोमेरे इजहारमें है जिसको सूटरसाहबके रूबरूमैंनेबयान कियाथाकिवह पुराने सफेहैं नवीन नहींहैं पुलिसनेमेरे इजहार आपहीलिखलिये थेमैं कमीशनके मेम्बरोंका इसबातपर ध्यान दिलाताहूं और प्रार्थना करताहूं किमुझको इसगवाहके इजहारमें हर तरह

जाताथातोपुलिसकेलोगोंने मुनसेकहदियाथाकि जो तुमदस्तखत नकरोगे तोजन्मभरकैदमें रहोगेसोऐसीधमकियोंसे उसने सूटर साहब केरूबरू गलत बयानकिया॥

सरकार कीओर से यहगवाह इस प्रयोजन सेपेश किया गया ताकि साबित करेकि नानाजीवतिलने हीरे मोललिये औरउनका मोल ३०००) रु० दिये यहरुपया बचतकीमद्से दियागया इसरुपये केलिये दामोदरपंथ नेलिखा था कि यह रुपयाब्रह्मभोजकेलियेदिलायाथा एक ब्राह्मणइसीलियेबुलाया गयाथा किदामोदरपंथने यहरकमगलत लिखीहै यह रुपया ब्रह्मभोजके लिये नहीं दियागया किन्तुइस रुपयेके हीरेमोल लियेगये औरऐडवकेट जनरल साहबने इसविषय की सत्यता प्रतीत करनेके लिये किहीरे मोललिये गयेशिवचन्द औरखु-शहालचन्दको बुलायाथा ईसचन्द फतहचन्द नेजो सूटरसा-साहबके रूबरू वर्णन कियाथा उसको कमीशन केमेम्बर सुनें मैंपढ़ता हूं दसहरेके दोतीनदिनके अनन्तर नानाजीवतिलने जिनको जवाहरखानेका चार्जहैमुजको औरऔर जौहरियोंके हीरेकी कनी लानेकेलिये आज्ञादी सोहम उसी दिन हीरे कीकनीलेगये औरनानाजीवतिल नेउनको देखकरअपनेपास रख लियादूसरे दिन कीमतके जियादहहोनेसे वह सब कनी लौटादीगई दो दिनके उपरान्त नानाजीवतिलने आज्ञा दी कि वहीकनी जोलौटाईगई फिरलेआओ इसलिये उसको मैं फिरलेगया फिरउसको तौलकर और मोलठहरा कररखली गई उसके दोदिनपीछे नानाजीवतिलनेयह आज्ञादीकिथोड़ी कनी हीरेकी और चाहिये सोमैं उनकेपास लेगया नानाजी जावाहरखानेमें नमिले परविनायकरावको जोनानाजीके साले हैं वहकनी देदी उन्होंनेतौलकर उसकामोलठहराया और मुझको अपने साथ दामोदरपंथके पासलेगये दामोदरपंथने कहाकि कीमत जियादाहै अगरजरूरतहोगीतो रखलीजा-यगी इसप्रकारसे हीरोंकीदोपुड़ियांथी दोतीनदिनके उपरान्त

कि जोहस वरक़ निकाल डालेंगे तो मालूम हो जावेगा.क-
मीशन मेम्बरोंको मालूमहुवा होगाकि इसगवाह पर कित-
नीसख़्तीकी गईहै क्योंकि जबवह अदालतमें आयाथा तो अति
भयमानथाकिताबमेंलिखाहैकि ७-या ८-नवम्बरको मोललिये
गये ते। क्योंकरउस तारीखको हीरेमोललियेजाते और कर-
नैल फियर साहब को विषदिया जाता और अधिक अद्भुत
हैकि दामोदपंथ और नानाजीवतिल केकागजमेंउसकाज़िक्र
नहो और केवलजौहरी की किताबके लिखेपर निश्चय किया
जाय और उसकेलिये पुलिसका बयान होकि पुराने वरक़नि-
काल दिये गये और नवीन लगादिये हेमचन्द कहता हैं कि
पुलिसवालोंने जबरदस्ती करके मुजसे लिखवा लियाहेमचन्द
अतिप्रतिष्ठित जौहरी है और गजानन्दजो अफ्सर पुलिस है
उसकीकाररवाई सबजानतेहैं इससेअधिकमैं और क्या कह
सक्ताहूं उचित है कि इस किताब पर भलेप्रकारध्यानकिया
जावेकोई महाजनयह बातनकहेगा कि इसबात की तहरीर
जोपुलिसमेंहुईहै ठीक है प्रथम से अन्ततक उस इजहार का
खण्डन होताहै जोसूटरसाहबके रूबरूउसने वर्णन कियाथा
हेमचन्दने अदालतमें साफनिर्भय होकरठीक२कहा इसलिये
अदालतके रूबरू जोउसकेइजहार हुयेवहठीकहैं और सूटर
साहब के रूबरू जो उसने बयान किया वह अशुद्ध हैं अबमैं
नानाजी वतिल के इजहार पर कमीशन के मेम्बरों का ध्यान
दिलाताहूं यहमनुष्यहीरोंकेमोललेने के विषयमें जो हेमचन्द
से दामोदरपंथने लिये उसका मध्यस्थहै यह मनुष्य तसदीक
करताहै कि एक पुड़िया लौटा दी गई और एक रखली गई
परन्तु,इसमनुष्यकेइजहारोंमें ऐसे प्रश्ननहीं किये गये जिससे
प्रगटहोताकिउसने अपनेसालेके लियेमोललिये थे—ऐडवकेट-
जनरलसाहब ने कईप्रश्न उससेकिये थे परन्तुवहअसत्यवर्णन
परदृढ़रहा-किएकपुड़िया लौटादीगई औरएकरक्खीगई ना-

की सहायता दें क्योंकि मैं हिन्दुस्तान के मुआमिलों को नहीं जानता हूं इस मनुष्य के इजहार में जो जाहिरी बातें हैं उनको पेश करूंगा परन्तु इस बातका तहकीकात करना कि उसका कितना बयान ठीक है कमीशन के मेम्बरों के तअल्लुक है मालूम होता है कि हेमचन्द्र ने पूना के जौहरी से कुछ जेवर मोल लिया था उसका मोल लिया जाना नानाजीवतिल को मालूम हुवा सो उन्हों ने अपने साले के लिये वह आभूषण मोल लिया उसका मोल दस हजार रुपये थे उसी आभूषण का मोल उसको हुण्डियां दी गईं ऐडवकेट साहब ने उसका बहुत कुछ वर्णन किया है परन्तु मुख्य हाल उन पर भी जाहिर नहीं हुवा नानाजी वतिल और सुनार को जुबनी विदित होता है कि यह पुलिस की बनावट है मेरे विचार से जो इजहार मिस्टर सूटर साहब के रूबरू हुये बिल्कुल बनाये हुये हैं परन्तु अब हेमचन्द्र ने अदालत में ठीक २ बयान किया कि सटर साहब ने जबरदस्ती मुझ से दस्तखत करा लिये थे अदालत में जो बयान गवाह ने किया वह सब ठीक है जब पुलिस वाले किसी मनुष्य को पकड़कर कैद करते हैं और हरप्रकार से उसपर सख्ती करके कहते हैं कि जिस प्रकार से हम कहें उसी प्रकार गवाही दोगे तो छुडाये जाओगे नहीं तो रिहाई न होगी इसलिये वह मनुष्य लाचार होजाता है सो इसी वजह से जो गवाही पुलिस में लीगई वह गजानन्द वतिल के भय और वह काने से हुई—माई लार्ड मेरी जुबान में पुलिस के शिकायत करने की सामर्थ्य नहीं है ऐसी कारर्वाइयां बहुत खराब हैं उचित है कि खूब उसका तदारुक किया जावे पहिले मैंने ऐसी बातों का वर्णन करना उचित न समझा परन्तु अब इस मुकद्दमे का हाल मैं खूब जानता हूं मेरे विचार से आदि से अन्तपर्य्यन्त यह मुकद्दमा लचर है और जो झूठी सौगन्द इस मुकद्दमे में हुई हो उसपर खयाल होना चाहिये प्रथम से अन्त तक जो हेमचन्द्र की किताब में लिखा है वह महाजनी तौर से बिल्कुल ठीक है और आश्चर्य है कि पुलिस वालों को इस बात का भय न हुवा

साबित नहीं हुई फिर और क्या बात बाकी रहगई नूरुद्दीन को विषके बेचनेसे इन्कार है और हेमचन्द को हीरोंकी कनीसे पस झूठका खेमा जो खड़ाकिया गयाथा वह गिरपड़ा अब केवल दामोदरपंथकीगवाहीशेषरहीसोउसकीगवाहीकोदूसराकोई गवाह तसदीक नहीं करता आश्चर्य नहीं कि प्रथमसे अन्त तकउसका बयानगलतहो अथवा उसनेआपही विषदेनाचाहाहो मेरे विचारसे यह मनुष्य कदाचित् बरीनहीं होसक्ता वह भयमान असत्यवादी और दुष्टप्रतीत होताथाजितनीकि वहदुष्टताकरे कुछ आश्चर्य नहींहै यहशख्स चालाकआदमी है उसने आपही करनैलफियरसाहबको विषदेनाचाहाहोगा इसमनुष्यका आवागमन करनैलफियर साहबके पासनथावह अपनेस्वामीका रुपया बहुत लूटताथा और किताबोंमें जाल बनाताथा इसलिये उसको बड़ाभयहुवा कि जोकरनैलफियर साहब मेरीकिताबों को देखेंगे तो बड़ाछल साबितहोगापस उसने करनैलफियर साहबको विष देनाचाहा और सालिम और यशवन्तरावको मुकर्ररकिया कि उनके हाथसे विषदिलवाये मैंनीतिकी रीतिसे चाहताहूं कि इसदुष्टको दण्डदिया जावे जिसने एकरईसको खराबी में डालाहै यहबेचारा रईस आप मेम्बरोंपर भरोसा रखताहै कि गवाहीपर खूबगौरकरके उसको निर्दोष समझें—इस के उपरान्त कमीशन के मेम्बरोंने कमीशनको बरखास्त किया और टिफनखानेकेवास्ते गये॥

जबटिफन खाकर वापिस आयेतो सरजन्ट बेलनटायन साहबनेफिर स्पीचप्रारम्भ की—दामोदरपंथके इजहारोंके विषयमें मैंकहचुका हूं किइसी मनुष्यकेबयान पर मुकद्दमेका मूल है परन्तु अद्भुत यह बात है कि उसकेइजहार अन्तमेंलिये गये अबरावजी और नरसू की गवाहीका वर्णन करता हूं परन्तु रावजीके इजहारमें अभीकुछ वार्त्तानहीं करताहूं पूर्वमें मैंने कहाहै किदामोदरपंथने रावजीकेपासहीरो भिनवादीथीवह

नरसीवंतिल का मुहर्रर कहता है कि नानाजीतिवलने मुझसे कहा कि मुझको याददाश्त देदो क्योंकि हीरे लौटा दियेगये इसगवाहने लूटरसाहबको छवरूसाफ २ बयान किया कि मैंने याददाश्त इसप्रयोजनसे वापिसदीथी कि फाड़डाली जावे यह बात सुनकरऐडवकेट जनरलसाहबको आश्चर्य्य हुआ जिनवरकों केलिये गलत होनेका बयानहै औरवरकोंपर छिलनेका निशान नहीं है हेसचन्द कहता है किपुलिसवालोंके कहनेसे मैंनेवरक़ निकालडाले थे गजानन्दवतिल कुछ हिंदुस्तानीभाषाजानता हैक्योंकिउसने कुछइज़हार हिंदुस्तानीभाषामें दिये और कुछ गुजरातीमेंयहबयान उसकाहैकिमैं हिंदुस्तानीभाषा कोनहीं जानता बिल्कुल गलतहै मेरेविचार से इसगवाह की गवाही कुछ भीविश्वास केयोग्य नहींहै करनैलफियरसाहब केइज़हार मेंदोतीनजगह चुक्सहैबड़े आश्चर्य्यकी बातहैकिऐसा ओहदे-दारअसत्यकहैऔरफिर उसकोदुरुस्त करेमेरेइसकहनेसे यह प्रयोजननहींहै किकरनैलफियरसाहब कीप्रतिष्ठा में धब्बालगे परंतु शायदवह घबरा गयेहोंगे सो इसी प्रकारमैं विचारता हूं कि और गवाहों के इज़हार में भी ऐसाही समझा जावे शायद उन्होंने वह इज़हारदियाजो उनको बयान करने की इच्छानथी नानाजीवतिल कहताहै कि मैं नहीं जानता कि हीरेकाचूर्ण किसकोकहतेहैं न मैं नेसुना और नमैंनेदामोदर पंथको दिया उसकायहबयानहै किदोपुडियां हीरे केचूर्णकी मैने दामोदरपंथको दीं यहगलत है उसनेकेवल हीरों कीदो पुड़ियांदीथींइन पुड़ियों में कुछहीरे और कुछ हीरे की कनी थी और वहकहताहै किमहाराजा साहबके पास हीरे और उसकी बहुत कनीथी इससे प्रतीति होताहै कि यदि महा-राजा साहब के पास बहुतसेहीरे थे तो उनको मोललेने की क्या जरूरतथी न संखिया मोललेने की तसदीक हुई और न हीरेके चूर्ण का किसी ने बयान किया जब यह दोनों बातें

हीं आतीकि जबवह शीशी अतरकी थीतो क्यों कर उसमें संखिया कोडालकर घोला होगा सिवा इस शीशीके और किसी शीशी का बयान नहीं है शायद यह बातरावजी भूलगया कि जो मैं ऐसा कहूंगा तो लोग एतिराज करेंगे मैंने इस शहादत पर खब ध्यान किया मुझको किसी जगहपर दूसरी शीशीका जिक्र नहीं पाया जाता और असम्भावित मालूम होता है कि ऐसी छोटी अतरकी शीशीमें संखिया शर्वतमें मिलानेके लिये घोला गया हो ऐसे २ गवाहोंके बयान पर एक मुकद्दमा गायकवारपर जुर्म साबित करनेके लिये खड़ा कियागया है इसमें मेरे कहनेपर कुछ मौकूफ नहीं मुकद्दमेमें बनावटका होना बिल्कुल साबित होता है यद्यपियह मुकद्दमा गढ़ागया परन्तु यह खयाल न हुवा कि वह लोग जिनकी गवाही ली जायगी किस प्रकारके हैं सो झूठे गवाहों का क्रमटूटगया इन झूठे गवाहोंकी गवाही एक दूसरेके प्रतिकूल है मैं अपने दोस्त ऐडवकेट जनरलसे पूछता हूं कि क्या वह दो शीशी थीं जो दो थीं तो अतरकी शीशी क्या हुई॥

रावजीने वर्णन किया है कि दामोदरपंथके पाससे उसको शीशी पहुंचीथी अब मैं कमीशन के मेम्बरों को इसबात पर ध्यान कराता हूं कि उनके विचारमें रावजी की गवाही कैसी है जब यह शीशी अरकसमेत रावजीको करनैलफियर साहब के मार डालनेके लिये दीगई तो निश्चय होसक्ता है कि जब उसी शीशीसे उसको कष्टपहुंचा तो उसने शीशी कीदवाको फेंकदिया जो यह बात रावजी को निश्चय मानी जावे तो यह संदेह उपजता है कि उसको इच्छा करनैल फियर साहबके मारडालने कीनथी मेरे विचारसे यहसम्भव है कि दामोदरपंथ ने करनैल फियर साहब के मारने का इरादा किया हो और करनैल फियरसाहबके नौकरोंने न कियाहो मैं इस बातकी तसदीक नहीं कर सक्ता क्योंकि मुझको इस बातसे कुछ प्रयोजन नहीं है रावजी ऐसा दुष्ट नहीं है जैसा कि वह अपनेतई जाहिर

अतरकी शीशीथी और कोईपतलीवस्तु उससेंभरी हुईथीयह जाहिरनहींहुवा किजबशीशीरावजीके पासपहुंचीतो रावजी नेउसशीशी कोबदलकर दूसरीशीशीमें दवाडालदी परन्तु जो शीशीदामोदरपंथ केपासगईथी वहकेवलआधी उंगली केबराबरथी और रावजी के पास पहुंच कर वह बहुतबढ़ गई मेरे विचारसे शायदयह बातठीकहो क्योंकि बहुत दिक्कतके पीछे यहबातमुझको दरियाफ्तहुई दूसरीकिसी शीशीका जिक्रसिवायइस छोटीशीशीके नहुवा कमीशन के मेम्बरों को भी स्मर्ण होगाकिमैनेअभीइसबातका कुछजिक्र नही कियाकिकरनैलफियरसाहबकेनौकरोनेवास्तवमें करनैलफियरसाहबको विषदेनाचाहाथा यानहीं दामोदरपंथ के इजहारों के विषयमें मैं खूबतकरीर करचुकाहूं और अब अदालतपर सुनहसिरकरताहूं कि जोकुछ कमीशनके मेम्बरों की रायहो-परन्तु रावजी कीशीशीकी गुफ्तगू करनी उचितसमझताहूं-बयानहैकिरावजीको ९ नवम्बरसे पन्द्रहदिन पहिलेयह शीशीमिलीथी परंतु जबउसकेपास पहुंचीतोवहबहुतबढ गईरावजीका बयानहैकि वहशीशी इसप्रयोजनसे दीगईथी कि करनैलफियर साहब के स्नानकेजलमेंडालदीजावे परन्तु वहकहताहै किमुजकोयह मालूमनथा किउसमेंविषहै याकोई और वस्तु है दामोदरपंथ के इजहारसे मालूमहुवा किउसमें कौन२वस्तुथीं रावजीकेइजहार सेपायाजाताहै किउसनेअपने नेफेमेंशीशी कोरक्खाजिससेउसके पेटपरफोड़ाहोगयाउसीसमयउसकोमालूम हुआ किजोफियर साहबकेस्नानकेजलमेंयह दवाडाली जावेगीतोउनकोबड़ाकष्ट होगायद्यपि यहशीशी करनैलफियर साहबके कष्टपहुंचाने के लियेथीपरन्तु रावजी भयमानहुआ और उसने दवाको फेंककर शीशीकोरखछोड़ा ताकिउसमेंसंखिया घोलकरगिलासमेंडाले सोबयानहै किरावजीने दामोदरपंथकी प्रेरणाके अनुकूलइसी शीशीमेंसंखिया घोलकरडाला परन्तु मेरे विचारमें यहबातन

किसतरह फोड़ा होसक्ता है इस विषयमें मेरे मित्र ऐडवकेट जनरलने डाक्टरग्रेसाहब की गवाहीली और रावजीका फोड़ा उनको दिखाया मुझे हंसीआती है कि ऐडवकेट जनरलकिसतरह चाहते हैं कि यहबात साबितहोजावे डाक्टर ग्रेसाहब ने फोड़ेके चिन्ह को देखकर वर्णनकिया कि हां तीन निशानपेटपर हैं परन्तु जो गवाही शीशी और उसकी दवाके निकलनेके बारे में हुई जिससे कि पेटपर फोड़ा होगया इनसबमें अन्तरहै डाक्टर ग्रेसाहबका नामसर्वदा इसबातमें विख्यात होगा कि उन्होंने हिंदूके फोड़ेके निशानकोजो उसको पेटपरथा देखा मैं पहिले कह चुका हूं कि केवल एक गवाह ऐसा है जिसकी गवाही निश्चय माननेके योग्य है जहांतक इसशीशी और मक्खियों का जिक्र है व्यर्थ है अगरयह मुकद्दमाआम तौरका होतातोलोग इसको ठट्ठे और हंसीमेंउड़ा डालते और इतना तूल न करते परन्तु जबकि ऐसी गवाही परएक रईसको सिंहासनसे उतारेजाने कासंदेहहै तो इसबातपर खूब गौर करना चाहिये ऐसे लोगों की गवाही की तहकीकात ऐसे अफसरोंके रूबरू होनीचाहियेथी जोनीतिसानये न उनकेरूबरू जोचाहते थे कि जिसतरहहोसके एकरईस को दुःखपहुंचे मैं शीशी के जिक्रको तमाम करके पूर्ण करताहूं जो बिल्कुल लचर है ऐसाकभी किसीतवारीखमें लिखानहीं देखा गयाअब मैं रावजी की एक और कारखाईका जिक्रकरताहूं अर्थात् विषकीपुड़ियों काहाल कहताहूं यदि मैं किसी जगहपर चूकजाऊं तो मेरेदोस्तऐडवकेटजनरल और कमीशनके मेम्बरमुझको बतादें ॥

बयानहै कि यहविष की पुड़ियां रावजीके पास आईंहालां कि उसकी कुछअसलियत नहीं है खयालहै कि दामोदरपंथ ने यह पुड़ियां सालिम और यशवन्तराव को दीथीं और फिर बयानहुआहै कि छःसातआदमियोंके साम्हनेदीगईं उनलोगों कीगवाहीभी लीगईपरन्तु वहबयान बिल्कुलझूठाहै इसमुक-

करनाचाहताहै यह्होदशा नरसूकी है क्योंकि प्रकटहै किजब शीशीकेकारण रावजीको कष्टहुवा तो उसने शीशीकी दवाको फेंकदिया उचितथा कि सरकारकी ओरसे इनसब बातोंकी तसदीक कीजाती यहभी जाहिर किया गया है कि रावजीको उनदिनोंमें शीशी दीगईथी जबकरनैलफियर साहबके फोड़ा था—अर्थात् संखियेके देनेसे महीना डेढ़महीना पहिलेदीगई थी—रावजीने वर्णनकिया है कि जबशीशीमिली नरसूउपस्थित था और नरसूने अपनेइजहारमें बयानकिया है कि नवम्बरके आदिमें शीशीआईथी अर्थात् उनदिनोंमें जबकि अन्तकोबेर महाराजा साहबसे वार्त्ता हुईथी परन्तु यहबात गौर करने के योग्य है कि रावजीने मिस्टरसूटरसाहबके रूबरू अपनेबयानमें शीशी का कुछभी वर्णन न किया दामोदरपंथ ने इब्तिदा में शीशीकाजिक्र कियाथा मेरेविचारसे जोकुछउसनेवर्णनकिया वहठीकहै और जो सहीहै तो कमीशनके मेम्बर उसपर खूब गौरकरेंगे रावजीने अपनेइजहारमें बयानकियाहैकि मुझ-को हिदायत होगईथी कि संखिया शीशीमेंडालकर जलमिला याजाय और उसेअच्छीतरह हिलाकर शर्बतमें डालाजाय प-रन्तु वहइसबातका जिक्रनहींकरता कि यहशीशी दामोदर पंथके पाससे मुझकोपहुंचीथी और दामोदरपंथ अपनेइजहार में कहताहै कि यहशीशीमैंने महाराजासाहबके पाससे पाई और मैंनेअन्तकी शीशीमें उसदवाको करकेरावजीकेपास भेज दिया और अद्भुतयहहैकि रावजीने प्रथम उसशीशीकाजिक्र अपनेइजहारमें नहींकियाथा दामोदरपंथ शीशीकीसूरतकुछ और बतलाताहै और रावजी और कुछकहताहै इसशीशीके बारेमेंबराबरअन्तरहै दामोदरपंथ जोबयानकरता है कि इस शीशीमें अमुक२ वस्तुका असरथा इसकाभी मुझको निश्चय नहीं है और यहभी विश्वास नहीं आता कि थोड़ीसी संखि-या जोपानी में घुली हुई हो और वह शरीर में छूजाय तो

दवालेकर उसश्वेत पुड़ियामेंमिलाईऔर शेष उसश्वेतपुड़िया कोअपने पासरहने दियावही दवामेरी पेटीकी जेबमें है ॥

अब विचारनाचाहियेकि इनदोनों वाक्योंमें कौनसा वाक्य ठीकहै क्योंकि इनदोनों वाक्योंमें बड़ाअन्तर है किसीतरहसे उसकेदोनों बयानसच नहींहैं वहकहताहैकि मुझकोशंकाहुई कि सफेददवा भूरीदवासे अधिककष्टदायक है यहबात पूछने के योग्यहै कि उसकोकिसकारण यहसंदेहहुवा क्योंकिवह कहताहैकि जबमुझको यह पुड़ियांमिली थीं तबमुझको कुछ मालूम नथा कि उनमें क्यावस्तुहै दामोदरपन्थके इजहारसे मालूमहुवाकि यहदोपुड़ियां अन्य २ रंगकेदवाकी नथींकिन्तु पुड़ियोंकी दवामिला कर उसको दीगईथी रावजीको केवल इतनाकामबाक़ी था किउसको तीन जगहकरके तीनदिनतक शर्बतमेंमिलायाकरेमालूमनहींकि यहदोपुड़ियांक्योंपेटीमेंरह गई और यहदवा एकप्रकारकी नहोगी कईप्रकारकीहोगी रावजीने वर्णनकियाहैकिमैंने सफेद दवाकोअलगरक्खा और उसश्वेतपुड़ियामें से थोड़ी २ दवामिलादीथी परन्तु मैं क- हताहूंकि जब यहदवायें मिलीहुईथीं तोउनकोफिर मिला- नेकी क्याजरूरतथी और फिरएकसफेदपुड़िया क्योंकरबचरही क्या मुखतलिफ बयान उसका मानने के योग्यहै इसकेसिवा जिसतरह उससे कहा गयाथा उसनेक्योंनहीं सबपुड़ियोंको शरबतमेंडालदीं और एकसफेद पुड़ियाके रखछोड़नेकी क्या ज़रूरतथीं जिसतरह कि बयानहुवा है कि हीरेकाचूर्ण और ज़हर दोनोंमारडालने वालेहैं तो फिरक्यों एक पुड़ियामें से थोड़ीसी वस्तुडाली और थोड़ीरहनेदीजबकरनैलफियरसाहब के विषदेने केलिये रावजीको नियतकिया गया और उसको पुड़ियांदीगईं तो यहउचितथा कि जो दवाजियादह मारने वालीथी उसको जियादहडालता और जोकमथी उसकोकम डालता यदिमिस्टरसूटरसाहब और इसमनुष्यका बयानठीक है तो पेटीमें दोपुड़ियां निकलतीं और इनपुड़ियों में केवल

हमेमें अच्छीबातों करनेके लिये उचित है कि रावजी का इज-हार पढ़ाजाने वह यह है कि प्रथम उसने सूटरसाहबके सम्मुख वर्णन किया कि सालिम और यशवन्तराव ने मुझसे कहा कि कि जो तुम महाराजा साहब के पास चलोगे और जो कुछ वह कहेंगे उसको तुम करोगे तो तुमको इतना रुपया दिया जा-वेगा कि तुमको नौकरीकी आवश्यकता नरहेगी और जन्मभर अपने परिवार समेत घर बैठ खाओगे किन्तु तुम चाहोगे तो तुम्हें नौकरीभी मिलेगी और वह कार्य अच्छीतरह अंजाम दोगे तो एकलाख रुपया तुम्हें मिलेगा—कर्नैल फियर साहबको मारडा-लना था वो उस कार्यको सिद्ध करना था जब हम इसबातके करने पर राजी हुये तो महाराजा साहबने हमसे कहा कि तुमको सालिम और यशवन्तके द्वारा पुड़ियां मिलेंगी दो तीन दिनके उपरान्त जमादारने दो पुड़ियां मुजको दीं और कहा कि तीन दिन तक बराबर इन पुड़ियोंको बर्त्तीया जाय और इस बातको सालिम और यशवन्तरावने महाराजा साहबके रूबरूभी हमको समझा दियाथा कि क्योंकर पुड़ियोंका बर्त्ताव होगा दोतीनदिन तक मैंने पुड़ियोंकी दवाको नहीबर्त्तीया क्योंकि मुझको मौका न मिला हम लोगोंने जब महाराजासे बार्त्ताकीथी तो उसमें यह बात ठहरीथी कि कर्नैल फियर साहबको शर्बतमें विषदिया जाय क्योंकि कर्नैलफियर साहब जब हवा खाकर आते हैं तो शर्बत पीते हैं—(कमीशनके मेम्बरोंको इसबातपर ध्यान धरना चाहिये) इसलिये दोतीनबेर पुड़ियोंको जब मौका पाया शर्बतमें डालदिया यह शख्स और जगहपर अपने इजहारमें कहता है कि सालिम और यशवन्तरावके कहने से इन पुड़ियोंकी कई छोटी २ पुड़ियांबनाईं और अपनी पेटीकी जेबमें रखलीं यह पूर्वोक्त इजहार उसने मिस्टर सूटर साहबके रूबरूदिये और अदालतके साम्हने बयान किया कि जोदो पुड़ियां मुजको मिली थीं उनका मुख्तलिफ रंगथा मैं समझा कि जो पुड़ियां श्वेत रंगकी है वह अधिक कष्टदायक है उस सफेद पुड़ियामेंसे थोड़ी २

उनको आपही जाना उचित था वास्तवमें अकबरअलीने सूटर साहबको बहुत अच्छी राय दी उचित है कि यह पेटी अजायबखाने में रक्खी जावे और अकबरअली चिड़ियाखाने में बन्द किये जांय ताकि इस पेटी और अकबरअलीको सहस्रों मनुष्य देखें जब अकबरअलीने पेटीको टटोला तो तुरन्तही मालूम हुवा कि जेबमें एक पुड़िया है इसलिये मिस्टर सूटर साहब खुला थे गये मुझको बड़ा आश्चर्य होता है कि मिस्टर सूटर साहबने किसी प्रकारका विचार न किया और इस सुआमिलेको ऐसे मनुष्यको सौंपा जिसको वह जानते थे कि बड़ा चालाक है और जहांतक हो सकेगा लोगोंके फंसानेमें कोशिश करेगा अकबरअलीने वर्णन किया है कि ईश्वरकी कुदरतसे यह पुड़िया पेटीमें मिलगई परन्तु यह ईश्वर की कुदरत अकबरअलीके हाथोंसे प्रकट हुई जिसतरह मैंने जाहिर किया है कि दामोदरपन्थका इजहार संखिया और हीरेके चूर्णके विषयमें गलत है उसीतरह रावजीका इजहार भी पुड़ियाके निकलनेमें झूठ है मैं पहिले कह चुका हूं कि शीशी का जिक्र जबतक कि दामोदरपन्थ ते रावजीने नहीं सुना जाहिर नहीं किया ॥

पुड़ियोंके इस्तैमाल करनेके बारेमें एक पुड़िया का वर्त्ताव एक प्रकारसे वर्णन करता है और और पुड़ियोंका वर्त्ताव दूसरी रीतिसे कहता है और अन्तको बेर एक पुड़िया केवल संखियेकी पेटीसे निकलना मशहूर है यह इस भांति के बयान हैं कि जिस मनुष्य को थोड़ीभी बुद्धि है उसको कदाचित् निश्चय न होगा सिवा इसके जब उस बयानमें अकबरअलीसा मनुष्य संयुक्त हो तो सिवा झूठ और गलत काररवाईके और कोई बात नहीं समझी जाती मैं कमीशन और संसारभरके साम्हने अकबरअली पर यह अपराध कायम करता हूं कि उसने यह पुड़िया पेटीमें रक्खी और पुड़िया रखनेके उपरान्त मिस्टर सूटर साहबको जो प्रतिष्ठित अफसर हैं बुलाया ताकि वह पुड़ियाके निकलनेको पेटीसे मिदाकत करें रावजीकी गवाही प्रथमसे अन्ततक बिल्कुल बनावट है ॥

संखिया न होती किन्तु हीरे का चूर्ण भी होता ऐसे इज़हार पर ध्यान करने से बिल्कुल अन्तर पाया जाता है कोई मनुष्य नहीं कह सक्ता कि कौन बयान ठीक और कौन ग़लत है आप साक्षियों को स्मर्ण होगा जो बयान हुवा है कि जब गजानन्द ने दासोदर पन्थ के दफ़्तर में कुछ काग़ज़ मशकूक देखे तो शीघ्र ही सूटर साहब को बुलाया और जब अकबर अली ने रावजी की पेटी से पुड़िया निकाली तब भी सूटर साहब बुलाये गये अभी वह बात यह है कि जब कोई बात पूछी जाती थी तो मिस्टर सूटर साहब बुलाये जाते थे उनके साम्हने कभी कोई नई बात नहीं पूछी गई रावजी इस पुड़ियाको रखकर बिल्कुल भूल गया था परन्तु अकबर अली तो बड़ा चतुर है उसने पूछा कि जिस तरह शीशी से दवा निकाल कर पेट पर निशान पड़ गया उसी प्रकार पुड़िया का निशान पेटी में न पड़ गया हो इसी हेतु उसने रावजी से पूछा कि तुम पुड़िया कहां रक्खा करते थे रावजी बेचारह भूल गया और उसे स्मर्ण न रहा उसने कहा कि मैं पेटी में रक्खा करता था सो पेटी मंगाई गई जिस तरह रावजी पेटी में पुड़िया रखकर भूल गया इसी तरह जो हर एक कातिल हिन्सा के शस्त्र को रखकर भूल जाया करे तो क्या अच्छी बात है परन्तु इस बयान से पहिले कुछ और वर्णन हो चुका है कि जब कर्नेल फ़ेयर साहब ने यह बात पूछी कि हमको विष दिया गया तो सालिम उसी समय घोड़े पर सवार होकर भागा हुवा आया और रावजी से कहा कि जो कोई पुड़िया शेष हो तो फेंक देना॥

कल्पना कीजिये यदि रावजी पेटी में पुड़िया को रखकर भूल गया था तो सालिम के कहने से अवश्य याद आ जाता परन्तु रावजी को ऐसा क्या हाल होगया था कि उस समय भी उसको स्मर्ण न आया अकबर अली ने मिस्टर सूटर साहब से कहा कि जो पेटी की तलाशी लीजाय तो ज़रूर कोई पुड़िया निकलेगी मिस्टर सूटर साहब को अकबर अली का इतना निश्चय था कि उन्होंने आज्ञा दी कि तुम जाकर पेटी ले आओ आप नहीं गये हालांकि

ना मिला है उसको मनसे देना चाहता हूं रजीडन्सीमें बहुतसे ऐसे नौकर हैं जिनको प्रतिष्ठित पदवी हैं प्रथम में रेजीडन्सीके नौकरोंने एक निर्दोष मनुष्य का नाम लिया किसी तरह से उसकी निर्दोषता पर भय और लज्जा न हुई ऐसे लोगोंका हाल लिहाज करनेके योग्य है कि पहिले आपही मारडालनेपर तय्यार हों और फिर एक निर्दोष मनुष्यपर अपराध लगावें और अब महाराजा साहब पर अपराध धरते हैं इस सम्पूर्ण गवाही में ऐसी दुर्गन्ध आती है कि मुझको महाग्लानि होती है और सब बनावट मालूम होती है इन सब गवाहोंने सम्मत करके किस प्रकार से फौज पर बहुतान बांधा था अब मुझको रावजीकी बाकी गवाही पर बात्तीकरनी है शीशी और पेटीके विषय में मैं वर्णन कर चुका अब छोटी२ बातोंके के लिये कुछ बात्ती करनी बाकी है॥

अब मैं पुलिसकी कारवाई पर बात्तीकरूंगा मालूम होता है कि पुलिसने रावजीके निरबत भी और गवाहोंके सदृश कारवाई की यह मनुष्य २२—तारीखको पकड़ा गया और उसीदिन की संध्याको उसने कबूल किया कि मैंने कर्नैलफियर साहबको विष दिया मालूम होता है कि उससे मुआफी का वाइदा किया गया अर्थात् यह कि जो वह जुर्म से इकबाल करेगा तो उसका अपराध क्षमा होजावेगा परन्तु उसने यह सब बातें अकबरअली की कुछ गुफ्तगूके पीछे कबूल कीं और कबूल करनेके उपरान्त उस को सरल्युइस पीली साहब और सूटर साहबके निकट लेगये रावजीने उससमय कबूल किया जब अकबरअली और पुलिसके लोगोंने उसको भय दिलाया था क्योंकि अकबरअली अब्दुल् अली और गजानन्दने सम्पूर्ण कारवाई तहकीकातके करते कीथी इन लोगोंके विषयमें मुझको लाचारीसे बयान करना पड़ता है मिस्टर सूटर साहब को मैं बरी करता हूं परन्तु यह साहब गजानन्दकि प्रकृतिको जानते थे और जानते थे कि गजानन्द एकबेर बदनाम होचुका है और भलीभांति जानते थे कि जो इस सुकद्दमेकी तहकीकात ऐसे लोगों को सौंपी जावेगी तो वह

कुछ संदेह नहीं कि पेडरू एक प्रतिष्ठित गवाह है उसको प्रतिष्ठा में कोई धब्बा नहीं लगा परन्तु यह मनुष्य जातिका पुर्त्तगीज है और किसी हिन्दू ने उससे साजिश नकी होगी और इस पुर्त्तगीजी गवाहने पुलिसको कारर वाईको पहिले गवाही दी यदि पुलिसको अवसर मिलता तो इस मनुष्य से भी अपनी इच्छाके अनुकूल गवाही दिलाते मिस्टर ऐडगल्टन साहबने पेडरू को गवाही ली थी यह साहब अतिप्रतिष्ठित और विख्यात नीतिमान हैं पेडरू का बयान है कि मैंने केवल एकबेर रुपया पाया और सौगन्द खाकर कहता है कि रावजी के इजहार गलत हैं अब कमीशन को अखतियार है कि पेडरूको साखून करे वा छोड़दे परन्तु किसी प्रकार से निश्चय नहीं कि २५ वर्ष का नौकर किसी हेतु के विना अपने स्वामी के मारने का उद्योग करे इसको विशेष और भी बहुतसी गलतियां रावजीके इजहार में साबित कर सक्ता हूं रावजीने वर्णन किया है कि गायकवारने पेडरू से वही बातें कीं जो मुझसे कीथीं उसने अपने इजहार में वयान किया कि गोवा नगर से आकर दो तीन दिन पीछे पेडरू गायकवार के निकट गया था इसलिये विदित होता है कि ६-वा-७ नवम्बर को गया होगा अर्थात् जबकि रावजी और नरसू का वयान है कि हम गये थे इसके उपरान्त कमीशनके मेम्बरोंने अदालत को बरखास्त किया॥

अठारवें दिनका इजलास॥

दूसरे दिन फिर कमीशन के मेम्बर अदालतमें एकत्र हुये और सरजान्बेलन टायनसाहब ने फिर इस्पीच प्रारम्भकी उन्होंने वर्णन किया कि कमीशनके मेम्बरोंका खयाल इसबातपर रुजू करता हूं कि रावजी और नरसूकी गवाही का रनैल फियर साहब के सामने किसप्रकारसे लीगई मैं नहीं चाहता कि कमीशन के मेम्बरों का वक्त दृथा खोऊं केवल इतनी वार्त्ता करनी चाहता हूं जो उचित है और जिससे अपराध का खण्डन हो और इसके विशेष जिसकामके लिये मैं यहां आयाहूं और सुझको मेहनता-

ना मिलाहै उसको मनसेदेना चाहताहूं रजीडन्सीमें बहुतसे ऐसेनौकर हैं जिनको प्रतिष्ठित पदवीहैं प्रथम में रेजीडन्सीके नौकरोंने एकनिर्दोष मनुष्य कानाम लिया किसी तरहसेउस-कीनिर्दोषता पर भय और लज्जान हुई ऐसे लोगोंका हाल लिखाजाकरनेकेयोग्यहै किपहिलेआपही मारडालनेपरतय्यार होंऔर फिरएक निर्दोष मनुष्यपर अपराध लगावें और अब महाराजासाहबपर अपराध धरतेहैं इससम्पूर्ण गवाहीमेंऐसी दुर्गन्धआतीहै किउनकोमहाग्लानि होतीहै और सवबनावट मालूमहोतीहै इनसबगवाहोंने सम्मत करकेकिसप्रकारसेफौज पर बहुतान बांधाथा अबमुजको रावजीकी बाकी गवाही पर बात्तीकरनीहै शीशीऔर पेटीकेविषयमें मैंवर्णन करचुकाअब छोटी२ बातोंके केलिये कुछवार्त्ती करनी बाकी है ॥

अबमैंपुलिसकी कारखाई परवार्त्ताकरूंगा मालूमहोताहै कि पुलिसनेरावजीकेनिस्वतभी और गवाहोंके सदृशकारखाई की यहमनुष्य २२-तारीखकोपकड़ागया और उसीदिन की संध्याकोउसने कुबूलकियाकि मैंने कारनैलफियरसाहबको विष दियामालूमहोताहै कि उससेमुआफी कावाइदाकिया गया अर्थात् यहकि जो वहजुर्मसे इकबालकरेगा तो उसकाअप-राधक्षमाहोजावेग परन्तु उसनेयह सबबातें अकबरअली की कुछगुफ्तगूके पीछे कबूलकीं और कबूलकरनेके उपरान्त उस को सरल्युइसपीलीसाहब और सूटर साहबके निकट लेगये रावजीने उससमय कबूलकियाजब अकबरअली और पुलिसके लोगोंने उसको भय दिलाया था क्योंकि अकबरअली अब्दुल अली और गजानन्दने सम्पूर्ण कारखाई तहकीकातके करते कीथी इनलोगोंके विषयमेंमुझकोलाचारीसे बयानकरनापड़-ताहै मिस्टरसूटरसाहब को मैं बरीकरता हूं परन्तु यहसाहब गजानन्दकि प्रकृतिको जानतेथे और जानतेथे कि गजानन्द एकबेर बदनामहोचुकाहै और भलीभांतिजानतेथेकि जोइस मुकद्दमेकी तहकीकात ऐसेलोगों को सौंपीजावेगी तो वह

बहुत सख्ती करेंगे क्योंकि उनको किसी की परवा नहीं है वह जानते थे कि गजानन्द कैसा आदमी है और उसपर क्या २ अपराध लगा है यह उचित था कि पहिले सूटर साहब गवाहों की गवाही लेते फिर उसको पुलिस के सुपुर्द करते क्योंकि जब पुलिस ने पहिले से उनको भय दिलाया तो जो चाहा उनसे इकरार करालिया शीशी और पेटी का लिखा तो मैं कहचुका हूं जो कमीशन के मेम्बर ऐसी मेरी बड़ी तकरीर से क़ायल नहीं हैं तो मालूम नहीं कि और किस बात्तों से क़ायल होंगे रावजी २२ नवम्बर को पकड़ा गया और २३, २४, २५, नवम्बर को तीन बेर उसके इज़हार लियेगये इसके उपरान्त सरल्यूइस पीली साहब के सम्मुख इस वाइदे से लेगये कि तुम्हारा अपराध क्षमा होजावेगा—ढिठाई क्षमा है.—यह अजीब बात है कि दामोदरपंथ इसमुकद्दमे का मूल और रावजी उनका कारकुन ठहरा दिया गया है उन लोगों का अपराध तो क्षमा हो परन्तु नरसू जिसका थोड़ा सा अपराध है उसका अपराध क्षमा न हुवा मेरे विचार से नरसू का अपराध क्षमा होना चाहियेथा न इन दोनों का क्योंकि नरसू कुवें में भी गिरपड़ा और कहता है कि मैं दुर्भाग्यता से खूनियों का साथी हुवा हूं मेरे विचार से नरसू ने मारने का उद्योग नहीं किया और उसके हक़ में इन्साफ नहीं हुवा मुझको आशा है कि यह मनुष्य उस दण्ड से बरी किया जावेगा जिस सजा का उसको निस्बत मुआफ़ न होने की वजह से गुमान है॥

अगस्तसन् १८७२ ई० में पहिले रावजी की महाराजा साहब से मुलाक़ात हुई थी बयान है कि यह मुलाक़ात सालिम के कहने से हुई थी उस दफे कुछ विपक्षा वर्णन न हुवा केवल इतना ही बयान है कि सालिम चाहताथा कि रेजीडन्सी के कुछ नौकर वश्य में होजावें और वहां की खबरें दियाकरें मालूम होता है कि जब पूर्व में कमीशन बैठी थी तो रावजी ने सालिम से कुछ खबरों की इत्तिला की थी फिर सालिम ने अपना विवाह किया और रुपयों को मांगा सो कुछ रुपया उसको दियागया परन्तु यह प्रगट नहीं

हुवाकिसिवायखबरोंके औरकिसी बातकोभी उससेदरखास्तकी गईरुपयेकी सिदाक़तके वास्तेगुनार पेशहुवा थोड़ा २ रुपया आयाआदि कोभी दियागया अजीवबातहै कि नरसू और रावजीको रुपया लेनेका मौका मिलाथा उन्होंने रुपया नहीं लिया जब कार्य्यकरचुके अर्थात् विषदेदिया तोफिरक्योंउन्होंने रुपयेकी दरखास्त नहींकी यहनिरिछ बहुतबड़ीहै यहभी इन लोगोंकी दुष्टता और झूठका कारणहै—शीशी और संखिया औरहीरेके चूर्णके विषयमें वर्णनकियाहै कि दियागया परन्तु अजीब बातहै कि इन लोगोंने उसमेंसे कुछबाक़ी नरक्खा इस मुक़द्दमेमें जितना कि महाराजा साहबका सम्बन्धहै बिल्कुल ग़लतमालूम होताहै बयानहै कि यशवन्तरावने पांचसौरुपये रावजीकोदियेथे औरवह रुपयाजुम्मा लायाथा उसकीगवाही रेंडवकेटजनरलसाहबने पेशकी परन्तु जुम्माकीगवाहीमें अन्तर है इसलिये वह बिश्वासके योग्यनहींहै एक और मनुष्य कार भाई नामक के विषय में नरसू ने वर्णन कियाहै कि वह भी उनकेसाथ एकबेर गायकवार के महलको गयाथा जूदनवीस के लेखसे मालूम होताहै कि कारभाईमई—जून वा जूलाईमें उनकेसाथ गयाथा परन्तु अक्टूबर नवम्बरमें जानासाबितनहीं होता यहगवाह इसलिये पेशकियागयाकि विषदिये जानेकी गवाहीकी सिदाक़तहो दोशख्स नरसू और रावजी की तस्दीक़ गवाहीके लियेपेशकीगई परन्तु उनदोनोंके बयानमेंभी अन्तरहै कोईगवाही साफ़ २ पेशनहींहुई जिससे रावजी और नरसूके बयानकी सिदाक़तहो केवलइतनाही साबित होताहै कि वह गायकवारके महलोंमेंगये और पांचसौ रुपयाराव-जीको मिलाथा फिरकुछ साबित नहींहोता कि रावजी को एक कौड़ीभी दीगई इससे मालूम होताहै कि पांचसौ रुपये खबरोंको इत्तिलाके लिये दियेगये थे उनलोगोंने विषदेनेके लिये कुछरुपया नहींपाया इनदोनों नवाहोंने वर्णनकियाहै कि जब हमविष देचुके तो हमको महाराजा साहबसे रुपये

बहुतसख्तीकरेंगेक्योंकिउनकोकिसीकीपरवा नहीहै वहजानते थे कि गजानन्दकैसा आदमीहै और उसपर क्या २ अपराध लगाहैयहउचितथा कि पहिले सूटरसाहबगवाहोंकीगवाही लेते फिरउसको पुलिसकेसुपुर्दकरतेक्योंकिजबपुलिसनेपहिले से उनको भय दिया।याती जोचाहा उनसे इक़ारारकरालिया शोशी और पेटीका क़िस्सा।तो मैं कहाचुका हूं जो कमीशन केमेम्बर ऐसीमेरीवड़ी तक़रीरसेक़ायलनहींहैंतो मालूमनहीं कि और किसबात्तसे क़ायल होंगे रावजी २२ नवम्बर को पकड़ागया और २३,२४,२५,नवम्बरको तीनबेर उसके इज़हारलियेगये इसकेउपरान्त सरल्यूइसपीलीसाहबके सम्मुख इसवाइदे सेलेगयेकि तुम्हाराअपराधक्षमाहोजावेगा—ढिठाई क्षमाहो—यहअजीबबात है कि दामोदरपंथ इसमुक़द्दमे का मूल और रावजी उनका कारकुन ठहरा दिया गया है उन लोगोंका अपराधतो क्षमाहो परन्तु नरसूजिसकाथोड़ा सा अपराध है उसका अपराध क्षमान हुवा मेरे विचार से नरसूका अपराधक्षमाहोना चाहियेथा नइनदोनोंका क्योंकि नरसूकुवेंमें भी गिरपड़ा औरकहताहैकिमैं दुर्भाग्यतासेखूनियों कासाथी हुवाहूं मेरे विचारसे नरसूने मारनेकाउद्योग नहीं कियाऔर उसकेहक़में इन्साफ़नहीं हुवामुझको आशाहै कि यहमनुष्य उसदण्डसे वरीकिया जावेगा जिस सज़ाका उसके निस्बत मुआफ़नहोनेकी वजहसे गुमानहै॥

अगस्तसन् १८७३ ई० मेंपहिले रावजीकी महाराजा साहबसे मुलाक़ात हुईथी बयानहै कियह मुलाक़ात सालिमके कहनेसेहुईथी उसदफ़े कुछविषका वर्णनहुवा केवलइतनाही बयानहै कि सालिम चाहताथा कि रेज़ीडन्सीके कुछ नौकर वशमेंहोजावेंऔर वहांकी खबरें दियाकरेंमालूमहोताहै कि जबपूनेमें कमीशन बैठीथी तो रावजीने सालिमसे कुछ खबरों की इत्तिलाकीथी फिरसालिमने अपनाविवाह किया औररुपयों कोमांगासेकुछ रुपयाउसको दियागया परन्तु यहप्रगटनहीं

तो निस्संदेह अन्तरपड़ जावेगा इनलोगों को इसबात से बड़ा पश्चात्तापहोगाकि हमने पहिलेक्योंन समझ लियाइस इखतिलाफसे साफसाबित हैकि मुकद्दमा झूठा है ऐडवकेट जनरल साहबकहेंगे किगवाहों कीप्रतिकूल गवाही से यह बातसाफ जाहिरहै किउनका बयानठीकहै परन्तु नहीं यदिसही होता तोकुछअन्तर नहोता न इतनाइखतिलाफ जोउनके बयानसेसाबितहुवा उनकेबयान कोमैंक्योंकर निश्चय मानूंकिअयमसेअन्त तकबिल्कुलविपरीतहैमैंकमीशनकेसाम्हनेइतनीवार्त्ताकरचुका हूं, अब कमीशन का समयवृथा नष्टनहीं करना चाहता करा नैलफियर साहबने अपनी गवाहीमें वर्णनकिया है कि उनका शिरघूमाकरताथा और जेहनकुन्द होगयाथा कोईबात उनकी समझमेंनहीं आतीथी और इसबातका उनकोबड़ा आश्चर्य था परन्तुमुजको यह अचम्भा हैकिइनजहरकी पुड़ियोंकाबयानउस वक्तहैजबकिवह अच्छे होगयेथे करनैलफियर साहबकीशायद यह रायहोकिवह इसी विषसे बीमार पड़गये परंतु मेरीराय नहीं है गवाहीसे साबितहुआकि ९—नवम्बरसे पन्द्रह दिनपहिले उनकीयहदशाहुईथी सिम्बतरमेंउनके एकफोडासी निकलाथा करनैलफियर साहब इसबातका निश्चय कराना चाहतेहैंकि लोगमुजको थोड़ा २ विषदेतेथे किमुजको धीरेधीरे मारेंशीशीका बयानमैंकर चुकाहूं रावजीकहता हैकिमैंनेउस शीशी कीदवाका बर्ताव नहीं किया और उसकोफेंकदियाइसलिये करनैलफियर साहब कोजो कष्टहुवा वह न शीशीकी दवामें और न विषसे हुआअब मैंसम्पूर्ण महाराजगानको इसबातका ध्यान दिलाताहूं कि ५ नवम्बरको किजबनरस गायकवार के महलमें गयाथा तो महाराजा साहबने उसकोबुरी २गालियां दीथीमैं चाहताहूंकि उनगालियोंका उलथा दोनों महाराजा साहबोंके रूबरू किया जाय ताकि उनको मालूम होकिऐसी गालियां महाराजासाहबकीजिह्वासे निकलीहोंगी वानहीं॥

मांगनेका हुक्मपड़ा और नरसू कहताहै कि आठसौ रुपये
देनेपाये परन्तु यहरुपया महाराणासाहबने अपने विवाहकी
खुशीमें दियाथा इसलिये इसरुपयेका जिक्रकरना व्यर्थहैक्यों
कि इसरुपयेको विषदेनेसे कुछतअल्लुक नथा निश्चयहै किइन
बातोंका खयाल कमीशनके मेम्बरोंको पहिलेसेहुवाहोगा इस
से अब वार्त्ताकरनी कुछआवश्यक नहींयहरीतिहै कि जबकोई
मनुष्य किसी कामको करताहै तो उसकी उजरत की उम्मैद
रखताहै परन्तु इनलोगोंने विषदिया और मेहनतानेसे निरा-
मरहे ऐसीगवाही कोईनहीं गुजरी जिससे साबितहो कि उ-
जरतपानेकी आशाहै उन्होंने वर्णनकियाहै कि जबहमविषदे
चुके और रेजी.उन्टसाहबके विष दियेजानेकी इल्लतमें हमसा-
खुनहोगये तो हमको कुछभीनहींमिला दोनों यहभीवर्णनक-
रतेहैं कि हमसे वाइदा हुवाथा कि जो जहरखुरानीमें हम
कामयाबहोंगे तो प्रत्येकमनुष्यको लाख२ रुपया इनआम मिलेगा
परन्तु इसदेशकेनिवासी ऐसी प्रतिज्ञाको कि जबतक उनको
नक़दरुपया नमिले नहींमानतेहैं यहबड़े निर्बुद्धि मनुष्यथे जो
ऐसी प्रतिज्ञाको मानलिया नरसूके बयानसे स्पष्टहै कि उसने
इसमुआमिलेमें बहुतकम कार्रवाईकी और अन्तको लज्जित
होनाप्रगट कियारावजी जोदामोदरपंथ का हालबयानकरता
है केवलइतनाही कहता है कि मैं दामोदरपंथको जानता था
परन्तुमेरी जातसेउससे मुलाकात नथीकैसी अद्भुत बात है
किएक मनुष्य खूनकरने में संयुक्त हो और आप मुलाकातन
रखताहो दामोदरपंथ अपने इज़हार में बयान करता है कि
रावजीमेरे घरपर आया और कुछकिताबें रेजीडन्सी से चुरा
करलायाथा जबतकमैंने उनकीनकल,नलेली वह मेरेमकानपर
ठहरारहा ऐसे इखतिलाफ सेयहबात जाहिरहै कितीनआद-
मियोंनेइन लोगोंको सिखायाएक कोगजानन्दनेदूसरेको अक-
बरअलीने तीसरेको अब्दुलअलीने उन्होंने मुकद्दमे को अवश्य
खड़ाकरदियापरन्तु यहनसमझे कि जबखूबतहक़ीक़ातहोगी

औरउसकोधमकीदीगईथीकि तुम्हारेहिसाबकिताबके कागज़
देखेजावेंगेइससेसाबितहोताहै किइसीमनुष्यनेरेजीडण्टसाहब
कोमारडालनाचाहाथा औरमेरेविचारसेयहबात असम्भवित
नहींहै महाराजासाहब कोरेजीडण्ट साहबके मारडालनेसे
कोईलाभ नथा।मैं सम्पूर्ण वर्णनबयान करचुकाहूं कि साहब
रेजीडण्ट केमारडालनेमें दामोदरपंथका फायदा नथा मह
हाराजा साहबका परन्तु जब रेजीडन्सी केनौकरोंका विचार
आताहै तोमेरी समझमें नहींआताकि उनको अपनेहाकिम
केमारडालने से क्याफायदाथा क्योंकिउनकोअपने हाकिमसे
कभीकोई शिकायत नहींहुई यदि रेजीडण्ट साहब मरजाते
तोवहसब आफतमेंपड़तेनरसू मौकूफ होजाता औरजोकरनैल
फियरसाहबमौकूफहोजातेतौभीउनको क्यालाभथा इनलोगों
सेबढ़कर और चालाक आदमियोंकाभीजिक्र हुवाहै जैसेकि
भाऊपूनाकर जो करनैलफियर साहबकेकानमेंप्रतिसमयफूंका
करताथा औरप्रति व्यवहारमें जानकारी जाहर करता था
उसने करनैल फियरसाहबसे खरीतेका हालबयानकिया उ
सको करनैल फियरसाहबके मौकूफ होनेकासंदेह होगारे
जीडन्सीके नौकर चाहतेहोंगेकि करनैलफियर साहब रेजी
डन्सीकी पदवीपर कायम रहें और उनकी जान लेनानचा
हते होंगे भाऊपूनाकरकोखूबमालूम हुवाहोगाकिजो करनैल
फियर साहबको विपदेनेसेसूचितकियाजावेगा तोवहजबदलेंगे
क्योंकि जबएक बेरतहकीकात प्रारम्भहोजायगीतो सरकार
कोफियरसाहब से नायकवार कावैर प्रतीतहोजावेगा रावजी
नेअपनी गवाहीमेंदर्शनकिया हैकिजोवस्तुजियादह सोइलक
थीउसको मैनेफेंकदिया अर्थ।तृणोथीकोदबाऔरसंखियाभीथो
ड़ीडालदीऔर बयानकरताहैकिजोपुड़ियां मुझको मिलीथीवह
खाहीमाइलथीऔर करनैलफियरसाहबभी कहतेहैंकितलकई
खाहीमाइलथा परन्तु डाक्टरसीवर्डसाहबकहतेहैं कि उसकी
रंगतहलकीभूरीथी एकबात और हैकि अगरसंखियाका असर

दोनोंमहाराजा साहबजानते होंगेकिऐसी गालियाहिंदु-स्तान के रईसखुबर जातेहैंवा नहीं मैंनेसुनाहै कि यहगालियांबहुतहीफोहशथींमैंने उनकेगन्दे होनेसेउनका अंगरेजीमें उल्थानहींकराया क्योंकि ऐडवकेटजनरलसाहबनेकहाकिइन-गालियोंकाउल्थाहोनाव्यर्थ है इसलियेमैंचाहताहूं कि वहगालियांदोनों महाराजा साहिबोंके खूबहूबयानकी जावें-ऐडव केटजनरल साहबने कहाकि वह गालियां हिंदुस्तानी भाषामें लिखीहुईहैं-सरजम्ट बेलनटायन साहबनेकहा कियदि हिंदुस्तानीभाषामें लिखीहैंतो काफीहैं उम्मेद है कि जोदरखास्त मैंने महाराजोंसे कीहैवह स्वीकार हो॥

अबएक और बातपर कमीशनके मेम्बरोंको ध्यान दिलाता हूं रावजी कहता है कि नरसूजीने जोमुजको पुड़िया दीथी उसमेंकोई स्याहीमाइल वस्तुथी और बयानहै किकालीवस्तु करनैलफियर साहबके गिलास मेंडाली गई इसबातपर ध्यान करनाचाहिये किदामोदरपंथने यशवन्तराव और सालिमके द्वारापुड़ियां भेजीथीं नरसूकी निसबतबयानहै कि इसमनुष्य कोसदैवपुड़ियां दीगई और उसनेरावजीको दींइसलिये स्पष्ट प्रकटहैकि दामोदरपंथने करनैलसाहबको मारडालनाचाहा था और फिर सालिम और यशवन्तको गवाही में संयुक्तकिया थाताकिजो कुछउसने तगल्लुब किया है उससे बचारहे और महाराजासाहब अपराधीबनें यहलोग इसमुआमिलेमेंमहा-राजासाहबका जिक्रनहींकरते हैं यदि दामोदर पंथ परजुर्म रक्खाजावे तोइसमनुष्यपरक्रम पूर्वक ऐसीगवाहीहैकिउसपर हरप्रकारसे अपराध साबित होसक्ताहै हरमनुष्यकी गवाही सेसाबितहै किदामोदरपंथने विषदियाइसबयानसे मेरा यह प्रयोजन नहींहै किविषका दियाजाना मानताहूं परन्तु जो विचारमेरे मनमें उपजतेहैं उनकोकमीशनके रूबरू पेशकर-ताहूं जोउस समयमेंदामोदरपंथ की हालतहोगी उसकोजा-नताहूं क्योंकिरेजीडन्सी मेंदामोदरपंथ केजानेकी मनाहीथी

परन्तु सूटरसाहब उससमय नथेगजानन्द इसबारेमें कहताहै किमैंनरसूको मैदानमें लियेजयेबैठाथा और वहां अकबरअली और अब्दुलअलीभी उपस्थितथे रावजीबुलाया गया। और उससे कहा कि मैंनेसबबातोंका इकरार करलिया॥

गजानन्दआदिने बहुतबड़ीकोशिशकी परन्तु उनसबकीकार-रवाई प्रकटहोगई उन्होंनेएकबेर चाहाथाकि सरकारनरसू काभीअपराधक्षमा करदे परन्तु मिस्टरसूटरसाहब औरसरल्यू-इसपीलीसाहबने कहाकि तुम्हारा अपराध कदाचित् क्षमा होगापरन्तु उसका जुर्मसबसे कमथा उसनेकुछ जवानीबयान कियाथा मिस्टरसूटर साहबकहतेहैं कि उससमय मैंनेबहुतसे कामकेहोनेसे उसकाबयान नहीं लिखा यद्यपियह सबसेज्यादा आवश्यक कार्य्यथा कि सब कामोंको छोड़करयह कामकरना चाहियेथा क्या इसकामको वह अपनाकाम नहीं समझतेथे चाहेयह बयानठीक था यागलत परन्तु वह बयान एकखूनी का था हरप्रकारसे उचितथा कि तुरन्तही लिखलिया जाता जब सूटरसाहबको मुख्य इसी मुकद्दमेसे तअल्लुकथा और जो कामउसवक्त करतेथे इसीमुकद्दमेसे सम्बन्धित होगा इससेबढ़ कर और कौनसा कार्य्यहोगा किएक मनुष्यजो फिलहाल इ-कारारकरताथा इस इजहारके न लेनेका मिस्टरसूटर साहब कोई माकूल उत्तरनहीं देसक्ते॥

सरल्यूइसपीलीसाहबका बयानउनके बयानकेप्रतिकूलहैवह कहतेहैं किमैंने इसवजहसे नरसूकीगवाही फौरन् नहींलिख-वाईकि मैंचाहताथा किवहखूब गौरकरे किमैं क्या लिखाना चाहताहूं वहबयान नहीं करते किसूटरसाहबको सावकाश केकामहोनेसे उसकेइजहार नहीं लियेगये॥

इसके उपरान्त पुलिस वालोंके पहरे में क़ैद कियागया॥ इस अन्तरमें पुलिस को कारखाई करने का और अवसर मिलाहोगा पुलिसनेजोबागमें कारखाईकीवहप्रकट होचुकी है और जबनरसू कुंवेमें गिराथा उसकाखूब हालमालूम हो-

हुवा तो संखिया का स्वेतरंग होता है कर्नैलफियर साहब संखियाका होना इसहेतुसेभी बयानकरते हैं कि उनको मुंहमें तांबेकासा स्वाद आगयाथा परन्तु डाक्टरने जोतलछटकोदेखा तो कोईवस्तु उससेऐसी नहीं मिली कि जिसकातांबेकासा स्वाद हो—ऐडवकेटजनरलसाहब इसविषयमें कहेंगेकि डाक्टरसीवर्ड साहब और डाक्टरग्रेसाहबने किसभांति संखिया तलछटमें पाई परन्तु इस विषयमें मैं अधिकवार्त्ता नहीं करसक्ता जब कोशिशकीगई तो कुछसंखिया मिलीजो इतनी कोशिशनकी जातीतो कदाचित् संखिया न मिलती कर्नैलफियर साहबने गुप्तयह खबरपाई थी कि मुझको लोग संखिया देने वाले हैं किन्तु यहांतक उनकोज्ञातहोगयाथाकि संखिया और तूतिया और हीरेका चूर्ण उसमें मिलाहुवाहै यहखबर भावपुनाकर ने बलवन्तरावसे सुनकर उनसे कहीथी परन्तु अजीब बात है कि ऐडवकेटजनरल साहबने इसबात की शिकायत करने के वास्ते बलवन्तराव को नहीं बुलाया संखिया और हीरे का तांबेकेसदृश स्वादनहींहै—यदि ऐडवकेटजनरलसाहब इसबात को साबितकरें कि तलछटमें तूतियाथातो हीरे औरसंखिये काही होना जोलशह्रहै गलतठहरेगा नरसूबयान करता है कि इसपुड़ियाको रंगतस्याहीमाइलथी और ऐसाहीकर्नैल फियरसाहबभी वर्णनकरतेहैं-परन्तुडाक्टरग्रेसाहब औरडाक्टर सीवर्डसाहब कहतेहैंकि भूरारंगथा इसइखतिलाफ केवारेमें कोईक्याकहसके क्यासबलोगअंधेहोगयेथे जोहलकेभूरेरंग को स्याहीमाइलबयान किया और क्यारज़ोडन्सी के नौकरचाहते थेकि अपनेहाकिमसे दिल्लगीकरें यहवकूतबड़ाउम्यालिलाहैकि पुड़ियाके रंगमेंइतना इखतिलाफहै मेरेविचारसे शायदलोगों नेबाज़ार में मशहूर करदिया कि फियर साहबको विषदिया गयापरन्तु वास्तवमें विष नहीं दियागया—नरसू २३—नवम्बर कोपकड़ागया २४—दिसम्बरकोरावजीसे उसकासाम्हनाकराया गया—गणानन्द अकबरअली अब्दुलअली उससमय उपस्थितथे

बहुतसे प्रश्न नकिये जावें और ज़ोर नडाला जावे ठीक२ हाल मालूम नहीं होसक्ता करनैलसाहबने बर्णनकिया है कि सालिम और यशवन्तराव दोनोंरेजीडन्सीमें आयाकरतेथे और कहते हैंकि मुझको संदेह हुवाथा कि सरहममें कोई वस्तु डालदीगई थी जिसके सबबसे मेरा फोड़ा बढ़गया और बरवक्त गौर करनेके करनैलसाहबको सन्देह हुवा कि उसमें संखिया डालीगई परन्तु सरहममें संखियेका डालाजाना डैनेबिल्कुलगलत और खंडन करदिया है फिरवह उनदिनोंका जिक्र करतेहैं जिन दिनों में शर्बतमें विषदियागया था वह अपनी तबीयतका हाल सितम्बर और अक्टूबरका बयानकरतेहैं और कहते हैं कि ६— या ७ नवम्बरको विषदिये जानेका उद्योग हुवा परन्तु गवाही से साबित नहीं होता कि इनतारीखोंमें उद्योगहुवाहो-जाहिर है कि आदमीका खयाल कितना दौड़ताहै जोकुछ उनकी तबीयत कीहालत इनतारीखोंमें हुईथी वहबिल्कुलखयालथा-शरबतके पीनेके उपरान्त वह अजीब तरहशरबतकेफेंकने का बयानकरतेहैं उचित यहथा कि जो मनुष्य शरबत बनाता था उसको बुलाकर कहते कि तूने यह शरबत कैसा बनायाहै यदि सब शरबतको करनैलसाहब रहनेदेते और डाक्टरसाहबको दिखाकर इसतहालकराते तो उचितथा मालूमहोताहै कि डाक्टर सीवर्ड साहबनेभी बहुतढीलकी क्योंकि उन्होंनेतलछटकोछान लिया और पानीको फेंकदिया करनैलसाहब यहभी कहते हैं कि जहां मैंने शरबत फेंकाथा वहांएक खिड़कीथी और खिड़की के आगे बरामदा था वहांबरामदे में मालूमहुवा कि संखिये और हीरेकाचूर्ण शरबत में मिला हुवाथा सबसे बढ़कर यह बातहै कि जबदो तीनदिनपीछे बरामदेकी धरती खुरची गई तो उसमट्टीमें छोटे और संखियेका चूर्णमिला आशाहै कि कमीशनके मेम्बरउसखुरचीहुई मट्टीपरअपनाखयालजियादा रुजूनकरेंगे परन्तु हांजो तलछट गिलास में रहगया था वह

चुकाहै परन्तु जबनरसू पुलिसके गार्डमेंथा तोवह क्योंकरकुवें मेंगिरा क्या वह कुवेंके बराबरही खड़ा हुवा था जो गिरपड़ा हालांकिनशहूरयहहै किपुलिसके आदमी उसके साथथे और उनमेंसे भागकर वह कुवेंमें गिरा यह अद्भुत बात मालूम होतीहै मिस्टरसूटर साहबवर्णन करतेहैं कियहमनुष्य पलटन केगार्डमें थापुलिसके लोगइसकेपासजासक्ते थेक्या यहअसम्भवितहै किपुलिसवालोंने उसकोयह सिखायाहो मैंनहीं चाहता किउसके इजहारकमीशनके मेम्बरोंको फिरयाददिलाऊं क्योंकिउसने प्रतिप्रश्नके उत्तरमें भीयहीबयान कियाकि मेरेभाग्य में यही लिखा था नरसू के बारे में मुझे और कुछ कहना बाक़ी नहीं है॥

इससम्पूर्ण मुकद्दमेकी तहक़ीक़ातमें कोई और हेतुज़ाहिर नहीं कियागया कि विषदिये जानेका क्याकारण था नौकरअपने स्वामीसे अतिप्रसन्नथे क्या उनको प्रतिज्ञाही परनिश्चय आगया थाकि हमकोरुपया मिलेगा और उनकोहाकिमने जोमेहरबानीकी थी उसकोविस्मर्ण करगये और ग्रबतमें विषडालदिया यदिउनकाहाकिममरजातातोकातिलबनतेऔरकिसीसूरतसे नबचसक्ते दामोदरपंथके विषयमें खूब बयान करचुका हूं इन लोगोंकी यहसबगवाही बेमूल और गलतहै और किसीप्रकार से निश्चयमानने केयोग्यनहीं है महाराजा साहबके लियेबहुत लोगइसबात पर तय्यारहुयेकि उनकेहकमें झूठबोल२ करउनको फांसे इनलोगों को मुआफीका वाइदादिया गयापुलिसवालोंको अपनीतरक्की कीआशा होगी हरप्रकार से लोगचाहते हैंकि इस बेचारे रईसको दण्डदिलावें मुझको उचित मालूम हुवाकि कर्नैलफियर साहबके इज़हारबयान करनेसे पहिले इनसब गवाहोंके विषयमें जिक्रकियाजाय॥

अबकमीशनके मेम्बरोंको उनजवाबों परध्यानदिलाताहूं जो कर्नैलफियर साहबने मुझकोदिये यहबातप्रकटहै किजनतक

साहब कारनैलफ़ियर साहबके साम्हने आये तो उनके मुखसे कोईबात ऐसीनहीं पाईजातीथी जिससे यहबात मालूम हो कि वहइसउद्योगमें संयुक्तहैं और महाराजासाहबकीकोई ऐसी हरकत साबितऊई जिससे मालूमहो कि उन्होंने कभी ऐसाउद्योगभीकियाहो उन्होंने कारनैलफ़ियरसाहबसे उसदिन इसतरहभेट कीथी कि जैसीसर्वदा कियाकरतेथे और ऐसी मुलाक़ातनहीं की जिससेमालूम हो कि वह मारडालने में संयुक्तहैं हिन्दुस्तानीरईसोंकी प्रकृतिको मैंभलेप्रकारनहीं जानतापरन्तु इतनाहीजानताहूंकि जैसीतबीयतहमलोगोंकी है वैसीहीउनकी भी होतीहोगी जब खयालकरतेहोंगे तो भय और चिन्ताअवश्यहोतीहोगी और यहभयउनकेमुखसेविदित होजाताहोगा।हा खेदहैकि लोगोंने श्रीमान्महाराजा गायकवारको अपराधीबनाकर बुरी २ बातेंकी—अंगरेजी आदि भाषाकेसमाचारपत्रोंमें ऐसीगलतबातेंलिखींकि हरएकमनुष्य कारुधिर जोशमेंआगयामैं उसदेशकानिवासीहूंजहां बिल्कुल आज़ादीहै यदिवहांकिसी अखबारमें ऐसालिखाजातातो उस एडीटरको दण्डपर दण्डहोता और वहविचारनकिया जाता कि बड़े अखबारका एडीटर था क्योंकि उसने अपने लेख से सरकारकाध्यान न्यायसे फेरदिया मैं फिरकहताहूंकि गायकवारकी ओरसे कोईकारवाई ऐसी नहींऊई जिससेमालूम होकिगायकवार ने विषदियाहैवा किसीप्रकारसेवहअपराधी है—कारनैलफ़ियरसाहबकेकानलोगोंने बऊतदिनोंसेभडकायेथे विशेषकरभावपूनाकारनेटिफ़नसे पहिले कारनैलफ़ियरसाहब इन्कार करतेथे कि भावपूनाकारनेमुझको जहरकी इत्तिला नहीं की परन्तु टिफनखाने के उपरान्तइकरारकियाकि इसी मनुष्यने मुझको इत्तिलादीथी जब भावपूनाकार बुलायागया तो उसनेकहाकि मैंने अमुकमनुष्यसे सुनकरइत्तिलादीपरन्तु वहनहीं बुलायागया जिससेउसने सुनाथा—गायकवारपरजो दूसराअपराधहै किरजीडन्सीके नौकरोंसे खबरोंके पानेकेलिये

गौरकरनेके योग्य है कारनैल साहबकहतेहैं किजबमैंने शरबत फेंकदियाते। कुछतलछट स्याहीमाइल गिलासमें रहगयाऔर फिरअपनी तबीयतका हालवर्णन करतेहैं किवहीदशाहोगई जोपहिले हुईथी यह साराकिस्सा अति अद्भुतहै शरबत का फेंक देना और किसी मनुष्य को नबुलाना और मुखमें तांबे का सास्वाद होना और तलछट का स्याही माइल होना यहबातें अजीवगरीब मालूम होतीहैं निश्चयहै कि यहइजहार सुनकरकमीशनके मेम्बरोंको बड़ाआश्चर्य्यहोगा मैंपहिलेवर्णन करचुकाहूं कि करनैलफियरसाहबने अपनी एकचिट्ठीमेंलिखा कि मैंने ठीक खबरपाईहै कि मुझको विष दिया जायगा ऐसी खबरोंके पानेसे मनुष्यका हृदयबहुत फिरसक्ताहै उसीदिन उन्होंने जल्दीकरके गवर्न्नमेण्टमें लिखभेजा कि मुझको विषदिया गया फिर करनैलसाहब वर्णनकरतेहैं कि महाराजासाहबसे औरमुझसेक्या२बातेंहुईं महाराजासाहबने उनसेकहाकिमिठाईखानेसे मेरीभी ऐसेहीदशाहोगईहै किन्तुउन्होंने यहभी कहाकि नगरमें यहरोग बहुतफैला है महाराजासाहबने यह वर्त्ताशुरू नहीकीथी किन्तु करनैलसाहबनेही इसबातको छेड़ाथाजो वार्त्ता महाराजासाहबने की उससेयह विदितनथा कि महाराजासाहब करनैलसाहबको टालदेंताकिउनकोजाहिरहोकिमुझकोविष दियागया यदिविषकादियाजानाठीक है तो कोईवजह जाहिरनहीं कीगई कि महाराजासाहबको मालूमहो कि करनैलफियरसाहबको ९ नवम्बरको विषदिया गया डाक्टरसीवर्डसाहब और करनैलफियरसाहबकी जो गवाही लीगई उससे यहबातजाहिरहै कि मानोलोगोंने दिन और समय विष देनेका नियत करलिया था परन्तु वास्तवमें कोईसमय नियतनहीहुआ था किन्तु यह कहागया था कि जब अवसरमिले विषडाल देना डाक्टर सीवर्डसाहबने अपने बचपनके विचारों को इस वास्ते बर्त्तीया कि जो कुछ उनके खयालहैं औरोंकेभी हृदयपर नक्श होजावें जब महाराजा

है कि इसगायकवारके महलमेंलेगयेथे कहनेसेयह मतलबहै औरऐडवकेट जनरलसाहबभी यहीसमझे हैंकि आश्चर्य नहीं जोइनलोगोंकी गवाही ठीक हो और आयाको सवार करके लेगयेहैं। और आयागायकवारके नौकरोंकी मुलाकातकेवास्ते गईहो और उसने तरह २ के जटल काफियेउडायेहैं। परन्तु आया का यह बयान कि मैं महाराजासाहब के पासगई थी बिल्कुलगलतहै आयानेजोपुलिसके मेंइजहारों अपनेजाने की तारीख वर्णनकीहै उसतारीखसें इखतिलाफहै क्योंकिआदलत मेंउसने कुछऔरबयान कियाहै मालूमहोताहैकि जबपुलिस नेउसपरसख्ती कीतोआयाने उनकीइच्छाके अनुकूल वर्णनकर दियायह अजीबबात हैकि आयाउसजमानेमें नहींगई जबकि नरसूऔर रावजीने अन्तकीबेरविषका बयानकिया है किनरसू और रावजीने ५–और ६–नवम्बरको विषदिया उन्हीं तारीखोंकोआयासे भीजिक्रकियागया था और उससेजो विषकेदिये जानेकाजिक्र कियाथा उसकोनरसू औररावजीके विषदेने से कुछतअल्लुकनथा आयासेकहागया था कितुम अपनी तौरसे अलगज़हर दो कहीबयानहैकि आयानेबिल्कुलइन्कारकिया इसइन्कार परकमीशन कोलिहाजहै ग्रेखदाऊद कहता है दिवालीसे तीनचार दिन पहिले अर्थात् ५–६–७ नवम्बर को आयासेबातीं हुईथीऔर आयाभी कहतीहैकि इनहीदिनोंमें मुजसे औरमहाराजा साहबसे वार्त्ताहुईथी और विषदेनेका जिक्रआयाथा वहइसतरह अपनेबयानको लिखातीहै किमानो करनैलफियर साहबकी वजीरआज़िमथी औरवड़ेरौबऔरबड़े मरतबेकी औरतहै कमीशन आपही विचारसक्तीहैकि उसका इजहार कुछठीक औरकुछ अशुद्ध है नौकरों का बुलानादोनों ओरसे हुवा करनैलफियरसाहब के नौकरों ने गायकवार के सेवकोंमे मेलकिया और गायकवारने करनैलफियरसाहब के नौकरों को बुलाया मालूमहोता है किकोई समय बड़ौदे में ऐसा बीताहै कि दोनोंओरसे खबरदेने वाले नौकर रक्खे गये

सेलन्होल्न कियागया इससें यहबात पूछनीहै किइसतरहसेल होलकाकरना किसीमनुष्यकीहानिकेलियेहुवाथा या नहींपरन्तु करनैलफियरसाहवनेभीखबरोंके मालूमकरनेकेवास्ते लोगों से सेलरक्खाथाइसवातसे किसीमनुष्यको इन्कारनहीं होसक्ता किभावपूनाकर करनैलफियर साहब का मुखबिर नथा चाहे इसशख्सको रुपयानहीं दियागया परन्तु करनैलसाहबउसकी हरएकबातको सुनतेथे गायकवार को इतना नागवारहोता होगाकि जोमनुष्य मेरावैरी है उसीसे रजीडण्टसाहब ऐसी रखतेहैं यहबातसाफजाहिरहै कि जब खरीतातय्यार होताथा तो करनैलफियरसाहबको इत्तिलाहोगईथी इसीप्रकारउनको गायकवार की हरएक कारखाईसे खबरहोजाती थी चाहे उन्होंनेभावपूनाकर को कुछनहींदिया परन्तु भावपूनाकर ने गायकवारके नौकरोंको रुपया देकरहालात दरयाफ्त किये होंगे महाराजासाहबको रजीडण्सीके खबरोंसेकुछअधिकलाभ नथा जैसे कि आयाने एक चिट्ठी लिखी जिसमें रजीडण्सी में खानाहोनेकाजिकरथाभलाउससे महाराजासाहबको क्यालाभ था परन्तुकरनैलफियर साहबको वहहालमालूम होतेथेहर प्रकार महाराजासाहब मजलूमहैं और करनैलफियर साहब की जियादती मालूम होतीहै और आयाका जो बयानहै उस पर कदाचित्निश्चय नहीं है महाराजासाहब उससे इन्कार करते हैं मैं आपसे पूछता हूं कि महाराजासाहब आया से क्या बातें करते थे आयाको सरकारी पोलीटीकल मुआमिले मालूम होसक्तेथे जोवह इत्तिला देती महाराजा साहब खूब जानतेहोंगे कि आया को इस मुआमिलेमें कुछ सम्बन्धनहीं है ऐडवकेट जनरल साहब ने जाहिर किया है कि आया से भीविषदेनेका कुछजिकहुवा था फिररावजी और नरसू विष देनेमेंसंयुक्त कियेगये परन्तुगवाहीसे यहबात प्रगट नहीं कि रावजी और नरसू और आयासेकुछ वार्त्ताहुईहो औरगाड़ी वानोंकी गवाहीसे मुजकोइन्कारनहींहै जिन्होंनेबयान किया

कियाउनको उसकोदेखनेका खूबमौका मिलापरन्तु उनपरभी असरन हुवाडाक्टरसाहब जानतेथेकिवहगायकवारकेमहलों में जाया करतीथी परन्तु उन्होंने इसबातका कुछ विचार न कियाउसका इलाजएकडाक्टर साहबकरतेथेपरन्तु फिरभी उनडाक्टरकोइत्तिला केबिना उसके पासडाक्टरसीवर्डसाहब गये जबइसका कारणपूछागयातो उन्होंनेवर्णन कियाकि वह डाक्टर साहबमेरे मित्रथे मुझेपूछनेकी कुछ आवश्यकतानथी वहरहाल वहआयाकेदेखनेको गयेजब उसको देखातोमालूम कियाकि उसको कोईशारीरकरोगनहींहै केवल उसके हृदय परसदमाहै इसविषयमें डाक्टरसीवर्डसाहबखूबबयान करतेहैं उन्होंनेआयाको समझाया कि तुम अपने मनका हाल मुझसे कहोतुम्हारे दिलको तुम्हारेपेटको आरामहोजावेगाकिसी समयमेंउसे पलस्टरलगाया था और जब उसनेअपने मनका हालबयान करदिया उसके लिये ऐसा मुफीद हुवा जैसेकि कैकीदवा दीगईफिर उसकोआराम होगया डाक्टरसूटरसा- हब(इसजगहपर मिस्टरसूटरसाहबको डाक्टरसूटर साहबक- हनाचाहिये) बुलायेगये और उन्होंने उसका इजहारलेकर उसकाइलाज किया डाक्टर सीवर्ड साहब शारीरक रोगका इलाजकरतेथे और डाक्टर सूटरसाहब रूहानी इलाजकरते थेमैं विचारताहूं किडाक्टर सीवर्डसाहब मिस्टरसूटरसाहब से किसतरह कहतेहोंगे किमेरेहाथसे जबतकवह आरोग्य नहोगी इलाजकिये जाऊंगातुम उसकारूहानी इलाजकरो क्योंकिउसका मनबेकरार है-निदानउसके इजहार लियेगये उसकामतलब यहथाकि जबमैं तीसरीदफे महाराजा साहब केमन्दिरोंमें गईतो महाराजासाहबने मुझसेपूछाथा किसा- हबको कोई ऐसी दवादी जासक्ती है जिससेमेरी उनसेप्रीति होजावेउसकाबयान हैकिगायकवार मुझकोटटोलतेथे मैंइस बातका उनको क्या उत्तरदेती हूं अबमैं लार्डचीफ जस्टिसमे पूछताहूं किआपने कभीऐसा फिकराकिसीके इजहार मेंसु-

सन् १८३० ई० से सरकारने तो खबर देने वालोंको नौकर रखना तो मौकूफकर दिया परन्तु शायद करनैल फियरसाहबके विचार से यहबात अबभी उचितहै॥ आयाके इजहार खतमकरनेके पहिले बयानकरना चाहताहूं कि किस २ प्रकारसे बजारी अफवाह उड़ सक्ता है इस अफवाह को सुनकर गायकवार और करनैल फियर साहब दोनों को चिन्ताहुई होगी सही है कि गायकवार नहीं दीठा आदमी है परन्तु ऐसीखबरोंके सुननेसे चिन्तितहोगये होंगे और करनैलफियर साहब का मुझको बड़ा आश्चर्य है कि यद्यपि वह ऐसीरियासत में ऐसे प्रतिष्ठित पद पर थे जो बजाय एक सलतनत के समझो जासक्ती है परन्तु उन्होने सबलोगों कीबातोंकोसुना औरझूठेमनुष्योंसे मुंहलगाया उनकाएकखबरदेने वालामुख्य ऐसा मनुष्यथा जो गायकवार के प्राणका वैरीथा आयानेजो प्रथमबेर सूटरसाहबके रूबरू इजहारदिये उसमेंबीमारीका उसनेकुछजिक्र नहींकिया परन्तु उसकेपीछे वहरोगीहोगई औरअस्पताल कोभेजीगई आयाने वर्णन किया है कि मैनेकिस प्रकार रमजान केसहोनेसे महाराजा साहबसे बातेंकीं आया का यह बयानकितना लचर है १८—दिसम्बर कोजो आयाके इजहार लियेगये उसमें आयानेनहीं वर्णनकिया कि महाराजासाहबने मुझसे कुछविष देनेका जिक्रकियाथा और मुलाकातेंजो आयाकी महाराजा साहबसे हुई उन में केवल जादूका जिक्रहैजबआया अस्पतालमेंथीबीमारहोनेपरभीवह मुझसेइजहार दियेडाक्टर सीवर्ड साहब नेभीकुछ आयाका जिक्र कियाहै मालूमहोताहै किउनको आयाका बहुत बड़ा खयालथा इसबात कोवहमानतेहैं परन्तु मेरीबुद्धिकाम नहीं करतीकि उनकोआया काइतनाक्योंखयाल थाशायदआयामें कोईऐसीबातथी जिससे साहबकामनआकर्षितथा औरकिसी बातपर उनका मन मोहितहुवाहोगा परन्तु जबवहकमीशन केसम्मुखआई तोउसकी मायामई दृष्टिने किसी परकुछफलन

शायद यह लोगभी दामोदरपन्थ के सदृश बयान करते हैं मेरे दोस्त ऐडवकेट जनरलसाहबने सोचेविचारेबिना उनगवाहों को बुलायाजिनकी प्रतिष्ठापर बदनामीका धब्बाथा इसलिये सालिसके बुलानेमें क्या उज्रथा और क्यों यशवन्तरावकीगवाहीनकी यह शख्स रावजीसे बढ़कर दुष्टनहींहै यदि ऐडवकेटजनरल साहबजानते कि यहलोग किसीबातकी सिदाकत करेंगेतो अवश्यही उनकोबुलाते अगर महाराजा साहबइन गवाहोंको बुलातेतो मैंकदाचित् बुलाने नदेता और जोप्रतिष्ठितगवाहोंकी अवश्यकता होतीतो और बहुत गवाह बहम पहुंच सक्तेथे मुझको गायकवार की ओरसे मुकद्दमे के खड़ा करनेकी जरूरत नहींहै किसी प्रतिष्ठित गवाहने गायकवार कोसाबूतनहीं किया मैंउनलोगोंको गवाहीकभी नलेताजो थोड़ेदिनोंतक पुलिसमेंरहे—लार्डलार्ड—मैने इस मुआमिलेमें ठीककारवाई कीहैयागलत मैनेबिल्कुलइन्कारकिया कियह लोगगायकवारकी ओरसे कदाचित् गवाहन ठहरायेजावेंगे गायकवारपर जोअपराध ठहरायेगयेथे उनसबका मैनेखण्डनकरदिया अबकोई जुर्म गायकवारपर बाकीनहीं रहा कोई गवाहीऐसी नहींगुजरी जिसकानिश्चय कियाजाता मैंहतज्ञहूं कि आप साहिबों ने मेरी तकरीर को गौर से सुना जो कुछकि वार्त्तामुझसे होसकी मैंनेकी मैंखूब जानताथा किइस मुकद्दने मेंभी खण्डन करने की जिम्मेदारी है किसी मुकद्दमे मेंऐसा सबकाध्यान नलगा जैसाकि इसमुकद्दमेको सबसाहब गौरसे देखतेहैं और इसमुकद्दमेकी कारखाईपर अंगुश्तनुमाईकरतेहैं गौरविचारसे ऐसीपदवीका मनुष्यजैसाकिगायकवारहैपहिलेहीबेर जुर्मोंमें गिरिफ्तार हुवाहै और उसकोऐसी कारवाईहुईहै? हिंदुस्तानकी इतिहासकी पुस्तक देखनेसेविदितहोताहै किकैसे २ गवर्न्नरजनरल साहिबोंने अपने तौरमें रईसोंको दण्डदिया औरअनीतिकी परन्तु अब श्रीमान्वैसरायने उचितसमझा किमो एक रईसपर कलंकलगा है उसकी

नाहै टटोलनेका शब्द किसी आयाकेमुखसे आपनेसुनाहैपरन्तु आयानेलज्जासे इन्कारकिया सोविचारनाचाहिये किआयाने अपनाइन्कारकिस राहतसेड. क्टरसीवर्ड साहबके रूबरूबयान कियामैंअबभी कमीशनमेम्बरोंका खयालतजूकरताहूं किआपने कभी ऐसाझूठसुनाहै किआयानेकहा हो किलाखों रुपयेकार-नैलफियरसाहबपर न्योछावरहैं आयाअपने तईंबड़ी पण्डिता समझतीहै यहवेहूदा इच्छी बाजारकी गय सुन २ कर बातें बनाया करती थी क्या महाराना साहब को इतनी भी बुद्धि नहींहै जो ऐसीस्त्री से वह बार्त्ताकरते उसके इजहार मेंजो थोड़ेसे प्रश्न किये गये उनसे मालूम हुवा कि उसका बयान बिल्कुलगलत है जोकुछबातें हुईं थीं तो शायद इतनीही हुई होंगाकि कारनैलफियरसाहब परकुछजादू कियाजायकि वह मेरेवशहोजावें—प्रथममिस्टरसूटरसाहबके सम्मुखयह प्रश्नकिया गयाकि तू विषके देने का हालभी जानतीहै—सो विचारना चाहियेकि पहिलेही ऐसीस्त्रीसे इसभांति का प्रश्नकरना क्या जरूरथा उसनेखाहमखाह उत्तरदियाकि मुझसेजिक्र आया था साफजाहिर है कि मिस्टरसुटरसाहबने उसको सिखाया और अकबरअलीने उसकोधमकाया कि विषका जिक्रकरना उसकेइजहार आदिसे अन्ततक बिल्कुल वाहियातहै मैं उसके इजहारपरखूबगौरकरके यहबयानकरताहूंकि उसकेइजहार में कोईबात गौरकरनेके योग्यनहींहै—ऐडवकेट जनरलसाहबने पूछाया कि गायकवार की रसाईसालिम और यशवन्तराव तकहोसक्तीहै इसकहनेसे उनका यहमतलबथाकि महाराना साहब चाहते हैं कि सालिम और यशवन्तराव को अपना गवाहठहरावें परन्तु मुख्यवृत्तान्त यहहै कि महारानासाहब ऐसीकाररवाईकीकुछपरवानहींकरतेऔरउनकेसलाहकारसो यशवन्तरावऔरसालिमथेउनकोगवाहीदेनेकीसलाहनहींदेते बड़ासन्देहहैकियहलोगदामोदरपन्थकेसाम्हनेहोंक्योंकिवहभी दामोदरकीतरहसवालकरतेरहेऔरअपनेस्वामीकोलूटतेरहे॥

खयालउनबातोंपरदिलाऊं जिनको सरजण्टवेलनटायनसाहब नेअपनीविस्तृतस्पीचमें गायकवारकी ओरसेबयानकियाहैजो गवाहियां पेशहुई उनकोदुरुस्त न समझतातो मुजको इससमय उत्तरदेने में बड़ाकष्टहोता मुजको यह बात देखकर अत्यन्त धीर्य्यहुवा किमेरे एकयोग्यमित्रने गवर्न्नमेण्टकी इसकारखाई अर्थात् कमीशन के नियत करनेको बहुत पसन्द कियाहैऔर उसीप्रकारसे उनके मवक्कलको भी पसन्दहै मेरेमित्रजानते हैं कि इसमुक़द्दमे की तहक़ीक़ात केवास्ते इसकमीशन सेबढ़कर दूसरीकोईरीतिनथी और जोइसकमीशनका फ़ैसलागायकवारकेप्रतिकूलहुवा तौभीगायकवारवा औरकिसीमनुष्यको शिकायतकामौकान होगा सरजन्टवेलनसाहबने कहा हैकि इससे बढ़करऔर कोईकमीशन मैंनेनहीं देखीसरजण्ट वेलन टायनसाहबने अपनीयह लियाकत जिसकेलिये वहमशहूरहैं सबइसमुक़द्दमेमें खर्चकीजो कमीशनका फ़ैसलागायकवार के प्रतिकूलहोगातो कोईमनुष्यनहीं कहसक्ता कि सरजण्टवेलनटायनसाहबने मुकद्दमेको भलीभांतिखण्डन नहींकियाअथवा थोड़े बोलनेसेइसमुकद्दमेकाफ़ैसलाउनकीइच्छाकेविपरीतहुवा मेरेदोस्तनेकई जगहपर गायकवारकी हमदर्दी जाहिरकी है परन्तु तारीफयहहैकिंबावजूदहमदर्दी करनेके उनकीवार्त्तामें किसीप्रकारका अन्तरनहींपड़ा सरजण्टवेलन टायनसाहब न केवलइंगलिस्तानमेंविख्यातहैंकिन्तु यूरुपभर उनकी उत्तमवाचालताकोजानताहैं जोकुछकिउन्होंनेहमदर्दी जाहिरकीनिश्चय है किसबलोगोंके हृदयपर उसकाअसरपहुंचाहोगा इस लिये जो फ़ैसलाइसकमीशन काहोगा वहनकेवल संसारभर किन्तु श्रीमहाराजासाहब भी प्रसन्नतासे अंगीकारकरेंगेसरजन्टवेलनटायन साहबनेजोकुछ इसरईसके लिदेवर्णन किया मुझकोभी सुनकर आश्चर्य्यहुवा क्योंकि सरल्युइसपीलीसाहब ने वर्णन किया है कि महाराजासाहब प्रतिष्ठा पर्य्यक पहिरे

सूबतक्रकीकातहो और वास्तवमें ऐसे २ जोउनपर कलंकलगे उसकी तहकीकात होनी अवश्यथी इसीलिये अंगरेजी और हिंदुस्तानी रईसो कोयहमुकद्दमा सौंपागया ॥

साईलार्ड—यहबात देखकर मुजकोअति प्रसन्नताऔर धीर्य्य प्राप्तहुवा यहमुकद्दमा बहुत बड़ाहै मेरे विचारसे हरएक कौंसलीइस मुकद्दमेको बड़ा मुकद्दमा कहैगा मैंफिर कमीशन केमेम्बरोंका अतिगुण मानताहूं और कहताहूं कि आपयहन विचारेंकि मुझसे बढ़कर और कोई सोच नहीं कहसक्ता है आपकृपा पूर्व्वक इजहारोंपर खूब गौरकरें उनसेसाफ जाहिर होजावेगाकि गायकवारनिपट निर्दोषहैं यहमनुष्य इनदिनों गद्दीसे अलग कियागया और उसकी दुर्दशाको उसकीप्रजाने देखाकिसी मनुष्यकी इतनीसामर्थ्य नहीं किउसकेपासजाकर उसकी सहायताकरे और धीर्य्यदे वा उनकेलिये कोई फायदे कीबात कहे ॥

उन्होंनेसौगन्द खाकरवेजाखूरीजाहिरकर दीमैंनेजोउसका कौंसलीहूं इसमुकद्दमे की सम्पूर्ण गवाहीको खण्डन किया अबइस बातकीइच्छा रखताहूं कि अंगरेजीनीतिके अनुकूल उनकान्याय चुकादियाजावे छोटेसेजेबकाटनेवाले को भीऐसे गवाहोंसे सजानहीं होसक्तीजैसे कि इसमुकद्दमेमेंगुजरे फिर क्योंकरएक रईसगद्दीसे उताराजासक्ताहै ॥ ऐडवकेटजनरलसाहबनेकहा उत्तम है कि कमीशनके मेम्बर टिफनखाने के लिये उठें फिरमैं अपनाएडरेसपेश करूंगायदि कमीशनकीआज्ञा होतो अभी प्रारम्भ करूं फिर कमीशनके मेम्बरोंने टिफनखाने केलिये अदालतको बरखास्त किया ॥

ऐडवकेट जनरल साहब का उत्तर ॥

कमीशनके एकत्रहोतेही संडन ऐडवकेटजनरल साहब उठे और उन्होंने कहा—साईलार्ड चीफजस्टिस और कमिश्नर और दूसरे साहब अबमुजको उचितहैकिमैं आप सबसाहिबों का

खयालउनबातोंपरदिलाऊं जिनको सरजण्टवेलनटायनसाहब नेअपनीविस्तृतसोचमें गायकवारकी ओरसेबयानकियाहैजो गवाहियां पेशहुईं उनकोदुरुस्त न समझतातो मुजको इससमय उत्तरदेने में बड़ाकष्टहोता मुजको यह बात देखकर अत्यन्त धीर्य्यहुवा किमेरे एकयोग्यमित्रने गवर्न्नमेण्टकी इसकाररवाई अर्थात् कमीशन के नियत करनेको बहुत पसन्द कियाहैऔर उसीप्रकारसे उनके मवक्कलको भी पसन्दहै मेरेमित्रजानते हैं कि इसमुक़द्दमे की तहक़ीक़ात केवास्ते इसकमीशन सेबढ़कर दूसरीकोईरीतिनथी और जोइसकमीशनका फ़ैसलागायकवारकेप्रतिकूलहुवा तौभीगायकवारवा औरकिसीमनुष्यको शिकायतकामौका न होगा सरजन्टवेलनसाहबने कहा हैकि इससे बढ़करऔर कोईकमीशन मैंनेनहीं देखीसरजण्ट वेलन टायनसाहबने अपनीयह लियाकत जिसकेलिये वहमशहूरहैं सबइसमुक़द्दमेमें खर्चकीजो कमीशनका फ़ैसलागायकवार के प्रतिकूलहोगातो कोईमनुष्यनहीं कहसक्ता कि सरजण्टवेलनटायनसाहबने मुक़द्दमेको भलीभांतिखण्डन नहींकियाअथवा थोड़ेबोलनेसेइसमुक़द्दमेकाफ़ैसलाउनकीइच्छाकेविपरीतहुवा मेरेदोस्तनेकई जगहपर गायकवारकी हमदर्दी जाहिरकी है परन्तु तारीफयहहैकिबावजूद हमदर्दी करनेके उनकीबातोंमें किसीप्रकारका अन्तरनहींपड़ा सरजण्टवेलन टायनसाहब न केवलइंगलिस्तानमेंविख्यातहैंकिन्तु यूरुपभर उनकी उत्तमवाचालताकोजानताहै जोकुछकिउन्होंनेहमदर्दी जाहिरकीनिश्चय है किसबलोगोंके हृदयपर उसकाअसरपहुंचाहोगा इस लिये जो फ़ैसलाइसकमीशन काहोगा वहनकेवल संसारभर किन्तु श्रीमहाराजासाहब भी प्रसन्नतासे अंगीकारकरेंगेसरजन्टवेलनटायन साहबनेजोकुछ इसरईसके लियेवर्णन किया मुझकोभी सुनकर आश्चर्य्यहुवा क्योंकि सरल्यूइसपीलीसाहब ने वर्णन किया है कि महाराजासाहब प्रतिष्ठा पर्व्वक परिहै

मेंहै और यहबातदुरुस्तहै फिर उनपरक्याजुल्महुवा और उनकीजायदाद थोड़े दिनोंके वास्ते कुर्क हुईहै इससेउत्तम और कोईकारखाई नहींहोसक्तीथी मेरेदोस्त जानतेहोंगे किश्रीमान् गायकवारका राज्यसे मुअत्तिलकरना और उनकीजायदादका कुर्क होना उचित था गवर्न्नमेण्ट इण्डियाने यहसब बातें अपना कामसमझकर कीहैं और उनबातोंकेकरनेसे किसीप्रकारकी जियादती समझीनहीं गईहै यदि ऐसा नकिया जातातो गवर्न्नमेण्टइण्डियाके लिये यह समझाजाता किउसने अपना पूराकाम नहींकिया गायकवाकी ओरसे जोलेख पेशहुवाहै उसकामजमून निहायत उमदाहै परन्तु उससंपूर्ण लेखका यहमतलब है कि मैंने अपराध नहींकिया और इस बयानकी तसदीक सौगन्दकी रूसे भी हुई इसलिये कमीशन के मेम्बरइस लेखको जैसाचाहें समझलें—केवलइतनाहीखयाल होसक्ताहै कि गायकवारने शायदऐसा कहाहो मैं अपने मित्रकी इसकारखाईपर कुछअंगुश्तनुमाई नहींकरना चाहता वास्तवमें मेरेमित्रनेइजहार के खूबरग औरपोस्तअलग किये उनकी तकरीरसे यहसाबितहुवाकि गायकवारने करनैलफियर साहब को विषदेना नहीं चाहा किन्तु पुलिस ने यहचाहा कि गायकवारपर अपराधलगे मुझकोपहिले से यह खयाल था कि सरजन्टबेलनटायन साहब इसमूलपर मुकद्दमे को खण्डनकरेंगे परयह निश्चय न था कि इसतरह साफ २ पुलिसको कलंक लगावेंगे वहकहतेहैं कि जितनीगवाहियांपेश हुईं वहसब पुलिसकी बनाई हुईहैं—अर्थात् गजानन्द बतिल अकबरअली—और अब्दुअलीकी बनाईहुईथी॥

मुझको आश्चर्य है कि मेरेदोस्तकोमिस्टरस्कूटरसाहब के इस इलजाममेंसंयुक्तकरनेसेकुछसोच नहुवाकमीनकेमेम्बरोंकोस्मरण होगाकिसरल्यूइसपीलीसाहबनेवर्णन कियाथा कियहांआतेही और हिदायतोंमेंसेमुझकोएकहिदायतयह भीमिलीथीकि

इसमुकहमेकी तहकीकातभी कराई जावे इस लिये उन्होंने गवर्न्नमेन्ट को लिखकर मिष्टरस्रूटर साहबको बुलायातथाच मिष्टर स्रूटर साहब ६—दिसम्बर को कुछ पुलिस के अफ्सरों सहितजिनका मैं ऊपरनाम लेचुका हूं यहांआये और कई लोग पीछेआये इसलिये उचितहै किउन लोगोंका कुछजिक्र किया जाय ॥

अकबरअली ४४ वर्ष से नौकर है उसने सरकारी नौकरी सन् १८३१ ई० मेंकी और उमदा२ कारगुजारियोंके करनेसे उसकोसरकारसे खानबहादुरका खिताबमिला और इस ४४ वर्षकी अवधि में उससे कोई ऐसी बात नहीं हुई किसरजराट वेलनटायनसाहब उसकोकलंकलगावें जबअकबरअलीअदालतके रूबरू आयातो हरप्रकार से पाक और साफथा अब्दुलअली जोअकबरअलीकापुत्रहै २० वर्षसे सरकारका नौकर है उसनेभीऐसे२ कामकिये किउसको सरकारसेखानबहादुरी का खिताबदियागया इसबीसवर्षकी अवसरमें उससेभी कोई ऐसाअपराध नहींहुवा कि सरजराटवेलनटायन साहब कुछ वार्त्ता करसकें गजानन्दवतिल भी बहुत वर्षों से सरकारी नौकर है उसने भी अपनी क्रिया कौशिल्यसे राववहादुर का खिताब पाया है ॥

सरजराटवेलनटायनसाहबको लोगोंने बहकायाकि गजानन्दवतिलसे कोटाकी रियासत कीगद्दी नशीनीके विषय मेंप्रश्न करने चाहियें यह मुकद्दमा मिष्टर कागलनसाहबके सम्मुख पेशहुवाथा और गजानन्दवतिल उसमें गवाहकी तौरपरथे ॥

मिष्टरजष्टिस वेस्टमाहबने जोअपने विचारांश का फिकरा लिखाहै उससेकुछ पुलिसको सम्बन्धनहीं है सोइनतीन सरकारीनौकरोंकी निस्बतजोबडेयोग्य और अपनेसम्बन्धीक्रिया में कुशलहैं लोगोंने उनकोसिखायाहै कि यहलोग गायकवार के शत्रुहैं और गायकवारपर मुकद्दमासाबित करनाचाहते है

मेंहै और यहबातदरुस्तहै फिर उनपरक्याजुल्महुवा और उनकीजायदाद घोड़ दिनोंके वास्ते कुर्क हुईहै इससेउत्तमऔर कोईकाररवाई नहींहोसक्तीथी मेरेदोस्त जानतेहोंगे किश्रीमान् गायकवारका राज्यसे मुअत्तिलकरना और उनकीजायदादका कुर्कहोना उचित था गवर्न्नमेण्ट इण्डियाने यहसब बातें अपना कामसमझकर कीहैं और उनबातोंकेकरनेसे किसीप्रकारकी जियादती समझीनहीं गईहै यदि ऐसा नकिया जातातो गवर्न्नमेण्टइण्डियाके लिये यह समझाजाता किउसने अपना पूराकाम नहींकिया गायकवाकी ओरसे जोलेख पेशहुवाहै उसकामजमून निहायत उमदाहै परन्तु उससंपूर्ण लेखका यहमतलब है कि मैंने अपराध नहींकिया और इस बयानकी तसदीक सौगन्दकी रूसे भी हुई इसलिये कमीशन के मेम्बरइस लेखको जैसाचाहें समझलें—केवलइतनाहीखयाल होसक्ताहै कि गायकवारने शायदऐसा कहाहो मैं अपने मित्रकी इसकाररवाईपर कुछअंगुश्तनुमाई नहींकरना चाहता वास्तवमें मेरेमित्रनेइजहार के खूबरग औरपोस्तअलग किये उनकी तकरीरसे यहसाबितहुवाकि गायकवारने करनैलफियर साहब को विषदेना नहीं चाहा किन्तु पुलिस ने यहचाहा कि गायकवारपर अपराधलगे मुझकोपहिले से यह खयाल था कि सरजान्टबेलनटायन साहब इसमूलपर मुकद्दमे को खण्डनकरेंगे परयह निश्चय न था कि इसतरह साफ २ पुलिसको कलंक लगावेंगे वहकहतेहैं कि जितनीगवाहियांपेश हुईं वहसब पुलिसकी बनाई हुईहैं—अर्थात् गजानन्द वतिल अकबरअली—और अब्दुअलीकी बनाईहुईथी॥

मुझको आश्चर्य्य है कि मेरेदोस्तकोमिस्टरस्कूटरसाहब के इस इलजाममेंसंयुक्तकरनेसेकुछसोच नहुवाकमीनकेमेम्बरोंकोस्मरण होगाकिसरल्यूइसपीलीसाहबनेवर्णन कियाथा कियहांआतेही और हिदायतोंमेंसेमुझकोएकहिदायतयह भीमिलीथीकि

साहबको चाहियेथाकिउनकोऐसी तोहमतसेबरीरखतेपरन्तु उनको इसबातका भी कुछ विचार न हुवा ॥

मिस्टरसूटरसाहब को अपनी प्रतिष्ठा का बड़ा खयाल है जिस तरह मुझको और मेरे मित्रको अपनी २ प्रतिष्ठाका है कोईमनुष्य नहीं चाहताकि वह बदनाम हों ॥

सरजन्टबेलनटायनसाहबने जोइसप्रकार कीवार्त्तापेशकी है उससेमुकद्दमेके खण्डनमें कुछमदद नहींहुई मिस्टरसूटरसाहबकेलिये कदाचित् ऐसानहीं समझा जासक्ता किवह अपने आधीनी मनुष्योंके हाथमेंएक खिलौनाथे औरन यह खयाल होसक्ताहै किवहअपने हृदयसें गायकवार कीखराबीऔरअप्रतिष्ठाको चाहतेहैं यदिमिस्टर सूटर साहब की कार रवाई बुराईके योग्यहोतीतो जबउनकेइजहारमें प्रश्नकिये गयेथेतो क्योंउनको इलजाम नहीं दियागया तब सरजन्ट बेलनटायन साहबकुछन बोले मैंनेबड़े अफ्सोसके साथ उनबातोंको सुना जोमेरे दोस्तने अपनीस्पीचमेंमिस्टरसूटर साहबके लियेवर्णन कीउनपुलिस केअफ्सरोंकी काररवाई जिनको गवर्न्मेण्टने इसमुकद्दमेमें नियतकिया था किसी प्रकारसे एतिराज और शुफ्तगूके लायकनहीहै गवर्न्मेण्ट उनकीक्रिया कुशलताको खूबजानतीहै औरमुझको निश्चयहै जबखूबगौर किया जावेगा तो उनपर किसीप्रकार का अपराधन लगेगा मुझको अपने मित्रसे यहबातभी पूछनीउचितहै किपुलिस को गायकवार परमुकद्दमा खड़ाकरनेसे क्यालाभथा क्यामेरे दोस्तयहांइस बातके कहनेको आयेहै किगवर्न्मेण्टकीहिकमत असलोयह थीकि जबस्यही मल्हारराव कोगद्दीसे उतारदे हालांकिऐसा विचारनथा औरनहोगा पुलिसके लोगकेवल इसलिये आये थेकिवारूनसें विषदियागयाथानहीं यदिबम्बईके पुलिसवालों को मल्हरराव केगद्दीसे उतारनेकी इच्छाथी तोवहदामोदर पंथके द्वारासुगमता पूर्वक गद्दीसेउतार दिये जातेहालांकि पुलिसको गायकवार के खराब होनेसे कोई फायदा नही है

जोतोहमत किपुलिसके अफ्सरों को लगाई है निश्चय है कि कि कमीशनके मेम्बर उसका कुछ विचार नकरेंगे कोईवजह उनपर कलंकलगाने की नहीं है उन्होंने कोई काम ऐसा नहीं किया है जिस्से उनको लज्जा प्राप्त हो॥

मेरे दोस्त सरजन्ट वेलनटायन साहबने बहुधा यह भी कहा है कि लोगपुलिसके अफ्सरोंको कलंकलगाते हैं परन्तु उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया यदि सरजन्ट वेलनटायन साहब इस देशको जानते तो थोडीसी बातें जो उन्होंने मुंहसे निकालीं कदाचित् मुखपर न लाते विशेष कर ऐसी बातें जोपुलिस के लिये इलजाम की तौरपर कहीं हैं बहुतसे लोगों की राय पुलिसके लिये अच्छी नहीं है विशेष कर वहलोग अधिक तर नापसन्द करते हैं जिनका चालचलन खराब है वहलोग कभी पुलिसको अच्छा नहीं कहेंगे क्योंकि पुलिसकेलोग ऐसे२ लोगों की सर्व्वदा देखाभाली करते हैं मेरे मित्रको लोगोंने सिखाया है कि मिस्टरस्क्टरसाहब जानबूझकर उस कमरे से चलेगये जब कि रावजी की पेटी देखी जातीथी और उनके चलेजानेसे यह प्रयोजन था कि अगरपेटीकी तलाशी अकबरअलीको सौंपूंगा तो उसमेंसे कोई नकोई वस्तु अवश्यनिकलेगी—सरजन्टवेलनटायनसाहब अतिप्रतिष्ठितमनुष्यको यह कलंक लगाते हैं मेरे विचारसे सरजन्टवेलनटायनसाहबके सलाहकार खराबथे यहां के लोग मिस्टरस्क्टरसाहबको खूबजानते हैं क्योंकि बहुकालसे वह यहां हैं और उनकोक्रियाकुशलतासे कम्पीनियन आफदी स्टारआफइण्डियातमगा मिला है चाहो यह तमगा छोटेदरजे का है परन्तु ऐसेहीतमगे कमीशनकेमेम्बर पहिनेहुये हैं चाहो वहतमगे कुछ बडे दरजे के पहिने हुये हैं इस बात को भी जानेदो यदिवह इंगलिश जन्टलमैन* हैं सरजन्ट वेलनटायन

---

* अर्थात् रईस॥

साहबको चाहियेथाकिउनकोऐसी तोहमतसेबरीरखतेपरन्तु उनको इसबातका भी कुछ विचार न ज़ुवा ॥

मिस्टरस्टटरसाहब को अपनी प्रतिष्ठा का बड़ा खयाल है जिस तरह मुझको और मेरे मित्रको अपनी २ प्रतिष्ठाका है कोईमनुष्य नहीं चाहताकि वह बदनाम हो ॥

सरजान्वेलनटायनसाहबने जोइसप्रकार कीबात्तपेशकीहै उससेमुकद्दमेके खण्डनमें कुछमदद नहींज़ुई मिस्टरसूटरसाहबकेलिये कदाचित् ऐसा नहीं समझा जासक्ता किवह अपने आधीनी मनुष्योंके हाथमेंएक खिलौनाथे औरन यह खयाल होसक्ताहै किवहअपने हृदयसें गायकवार कोखराबीऔरअप्रतिष्ठाको चाहतेहैं यदिमिस्टर सूटर साहब की कार रवाई बुराईके योग्यहोतीतो जबउनकेइजहारमें प्रश्नकिये गयेथेतो क्योंउनको इलजाम नहीं दियागया तब सरजान्ट बेलनटायन साहबकुछन बोले मैनेबड़े अफ़सोसके साथ उनबातोंको सुना जोमेरे दोस्तने अपनीस्पोचमेंमिस्टरसूटर साहबके लियेवर्णन कींउनपुलिस केअफ़सरोंकी काररवाई जिनको गवर्नमेण्टने इसमुकद्दमेमें नियतकिया था किसी प्रकारसे एतिराज़ और गुफ़्तगूके लायकनहींहै गवर्न्नमेण्ट उनकीक्रिया कुशलताको खूबजानतीहै औरमुझको निश्चयहै जबखूबगौर किया जावेगा तो उनपर किसी प्रकार का अपराधन लगेगा मुझको अपने मित्रसे यहबातभी पूछनीउचितहै किपुलिस को गायकवार परमुकद्दमा खड़ाकरनेमें क्यालाभथा क्यामेरे दोस्तयहांइस बातके कहनेको आयेहैं किगवर्न्नमेण्टकीहिकमत अमलीयह थीकि अवश्यही मल्हारराव कोगद्दीसे उतारदे हालांकिऐसा विचारनथा औरनहोगा पुलिसके लोगकेवल इसलिये आये थेकिवास्तवमें विषदियागयाथावानहीं यदिबम्बईके पुलिसवालों को मल्हारराव केगद्दीसे उतारनेकी इच्छाथी तोवहदो।मोटर पंचके द्वारासुगमता पूर्व्वक गद्दीसेउतार दिये जातेहालांकि पुलिसको गायकवार के खराब होनेसे कोई फायदा नहीं है

और कोई वजह गायकवार पर तोहमत रखने की न थी ॥

गवाहोंकी गवाहीसे साफ़ प्रकट है कि जितनी तहक़ीक़ात हुई वह सब ठीक है इसलिये मैं चाहता हूं कि मेम्बरान् कमीशन अपने मनसे वह बातें दूर करदें जो पुलिसके लिये वर्णन की गई इस मुक़द्दमेको पुलिसने नहीं बनाया है यदि पुलिसने गवाहों को सिखाया होता तो गवाह एक ही बात कहते थोड़ासा जो अन्तर है वह कदाचित न होता इससे प्रकट है कि पुलिसने सिवाय अपने काम और कोई कार्रवाई नहीं की पहिले थोड़ा पता लगा था फिर वक़्तसे हाल मालूम हुये पहिले गांवों वालों से कुछ पता लगा था वह परस्पर बातें करते थे कि हम आयाको गायकवारके पास ले गये फिर दामोदरपन्थने इक़रार किया जितना हाल मालूम होता गया पुलिससे भी तहक़ीक़ात बढ़ती गई ॥

मेरे दोस्तने अपनी स्पीचमें शिकंजा आदिका वर्णन किया है कि पुलिसने गवाहोंको क्या कष्ट दिया परन्तु यह बात अद्भुत है कि पुलिसने इतनी सख़्तीकी और इस सख़्तीके लिये रेज़ीडन्सीका एक कमरा जो खानेके कमरेके बराबर है मुक़र्रर था बहुधा सरल्यूइस पीली साहब वहां आया जाया करते होंगे क्या सरल्यूइस पीली साहबको भी मेरे दोस्त इस सख़्तीके करनेमें शरीक करते हैं यह कमरा अलग न था उसमेंसे सब लोगोंका आवागमन था पुलिसको कब ऐसी अवसर मिली जो गवाहोंपर सख़्ती करे मुझको निश्चय है कि इस विषयमें जो नेरेसिनने बात्तीपेश की है उसको कमीशनके मेम्बरन सानेंगे जो न मानेंगे तो जो अपराध गायकवार पर धरा गया है तो वह ठीक है ॥

दूसरी बात यह है कि सरल्यूइसपीली साहब बड़े दिन की छुट्टियोंमें बम्बईको जाने वाले थे परन्तु जब उन्होंने सुना कि रावजीने किसी बातको क़बूल किया है तो उन्होंने अपना जाना मुलतवी किया यदि वह चले जाते तो कुछ तहक़ीक़ात न होती इस बातसे प्रकट है कि पुलिसकी इच्छा मुक़द्दमेके खड़े करनेकी न थी—माईलार्ड—दूसरी बात जिसको मेरे मित्र वर्णन करते हैं यह

है कि वक़्त से गवाह जो पेशकये हैं वह गायकवारके संयुक्त थे इसलिये उनकीगवाही निश्चय माननेके योग्य नहींहै हर मनुष्य जो अदालत की काररवाई के कुछ भी जानता है वह जानता होगा कि ऐसी गवाही में बक़्त से सन्देह हैं परन्तु इनलोगोंकी गवाही इसप्रकारसे लीगईकि किसीप्रकार का संदेह नहींहोसक्ता और हिंदुस्तानमें कोईऐसा कानून नहींहै कि मनुष्यकी गवाहीजो अपराधमें संयुक्तहो ठीक समझीजावे-इंगलिस्तानमें यहरीति है कि जबकोईमनुष्य जो अपराध करनेमेंसंयुक्तहो गवाहीदेताहै तो जजसाहब जूरी को हिदायतकरतेहैं कि जबतक ऐसेमनुष्यके बयानकी सिदाक़त नहोजावे तो जूरीउसका निश्चयनकरें परन्तु श्रीमान् लार्डचीफजस्टिस इसबात कोभी जानतेहोंगे कि यदि जजजूरी के लोगोंको ऐसीहिदायत नकरें तो कुछहानि नहीं है॥

हिंदुस्तानमें अगर अपराधीसंबन्धीके बयानपर मुख्यअपराधीको दण्डदियाजावे तो वहअनरीति दण्ड नहींहै-मैंने इसको इसलिये कहाकि मेरेमित्र सरजन्टबेलनटायनसाहबने ओलील दी उससे सबलोगों को मालूम होगया था किजर्म्म के शरीककी गवाही तसलीम के लायक नहींहै इसके विशेष इसमुकद्दमेमें गवाही बक़्तकुछ होचुकीहै॥

और कोई वजह गायकवार पर तोहमत रखने की न थी ॥

गवाहोंकी गवाहीसे साफ प्रकट है कि जितनी तहकीकात हुई वह सब ठीक है इसलिये मैं चाहता हूं कि मेम्बरान् कमीशन अपने मनसे वह बातें दूर करदें जो पुलिसके लिये वर्णन की गईं इस मुकद्दमेको पुलिसने नहीं बनाया है यदि पुलिसने गवाहों को सिखाया होता तो गवाह एकही बात कहते थोड़ासा जो अन्तर है वह कदाचित न होता इससे प्रकट है कि पुलिसने सिवाय अपने काम और कोई कारवाई नहीं की पहिले थोड़ा पता लगा था फिर बहुतसे हाल मालूम हुये पहिले गावों वालों से कुछ पता लगा था वह परस्पर बातें करते थे कि हम आबा को गायकवार के पास लेगये फिर दामोदर पन्थने इकरार किया जिस का हाल मालूम होता गया पुलिससे भी तहकीकात बढ़ती गई ॥

मेरे दोस्तने अपनी स्पीचमें शिकंजा आदिका वर्णन किया है कि पुलिसने गवाहोंको क्या कष्ट दिया परन्तु यह बात अद्भुत है कि पुलिसने इतनी सख़्ती की और इस सख़्ती के लिये रेजीडन्सी का एक कमरा जो खानेके कमरे के बराबर है मुकर्रर था बहुधा सरल्यूइस जीलो साहब वहां आया जाया करते होंगे क्या सरल्यूइस पीली साहबको भी मेरे दोस्त इस सख़्तीके करनेमें शरीक करते हैं यह कमरा अलग न था उसमेंसे सब लोगों का आवागमन था पुलिसको कब ऐसी अवसर मिली जो गवाहों पर सख़्ती की मुझको निश्चय है कि इस विषयमें जो मेरे मित्रने वार्त्तालाप की है उसको कमीशनके मेम्बर न मानेंगे जो न मानेंगे तो जो अपराध गायकवार पर धरा गया है तो वह ठीक है ॥

दूसरी बात यह है कि सरल्यूइस पीली साहब बड़े दिन की छुट्टियोंमें बम्बईको जाने वाले थे परन्तु जब उन्होंने सुना कि रावजीने किसी बातको कुबूल किया है तो उन्होंने अपना जाना मुलतवी किया यदि वह चले जाते तो कुछ तहकीकात न होती इस बातसे प्रकट है कि पुलिसकी इच्छा मुकद्दमेके खड़े करनेकी नथी–माईलार्ड–दूसरी बात जिसको मेरे मित्र वर्णन करते हैं यह

वारकी ओरसे कुछगवाहीभी नहींदी गवाहीसे अबतककोई बातनहींपाई गई जिससे गायकवार काबरीहोनासाबित हो और न उनकीकिसी अपनीकाररवाईसे पाया जाताहै किमहाराजा साहबपरजो अपराधलगाहै वहगलत है उनपरजो चार दोषलगायेगयेवहयहहैं पहिलेमल्हररावने कारिन्दोंके द्वारा वा अपने आपरेजीडन्सीके नौकरोंसे जो करनैलफ़ियरसाहबके पासथे गुप्त वार्त्ताकी कि वहकिसी बुरे कामकोकरें॥

दूसरे—क्या मल्हररावने रेजीडन्सीके नौकरोंको कुछरिशवत दी या दिलाई॥

तीसरे—यहरिशवत इसप्रयोजन सेदीया दिलाईकि करनैल फ़ियरसाहबकेनौकर मुखबिरोंकी तौरपर कामदें किकरनैल फ़ियरसाहबको दुःख पहुंचेवा बिषदेकर उनको मारडालें॥

चौथे—क्यावास्तवमें करनैलफ़ियर साहबको बिषदिये जानेका उद्योगकियागयाथा औरक्यायहबातमल्हररावनेसिखाईथी

माईलार्ड—तीसरे और चौथे अपराध में विषका वर्णनहै पहिलेऔर दूसरेजुर्म्ममेंरेजीडन्सीके नौकरोंकोरिशवतदेनेका बयानहै जिससेकि उनको रेजीडन्सीकी खबरेंमिला करें मेरे दोस्तने अपनीसोचमें एकछोटे अपराधके लिये जिक्रकियाहै परन्तु जोबड़ा अपराधहै उसका कुछ जिक्रनहीं किया और जो गायकवारने लेख पेश कियाहै उसमें कुछ बातोंका इकरारभीहै और वहबयानयहहै—मैं सौगन्दखाकर वर्णनकरता हूंकिमैंने अपनेआप वाकिसीनौकरकेद्वारा करनैलफ़ियरसाहबके प्राणलेने के वास्ते अथवा उनकेप्राणलेने के उद्योगसे विष नहींमंगाया औरनमैंनेअपनेआप वाकिसी विश्वसित मनुष्यके द्वाराऐसेइरादेकी तरगीबदी और मैंबयानकरताहूंकि अमीना आया और रावजी और नरसू और दामोदरपन्थकीगवाही बिल्कुल गलत है॥

और मैं यहभी कहताहूं कि मैंने अपनेआप किसीरेजीडन्सीकेनौकरसे यहबातनहींचाहीकि मुखबिरकी तौरपरकाम

केवास्ते लिखागयाथा—कुछ संदेहनहींहै किउन्होंने महाराजा साहबको सलाह दीहो किआपदोनों मनुष्योंको भेजदीजिये इसकेसिवाय महाराजासाहब आपहो जानतेथे कि इनलोगों का भेजना उचितहै और सिवाय इसके और कोईबातअच्छी नहींहै महाराजासाहबकी इसकारखाईसे उनकीनिर्दोषता प्रतीत नहींहोती इसमेंभी संदेह नहींहै कि महाराजासाहब लड़ाईका निशान खड़ाकरसक्तेथे या भागसक्तेथेपरन्तु इनदोनों सूरतोंमें जुर्मका इक़रार सुतसव्विरथा इसलियेएशियाकेनि-वासियोंकी प्रकृतिके अनुकूल उन्होंने कारखाई की और ए-शियाहीके निवासीनहीं किन्तुहरमनुष्य जोऐसीदशामेंहोता वहइसी तरहकरता जैसाकि महाराजा साहबनेकियासिवाय इसकेऔरकोई उनको उपायनथा किचुपचापहोकर मुकद्दमे कापरिणाम देखेंयदि दामोदरपंथके इज़हार देखे जावें तो उनकोखूब मालूमहोगा किगायकवारने क्या२ बातें कीं और वह क्यों चुपहोरहे गायकवार पहिलेसे केवलयही बात नहीं जानतेथे कि ९-नवम्बर को बिषदेने का उद्योगहोगा किन्तु उनको यहभीमालूम हुवाकि उद्योगहुवा और निष्फल हुवा गायकवार इसमुआमलेकी कारखाई कोगौरसेदेखतेथे और औरक्षणप्रति जणकीवह खबरलेंगाते थे दामोदरपंथने वर्णन कियाहै किकभीतो गायकवार प्रसन्नहोतेथे औरकदापिभय मान होते और महाराजाने रावजीकी बुद्धिकी बड़ी प्रशंसा कीऔर खुश हो२ कर कहतेथेकिमैं भले प्रकार जानताहूं कि तुमपर अपराध नलगेगा जब सालिम और यशवन्तराव रेजीडन्सीसे उनकेपास लौटआयेतो गायकवारको कैसीप्रस-न्नताहुई परन्तु जबवह फिरबुलायेगये तो गायकवारको भय होगया औरउनके भेजनेके समयउनको खूबसमझा दिया कि तुम्हारेसाथ जोचाहेंकरें परन्तु तुमको ईवातन कहना दरह-क़ीक़त इनलोगोंपरगायकवार काएतिवारगलतनथा क्योंकि उन्होंनेअबतक कोईबातमुंहसे नहींनिकाली उन्होंने गायक-

उसकोसत्यता सूचितहोती है मुझकोनिश्चयहै कि कमीशन के मेम्बरोंको इसबात का आश्चर्य नहोगा किरेजीडन्सीके नौकर महाराजासाहब केपासगये और नइसबातमें आश्चर्य्य है किजो अमीनाआयाने वर्णनकियाहरएक गवाहकाबयान ठीकहैकि नजरबागकी तरफसे रेजीडन्सीके नौकरगये और जिसकमरे मेंशीशे रक्खेहैं वहां महाराजासाहबसे मुलाकातहुई गवाहोंने यहनहीं वर्णनकियाहै किउनने गायकवार का सम्पूर्ण भवनदेखाहै और उसकोसैरकीहै एकबेर प्रश्नकिया गयाथा कितुमने कमरेंा कोभी देखाहै गवाहोंने इन्कार किया जिस कमरेका यहजिक्र करतेहैं उसीकमरेका जिक्रदामोदरपंथ भीकरताहै उससेबेहतर और कौनशख़्स जाननेवाला होगा और इसबातकी सिदाक़त इसतरहसे होतीहै कि उनदिनों महाराजासाहब उसीकमरेमें रहाकरतेथे आज मेरे मित्रने अपनी तक़रीरमें यशवन्त और सालिमको कुछ बुराईकी है यहदोनों मनुष्य गायकवारके नौकरहैं जब गायकवार रेजीडन्सीको जातेथे यहभी उनकेसाथहोतेथे इसलिये कुछआश्चर्य्यनहीं कि वह गायकवारके विश्वसित हैं और वह रेजीडन्सीकेनौकरोंसे मिलगयेथे मेरेदोस्त इसबातको मानतेहैंकि गाडीवालोंने जो इज़हार दियेहैं उनमें कुछ एतिराज करें परन्तु आपसाहिबोंको स्मर्णहोगा कि पहिलेइस मुक़द्दमेका पता एक गाड़ीवाले की जवानी लगाथा इसके लिये सरजन्ट बेलनटायन साहब कहते हैं कि आया महल के नौकरों से मुलाकात करनेके लियेगई होगीजोऐसा होताउसकोरात्रिके समयवहां जानेकी क्या जरूरतथी रावजीको सदैवभयथा और अपनेसाथकिसी नकिसीमनुष्य कोलेजाताथा कभीजुग्गाकोभी लेगया औरकभी कारभाईको मेरेमित्र कहते हैं कियहबात असम्भवितहै किऐसाबडारईसएक आयासेबातचीतकरे परन्तुजो हिन्दुस्तानी दरबारके नौकरहोतेहैं उनमेंरेजीडन्सी केनौकरों सेबड़ा अन्तरहै एकदरबार कामुख्यनौकर अर्थात्दामोदरपंथ

कारे और रेजीडन्सीमेंजितनी कारवाई होतीहैं उसकीसुझ-को इत्तिलादे न मैंनेइनलोगोंको इसकामके वास्ते रिशवतदी नदिलाई ॥

मैं उन इनआमों का ज़िक्र नहीं करता जो समय २ पर रेज़ीडन्सीके नौकरोंको दियेगयेपरन्तुजबकभी कोईबिवाहअ-थवात्यौहारहुवा तो पारितोषकदियागया रेज़ीडन्सीकेनौकर मेरे महलमें और मेरेमहलसे रेजीडन्सीको आतेजाते होंगे परन्तु मैंनेइससुआमिलेमें वार्त्तानहींकी और न मैं जानता हूं किरेजीडन्सीकेनौकरोंको कितना २ रुपयादियागया मैंनेकभी इसबातकी आज्ञानहींदी कि ऐसाउपाय किया जाय जिससे कि रेजीडन्सीकी खबरें मेरेपास आयाकरें ॥

साईलार्ड—आपको पूर्वोक्तवर्णन से मालूमहुवा होगाकि वह यहनहीं लिखतेकि नमैंने अपनेहाथसे रिशवतदी अथवा अपनेविश्वमित मनुष्योंसे रेज़ीडन्सीकेनौकरोंको दिलवाईवह बड़े २ जुर्मोंकेलिये लिखतेहैं और इसबातसे इन्कार करतेहैं कि मैंनेस्वतः ऐसा नहीं किया परन्तु इनआमकादेनामानते हैं उनकायह इकरार बहुतबड़ाहै उनकेसम्पूर्ण बयान का यह सारांशहैकिमैंनेस्वतःकिसीनौकरसेकोईबुरीबातनहींकहीऔर नमैंने अपनेहाथसे किसीकोरुपयादियापरन्तु एकपेचदारतौर से वह रुपयेकादिया जानाकहतेहैंकि अपनेनौकरों से रुपया दिलाया मुझकोउचित नहीं है कि इसबातकाविस्तारकरूंकि उनखबरों मेंजो गायकवारके पासआईं और उनमेंजो करनैल साहबकेपास पहुंचीक्या अन्तरहै चाहेदोनों प्रकारकीखबरों मेंबड़ा अन्तरहै सरकारकी ओरसे जोरेजीडएट नियतथेउनके पासजोलोग आतेथेवह आपही उनको हरएक खबरदेते थे परन्तुएकहिंदुस्तानी रईसकाखबरोंके मिलनेके वास्तेरेजीडन्सी के नौकरोंको रिशवतदेना और बातहै और गायकवारने यह कारवाई बुरीबातोंके वास्तेकीथी रिशवतदेने कामहाराजा साहब आपभी इकरारकरतेहैं और गवाहोंकी गवाहीसे भी

जनहो विशेषकरके उससमयकी कारवाई जबकि सीडसाहब की कमीशन बड़ौदेमेंबैठथी—यहऐसी खबरोंकेमिलनेका प्रबन्ध कमीशनके दिनोंमेंरहा क्योंकि महाराजासाहब जानतेथेकि जैसी २ खबरें मुझको मिलें उसी प्रकारका मैं इन्तिज़ामकरूं यशवन्तरावनेभी और चिट्ठियोंमेंसे एकचिट्ठीकोतसलीमकिया किन्तुवहराजीथा कि जो गवाहीलीजावेतो वहअपने स्वामी के प्रतिकूलगवाही दे यशवन्तरावने वहदुकानशराबकीबताई जिसको महाराजागायकवारने जारीकिया था जबतरफ से पूछागयातो उसनेभी बयानकिया कि एकबेर जबकि दामोदरपंथ गये तो महाराजा साहबने मुझसे एकचिट्ठीको पढ़वाया जोरेज़ीडन्सीसे आईथी पढ़नेके उपरान्त जब दामोदर पंथआगये थेतोमैंने वहचिट्ठीउनकोदेदी वहकहताहैकि इस प्रकार की खत किताबत रेज़ीडन्सीसे हररोज़होतीथी॥

दामोदरपंथभी इसबातकी तसदीककरता हैकि यहकारवाईरेज़ीडन्सीकी केवलरोजमर्राकेबातोंकीनथी क्योंकिउस समयमें २कारवाइयां हुईं क्योंकि दामोदरपन्थने वर्णनकिया हैकि रावजी यमुनाबाईकी अर्ज़ीचुरालायाथा और दामोदर पन्थने उसकीनकल लिखलीथी वहकागज़ बहुतबड़ाथा और रावजीनेफिरउसको कर्नैलफियर साहबकीमेजपर लेजाकर रखदिया था—महाराजा साहबने पंखेवाले और हवालदार और आया और नौकरोंको इस प्रयोजनसे बुलवायाथा कि कर्नैल फियरसाहब ऐसेछोटे २ नौकरोंके बुलानेमेंकुछशंका नकरेंगे उनकोइसबातका निसंदेहख्यालथाकि जहांतक हो सकेफियरसाहब और बोबोसाहबकी सेमकेरूबरू महाराजा साहबकी प्रशंसा कीजावे॥

उन्होंने पेडरू खानसामां को भी बुलायाथा क्योंकि यह मनुष्यबहुत पुरानानौकरथा औरसाहबकी प्रकृतिखूब जानता था और चूंकिवह खानसामांथा मेजपर जितनी बातें होती थींसो उनको सुनाकरता होगा॥

महलमें नहींरहताथा इसलियेमल्हरराव कोसुनाक्षिमालूम हुवाकिरेजीडन्सीके नौकरोंसेसाजिश करतेंताकिवहांकीखबरें मालूमहुवाकरें इसलियेरात्रिकेसमय उचितसमझागयाक्योंकि किसीकोकुछखयाल नहुवाहोगा और जानतेहोंगेकि रेजी-डन्सीके नौकरअपनेकिसीकामकोजातेहैंकिसीमनुष्यकोमहा-राजासाहब के पासरात्रिकेसमय जानेसे कुछगुमान नथा ॥

मेरेमित्र अपनीतकरीरसें यहबात पेशनहीं करतेकि ऐसे मौकेपर महाराजा साहबके बजाय और किसी मनुष्यने ऐसी बातें कींहोंगीऔर ऐसीगुफ्तगूबहक्योंकरपेशकरतेक्योंकिम-हाराजासाहबकापहिचाननाकुछ ऐसाकठिननथाजिसमनुष्य नेएकबेरभी महाराजासाहबको देखाहै उसकोयादहोगाइस-लियेजो कमीशनके विचारसे सबगवाहोंकी गवाहीगलतहैतो आयाकी गवाहीभी गलतहै नहीतो उसकीगवाहीकी तस-दीक होगई है और तीनबेर आयाका गायकवार के निकट जानासहीहै परन्तुहां उनलोगोंने जोमहाराजासाहबरुबातों के होनेके इजहारदियेथे उनकीसिदाकत एकदूसरेकेबयान से होसक्तीहै जोखत आयाने लिखवायेथे उनसेउसके इजहार की बखूबीसिदाकत होसक्तीहै आयाने यहपत्र अपने पतिको महाबलेश्वर नगरसें भेजेथे जबकि वह बाहरथो और जबकी आया केघरकी तलाशी हुई तबयह पत्र मिले उनपर हरएक डाकखानेकी मोहरहै क्याइन मोहरोंपर भी मेरेमित्र गजा-नन्दका नामदेखतेहैं जबकि उन्होने और जगहपर गजानन्द की काररवाईदेखो इनखतोंसे साबितहैकि महाराजासाहब से आयासेखतकितावत होतीथी इससे साबितहुवाकि महा-राजासाहब और रेजीडन्सीकेनौकरोंमें खतकितावत औरगुप्त वार्त्ताकिसी बुरेकामकेलिये होतीथी ॥

इसबातका कदाचित् खयाल नहीं होसक्ता कि एकरईस खानसामां आदिको इतनीरिश्वतदेकि जोबातेंमेजपरहों उन की खबरें वहपहुंचायाकरे इसकाररवाईसे कोई उत्तम प्रयो-

फिरशेखकरीमजो आयाके साथथावहभीमेजकेकामपरनौकर थाजबवह आयाकेसाथ गयातो सौरुपये उसकोभी मिलेथे ॥

दामोदरपन्थके हिसाबदेखतेही आपको मालूम होगा कि निजकेकोषसेइतनारुपयादियागया किसिवायरिशवतकेपारितोषकका सन्देह मात्र नहीं होसक्ता १९ जनवरीसन् १८७४ ई० को छ:सौ रुपये यशवन्तरावको दियेगये और उन्ही दिनोंमें यशवन्तरावने पांचसौ रुपये अपने नौकर दलपतको दियेथे और दलपतने वहीरुपये रावजीको दियेछ:सौ रुपयोंमेंसेसौ रुपये यशवन्तनेदस्तूरके मुआफिक इन मुआमिलोंके रखलिये आपको उस कागज़के देखनेसे जिसपर (ए)अक्षरका नम्बर है मालूमहोगा कि हज़ाररुपया कोषसेदिलायागया यहरुपया तब दिलाया गयाथा जबकि महाराजासाहब नौसारीसे लौट कर आयेथे दूसराकागज़दोसौरुपयेके दिलानेकेलियेहै जिस पर[एन]अक्षरनम्बर अ काचिन्हलगाहैउसकी तारीख़१५ मई सन् १८७४ ई० है यह रुपयावहहै जोकरीम और आया को दिलायागया सिवाय इसकेउनदिनोंकुछरुपयानिजके कोष से सालिमऔर यशवन्तराव को दियागया जबकि रेजीडन्सी के नौकर रुपये का पानावयानकरते हैं इसबातका कुछ खयाल नहींहोसक्ता कि यहरुपया दामोदरपन्थने अपनेकिसी कामके लिये सालिमऔर यशवन्तरावको दियाहो वा यहकिसालिम और यशवन्तराव दामोदरपन्थ के विश्वसित थे यद्यपि यह रुपया दामोदरपन्थ के कोषसे दिया गया परन्तु महाराजा साहब की आज्ञा से दियागया ॥

यहप्रकटहै कि रावजीको अवश्यही रुपया मिला औरवजूहातसे पुलिसकेखयाल रुजूहोनेकी एकवजहयहभीथी उसने बहुतकुछ अक्टूबर और फरवरी और मार्चमें ज़ेवर बनवाया इसमें सन्देह नहीं कि यहरुपया गायकवारकेखज़ानेसेउनकी आज्ञाके अनुकूल रेजीडन्सीके नौकरोंको इसप्रयोजनसे दियागयाथा कि वहलोग ख़बरें पहुंचायाकरें श्रीमान् गायकवार

साईखार्ड—क्या आप समझते हैं कि जो रुपया उन लोगों को दिया गया था वह रिशवत से न था लेरे अति प्रवीण मित्र कहते हैं कि पांच सौ रुपये एक छोटी सी रकम थी हां कई लोग उसको थोड़ा रुपया समझते हैं परन्तु जिस मनुष्य का दस रुपये मासिक है उसके विचार में यह थोड़ा रुपया नहीं है इस बात पर उज्र नहीं किया गया कि यह रुपया रावजी को नहीं मिला॥

दलपतराय मुहर्रिर इस रुपये का दिया जाना साबित करता है यशवन्तराव को अपने पास से रुपये देने की क्या जरूरत थी सरजन्टबेलनटायन साहब ने कहा है कि यशवन्तराव एक छोटा आदमी था और आश्चर्य नहीं कि दारोदरपन्थ का नौकर हो—परन्तु मैं कहता हूं कि उसको क्या प्रयोजन था कि वह रावजी को खबरों के मंगाने के लिये रुपया देता और इतना बहुत रुपया अर्थात् पांच सौ का दिया जाना बहुत बड़ी बात है॥

सरजन्टबेलनटायन साहब कहते हैं कि यह पांच सौ रुपये तब दिये गये जब विष का कुछ जिक्र न था—कमीशन के मेम्बरों को स्मरण होगा कि यशवन्तराव गायकवार का विश्वसित नौकर था और इस मनुष्य ने रेजीडन्सी के नौकरों को महाराजा साहब के रूबरू पेश किया था इसलिये प्रकट है कि जो रुपया इन लोगों को दिया गया महाराजा साहब ने दिया और दारोदरपन्थ ने नहीं दिया यह पांच सौ रुपये रावजी को खबरों के पहुंचाने के लिये दिये गये थे जब वह नौसारी से लौटकर आया तो आठ सौ रुपये उसने पाये थे जो परस्पर नरसू ने और उसने बांट लिये इस सूरत में दो महीने के बीच में वड़ी २ दो रकमें उन्होंने पाईं॥

यह रुपया महाराजा साहब के विचार में अधिक न था परन्तु जिन लोगों का मासिक दस बारह अथवा चौदह रुपये हो तो उनके लिये बहुत है और चार २ पांच २ सौ यकमुश्त पाना निहायत गनीमत समझते होंगे पेडरू कहता है कि जब मैं गोवा को जाता था तो पचास रुपये मुझको मिले थे परन्तु यह जाहर नहीं किया गया कि यह रुपये उसको किस लिये मिले होंगे

से बढ़कर और आदमी इस कार्य्य के लियेन मिलते अर्थात्
एक प्राईवेटसीक्रेटर और दो विश्वासित नौकर॥

सरजन्टवेलनटायनसाहबने इसविषयमेंसंदेहकेतौरपरकहा
किशायद ९—नवम्बरकोकरनैल फियरसाहबको विषदियागया
औरतलछटकी रंगतकेलियेबहुतकुछवार्त्ता कीहैपरन्तु डाक्टर
सीवर्डसाहबके इजहारसे विषहोनेको सत्यता सूचित होगई
यद्यपि सरजन्टवेलनटायनसाहबने इसअर्थकेलिये बहुत कुछ
बयानकिया परन्तुउनकी सबबातेंटथाहैं यदिकमीशनके मेम्बर
उसगवाही परगौरकरेंगे जिससेतलछट काजिक्रहै तोमालूम
होगाकि जबगिलासमें तलछट देखागयातो वहस्याहीमाइल
था औरउससेंकुछ शर्बतभीथा चूंकि चकोतरे काशर्बतथाइस
सेउसकीरंगतघुलावीथी औरजबकरनैलफियरसाहबने उसको
देखातो कुछविषपी चुकेथे औरउनका शिर घूमरहाथा और
नेत्रोंमेंअश्रु भरआयेथेसो करनैलफियरसाहबकी ऐसीहालतथी
किवहभलेप्रकाररंगको पहिचानसक्ते डाक्टरसीवर्डनेनिस्संदेह
तिलछटकोभलेप्रकार अवलोकनकियाऔरएकबात औरहैकि
जिस गिलाससें यहशर्बतथाउसकाभी रंगस्याहीमाइलथायदि
श्वेतरंग कीवस्तुभी उसमेंडालीजाती तोकालीहीदीखतीऔर
मिस्टरअनबरारटीसाहबने वर्णनकियाहैकिकईलोगोंकोरंगत
कीतमीजनहींहोतीहै गोकिकरनैल फियरसाहबनेयहगिलास
तिरछाकरके तिलछटको देखाथानिश्चयहैकिगिलासकीछाया
इसतिलछट परभी पडीहोगी करनैलफियरसाहब का बयानहै
जबकिवहविषपियेहुयेथे जोकुछहोपरन्तु डाक्टरसीवर्डसाहब
हरप्रकारसेसावधानथे उन्होंनेतलछटखूबगौरसेदेखाडाक्टरसा-
हबकरनैलसाहबके बुलानेसेआयेथे जबउनसेतलछटकोपरीक्षा
केलियेकहा गयातोउन्होंने जिसतरह उचितसमझा उसकी
परीक्षाकी पहिलेजब उन्होंनेउसको प्रकाशमें देखातो उसकी
'गतभूरी प्रतीतहुई मेरेमित्र सरजन्टवेलनटाइन साहब राव'

वे उज्ज्र पर कुछ ख्याल किया जाता है जबवह कहते हैं कि जो-उन्होंकि नौकरों से मेरी कुछ बात चीत नथी परन्तु इसबात से इन्का-र नहीं करते कि किसी न किसी प्रकार से उनको खत कितावत थी उनको इनआस देने से भी इन्कार नहीं है इससे पारितोषक के देने का जुर्म आपही अपनी जुबानी इकरार करते हैं—माईलार्ड मेरे मित्र ने वर्णन किया है कि गायकवार के सम्मती बड़े खराब थे इसबात को मैं भी जानता हूं वास्तव में महाराजा साहब के सम्मती बड़े दुष्ट थे सैंदा मोदर पन्थ की ओर से कोई उज्ज्र पेश नहीं करता॥

सरजन्टवेलन टायनसाहबने जोकुछ कहा उसको सुनकर नमुझको दामोदरपन्थकी ओरसे क्रोध आया और न कुछ अफ-सोस हुवा दामोदरपन्थने जो इजहार दिये उससे मालूम हुवा कि वह खराब आदमी है और उसने बुरे २ काम किये परन्तु गायकवारको क्या कहा जावे कि उन्होंने ऐसे मनुष्यको अपना प्राईवेटसीक्रेटरी नियत किया और बिष दिये जानेकी तहकीकात के प्रारम्भ होनेके प्रथमसे उन्होंने सरल्यूइसपीली साहबके रूबरू पेशकारके कहाथा कि यह मनुष्य मेरा प्राईवेट सिक्रेटरी और बहुत बिश्वसित है क्या यह कहकर भी गायकवार इन्कार कर सक्ते हैं कि यह मनुष्य हमारा प्राईवेटसिक्रेटरी नथा और जो काम इसने किये उसमें हमारी आज्ञा नथी—सालिम और यश-वन्तरावके लिये सरजन्टवेलन टायनसाहब कहते हैं कि यह दोनों मनुष्य बड़े दुष्ट थे उन्होंने दामोदरपन्थकी आज्ञा मानी परन्तु ऐसा ख्याल कब हो सक्ता है कि प्राइवेटसिक्रेटरीकी आज्ञा मान-ते और महाराजासाहबकी आज्ञा उल्लंघन करते इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि यह सब कारवाई हुई है जो एक गवाहने ऐसा बर्णन किया कि सब काम मैंने अपने स्वामीकी आज्ञासे किये तो कदाचित् उसकी गवाही झूठ नहीं होसक्ती मेरे मित्रने कहा है कि दामोदरपन्थ यशवन्तराव और सालिमने विषदेने का उद्योग किया होगा और महाराजा साहब पर अपराध लगाया परन्तु यह बात नहीं है महाराजा साहबको इनलोगों

वस्तु उसमें आसक्ती है हीरेके चूर्ण के लिये मेरे मित्रने वर्णन किया है किवह हीरेका चूर्ण नथा यद्यपि उसकी वैसी ही परीक्षा नहीं की जिसतरह कि संखिये की- हुई थी परन्तु यह बात प्रगट है कि उसके जर्रे निहायत चमकते हुये और ऐसे कठोर थे कि जब दो शीशेके बीचमें रखकर रगड़े गये तो शीशा छिलगया उसके लिये सरजाटबेलनटायनसाहब ने वर्णन किया है कि हीरेके सिवाय और भी बहुतसी कठोर वस्तु संगखारा आदि होती हैं जिस से शीशा छिलजाता है परन्तु सरजाटबेलन टायनसाहब ने इस विषयमें जियादा तकरीर नहींकी इससे मालूम होता है किवह- कायल होगये परन्तु यह बात तो एक निर्बुद्धि मनुष्य भी कहसक्ता है कि संगखारा में इतनी चमक नहीं होसक्ती जैसी कि हीरेमें होतीहै सरजन्ट बेलनटायन साहबने डाक्टरग्रे साहब के इजहारमें कुछजियादह प्रश्न नहीं किये क्योंकि वहजानतेथे किजो अधिकप्रश्नकरूंगातो डाक्टर ग्रेसाहब मुजको क़ायल करदेंगे तो उसकी एक बातयहहै कि डाक्टर ग्रे साहबको हीरेका हाल कुछमालूम नथा किन्तु उन्होंने आपही कहाथा कि यह चमकतेहुये ज़र्रे हीरेके है जो गवाही इनदोनों डाक्टरोंकी लीगई वहअलग२ लीगई और दोनोंने अपनी२ रीतिसे तलछट की परीक्षाकी और दोनों की रायइसबात पर इकट्ठीहुई किसंखिया और हीरा मिलाहुवा था दोनोंडाक्टरोंने साफ२ बयानकिया किबहुतकुछ आज़माइश कीगई औरसिवायसंखिये और हीरेकेतीसरी कोई वस्तु मालूम न हुईजबकि डाक्टरग्रेसाहबनेकहाकिजो शर्बतगिलासका फेंक- दियाहै वहांकी मट्टी खुरचकरभेजदो तो वह मट्टी डाक्टरसी- वर्डसाहबके रूबरूखुरचीगई और डाक्टरग्रेसाहबके पासभेजी गई डाक्टरग्रेसाहबने जब उसकोभी आजमायातो उसमेंबही चीजें मिलीं थी जोपहिलो तलछटमें मिलीथी तो इसमेंकुछ संदेह नहीं है किकरनैलफियरसाहबको ६नवम्बरको विषदियागया॥

अब साढ़ेचार बज गये यदि प्रेसीडण्ट साहब के विचार

जीका ख्यालकहते हैंकि जबपुड़िया मुझको मिली थीतो उस कीरंगतस्याहो माइलथी परन्तुयह बात सबको मालूम हैकि हिन्दुस्तानी आदमीरंगको खूबबयान नहींकरसक्ते जबउससे प्रश्न कियागया किजो टोपियां अदालतमें रक्खी हैं उनमेंसे किसरंगके अनुसारपुड़िया कारंगथातोउसनेउसटोपीकीतरफ सैनकीजिसकी रंगतभूरीथी जिसतरह किडाक्टरसीवर्डसाहब नेतलछटका इमतिहानकिया कुछसंदेह नहींकि इससे उत्तम आजमाइश न होसक्तीथी और डाक्टरोंके मानिन्द आजमाइश की इसपरीक्षाके अनन्तरमालूम हुवाकिउसमें संखिया और हीरेकाचूर्ण हैडाक्टरसीवर्डसाहबने नलकीमेंडालकर संखिया निश्चयकी और खुर्दबीनसे पिसेहुयेहीरेकाहोनामालूम किया इससेबढकर संखिये की आजमाइश नहोसक्ती थी सहीहै कि डाक्टरसीवर्ड साहबने संखियेके छल्लेको जलाकर फिर उसको मूल रूपमें नहींलायापरन्तु इसछल्लेसे संखियेकाहोनासाबित होताहै यदिसंखियान होतीतो छल्लानपड़ता डाक्टरग्रेसाहब नेकेवलएकही रीतिसेसंखियेकी परीक्षानली किन्तु कईप्रकार सेउसकोआजमाया और संखियेकोअलगकर दिया इससेबढ़ कर और आजमाइश नहोसक्तीथी इनसबबातोंसे कमीशनके मेम्बरोंको खूब मालूम होगा कि ९—नवम्बरको शर्बतमें विष मिलायागया और जबडाक्टरसीवर्ड साहबने जलके संयोग के पहिलेतलछटकोहिलायाथातोउसमेंसेगुबारसा मालूम हुवा॥

सरजानब्रेलनटायनसाहब इस बात को साबित करना चाहते है कि तलछटमें संखिया नथी किन्तु डाक्टर साहब ने जो नल डाला था उसमें संखिया थी परन्तु उनकी यह दलील इस बातसे रह हुई कि गोविन्द ने अपने इजहार में वर्णन कियाहै कि मैंने पानीके कूजेको उसी दिनभरकर रक्खा था और मुखधोने की जो सुराहियां थीं उनमेंभी नवीन जल भरदियाथा फिर क्योंकर संखिया अथवा संखियेके सदृश कोई

होता कि तांबेका जौहर शर्बत में डालागया होजो तलछट डाक्टरग्रेसाहब को भेजागया और फिर खुरचदार लट्टी भेजी गई उसमें डाक्टर साहबने ढाई चावल संखिया निकाली थी करनैलफियर साहबकी गवाहीसे खूबसाबित होगयाकिउस समयसे जबसे कि उन्होंने शर्बत पियाथा और उससमयतक किउन्होंने डाक्टरसीवर्ड साहबको तलछटदी किसीमनुष्यको गिलासके पासजाने और हाथलगानेका मौका नमिलाथाफिर क्योंकरउसमें कोई वस्तु पड़सक्तीथी इससे प्रगटहै कि करनैल साहबके पलटनेके पहिले(हवाखोरीसे)गिलासमें संखियाडाली गईदूसरी एकबात जिसपर कि कमीशनके मेम्बरोंका खयाल रुजूकरना चाहताहूं यहहै किजो मानाजावे कि ९ नवम्बरको करनैलफियर साहबके गिलासमें विषडालागया तो यहबात वुद्धिमें नहींआती किछोटा आदमीउनके गिलासमें हीराऔर संखियाडाले जिस मनुष्यने हीरेका चूर्ण डालावह बड़ारुपये वालाहोगा किन्तुयहबातभी साबितहुई किवह शख्सजानता था कि जितनीजरूरतहो रुपयाखर्च कियाजावे परन्तु मेरीजो इच्छाहै वहकिसी भांति पूर्णहो सरजान्टवेलनटायनसाहब ने इस बातमें तकरीरकी है कि भाऊपूनाकर वा दामोदरपन्थने हीरा और संखिया करनैलफियर साहबके गिलास में डाला परन्तु किसीभांतिसे नहीं होसक्ता कि ऐसी बहुमूल्यवस्तु यह लोगडालतेपरन्तु हां होसक्ताहै कि गायकवारने हीरेका चूर्ण डालाहो उनको निश्चयथा किजो करनैलफियर साहबकोहीरा दियाजावेगा तो शीघ्रही मरजावेंगे क्योंकि वह जानतेथे कि हीरा निहायत लोहलगाहै गायकवारकोहीराऔर संखिया दोनोंमिलसक्तेहैं संखियाहर मनुष्यको मिलसक्तीहै परन्तु हीरा बहीकीमती चीजहै इतनारुपया और कौनशख्स खर्चकरसक्ता था अबमालूम हुवाकि एक मनुष्यने किसी हेतुके बिनाआठ पौंड संखिया मोल लिया परन्तु बड़ौदे में संखियेके मिलनेमें

से उचितहोतो कमीशन बरखास्तकी जावे—तब।च अदालत बरखास्त हुई॥

उन्नीसवें दिनका इजलास॥

जब कमीशनकेमेम्बर एकत्रहुए तो एडवोकेटजनरलसाहब फिरसोचकहने लगे—उन्होंने वर्णनकियाकि मैंने कलकेदिन इसबातको साबित कियाथाकि महाराजासाहबने रेजीडन्सीके नौकरोंकेसाथ खबरोंकेमंगानेकेलिये मेलकियाथा औरसालिम और यशवन्तरावकेद्वारा रिशवतेंदेकरइसबुरे कामपरतय्यार कियाथा जिसका जिक्रतीसरे और चौथेजुर्म्ममेंहै मैंनेइसबात को भी साबितकिया है कि९—नवम्बर को करनैलफियरसाहब के विषदेनेका उद्योगकिया गयाथा और जो वस्तुकि शर्बतमें डालीगई वह हीरा और संखियाथा एक और बातपर कि अगरचे वहबड़ीबात नहींहै कमीशनकेमेम्बरोंको ध्यानकराता हूंवहयहहै कि करनैलफियरसाहबने खबर पाईथीकि उनको तूतिया औ हीरे का चूर्ण दियाजावेगा और भावपूनाकरने बलवन्त राव से इसबात को सुना था परन्तु जब डाक्टरों ने आजमाइश की तो हीरा और संखियामिला तूतिया नथा सरजन्टबेलनटायन साहबने इसविषयमें बहुतकुछ गुफ्तगूकी है और कहतेहैं किअगर तूतियाहोता तोउसी समयमुखमें तांबेका स्वादआजाता परन्तु विचारना चाहिये कि करनैल फियरसाहबको तांबेकास्वाद फौरन् नहींआगयाथा और डा क्टरोंने साबितकियाहै कि जिसमनुष्यको संखिया दीजातीहै कुछदेरके पीछे उसके मुखमें तांबेका स्वाद आजाताहै बेशक तांबेके जौहरका उसमें संयोग होना साबित नहींडाक्टर ग्रे साहबभी अपनी गवाही में कहतेहैं कि जो तांबे का जौहर होतातो तुरन्तही उसका मुखमें स्वाद आजाता इसविषयमें करनैलफियर साहबने ४८ और ४९ पृष्ठपरसाफ२ बयानकिया है करनैलफियर साहबआपभी कहतेहैं किमेरेमुखमें शीघ्रही तांबेका स्वादन आयाथा और किसीगवाही सेभी साबितनहीं

वास्ते झोल लीगई कि तलवारके कब्जेपर लगाई जावेगी यह एक धोखाथा हालांकि वह पोसकर करनैलफ़ियर साहब के मर्वतसे डालीगई मेरे दोस्तने फतहचन्द की गलतियां करनैल फियर साहब की गलतियों के सदृश बयान की है और कहते हैं कि जिसतरह करनैल साहब इजहार के वक्त घबरा गये थेउसीभांतिसे हेमचन्द फतहचन्द घबरागया होगा क्याखूब कहांकरनैल फियरसाहब की पदवी और कहां हेमचंद फतहचंदकी हैसियत—मेरेमित्र कहते हैं कि दसहरेके दिनोंमेंआज्ञाहुईथी किहेमचंद फतहचंदछोटे २ हीरेलाकर पेशकरेतथा वह और जौहरीहीरे लाये अब फतहचंद कहता है कि वह हीरेमुझको लौटादिये गये परन्तु दामोदरपंथ कहताहै कि हीरेरखलिये गयेथे हेमचंद और दामोदर पंथ दोनोंने कहा हैकिजब हीरेनिकालेथे हमकोमालूम नथाकि क्योंमंगाये थे दामोदरपंथ और नानाबतिल जोजवाहर खानेके दारोगाहैं और आलागाल और रघुनाथजो जवाहरखानेके मुख्यमुहर्रर हैं वहसावित करतेहैं कि हीरेमोल लियेगये दामोदर पंथने इसविषयमें ऐसावर्णनकिया हैकि हरगिज ऐसा नहींहोसक्ता इसलिये साबितहुवा कि २० अक्टूबर सन् १८७४ ई० कोहीरे कीकनी खरीदीगई ॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब ने उसको इस प्रकार से खण्डन कियाकि हेमचंदकहताहै कि मुझको हीरे कीकनी वापिस मिली और फिरनदीगई इससे साबित हुवा किहीरे कीकनी और संखियाजो करनैलफियर साहब की शरबतमें मिलाया गया महाराजासाहब के यहां उनही दिनोंमें खरीदा गयाथा जबकि रावजी और नरसूकहतेहैं किहमको पुड़ियामिलीथीं, कोईतकरीर ऐसीपेशनहीं होसक्ती जिससेउन लोगोंकाबयानगलत होसके—सरजन्टबेलनटायनसाहब नूरद्दीन बोहरेका बहुतकुछ जिक्र करतेहैं और कहतेहैं किअगर नूरद्दीनबोह-

दिखत होतीहै और सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा है कि फौजदारीके महकमेके सिवायऔर कहीं संखियानहीं मिल-तीहै और दामोदरपन्थने एककच्चा पेशकियाहै जोउसीकेहाथ का लिखाहै और वह कहताहै किमैंने महाराजा साहब की आज्ञासे इसकागजको लिखाथा इस कागजमें ४ अक्टूबरसन् १८७४ ई० लिखीहै उसपर गणपतिराव और यशवन्तरावके दस्तखतहैं उसमेंयहभी लिखा हुवाहै कि फौजदारीसे आज्ञा केबिना संखिया नहीं मिलसक्ती है दामोदरपन्थने इसबातको सबित कियाहै कि अरदासियरवदिया फौजदारने कहा कि मैं महाराजासाहबसे पूछकरसंखिया दूंगा मिस्टर हुरमुसजी अति प्रतिष्ठित मनुष्य हैं वह गत सप्ताह में बड़ौदेको आयेथे वहमुकद्दमेके खण्डन करने के लिये नहीं बुलाये गयेथे परन्तु फिरभी वह कह सक्ते हैं कि दामोदर चिम्बकको फौजदारसे संखियानहीं मिलीथी और जोउसने अदालतमें पेशकिया है वहठीकहै—संखियेके मंगानेके लियेघोड़ेकी खाविशकाबहाना किया गयाथा परन्तु हकीकतमें साबित होगया कि करनैल साहबके देनेके लियेसंखिया मंगाईगईथी महाराजासाहब ने उसकागजपर इसलिये दस्तखतनहीं कियेकि अगरमैंदस्तखत करूंगातो तहकीकात होनेपर मुझपर मुकद्दमाखड़ा होजावे-गा इसलिये उन्होंने दामोदरपन्थ से कहा कि जहांसे होसके संखियाले आओमेरे मित्रकहतेहैं किहीरेगायकवारके पास नथेजोबाहरसे मंगवायेगये उनदिनोंमें एकतलवारके मियान कब्जेपर हीरेजड़े जातेथे परन्तु कमीशनके अधिष्ठाताओं को खूबमालूम करनाचाहिये किकितने हीरे इस तलवारके कब्जे और मियानमें खर्चहुये होंगे क्योंकिजो कारीगर इसकब्जेको बनातेहैं वहोहीरोंके खर्चोंका हिसाबरखते होंगेऔरउनको भयहोगा कि अगर कोई हीरागुम होगया तो हम लोगपूछे जावेंगे औरजो मनीहीरेकी फतहचन्दसे मोललीगई वहइस

हाराजासाहबने इनवस्तुओंको मंगायाथा जोवहनमंगातेतो क्योंकरनौकरों केपासइन चीजोंकाहोना साबित होता यह बातभी गवाही सेसाबित हुई किचाहो सालिमने रावजीको यहपुडियादीथीं और रावजी ने ९ नवम्बरको करनैल फियर साहबके शरबतमें उनकोडाला–सबगवाहीमें रावजीकानाम लियागया दूसरेकिसी शरबतका जिक्रनहीं हुवा चारप्रकार केगवाह इसमुकद्दमेंको कायमकरनेके वास्ते ठहराये गयेहैंजो करनैलफियर साहबको विषदेसक्ते हैं पहिलेरेजीडन्सीके नौकर उनकेलिये सेरेमित्रने वर्णनकियाहै किवहअपने हाकिम सेराजीथे वहक्यों उनकोविष देतेपरन्तु उनकीतकरीर सेयह बातभी प्रकटहोती है किवह इसविषदेने के कुछबानी मुबानीनथे–और किसीवैरसे उन्होंने विषनहींदिया जोदिया लोभ सेदिया॥

दूसरे–भावपूनाकर–मैंनहीं कहसक्ता किजहर खुरानीकी तोहमत उसपरक्योंकर होसक्तीहै मैंनेकितनाही गवाहीपर गौरकिया परन्तु उसके लियेकोई इशारह भी नहींपाया गया और मुझको इसकीभी कोईवजह मालूमनहीं हुईकिमेरेमित्र भावपूनाकर को गायकवार कावैरी ठहराते हैं और कहते हैं कि करनैल फियर साहब सदा उसकी बातें सुना करते थे और वह उनका जासूस था भावपूनाकर और करनैलफियरसाहब दोनों की गवाहीलीगई थी कोईबात ऐसी मालूम नहींहुई जिससे भावपूनाकर पर अपराध लगायाजावे किन्तु साबित हुवा कि यह शख्स प्रतिष्ठित और विश्वसित है और मुद्दतसे बड़ौदेमेंरहताहै उसनेअनेक प्रकारकी नौकरीभीकी और उसकेकाममेंभी कोईकसूर नहीं हुवा–इनदिनों वह सूरतदेशमें मिस्टरहोपसाहबका एजन्टहै और जुलाहिसारअर्थात् असमर्थ बालकके रियासतके प्रबन्धके लियेजो रियासतबड़ौदेमें है नौकरहै यदियह मनुष्यविश्वसित नहोता तोमिस्टरहोप

देसे दामोदरपंधने संखिया मोलली थीतब वहशख्स दामोदर पंथ के इजहार की सिदाकत के लिये क्यों नहीं बुलाया गया परन्तु मैं कहता हूं कि यदि मेरे मित्र चाहते तो नूरुद्दीन वौहरे को दामोदरपंथ की गवाही के खण्डन करने के लिये बुला सक्ते थे मैने नूरुद्दीन की गवाही का लेना कुछ अवश्य न समझा अगर सरजन्टबेलनटायनसाहब चाहें तो उसकी गवाही अवसें लेसक्ताहूं वह कहते हैं कि नूरुद्दीन गायकवार का शत्रु था परन्तु मालूम नहीं होता कि नूरुद्दीन का वैर गायकवारसे क्योंकर साबित होसक्ताहै सुनाहै कि नूरुद्दीन बौहरा जबकि पहिले कमीशनजमा हुईथी नालिशीथा परन्तु यहसाबित नहींहुवा कि उसकी नालिशकी समाअत हुईथी वा नहीं खैरइससे कुछप्रयोजन नहीं कि नूरुद्दीन गायकवारका शत्रु था वा नहीं परन्तु सरजन्टबेलनटायनसाहब ने उसकी गवाही क्योंनहींली और दामोदरपंथके इजहारको क्योंखण्डननहींकिया क्योंकिगायकवारके जितनेवकीलहैंजिस मनुष्यके पासचाहें जासक्ते हैं इसीतरह नूरुद्दीन के निकट भी जासक्ते थे और उससेहाल पूछसक्ते थे परन्तु जब दामोदरपंथ केइजहार खण्डननहींहुये तो उसके इजहार कायमरहे नूरुद्दीनका बुलानावन बुलाना सरजन्टबेलनटायनसाहबके तअल्लुकथाजोउसका बुलानामेरेजिम्मे होतातो मैंबुलाता कमीशन केमेम्बरोंनेइसविषयमें दोनोंओरकी तकरीरकोसुना जोकुछउनकी रायहोगी वहजियादह मुनासिब होगी माईलार्ड अब कमीशनके मेम्बरोंका खयाल दूसरीतरफ रुजूकरताहूं वहयह है कि ९ नवम्बरको करनैलफियरसाहबकाविष दियाजानामैंने साबितकरलियाऔर यहभीजाहिरहैकि जिनतारीखोंमेंहीरे औरसंखियेकेखरीदकाजिक्रहैलोगोंनेबयानकियाकिउन्हींदिनोंमें महाराजासाहबकेनौकरोंके पासउन्हींकी आज्ञानुसार यहसब वस्तुउपस्थित थींइसलिये साबित हुवा कि आपहीम-

रोक्कये उनपर गायकवार के दस्तखत नहीं हैं परन्तु ऐसे दस्त-तोंकी कुछ आवश्यकता नथी क्योंकि महाराजासाहबऐसे रुक्कोंपर दस्तखत नहीं करतेथे दामोदरपन्थ को हिसावकी तहकीकातका कुछभयनथाक्योंकि पांचजगहपर हिसावरहा करतेथे जिनरक्कमोंकेलिये लेनेका सन्देहहै उनकेलिये वह कागज़ वउचर पेशकरताहै कमीशनके मेम्बरख्याल करेंगेकि खुज़ानेपर रुक्क सादिरहोनेकी क्या रीतिथी पहिलेयाद्दाश्त लिखी जातीथी कि किसचीज़के वास्ते रुपयेकीजरूरतहैफिर दामोदरपन्थ के दस्तखत होतेथे दामोदरपन्थ लिख देताथा कि महाराजासाहबकी इजाजत होगई है ॥

तीसरे यहकि उसयाद्दाश्तपर उसमनुष्यकी रसीदहोती थी जिसको रुपयादिया जाता था इसलिये दामोदरपन्थहर प्रकारसे बरीथा जबकभी उससेपूछागया कि अमुक याद्दा-श्तकी रक्कम कहांलिखीहै तो उसनेशीघ्रही वतादिया किअ-मुक पृष्टपर लिखीहै इसकेविशेष रोजनामचा—मासिक—मा सिक—वार्षिक पत्रहाकरताथा जिसरक्कमके देखनेकी ज़रूर तहोती तो इनकाग़ज़ों से उसका पतालग जाता हिन्दुस्तानी हिसाबकी रीतिऐसीहै कि जो एकरक्कमकोभी लेलियाजाय और कोईमनुष्य उसको गुप्तकरनाचाहे तो सम्पूर्णकिताबोंमें उसरक्कमको दुरुस्तकरना पड़ेगा और महकमेके सम्पूर्णलोगों को रिश्वत देनीपड़ेगी ॥

जो यह बात भी मानी जावे कि महाराजा गायकवारके नौकर ऐसेईमानदार नथे जैसाकि खजाने वालोंको होना चाहिये इससे किसीबातका छिपाना और निगाहरखना कठिन था—दामोदरपन्थके लिये गफलतका अपराध धरना मेरेदो-स्तकी केवल कल्पनाहै और उसका कोई मूल नहीं है मेरे विचारसे जो दामोदरपन्थने इनकारदियेहैं उनकी निस्बत खुबहोगई कारनैलफिअरसाहबको ऐसीकिताबोंके मंगवानेकी क्याज़रूरथी मेरेदोस्तकी सारीतकरीर इसबातसेखंडितहोगई

साहबउसको क्यों नौकररखते—भावपूनाकर एकचिट्ठीसिफा-रशकी करनैलफियर साहबके नामलायाथा सिरहेपसाहब ऐसेहाकिम नहींहैं कि जो यहमनुष्य योग्यन होता तोउसकी सिफारिश करते वह कदाचित् ऐसे मनुष्यको नौकर नरखते भावपूनाकर का केवल सिरहेपसाहब कोही निश्चय नहींहै किन्तु बहुतसे राजकार और सरदारोंका वहनौकर रहायह शख़्समुहतका नौकरहै और मीरजाफरअलीके पुत्रकीरियासत काइन्तिजाम करताहै उसनेजो कुछ काररवाई की वह सब को मालूमहै किसीमनुष्यको उसकेकामपर एतिराज नहींहै किन्तु हर मनुष्य उसकी प्रशंसा करताहै जब करनैल मीड साहब की कमीशन इकट्ठी हुई तो इस मनुष्य ने अपने मव-क्कलों की तरफसे चारदावे गायकवार पर पेश किये थे और यह बात कि करनैलफियर साहब उसकी हरएक बात को सुनतेहैं जबउससे यहप्रश्नकियागया कि करनैलफियरसाहब केपासतुमजातेथेतो उसनेकहा हां मैंबहुधाजाताथा औरजब सरजन्टबेलनटायनसाहबने करनैलफियरसाहबसेयहीपूछातो उन्होंनेभी उत्तरदियाकि हामैंइस मनुष्यको प्रति दिन देखा करताथा और वह अपनेकार्य्यकेलिये आयाकरता था दोनों मनुष्योंने साफ २ उत्तर दिया सरजन्टबेलनटाइनसाहबने जो कहाहै कि इस मनुष्यने खरीतेके तैय्यार होनेकी इत्तिला दी यहबातभी कुछआश्चर्य्य कीनहींहै क्योंकि वहहरएक सरदार आदिकेपास जायाकरताथा और सरदारलोग दरबारमेंजाते थे इसशख़्सने सरदारोंसे सुनकर करनैलफियर साहबसेजिक्र कियाहोगा उसने यहनहींकहा कि खरीतेका मजमून क्याहै क्योंकिउसका मजमून नजानताथा इस इत्तिलाके देनेमें कौ-नसीबुरीबातहुई क्योंकि खरीता रेजीडण्टसाहबके द्वारा भेजा जाताथाऔर यहरीतिहैकिसबखतकिताबत सरकारीद्वारातिसे गवर्नर बम्बईवा गवर्नरजनरलसे होतीहैतो रेजीडण्ट साहब

पालनपुरमें उनकोभेजदियाजोउनको सिन्धमें मासिक मिल-
ताथा वही पालनपुरमें भी पाते थे यदि गायकवार में कुछ
भी वृद्धिहोती तो जबकरनैलसाहब बड़ौदेमें रेजीडण्टनियत
हुयेथे तोमालूमकरलेते किसरकारकी कुछ अप्रसन्नता हैया
नहींतोकरनैलसाहबबड़ौदेमें रेजीडण्टनियतनहोते और जो
काररवाईकरनैलफियरसाहबने नौसरीमेंकीथीउससेभीगाय
कवारको मालूमकरना चाहियेथाकि गवर्न्नमेण्ट को उनका
बड़ानिश्चयहैजबनौसारीमें गायकवारका विवाहहुवा था तो
गवर्न्नमेण्टकी आज्ञानुसार करनैलसाहब उसविवाह में सं-
युक्त न हुये महाराजासाहबने ९—मई को एक खरीता लिख
कर गवर्न्नमेण्ट में भेजा जिसमें करनैलफियरसाहब की बहुत
कुछशिकायतथी इसमेंलिखा थाकि करनैलफियरसाहब मेरे
विवाहमें संयुक्त नहुये इससे मेरी अतिअप्रतिष्ठाहुई परन्तुमैं
कहताहूंकि इसशिकायतका क्या परिणाम हुवा॥

‘गवर्न्नमेण्टने उसका उत्तरलिखाकि करनैलफियरसाहबने
गवर्न्नमेण्टकी आज्ञा से यह काररवाईकी और सरकार को
उनकी काररवाई पर बड़ाभरोसा है इसउत्तरसे गायकवार
को अगर कुछ नहीं तो इतना मालूमकरना चाहियेथाकि
गवर्न्नमेण्टकरनैलफियरसाहबकी काररवाईसे प्रसन्नहै उस
में यहभी लिखाथाकि जोकाररवाई करनैलफियरसाहबक-
रेंगे उसको सरकार सर्व्वदा पसन्दकरेगी और सरकार को
इत्तिला और आज्ञाके विना कोई काररवाई नहीं करते॥

मैंसम्पूर्ण मेम्बरोंका खयालएक तारीखपर रुजूकरता हूं
अर्थात् महाराजासाहब का विवाह मई महीने में हुवा था
और १६—अक्टूबरको पुत्र उत्पन्न हुवा जोकि करनैलफियर
साहबने उस बालक की माता को रानी न माना था उसके
लड़के को क्योंकर युवराज और गायकवार का लड़का तस
लीमकरतेमाइसीतारीखकेपीछेगायकवारइसबातकीशिकायत
करनैलगेकि साहबमुझपरबड़ीअनीतिकरतेहैं इससेप्रकटहैकि

दामोदरपन्त कईबेर महाराजासाहबके साथ रेजीडण्ट साहबके पासगया परन्तु आपउनको नजानताथा रेजीडन्सी के मार्गमें जो धर्म्मशालाहै वहुधा वहांउतर पड़ताथा महाराजासाहबने इसशख्सको रेजीडण्टसाहबके रूबरूपेशकिया परन्तुउसने साहबसेभी कुछबातें नकीं इसलिये इसको करनैलफियरसाहबके मारडालनेका कोईप्रयोजन नथा औरजो कुछ तअल्लुकथा तो गायकवारकी वजहसे था॥

माईलार्ड अब चौथे मनुष्यका वर्णनकरताहूं जिसने विष दियाहो—महाराजासाहब के मेरेमित्रने बयान कियाहै कि जबमैंने मुकद्दमेके प्रारम्भमें स्पीचकीथी तो मैंने उसमें नहीं कहा कि करनैलफियरसाहबके विषदिये जानेका क्याहेतुथा उनका यहबयान ठीकहै शायद मुझसे उससमय भूलसेरह गया मैंनेइसबातका उसवक्त खयाल नहींकिया मुझको सरकारने इसप्रयोजनसे यहांनहींभेजाथाकि मुद्दइयोंकी तरह सेवाल्तीकरूं किन्तुकेवल तहकीकातकेलिये भेजाथाकिजितनी गवाही वहमपहुंचे उसको कमीशनके रूबरूपेशकरूं कमीशनके साहिबोंकेविचार में जो उचितहोगा रिपोर्टकरें और इसबातको निश्चयकरें जो महाराजासाहबपर अपराधलगाहै वहसहीहैयानहींमेरे विचारसेमहाराजासाहबकोविषदेनेका बड़ाप्रयोजनथाऔर वहमनसेकरनैलफियरसाहबकोविषदेना चाहतेथे सिवाय इनगवाहियोंके जोकमीशनके रूबरू गुजरीं सरजन्टबेलनटायन साहबने ऐसे २ लेखदेखे जिनसे साफजाहिरहैकिगायकवार चाहतेथे कि जिसतरह होसके करनैल फियरसाहबको दूरकरदें इस विषयमें कमीशनकाध्यानदूसरी दिसम्बरके खरीतेपर दिलाताहूं इसखरीतेमें श्रीमान्गायकवारने लिखाहै कि करनैलफियर साहब मेरे खराब करनेपर तय्यारहैं और हरप्रकारसे दिक्करतेहैं और जोउनका मन चाहताहै वही करते हैं अगर सरकार मेराफैसला इन्हींपर रक्खेगी तो कुछ इन्साफ नहोगा इससे साफ जाहिरहै कि

रसाहबकी बदलीहोनेका निश्चय नथा किन्तु खरीते भेजनेसे तीनदिनके उपरान्त गायकवारने करनैलफियरसाहबसे कह दियाथाकि यह खरीता मैंने नहीं लिखा है उस तहरीरसे मैं अलगहूं और इसकहनेसे उनका यहप्रयोजनथा कि खरीते में जो दरखास्तकी थी वहमंजूर नहोगी रंजबढ़ाना फजूलहै यद्यपि गवर्न्नमेण्टने गायकवारकी प्रार्थना स्वीकारकी तथापि यह नलिखाकि करनैलफियरसाहबको क्योंबदलदिया गायक-वारका यह खयालकरना बेजाहै कि सरकारनेमेरीदरखास्त पर करनैलसाहबको बुलालिया मालूमहोताहै कि उनदिनों में गायकवारको टोकाररवाई मंजूरथी॥

अर्थात् दादा भाई नूरूजीके द्वारा खरीता भिजवाना और दामोदर पन्थ से काररवाई करनी यह बात गवाही से सावित नहींहुई किगायकवारको अपनेखरीतेपर भरोसाथा कमीशनके मेम्बरोंको पूर्व्वोक्तवार्त्तासेमालूमहोगा किगायक-वारकोनिहायत ख्वाहिशथी किकरनैलफियर साहब बड़ौदेसे बदलजांय इससेंबढ़कर उनकीइच्छा क्योंकर जाहिरहोगीकि गायकवारको यहमोमालूमथा किकरनैलफियरसाहबएक रि-पोर्ट भेजनेवालेहैं—खरीतेका एकमन्शा यहभीथा कि करनैल फियरसाहब यहांसे बदलजावेंगे तो दूसरा रेजीडण्टउसको लिखेगा॥

निश्चयहै कि कमीशनके मेम्बरोंको इसमेरी तकरीरसेमा-लूमहुवाहोगा कि गायकवारको करनैलफियरसाहबकीतब्दी-लीकेलिये कौन२ वजहथी और गायकवारने जितनीकारर-वाई करनैलसाहबके बदलनेकेलिये की उसका बहुत बड़ा कारणथा अर्थात् खरीतेके भेजनेका मुख्ययहप्रयोजनथा कि जिसतरहहोसकेकरनैलफियरसाहब रिपोर्टनभेजें जोर२ बुवाद-मेकी तरदीदपेशहुई उसने यहबातसी प्रकटहैकिगायकवार चाहतेथे कि करनैलसाहब बदलजावेंअबमैं९—नवम्बरकाजिक्र करताहूं कि उसदिन गायकवारकी कादंगाथी गायकवारकी

उससमय में गायकवार के दिलका क्या हाल था वह बहुधा वाहा करतेथे कि इन्होंकी कारवाई से सरकाने लक्ष्मीबाई को मेरीरानी नहीं माना इससे सरकार मेरेपुत्रको युवराज न मानेगी सोइनही हेतुओं से गायकवार को करनैलफियर साहब के बदली कराने की इच्छाहोगी ॥

१९—अक्टूबर को जब उनके पुत्रपैदा हुवा उनके मनमें करनैलफियरसाहबकी ओरसे फर्क आगया ॥

माईलार्ड— आपविचार करेंकि पूर्वोक्तहेतुओंसे गायकवारकी कारवाईसाफजाहिरहै और यहभी प्रकटहै किजो गायकवारको अच्छाइन्तिजाम करनाहोताता अपनेप्राइवेट सिक्रेटरी से मशवरह न करते किन्तु दादा भाई नूरूजीसे सलाहलेते ॥

जिनके मुआमिलोंसे पूर्वोक्तसिक्रेटरी से मशवरह करने का सुजायका नथा इसबातसें आश्चर्य नहीं है कि एकतरफ दादाभाई नूरूजीसे उमदामजमून के खरीतेलिखातेथे और दूसरीतरफदामोदरपन्थसे दूसरामशवरह करते गायकवारने सबलोगों में यहबात प्रसिद्ध कररक्खीथी कि करनैलसाहब मुजपर बड़ाअन्यायकरतेहैं और दूसरीनवम्बरको जोखरीता गायकवारने गवर्न्मेण्टमें भेजाथा गायकवार को खूबउम्मेदनथी कि हमारी दरखास्त मंजूरहोगी गायकवार ने और शिकायतोंमेंसेयहशिकायतभी कीथी किकरनैलफियरसाहब से सम्पूर्णसरदार और प्रजा अप्रसन्नहै तथाच करनैलसाहब से इसविषयमें पूछागया उन्होंने उत्तरलिखाकि यहगायकवारका लेखबिल्कुल गलतहै दादाभाईनूरूजी मौजूदहैउनसे खरीतेके मजमूनको तसदीक करानाजरूरथा परन्तु सरजन्टवेलनटायनसाहब ने उनको बुलाकर खरीते की तसदीक नहींकी और न करनैलफियरसाहबसे इसविषयमेंप्रश्नकिये ॥

माईलार्ड—करनैलफियरसाहब और गायकवारसे जोकुछ बातेंहुईं उनसेसाफ जाहिरहै किगायकवारकोकरनैलफिय-

कर चुकेथे तो उनको दृढ़ रहने के लिये बहुत अच्छा मौक़ा मिला था करनैल साहब ने अपने इज़हार में सही २ वर्णन कियाहै कि ९ नवम्बरको महाराजासाहबसे पहिले मैंने उन की कुशलप्रश्नकी तभीसे बीमारीका जिक्र आया और करनैल साहब की चित्त की उद्विग्नता का देर तक जिकरहा इसमें सन्देह नहीहैकि जब गायकवार रेज़ीडन्सीसे लौटकरजातेथे तो उनको मालूम होगया था कि करनैल फ़ियर साहब को विष दिया गया क्योंकि मार्गान्तर में महाराजा साहब ने दामोदरपन्थसे कहाथा तथाच उसकेइज़हारमें यहभीलिखा है कि जबमैं और महाराजासाहब रेज़ीडन्सीसेलौट आये थे तो महाराजासाहबनेकहाथा किरेज़ीडन्सीमें बड़ाशोरऔर गुल होरहा है जब मैंने उसका कारणपूछा तो महाराजा साहब ने उत्तरदिया किनरसूरहसेथ्वाबाहरै बैठारहातथा और जबकोईमनुष्य आताथा तो सीटी बजादिया करता था परन्तु आजकेदिन वहबाहर नथा इसलिये शोर औरगुलहोरहा है॥

रावजीप्रति दिनआया करताथा परन्तु आज नहीं आया उसनेजल्दी करकेडालदिया मैंनेपूछाकि उसनेक्या डाला यह सुनकर महाराजा साहबने मेरीबात कोटाल दिया और कुछ और बातेंकरनेलगेफिरमहाराजासाहबनेकहा किसालिमरा-वजीकेघरको गयाहै ताकिपुड़ियों कोलेकर बुढ़िया की रोटी मेंडालदे मालूम नहींकि सालिमने पुड़ियोंको फेंकदिया था नहींयह मुआमला बहुतखराबहै देखियेक्या होता है अगर दामोदरपंथसही२कहताहैतो महाराजासाहबको,रेज़ीडन्सी केपहिलेमालूम हुवाहोगाकि विषदेनेका उद्योग किया गया है और यहभीमालूम हुवाकि गायकवारने उसीदिन तीसरे पहरकोनानाकुंवलकर आदिसे कहाथा मैंनेजो दामोदर पंथ केइज़हारका फ़िक़रापढ़ा वहउसका बनाया हुवा नहीं मा-लूमहोताहै और नवहऐसा मालूमहोताहै जैसाकि मेरे मित्र कहतेहैं कि पुलिसका सिखाया हुवा है जितनी गवाहियां

यह रीति थी कि सोम और बृहस्पतिवार को फ़ियरसाहब के पासजाया करतेथे गवाहीसे यहबात साबित नहींहै कि जब वहरेज़ीडन्सीको गये तो उनकोमालूमथा कि करनैलफ़ियर साहबको विष दियागया—परन्तु यहबात खूब प्रकटहै कि जब गायकवार रेज़ीडन्सीसे लौटआतेथे तबउनकोविषदेनेकाहाल मालूम होगयाथा क्योंकि जब करनैलसाहब डाक्टरसाहबको चिट्ठीभेजचुके तब सालिम घोड़ेको उठायेहुये यशवन्तराव के घरको जाताथा डाक्टरसीवर्डसाहबने उसको मार्गमेंदेखा जब करनैलफ़ियरसाहबने गिलासमें तलछट देखाया तो रावजी को चिट्ठीदीथी कि तुमडाक्टरसाहबके पासलेजाओ परन्तुउसने यह चिट्ठी महमूदको दी और आपनगया क्योंकिउसको मालूमहोगयाथा कि करनैलसाहब भीतर क्याकररहेहैंऔर उनको क्यादशा होगईहै महमूद सालिम को मार्गमेंमिला उसने सालिमको एकरुपया बिसकुटखानेकेलिये दियाथासाबितहुवा कि सालिम घोड़ेको दौड़ाकर नगरको गयाहै करनैलफ़ियरसाहब सातबजे हवाखोरीसे लौटआतेथे औरसात और साढ़ेसातबजेके बीचमें उन्होंने शर्बतपिया और कुछफेंक दिया उससमय सालिम नगरकोओर गयाथा इसबातकानिश्चयहोना कठिनहै कि वहक्यों नगरकोगया परन्तुइतनाकह सक्तेहैं कि वहरेज़ीडन्सीकोआया औरवहांसे महाराजासाहब की इत्तिलाकेलिये वहलौटगया कि रेज़ीडन्सीमें क्याहोरहा है और डाक्टरसीवर्डसाहब बुलायेगयेहैं यदि वह रेज़ीडन्सी को नआता तो यहहाल उसकोमालूम नहोता मुझको निश्चयहै कि महाराजासाहबको रेज़ीडन्सीमें आनेके पहिलेखबरहोगईथी कि करनैलफ़ियरसाहबको विषदियागया और यही हेतुथा कि गायकवार चुपहोरहे ॥

सरजन्टमेलनट।यसाहबनेवर्णन कियाहैकि,जबमहाराजासाहबकरनैलसाहबके पासगये तो उनको किसीबातसे कुछ तरद्दुद नहीं पायाजाताथा जोकि वह पहिलेसे खबरको मालूम

केलिये फिकरहोगई महाराजासाहब ने सालिम और यशवन्तरावको कईबेर बुलाकर समझाया था कि तुमकोई बात न जाहर न करना इस अवसरसे महाराजा साहब को इसबात केदरयाफ्त करनेका खूबमौक़ा मिलाथा कि मुख्य विष देने वालाकौन है ॥

२३ दिसम्बर को महाराजासाहब से इत्तिलाकीगई किआपकालास विषदिये जानेमें शामिलहै उससमयसे जबतक कि वहगद्दीपर रहे उन्होंने बहुधा दामोदरपंथ को आज्ञादी कि उनरक़मों को मिटादो जिनसे विषदेने का पतालगता होतो उसी समय हिसाबके कागज़ोंमें जहां २ सालिमका नामथा स्याहीडाली गई और वरक़फाड़े गये ॥

जबदामोदरपन्थसे पूछागया कितुमने सबरक़ क्योंनिकाल डालेतो दामोदरपन्थने उत्तरदिया कि पांचजगह परहिसाब रहताथा क्योंकर सब जगह से कागज़ निकाले जाते जो याददाश्त दफ्तरसे निकालदीजाती तोक्या फायदाथा पांच जगहका लिखाहुवा हिसाबक्योंकर निकलसक्ताथा बड़ीबेढंगी बात थी कि उन्होंने स्याही डालकर उनरक़मों को मिटाया जिससे पता लगसक्ता था कदाचित् इस बातका निश्चय नहीं होसक्ता कियह कामपुलिसवालों ने कियाहो क्योंकि पुलिस कोमालूम नथा किहिसाबोंके कागजोंमें किसजगह परविष देनेका लिखाहै इसलिये खूब साबित हुवाकि गायकवारकी आज्ञासे इन रक़मों पर स्याही डालीगई–और गायकवार आपही इसजुर्मके करनेमें संयुक्तथे ॥

इसजुमलके उपरान्त उनकोगवाहोंका जिक्रकरना जरूर है क्योंकि सरजन्टबेलनटायन साहबने गवाहीमें बहुत कुछ तक़रीरकीहै परन्तु मेरी इच्छा है किएक २ मनुष्यकी गवाही सच्चाईकोपहुंचाऊं और सरजन्टबेलनटायन साहबकी तक़रीरको खण्डनकरूं ॥

गुजरीं इससे प्रकट है कि दामोदरपंथने यह बात ठीक २ वर्णन कीहै क्योंकि उसनेअपने खासीकेलाभके लियेजरूर करके ऐसी बातोंपरग़ौर कियाहोगा इसलियेउसका यहबयान गलतनहीं होसक्ता सिवाइसके दामोदरपंथ के इजहारसे यहभी मालूम हुवाकि ९ नवम्बरको जबकरनैल साहबको विषदिया गयातो भीअही गायकवार को इसबात की इत्तिला होगई थी मगर और कामूमें हरसलुष्यको खबरहोगईथी किकरनैलफियरसा-हबकोविष दियागया परन्तु मालूमनथा किकिसने विषदिया जोगायकवारने विषनदियाहोता और उनकामन साफहोता तोफौरनगाडी परसवार हो करकरनैल साहब के पास जाते और इसबातकी मुबारकबादी देतेकि वह जहर से बचगये परइस मौकेपरजो महाराजा साहबने कारवाईकी वहबेकु-सूरआदमीके मानिन्द नहीं है अर्थात् वृहस्पतिवार तक वह ठहरेरहे और उसदिनजब मुलाकात कोगये तो और बातोंमें साधारणतौरपर विषकाभी जिक्रकिया उसकेदोदिन उपरान्त उन्होंनेसरकारी तौरसेखरीता भेजा कि मुजको आपके विष देनेकाहाल अब मालूम हुवा जो मेरेलायक कोईबात होतो उसकामके करनेकेलिये मैंउद्यतहूं इस खरीतेमें यहनहींलि खाकि मैंने कबसुना॥

दामोदरपंथ सचकहताहै कि महाराजा साहब ने ९ नव-म्बर को यहखबर पाईथी और यह बात गलतहै कि सालिम और यशवन्तरावने बाजारीखबर सुनकर गायकवारके रूबरू बयान कियाथा दामोदरपंथ ने अति विस्तार से वर्णन किया है कि गायकवार क्योंकर रेजीडन्सीसे घड़ी २ की खबरलेगा याकरतेथे और रावजीके छूटआने पर कितने प्रसन्न हुये और जबवह दुबारह गिरफ्तारहुवातो कितनी उनको चिन्ताहुई जबसूटर साहब बडौदे में आयेतो गायकवार को रावजीके लियेजितनी चिन्ताहुईथी उतनीहीसालिम और यशवन्तराव

यावीसदिनपहिलेसैंने सुनाथाकिकरनैलफियर साहबको विष दियेजानेका इरादाहै—अब्दुल्ला उसका पतिअपने इजहार में लिखाताहै कि १५ वा १८ रमजान कीथी॥

शेखदाऊद कहताहै कि दिवालीके चारदिन पहिलेआया गईथी ऐसेन्यूनअन्तरसे उनका बयान गलतनहीं होसक्ता इस बातका कदाचित् निश्चयनहींहै कियहगवाह पुलिसकेसिखाये हुयेहैं जोउनको पुलिसने सिखायाथा तो सब गवाह एकमत होकर एक तारीख बयानकरते हालांकि तीनतारीखेंगवहों ने बयानकीं और वहीसही मालूम होतीहैं सो ऐसानहीं हो सक्ताकि इससें किसीप्रकारकी गलतीका संदेह होसके—यदि गवाहपुलिसके सिखायेहुये होतेऔर तीनतारीखें भीउन्होंने सिखादीथीं तो पुलिस के लोग बड़े चतुरथे और उनकी बुद्धि सम्पूर्ण मनुष्योंकी बुद्धिसे अति तीव्रथी वहजरूर पूरीतालीम करते॥

एकदूसरी बातयहहै कि जो गवाह रेजीडन्सी के नौकरहैं उनकेलिये मेरेमित्रने वर्णनकियाहै किपहिलेसे उनकाइरादा करनैलफियरसाहबके विष देने का खुदथा तथाच जबसे मैंने उनकी गवाही सुनीमेराभी वहीखयालहै यहबात स्पष्टहै कि कोईमनुष्य अपनेस्वामीको प्रसन्नहोनेपर मारडालनेका उद्योग नकरेगा इनलोगोंका खौफजाहिरहै कि जब रावजीको विष सौंपागया तोउसने महाराजासाहबसे पूछाथा किविषशीघ्र- ही तासीरकरेगा परन्तु उससे कहागया कि नहींतीन चार महीनेके पीछेअसर करेगा सिवा इसकेजब रावजीको पुड़ियां दीगईथीं तोउससे कहागयाथा किउस पुड़ियोंको मिलालेना वह समझाकि पुडियामें जो श्वेतवस्तुहै वह संखिया है इस- लिये उसनेउस पुडियोंमेंसे केवल एकचोंचुटकी लेकरहीरेके चूर्णमें डालदी क्योंकि उसको यहभयहुवाहोगा कि अगरक- रनैलफियरसाहब मरजावेंगे तोबड़ा शोरगुलमचेगा औरमें

माईलार्ड—आपकीराय मेरीरायके अनुकूलहोगी कि सब हिन्दुस्तानियोंकी यहरीतिहै कि वह किसी तारीखआदिपर लिहाज नहीं रखते जो कुछ उनके मुंहमें आताहै कहदेतेहैं हिन्दुस्तानकी अदालतोंसे ठीकबातके मालूमकरनेकेलियेबड़ी दिक्कतहोतीहै विशेषकर उससमय जियादह मुशकिलहोती है कि कौन गवाह ठीक कहता है और कौन अशुद्ध वर्णन करताहै ॥

मेरेविचारसे सिवाय दामोदरपन्थके और कोई गवाहसिखायाहुवा नहीं है आया और दोनों पक्षवाले कम दरजे के आदमीहैं इसअवस्थामें आश्चर्य्यनहीं किचाहौ वहलोग सही कहतेहैंपरन्तुकुछएक दूसरेकी गवाही में अन्तर है जिसतरह कियूरोपियन गवाही देतेहैं और उनके खयालात सही होतेहैहिन्दुस्तानियोंके नहींहोसक्ते क्योंकि पहिलेसियूरोपियन कोताकीदके साथशिक्षा होतीहै हिन्दुस्तानी लोगवैसी शिक्षा नहीं पाते—जैसे कि सरजन्टबेलनटायनसाहबने तारीखका तजकराकिया कि तीन गवाह एक तारीख कहतेहैं और दो गवाह दूसरी तारीख बतातेहैं आप साहबों को यह बातभी मालूमकरनी चाहिये कि जबएक बातहोजातीहै तो उसके पीछे दिन वा तारीखका याद रहना कठिन है बहुधा हिन्दुस्तानीलोग जबपरस्पर वार्त्ताकरतेहैतो इसतरह कियाकरते हैं कि अमुक तेहवार से दस पन्द्रह दिन के पीछे अथवादस पन्द्रह दिन पहिले फलानी बात हुई थी—सोयह लोग बहुधा तेवहारोंपर हरकिसी बातकी गिनती रखते हैं पश्चात्ताप है कि इनलोगोंका ऐसा स्मर्ण खराबहै कि वह बातको बखूबी स्मर्णनहीं रखतेजिन जजसाहिबों को ऐसी गवाहियोंसे काम पड़ताहै तो वहऐसी गवाहियोंको फजूलनहीं समझतेकिन्तु समाअतके लायक समझते हैं ९—नवम्बर के पहिले जबआया गायकवारके पासगई थी तो उसकाबयानहै कि एकमहीना

हैं इसीतरह से एक ओरमहाराजा साहब दादाभाईनूरूजी जीसे काररवाई करतेथे औरदूसरी ओर दामोदर पन्थने ॥

उन्होंनेरावजी औरनरसूजीको एकदरजे में करार दिया था और आयाआदिको दूसरे दरजे में—और अजीबबात यह है कि गायकवार ने दामोदरपन्थको इस काररवाई में सरगरोह ठहराया था परन्तुरावजी आदिको दमोदर पन्थ से अलगरक्खा हरमनुष्य को एक दूसरे से न मिलने दिया वास्तवकरके गायकवार की होशियारी में कुछ संदेह नहीं उन्होंने खूबसोच समझकर यह कामकिया था ॥

करनैल साहब वर्णन करते हैं कि ६ और ७ नवम्बर को मेरी९ नवम्बरकीसो दवाहोगई थी रावजीने शायदइसदिन शर्बत में विष नडालाहो औरकिसी मनुष्यने डालदियाहो ॥

सरजन्ट मेलनटायन साहब ने इसबारे में जिक्र किया है कि करनैलफियरसाहब को विषकाहाल सुनते २इतनावहम होगयाथा कि जबवहकुछभी अलील होतेथे तोउनको विष के देनेकासंदेह होताथा ॥

मिस्टर सूटर साहब ने जब रावजी को बुलाया तो उसने वर्णनकिया कि मैंने ९—नवम्बर के पहिले दो पुड़ियां डाली थी क्याआश्चर्यहै कि वह—६ और ७—नवम्बरको डालीहों ॥

करनैलफियरसाहबको कुछ मालूम नथा कि मेरे शर्बतमें संखिया डालीजातीहै रेजीडन्सीके सम्पूर्ण सरकारीनौकरोंके साथउनकेनिजकेनौकरभी रिशवतदेकरसंयुक्तकरलियेगयेथे ॥

माईलार्ड—सरजन्टमेलनटायन साहबने सब गवाहोंकेग- वाहियोंको बिल्कुल गलतकरदिया और अदालतसेप्रार्थना कीहै कि किसीगवाहकी गवाही तसलीम नकीजावे ॥

पहिले मेरेविचारसे यहउचितहै कि अमीनाआयाकी ग- वाहीपर गौर कियाजावे ॥

पहिले अमीनाआयाकीगवाही मिस्टरसूटरसाहबने ली थी किसी पुलिसके और मनुष्यने उससे कुछबातभी नहीं की वह

खराबीमें पड़जाऊंगा जो थोड़ी संखिया दीजावेगी तो बीमार होकर इङ्गलिस्तानको चलेजावेंगे—इसउपायसे महाराजासाहबकीइच्छापूर्णहोजावेगी और मुझ को मेरापारितोषक भी मिलजावेगा वहगुफ़्गू सिरफ़विषकेलियेही नहींहैकिन्तुशीशी केलियेभी कहताहूं कि वहशीशीजिसकेलिये मेरेमित्रकहते हैं कि उसमेंहकीमजीकी दवाथी अर्थात् जबरावजीने देखाकि शीशीकी दोतीनबूंदोंनेमेरे उदरपर फफोलेडालदिये और उससेबड़ी जलनहोरहीहै तो अपनेबचावके लिये शीशीकीदवाको फेंकदिया॥

कमीशनके मेम्बरों को इसबात परभी ग़ौरकरना चाहिये कि जबपहिले महाराजासाहबने उनलोगोंसे विषदेनेकेलिये कहाथा तबलोग राजीनहींहुयेथे परन्तु जब महाराजासाहब ने उनको खूबकाबूकरलिया तब विषका जिक्रकिया कईदिन तक यहलोग महाराजासाहबको खबरें देतेरहे और महाराजा साहब उनको इसके बदले रिशवतें दिया किये जब खूब रिशवतदीगई तब महाराजासाहबने उनसे विषदेनेका जिक्र किया यह किसीभांतिसे इन्कार न करसके क्योंकि रावजीऔर नरसू उनके वशमें थे जो यह लोग महाराजा साहबका कहना नमानते तो यह सम्भवितथाकि महाराजासाहब रावजी और नरसूको उसके खबरके परचेके समेत जो वह लोग रेजीडन्सी से भेजा करते थे करनैल फ़ियर साहब के पास भेज देते और कहते कि आपके नौकर इनआम की आशा से मेरेपास यहखबरें भेजतेहैं या जब कि रावजी कचहरी से कागज़चुराकर लायाथा-तबरावजी को उस कागजके समेत भेज देते और कहते कि देखिये यह मनुष्य कागज चुराकर लायाहै औरहमसे रुपयेलेने की इच्छारखता है इससूरत में उनलोगों को सिवायइसके कि मारडालने का इक़रार करें औरकुछ उपाय नथा आयाऔर लोगों को मालूमनथा कि रावजी और नरसू गायकवार की ओरसे काररवाई कररहे

क्योंकि आयाडाक्टरसाहबकेमित्र कीनौकर थी उनके जाने और आयाकेदेखनेमें मेरेविचारसे कोईवेमौक्षा बातनहींजब उन्होंनेआयाको देखातो डाक्टरी की रीतिके अनुकूल मालूम कियाकि दैहिकरोगतो अधिकानहींहै उसकेमनमें कोई बात है उसको वहप्रकट करनाचाहती है औरइसीहेतु से उसेबड़े वेगसेज्वर आगयाहै—डाक्टरसीवर्ड साहब औरमिस्टर सूटर साहबमें कोईगुप्तभेद की बातनथी जब डाक्टरसीवर्ड साहब कोमालूम हुवा किआया कुछ कहना चाहती है तो उन्होंने तुरन्तहीमिस्टर सूटरसाहबको बुलायाजब मिस्टरसूटर साहब अस्पतालमेंगये तोकलमकागज अपनेसाथ नहीं लेगयेथे जो कुछआयाने उनसेकहा उसकोमिस्टर सूटरसाहबनेसुन लिया और दूसरेदिन उन्होंनेउस बयानको लिखलिया अब सरजन्ट वेलनटायनसाहबकहते हैं किवहइजहार जो आयाने मिस्टर सूटरसाहबके रूबरूदियेथे उनइजहारोंसे मिलाये जावें जो उसनेकमीशन के रूबरूदियेथे शायदसरजन्ट वेलनटायन साहबके रूबरू उसमें कुछअन्तर होगा परन्तु मेरे विचारसे कुछ अन्तर नहींहै॥

जोइजहार कि मिस्टर सूटर साहब ने लिखेहैं उनके लिये सूटरसाहब कहतेहैं कि मैंने आयाका बयानसुन लिया और अंगरेजी में लिखलिया लफ्ज़ीतर्जुमा नहीं किया॥

मिस्टरसूटरसाहबने पहिले उसकेइजहारलियेतो आया बी-मारथी उससमयजोउसने वर्णन किया उसकोभी स्मर्णहोगा जैसामिस्टर सूटरसाहबको यादहै जबमिस्टर सूटर साहबने सुनाकि कईगाड़ीवालेआयाको सवार करकेरमजानकेमहीने मेंगायकवार केपासलेगये तोउसीसमय वहआयाकेपास गये परन्तु उसको बहुतबीमार पाया जब उससेकुछहाल पूछातो निश्चयहुआ किआया महाराजासाहब केपासगईथी औरकुछ रुपयाभी उसने पायाथा केवल इतनाही हाल पूछकर मिस्टर सूटरसाहब चुपहोरहे क्योंकि सूटर साहब उसके बीमारहो जानेसेउससे जियादह हालनपूछसके उसकेदो दिनकेउपरान्त आया और जियादह बीमारहोगई और उसको अस्पताल में लेगयेतथाच मिस्टरसूटरसाहब भीउसकेपास हस्पतालमें गये और उसकेइजहार लिखलिये जिसपर (डी) अक्षर नम्बर२का निशानहै अगरयह खयालकिया जायकिपुलिसने वहइजहार आयाकेजो उसने १८ दिसम्बरको दियेथे बनायेहैंतो बिल्कुल गलतहै क्योंकि जबउसको बड़ेजोरका बुखारथा तो क्योंकर पुलिसकेलोग उसको सिखाते इसके सिवाय पुलिस वालों को इसमुकद्दमेका हालमालूमनथा तोवह क्यासिखाते॥

पहिले पुलिसको शेखदाऊद गाड़ीवाले से पतालगाथा कि वहआयाको गायकवारके पासलेगया था फिर आयाके इज-हारलिये गयेफिर और लोगोंसे पूछागया जबमालूमहुवाकि इनलोगोंके इजहारोंमें कुछफरकनहीं हैइससे तहकीकातका सिलसिला आगेकोचला पुलिस का सिपाही जिसके पहिरे में आयाथीएक छोटासासिपाही था उसको आयाकेसिखाने की क्यातमीजथी डाक्टरसीवर्डसाहबजो आयाकेदेखनेकोगयेथेइस विषयमें मेरेमित्रने बहुतकुछ कहाहै यहसुनकर मुझकोबड़ा आश्चर्य्यहुवा परन्तु यह बातकुछ अजीबन थी डाक्टर सीवर्ड साहब को योंही साधारण रीत से आया के देखने को गये

ने भी अपने बयान में उसके इजहार की सिदाक़त की॥

माईलार्ड—आपको याद होगा कि सरल्यूइसपीली साहब रावजी के इजहारों के लिये क्या कहते हैं उसको इजहार के पहिले असलीहाल दरयाफ्त होने की कुछ आशा नथी कि किस मनुष्य ने विषदिया है इसलिये मिस्टर सूटर साहब और सरल्यूइसपीली साहब—२३—दिसम्बर को बड़े दिनकी छुट्टियों में बम्बई जाने वाले थे जब रावजी के इजहार से मालूम हुआ तो सरल्यूइसपीली साहब ने कहा कि इस मनुष्य के बयान को मैं कलसुनूंगा आया वह गलत है या सहीतथाच दूसरे दिन उन्होंने रावजी को बुलाया और आप उसकी बातों को सुना सरल्यूइसपीली साहब कहते हैं कि रावजी ने उससमय उसीतरह बयान किया जैसा कि कमीशन के मेम्बरों के रूबरू इजहार दिया जब रावजी से उसका बयान सुना गया तो सूटर साहब ने उसको गिरिफ्तार किया और मालूम हुवा कि इस मनुष्य ने बाजार में बहुत सा रुपया खर्च किया है इसी मनुष्य के बयान पर नरसू पकड़ा गया जहां और रेजीडन्सी के नौकर कैद थे उसी जगह रावजी और नरसू भी कैद किये गये नरसू एक पुलिस के अफसर के साथ रावजी के पास भेजा गया और दोनों का साम्हना कराया गया रावजी ने कहा कि मैंने गले २ पानी में कबूल कर लिया तभी इक़रार कर इससे पहिले रावजी और नरसू की कुछ वार्त्ता नहीं हुई॥

हैं जो कि किसी हिंदुस्तानी से पूछा जावे कि संखिया और जादू क्या वस्तु है तो बहुत कुछ हाल वह बतला देगा और उसपर अपना निश्चय प्रकट करेगा इसी प्रकार महाराजा साहबने आया से पूछा था कि जो कारनेल फियर साहबपर कोई मंत्र अथवा जादू किया जावेगा अथवा नहीं इससे उनका यह प्रयोजन था कि जो कोई वस्तु उसको देंतो तुम साहब के खाने में डालदो गे सर-जन्ट वेलनटायन साहब इसबात का भी जिक्र करते हैं कि पुलिसवालोंने आयापर सखती की थी यह बात बिल्कुल गलत है आया ने इस सखी का कहीं जिक्र नहीं किया पुलिसवालों ने केवल इतनाही आयासे कहा था कि तुमने धूमकार रक्खी है इस बात को आया समझी थी कि कुछ पुलिस वाले उसको धमकाते हैं जब उससे कमीशनके रूबरू धमकी का हाल पूछा गया तो आयाने कहा कि मुझको किसी मनुष्यने नहीं धमकाया आया से यह भी पूछा गया कि तुमको किसी मनुष्यने पहिले धमकाया था तो आयाने कहा मुझको किसीने नहीं धमकाया॥

मेरे विचारसे आयाकी संपूर्ण गवाही निश्चय मानने के योग्य है और कोई सन्देह उसमें नहीं है॥

पुलिसने उसको कदाचित् नहीं धमकाया किन्तु साधारण-तौरसे उससे सब बातें पूछीं।

दूसरा गवाह रेजीडन्सी का एक चपरासी है यह चपरासी बहुत बड़ा गवाह है अर्थात् रावजी जिसने बहुत बड़ी गवाही दी हरचन्द यह मनुष्य रेजीडन्सी का एक चपरासी था परन्तु उसने बाजार में बहुत रुपया खर्च किया जब पुलिसने तहकीकात की और मालूम हुआ कि इस मनुष्यने बहुत सा रुपया उठाया है तो २२ दिसम्बर को यह मनुष्य पकड़ा गया जो कुछ उसने इजहार दिया वह सफे ८०-तहरीर जूडनवीस में मौजूद है उसमें रावजी ने खूब साफ तौरसे वर्णन किया है कि फटरसाहब के सन्मुख क्योंकर उसने इजहार दिये और मिस्टर फ्टर साहब

आज्ञासे यहमनुष्य मिस्टरऐडगैन्स्टन साहबकेपासगया उसको खानसाहब लिगयेथेजबउसको मालूमहुवाकि जोमैं इकरार करताहूं तोमेरेलिये हानिहोगी तब उसनेइन्कारकियाथाकि मेरीनौकरीऔरप्रतिष्ठा बनीरहै परन्तु बिपदियेजानेके पहिले बहुतसे लोगवर्णन करतेहैं किपेडरू महाराजा साहब कानौकरहै औरमहाराजा साहबउसका बड़ासन्मानकरतेथेकिन्तु उसनेवर्णनकियाथा किमैंने महाराजासाहबसेकुछपारितोषकपाया यदि इस मनुष्यने कोई काम नहीं किया और किसी कामकी महाराजा साहबको उससेआशा नथीतो उसको क्यों पारितोषक दियामहाराजा साहब को निस्संदेह इससे कुछ आशाहोगी औरउन्होने किसीकामके लियेकहा होगा कमीशनकेमेम्बरों कोपेडरू केइजहारसे साबितहुवा होगाकि यह बहुतसे हालोंको जानताथा परन्तु किसी बातका उसनेइकरारनहींकिया रावजीने जोइजहार दिये वहबिल्कुल ठीकहैं पेडरूकहताहै किमुजसे सालिमने कईबेर महाराजा साहब केपास चलनेकोकहा परन्तु मैंनेइकरार नहींकिया ॥

प्रेजीडण्ट साहबने प्रश्नकियाकि जोइजहार आया केमिस्टर सूटरसाहबके रूबरूलियेगये उसमेंकुछ जिक्र पेडरू काथाऐडवकेट जनरल साहबने कहा किजब आया केइजहार मेंप्रश्न कियेगयेतो उसनेपेडरूका कुछजिक्र कियाथा और७वें पृष्ठमें बयान लिखाहुवाहै ॥

उसकोऋसीयाद् रहना कठिन था इसलियेमेरे विचारसे उसके इजहारबिल्कुल ठीकहैं औरकिसी प्रकार की बनावट उसमें नही पाई जाती ॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब ने रावजी के इजहार पर बहुत कुछदुरुस्तगू की है जिसमें उसनेपेडरू का जिक्रकिया हैपरन्तु रावजीने अपना इजहारसाफ़ तौर से लिखाया है ॥

सरजन्टबेलनटायन साहब पेडरू के विषय में कहते हैं कि सच्चागवाह एकयही है दूसरा कोई गवाह सच्चा नहींहै ॥ रावजी पेडरूपर तोहमतरखताहैकिवहमेरे साथगायकवार केमहलकोगयाथापरन्तु पेडरूजानेसे इन्कारकरताहै परन्तुमुझ कोइसका कारणमालूम नहींकि सरजन्ट बेलनटायन साहब क्योंकरकहतेहैं किपेडरूकीगवाहीनिश्चय माननेकेयोग्यहैमैंने सबगवाहोंको पेशकियापरन्तु किसी गवाही की खसूसियत नहींकी कि अमुकगवाह निश्चयमाननेके योग्यहै और अमुक गवाह बेएतिबारहैं औरइनही लोगोंके इजहारपरगवर्न्मेण्ट इण्डियाने इस मुकद्दमेकी तहकीकातकी आज्ञादीथी मैं इस बातको तसदीक नहींकरसक्ता किअमुक गवाह प्रतिष्ठित है औरअमुक गवाहप्रतिष्ठितनहीहै बहरहाल पेडरू २५ वर्षका पुराना नौकरहै औरकमीशनको अखतियारहै कि उसगवाह कोप्रतिष्टित गवाहसमझे यह मनुष्य कहताहै किराव जीने जोकुछ मेरीनिस्बत बयानकिया वहबिल्कुल गलतहैयहशख्स कहताहै किमैं कभी महाराजा साहबकेपास नहीं गया वह खूबजानताहै किजोमैं इकरारकरूंगातो मुझकोकष्ट भुगत नापड़ेगाअगरइस शख्सकेइजहार मिस्टरऐण्डरसनसाहबकेरू बरूलिये गयेतो जरूरनहींहै किउसका बयानसच्चहो छोड़न साहबकी जितनी प्रशंसाकीगई वास्तवमें वह इसी प्रशंसाके योग्यहैं अगरपेडरू मिस्टरसूटर साहबके रूबरू इजहारदेता तोनिश्चयहै किठीकठीक बयानकरता मिस्टरसूटर साहबकी

आज्ञासे यहमनुष्य मिस्टरऐडगैन्स्टन साहबकेपासगया-उसको खानसाहब लेगयेथेजबउसको मालूमहुवाकि जोमैं इकरार करताहूं तोमेरेलिये हानिहोगी तब उसनेइन्कारकियाथाकि मेरीनौकरीऔरप्रतिष्ठा बनीरहै परन्तुविपदियेजानेकेपहिले बहुतसे लोगवर्णन करतेहैं किपेडरू महाराजा साहबकानौकरहै औरमहाराजा साहबउसका बड़ासन्मानकरतेथेकिन्तु उसनेवर्णनकियाथा किमैंने महाराजासाहबसेकुछपारितोषकपाया यदि इस मनुष्यने कोई काम नहीं किया और किसी कामकी महाराजा साहबको उससेआशा नथीतो उसको क्यों पारितोषक दियामहाराजा साहब को निस्संदेह इससे कुछ आशाहोगी औरउन्होने किसीकामके लियेकहा होगा कमीशनकेमेम्बरों कोपेडरू केइजहारसे साबितहुवा होगाकि यह बहुतसे हालोंको जानताथा परन्तु किसी बातका उसनेइकरारनहींकिया रावजीने जोइजहार दिये वहबिल्कुल ठीकहैं पेडरूकहताहै किमुजसे सालिसने कईबेर महाराजा साहब केपास चलनेकोकहा परन्तुमैंनेइकरार नहींकिया॥

प्रेजीडएट साहबने प्रश्नकियाकि जोइजहार आया केमिस्टर सूटरसाहबके रूबरूलियेगये उसमेंकुछ जिक्र पेडरू काथाएडवकेट जनरल साहबने कहा किजब आया के इजहार मेंप्रश्न कियेगयेतो उसनेपेडरूका कुछजिक्र किया था और ७वें एष्ठमें बयान लिखाहुवाहै॥

नहीं है परन्तु इतनाही कि जो आवश्यक और उचित है॥

नारपेडरू विष देनेमें संयुक्त न था तो उसको पारितोषक क्यों दियागया और यहबातभी दरयाफ्त तलबहै कि रावजी का क्या प्रयोजनथा कि पेडरू को अपराध लगाता रावजीने पेडरूका जिक्र नरसूआदिके सहभकिया॥

अबदो बजगये हैं जोमंजूर होतो थोड़ीदेरके लिये अदालत बरखास्तहो तथाच अदालत टिफनखानेके वास्ते बरखास्त हुई॥

टिफन खाने के उपरान्तजब अदालत एकत्र हुईतोसाहब ऐडवकेट जनरल फिर तकरीर करने लगे प्रेजीडण्ट साहब ने पूछा कि जाहिर कियागया है कि नरसूकी गवाही २३ दिसम्बर को लीगई परन्तु मिस्टर सरल्यू इस पीली साहबके बयान से मालूम होता है कि २४ दिसम्बरको उसके इजहार लिये गये—साहब ऐडवकेट जनरलनेकहा नरसू के इजहार मिस्टर सूटर साहब केरूबरू २३ दिसम्बर को हुये थे॥

प्रेजीडण्टसाहबने कहा मिस्टरसूटर साहबनेवर्णनकियाहै कि जबनरसूके इजहारलिये गएतो सरलूइसपीलीसाहबउपस्थितथे साहबऐडवकेट जनरलनेकहा—२४दिसम्बरकोवृहस्पतिवारथा और महाराजासाहबकी मुलाकातकादिनथा इसलिये मिस्टरसूटर साहब गलतीपर हैं और सरल्यूइसपीली साहब ठीक कहतेहैं कल्पना कीजिये कि २४दिसम्बर को नरसूके इजहार लियेगये तौभी अदालतको किसी प्रकार का एतिराज नहीहै॥

सरजन्ट वेलनटायन साहबबहुत कुछ शीशीका जिक्रकरते हैं परन्तु मेरेविचारसे मेरेदोस्त बड़ीगलतीपर हैं दामोदरपन्थकी गवाहीसे प्रगटहै कि जबउसके पासगजावा शीशीलाया तो वह शीशी कुछ बड़ीथी इसलिये दमोदरपन्थ ने इसशीशी की दवा दूसरी छोटीशीशीमें करदी इसशीशी में गुलाब का अतररहतापायहशीशीखासगुलाबकेअतरकीनथीअर्थात्‌जैसा मेरे मित्रकाख्यालहैकिदोतीनकतरेअतरके उसमेंहोंगेऔरजो

आज्ञासे यह मनुष्य मिस्टर ऐडगैन्स्टन साहबके पास गया-उसको खानसाहब लेगये थे जब उसको मालूम हुवा कि जो मैं इकरार करता हूं तो मेरे लिये हानि होगी तब उसने इन्कार किया था कि मेरी नौकरी और प्रतिष्ठा बनी रहे परन्तु विपद् दिये जाने के पहिले बहुत से लोग वर्णन करते हैं कि पेडरू महाराजा साहब का नौकर है और महाराजा साहब उसका बड़ा सन्मान करते थे किन्तु उसने वर्णन किया था कि मैंने महाराजा साहब से कुछ पारितोषक पाया यदि इस मनुष्यने कोई काम नहीं किया और किसी कामकी महाराजा साहबको उससे आशा न थी तो उसको क्यों पारितोषक दिया महाराजा साहब को निस्संदेह इससे कुछ आशा होगी और उन्होंने किसी काम के लिये कहा होगा कमीशन के मेम्बरों को पेडरू के इजहार से साबित हुवा होगा कि यह बहुत से हालों को जानता था परन्तु किसी बात का उसने इक़रार नहीं किया रावजीने जो इजहार दिये वह बिल्कुल ठीक हैं पेडरू कहता है कि उससे सालिमने कई बेर महाराजा साहब के पास चलने को कहा परन्तु मैंने इकरार नहीं किया॥

प्रेजीडण्ट साहबने प्रश्न किया कि जो इजहार आया के मिस्टर स्कूटर साहबके रूबरू लिये गये उसमें कुछ जिक्र पेडरू का था ऐडवकेट जनरल साहबने कहा कि जब आया के इजहार मेंप्रश्न किये गये तो उसने पेडरू का कुछ जिक्र किया था और ७ वें एठमें बयान लिखा हुवा है॥

नहीं है परन्तु इतनाही किजो आवश्यक और उचित है ॥

अगरपेडरूविष देनेसेंसंयुक्तन याता उसको पारितोषक क्यों दियागया और यहबातभी दरयाफ्त तलबहैकि रावको क्याप्रयोजनथा कि पेडरू को अपराध लगाता रावजीने पेडरूका शिक्षा नरसूआदिके सहशकिया ॥

अवदो बजगये हैं जोसंमूर होतो थोडीदेरके लिये अदालत बरखास्तहो तथाच अदालत टिफनखानेके वास्तेबरखास्त हुई ॥

टिफन खाने के उपरान्तजबअदालत एकत्र हुईतोसाहब ऐडवकेट जनरल फिर तकरीर करने लगे प्रेजीडण्ट साहब ने पूछा किजाहिर कियागया है किनरसूकी गवाही २३ दिसम्बर को लीगई परन्तुमिस्टर सरल्यू इस पोली साहबके बयान से मालूम होता हैकि २४ दिसम्बरको उसके इजहार लिये गये—साहब ऐडवकेट जनरलनेकहानरसू के इजहार मिस्टर सूटर साहब केरूबरू२३ दिसम्बर को हुये थे ॥

प्रेजीडण्टसाहबने कहा मिस्टरसूटर साहबनेबर्णनकियाहै किजबनरसूके इजहारलिये गएतो सरलूइसपोलीसाहबउपस्थितथे साहबऐडवकेट जनरलनेकहा--२४दिसम्बरकोवृहस्पतिवारथा और महाराजासाहबकी मुलाकातकादिनथाइसलिये मिस्टरसूटर साहब गलतीपर हैं और सरल्यूइसपोली साहब ठीक कहतेहैं कल्पना कीजिये कि २४दिसम्बर को नरसूके इजहार लियेगये तोभी अदालतको किसी प्रकार का एतिराज़ नहीं है ॥

सरजन्ट वेलनटायन साहबबहुत कुछ शीशीका जिक्रकरते हैं परन्तु मेरेविचारसे मेरेदोस्त बडीगलतीपर हैं दामोदरपन्थकी गवाहीसे प्रगटहै कि जबउसके पासगजाबा शीशीलाया तो यह शीशी कुछ बडीथी इसलिये दमोदरपन्थ ने इसशीशी की दवा दूसरी छोटीशीशीमें करदी इसशीशी में गुलाब का अतररहताथायहशीशीखासगुलाबकेअतरकीनथीअर्थात्जैसा मेरेमित्रकोखयालहैकिदोतीनकतरेअतरके उसमेंहोंगेऔरजो

टरकी और ईरानमेंनियादह बिकतीहै अगरऐसीछोटीशीशी होतीतो वह इसकाममेंनलाईजातीदामोदरपन्थअपनेइजहा-रमेंवर्णनकरताहैकि वहशीशीएक उंगलीकेबराबरथीइसलिये मेरेदोस्तकाखयालबिल्कुल गलतहै यहशीशीबहुतछोटीन थी औसतदरजेकीथीउससेअधिकवस्तुआसकीथीयदियहशीशीइ-तनीबड़ीथीऔरउसकेमुखपर रुईऔरमोमलगाहुवा थाइसवा-स्तेजबरावजीने उसकोनेफेमें रक्खाहोतो शायदथोड़ीबूंदेंबा-हरनिकलीहों और रावजीके पेटपरवह दवालगगईहो डा-क्टरग्रेसाहबने रावजीकापेटदेखा और कहाकियह निशान पेटपरविषसेमालूमहोताहै और कहाकिजिसतरहकी शीशी से इसनिशानका होनाबयानहुवाहै उसशीशीसे यहनिशान पड़गया हो॥

इसनिशानकेलियेबहुतकुछ बयानहुवाहै सुतरज्जिमने ग-लतीसे तर्जुमाकिया कि पेटपरफफोला था परन्तु जोतर्जु-माशुद्धहोता तो फफोला न लिखाजाता किन्तु फोड़ासमझा जाता क्योंकि जबपेट अथवा शरीरकाकोई भागजलजाता है तोफफोलापड़ता है फोडानहींहोता इससेखूबतसदीक हुवा किजहरकीवजहसे रावजीकेउदरपर फोडाहुवाथा सिवायइ-सके जबडाक्टरग्रेसाहब ने रावजीकेपेटको देखकरअपनी राय बयानकीतो तबतक दामोदरपन्थके इजहार नहीं हुयेथेफिर क्योंकर रावजीजानता कि दामोदरपन्थ क्या कहेगा॥

हकीमने जो दवाईबताई थी और दवा और जहरोंमें से एकसंखियाभी थी रावजीको मंजूरन था कि करनैलफियर-साहबको कोईऐसी वस्तुदीजावे जोतुरन्तही अपनाकाम कर जावेइसीसे उसशीशीकी दवाफेंकदी अगरउसको अपनीअम-तिहाका विचार न होतातो नहानेकेसमय दवाकोडाल देता परन्तु उसनेदवाको फेंकदिया और नरसूसे कहा होगाकि मैंनेदवा टबमेंडालदी ताकि वहमहाराजा साहबसे शिका-यत न करे॥

नहीं है परन्तु इतनाही लिखो आवश्यक और उचित है॥
अगरपेड्रहविष देनेसेंसयुक्त न घाती उसको पारितोषक क्यों दियागया और यहबातभी दरयाफ्त तलबहैकि रावजी का क्या प्रयोजनथा कि पेड्रू को अपराध लगाता रावजीने पेड्रूका निग्रह नरसूआदिको नहींकिया॥
अबदो बजगयेहे जोमंजूर होतो थोडीदेरके लियेअदालत बरखास्तहो तथाच अदालत टिफनखानेके वास्तेबरखास्त हुई॥
टिफन खाने के उपरान्तजबअदालत एकत्र हुईतोसाहब ऐडवकेट जनरल फिर तकरीर करने लगे प्रेसीडण्ट साहब ने पूछा किजाहिर कियागया है किनरसूकी गवाही २३ दिसम्बर को लीगई परन्तु मिस्टर सरल्युइस पीली साहबके बयान से मालूम होता हैकि २४ दिसम्बरको उसके इजहार लिये गये—साहब ऐडवकेट जनरलनेकहा नरसू के इजहार मिस्टर सूटर साहब केरूबरू २३ दिसम्बर को हुये थे॥
प्रेसीडण्टसाहबने कहा मिस्टरसूटर साहबनेवर्णनकियाहै किजबनरसूके इजहारलिये गएतो सरलूइसपीलीसाहबउपस्थितथेसाहबऐडवकेट जनरलनेकहा—२४दिसम्बरकोबृहस्पति वारथा और महाराजासाहबकी मुलाकातकादिनथाइसलिये मिस्टरसूटर साहब गलतीपर हैं और सरल्यूइसपीली साहब ठीक कहतेहैं कल्पना कीजिये कि २४दिसम्बर को नरसूके इजहार लियेगये तौभी अदालतको किसी प्रकार का एतिराज़ नहीहै॥
सरजन्ट वेलनटायन साहबबहुत कुछ शीशीका जिक्रकरते हैं परन्तु मेरेविचारसे मेरेदोस्त बडीगलतीपर हैं दामोदरपन्यकी गवाहीसे प्रगटहै कि जबउसके पासगजाबा शीशीलाया था वह शीशी कुछ बडीथी इसलिये दमोदरपन्य ने इसशीशी की दवा दूसरी छोटीशीशीमें करदी इसशीशी में गुलाब का अतररहताथायहशीशीखासगुलाबकेअतरकीनथीअर्थात्जैसा मेरेमित्रकाख्यालहैकिदोतीनकतरेअतरके उसमेंहोंगेऔरजो

असम्भवितहै अकबरअलीएक तजुरवेकार अफसरहै जबउसने सुनाकिरावजी पुड़ियोंको अपनीपेटीमेंरखता करताथातोतीव्र वुद्धिसेउसने उसपेटीको देखना चाहाथा कि मालूम करे कि आयापुड़िया काविष बाहरनिकालकर पेटीमें रहगयाहै या नहींक्योंकि उसको मंजूरथा किवखूबी इसबातको साबितकरे किउसने विषदिया वानहीं रावजी के इकरार परही मंजूरथाकि उसपर एकवहुत बड़ाअपराध कायमकिया जावे और अकबरअलीके लिये कदाचित् खयालनहीं होसक्ता कि उसने कुछ चालाकी कीहै क्योंकि उसको उससमय मालूमथा कि मिस्टरसूटरसाहब आवेंगे और फिरलौट करचले आवेंगेकमीशनके मेम्बरोंकोस्मर्ण होगाकियह सबबातेंक्योंकर हुईंयह बात विचारमें नहीं आती किवहशख्स पेटीके लेनेको गयाथा उसनेविषकी पुड़ियापेटीमेंरखदीहो जबपेटीमंगवाईथी मिस्टरसूटरसाहब उस कमरेमें थे जहांकि तहकीकात होती थी और उन्होंनेविचारा होगाकिपेटीमें क्या निकलेगा इसलिये मुंहधोने और वस्त्रबदलने केलिये दूसरे कमरेमें चलेगये क्यों किहाजिरीका समयआगया था और मुखकेधोने और कपड़ा केवदलनेमें पन्द्रहअथवा सोलह मिनट व्यतीत हुयेहोंगे इसी समयान्तरमें पेटीआई और उसकोदेखा गया अकबर अलीने उसपेटीको सबजगहदेखाजब उनकोकहीं जेबआदिनमालूम हुईतो रावजीसे पूछाकिजुजदानेबटुआमें कहां है और पुड़ियों को कहां रखता था जब रावजीने जेबको बताया तो उन्होंने उगलियांडाल करउसको फाड़ातो उसमेंसे एकपुड़िया निकलीतुरन्तही मिस्टरसूटर साहबको उन्होंनेबुलाया औरमिस्टर सूटरसाहबने उसपुड़ियाको जेबसेनिकाल करदेखातो उसमें उसीभांतिका विषथा जैसाकि करनेलफियर साहबकेगिलास मेंडालागयाथा जो मुन्शिसने कुछकारवाई कीतो वहक्योंकर मालूम कर सक्ताकि अमुक प्रकार की संखिया करनेलफियर

कुछसंदेहनहीं कि जब करनैलफियरसाहबके माथेपर फोड़ा था तो महाराजा साहबके राज़ीकरनेके वास्ते निस्संदेह फोड़े कीदवा में संखिया डाला होगा क्योंकि करनैलफियर साहब फोड़ेपरनक्सलगातेथे तोउससे संखियेकाडालदेना कुछकठिन नथा फिरउन्होंने महाराजासाहबसे बयान किया होगाकि हमनेइसप्रकारकी काररवाईकी और उससमय दामोदरपंथ नेसुनाहोगानहीं तो दामोदरपंथको करनैलफियरसाहबके फोड़े काहाल क्यामालूम होता क्योंकि ऐसा नहीं होसक्ता था कि दामोदरपंथ एकगलत बयानकरता जिसकीतारीखवगैरहसब दुरुस्त होतीं कि करनैलसाहबने क्योंकर फाहा लगाया और किसतरह उनकोउससे जलनमालूमहुई—कितनाही मेरेमित्र नेरावजीके इजहारको बहुतकुछखंडन करनाचाहापरन्तु जितनाकिउन्होंने रद्दकरनाचाहाउतनीही उसकेबयानको मज़बूती और सिदाकतहुई और रावजीके इजहार और उसकी बातरद्दनहीं होतीजब शीशीदीगई थीतो रावजीने अपनेइजहारमेंशीशीके दियेजानेकी तारीखबयानकी यहतारीखकरनैलफियरसाहबके फोड़ेकेदिनोंसे मुताबिक़है यदियह विचार कियाजावे कि यहसब बातेंपुलिस की गढ़ी है तोडाक्टरसीवर्डसाहब और पुलिससे साजिशहोगी और उन्होंनेकहदिया होगाकि मैंनेफोड़े का किसभांति से इलाज किया और इस बात काभीनिश्चयनहीं आताकिपुलिसने क्योंकर दामोदरपंथ कोसिखायाहोगा और क्योंकर दामोदरपंथने मिस्टररिचीसाहब और कमीशनके सम्मुखएक साबयानकिया॥

सरजस्टवेलनटायनसाहब ने पेटीकेलिये भीबहुत कुछजिक्र कियाहै मेरे मित्र यहबात प्रगटकरना चाहतेहैं कि मिस्टरसूटर साहबकोभी इसमुआमले में साजिशथी और वहचाहतेथेकि जुर्म साबित होजायपरन्तु मैंनहींकहसक्ता कि मिस्टरसूटर साहबने इसतरहकामेल क्योंकियाहोगा मेरेविचारसे यहबात

को खर्च होगा कि फैजूमहाराजासाहब के दरबारका नौकर था और उसका एक पुत्रभी महाराजा साहबके पासनौकरथा यहलड़का बिल्कुलकमउमर था तनखाहमिलनेके लिये उसका नामनौकरोंमेंथा इसीवजहसे रेजीडन्हीके नौकरोंका गुमान फैजूके लिये गलत न था ईश्वर नचाहे रावजीके ओरसे मैंकुछ उज्रनहींकरताहूं किन्तु केवलइतनाही जाहिर करताहूं कि सरजन्टबेलनटायनसाहबने कहाहै कि उसकाइजहार निश्चय माननेके योग्यनहींहै और मैं कहता हूं कि उसका इजहार निश्चयमाननेके लायकहै जो कमीशनके मेम्बर सब इजहारको गलतकरदें तो उसका इजहारभी गलतहै नहीतो मेरेबिचार से उसकेइजहारमें कोईझूठ और गलतीनहींहै॥

ऐडवकेटजनरलसाहबनेकहाकि चारबजगयेहैं और जबतक किऐड्रेसकोसंक्षेप नकरूंगापूर्ण नहोगा प्रेजीडण्टसाहबनेकहा कि आप उसेमुखतसिर न कीजिये आज अदालत बरखास्त की जावे-सरजन्टबेलनटायनसाहबनेकहा मैंठीक२ कहताहूं किमेरेदोस्तने एकघण्टाअपनेवक्तमें वृथा नखोयाथा आज अदालत बरखास्त हुई॥

साहबको दीगई है कदाचित् विश्वास नहीं आता कि पुलिसके लोग इतने चालाक हैं इसलिये मुझको निश्चय है कि कमीशनके मेम्बर सरजन्टमेलनटायन साहबकी इसतकरीरपर कुछ लिहाज न करेंगे यह पेटी रावजीसे ९—नवम्बरको लीगई और मोदरको दीगई तब ने मादरके पास यह पेटीरही खानबहादुर अकबर अलीने लीथी २ कारग्वाईके सिवाय और कोई चालाकी नहीं की जबपुड़िया पेटीमें मिलीतो खानबहादुर अब्दुलअली और गजानन्द बिठल उपस्थितथे सरजन्टमेलनटायन साहब ने उन दोनोंमनुष्योंसे प्रश्न किये जेरेबिचारसे जोविषकी पुड़ियारावजीकी पेटीमें मिलीउसमें कोई चालाकी नहींहुई उसपुड़िया में वही विषथा जो उसने करनैलफियरसाहबको दियाथा॥

सरजन्टमेलनटायनसाहबको चाहियेथा कि रावजीके इजहारपरखूबग़ौर करकेएतिराज़ करतेजो इसमुकद्दमेमें पुलिस की कारवाई होती तो इसपुड़िया में संखिया और हीरेका चूर्णभी अवश्य होता न केवल संखिया इससंखियेका मिलना रावजीके बयानकेमुआफ़िकहै क्योंकि उसनेबयान कियाहैकि थोडी २ संखिया हीरेके चूर्णमें मिलाई थी और बाकीको रख छोड़ाथा तथाचपुलिसको वहीपुड़िया मिली फिर क्योंकर यह बातहोसक्तीहै कि पुलिसने चालाकी करकेपुड़ियाको रखदिया यहभीकच्चा विचारहै॥

कमीशनके मेम्बरोंको स्मर्ण होगा कि रावजीने वर्णनकिया हैकि मैंअपनेहाकिमको एकदम्मेमारडालना नहींचाहताथा रावजीने थोडी २ संखिया पुड़ियोंमें डालीथीजब करनैलफियर साहबने ९—और १० नवम्बरको इजहारलिये तो उसने फ़ैजूपर तोहमत रक्खीथी कि उसने बिषदियाहै यहतोहमत उनकी झूठीथी परन्तु जबख्याल कियाजाताहै कि पहिलेफैजू कईबेर साबूत होचुकाहै और यहशख्स बदमुआश मशहूरथा इसी सबबसे नौकरोंको उसकेबिष देनेका निश्चयथा कमीशनकेमेम्बरों

सरजन्टवेलनटायन साहब उसके कुवेंमें गिरनेपर बड़ाहास्य करतेहैं कुवेंकेगिरनेसें जोगवाही पेशहुई उसमें बड़ाअन्तरहै नरसू वर्णन करताहै कि जिसदिनमेरे इजहार लिये गये मैं कुवेंकी ओर जाताथा मेरेमनमें यहआया किइतनीबड़ी अवधि के उपरान्त मेरे भाग्यमें यहबदनामी लिखीथी जबमैंने वहां अपने साथियों को देखा तो नेत्र मेरे साम्हने न होसके तो मुझे यही उचित मालूम हुवा कि ऐसे जीने से डूब मरना उत्तमहै सरजन्टवेलनटायनसाहबने अपनी सोचमें इस बात कोभी साबित करनाचाहाहै कि नरसूका यहभीएक फरेब है यदि वास्तवमें वह कुवेंमें गिरा तो अकस्मात् गिरा जान बूझकर नहीं गिराथा सरजन्टवेलनटायन साहबको मंजूरथा कि सरय्यूइसपीलीसाहब वहबयान नकरें जो उन्हों ने बयान किया कि मैंनेनरसूको आतेहुयेदेखा और वहबिल्कुलजलमें भीगाहुवाथा जोमनुष्य उसकुवेंको देखेगा वहीयहबातकहे-गा कि इसकुवेंमें अकस्मात् गिरना असम्भवितहै नकोईमनुष्य यहकहेगा कि पुलिसकी बनाई यहबातहै यहबातबिल्कुल गलतहै नरसूको वास्तवमें बड़ीलज्जाहोगी और उसकोमंजूर नहोगा कि अपनामुख किसीको दिखाऊं इसलज्जासेभी उसके इजहारोंकी तसदीकहोगी क्योंकि अगरवहठीकर बयान करता तो उसकोकिसबातकी लज्जाहोती हरलल्यकार्ग

नथी यहगवाह इसलिये पेशकिया गया था कि रावजी की गवाहीको तसदीककरे—मेरा यहखयाल सरजन्टवेलनटायन साहबकेअनुकूलनहींहैलेदेविचारसे नरसूकी गवाहीनिहायत जरूरीथी क्योंकि उसकीगवाही विषदियेजाने के विषयमें ली गई इसकेविशेषवह शहरसेंरहता था और उसीके द्वाराखबरें आयाजाया करतीथीं अर्थात् जोखबरें रावजी महाराजासाहबको भेजाकरताथा इसलिये कमीशनके मेम्बर इसबात पर खयालकरेंगे कि इसमनुष्य की गवाही बहुत जरूरीथीसिवा इसके नरसू रावजी हवलदारका अफसरथा जोवह इसमुआमलेमें संयुक्त नकिया जाताता और चपरासियोंकोभयरहता महाराजासाहबने नरसू को गालियांदीथीं और कहाथा कि तूने विषदेनेमें बडी देरीकी महाराजासाहबने नरसूसे कहा था कि रेजीडण्टसाहबकी डेवढीपर तुमसदा बैठेरहाकरोजब रावजी किसीकागज़केलेनेकोभीतरजाय अथवाविषकेडालती समय कोईगैरशख्सआजाय तोसीटीबजादेना परन्तु सोमवार को नरसू अपनेइसपहिरेपर नथा महाराजासाहब को संदेह हुवाकि किसीमनुष्यने रावजीको विषकीपुडियाशर्बतमेंडालते हुये देखलिया और असलबातयह है कि उसदिन ५ बजेतक नरसूरेज़ीडन्सीमें नहींआयाथा और उसदिन रावजीने भोर को शर्बतमेंविषडालदिया था इसीलिये महाराजा साहबको चिन्ताहुई और मार्गान्तरमें उन्होंने दामोदरपंथसे कहदिया था इनसबबातों से पायाजाताहै कि यह मुक़द्दमा पुलिसका बनायाहुवा नहींहै जोकुछ तहक़ीक़ात से जाहिरहुवा वही असलियत मुकद्दमेकी है अब कमीशन के मेम्बरों को मालूम होगयाहोगा कि नरसू किसलिये नियतकियागयाथा यद्यपि वह पुरानानौकरहै परन्तु उसमेंकुछभी बुद्धिनहींहैमालूम होताहै कि इसमनुष्यने पुरानेनौकर होनेसे जमादारी की पदवीप्राप्तकी नकिसी कारगुज़ारी से॥

हूंकि उन्होंनेमेरे एडरेसको मनसेसुना अबमेरी प्रार्थनाहैकि आपखूब इन्साफ करें १२बजे ४५ मिनटपर एडवकेट जनरल साहबनेसोच सम्पूर्णहुई इसकेउपरान्त काई जणसब लोग चुपरहेफिर कमीशनबरखास्त हुई॥

रेजोल्यूशन मईसन् १८७२ ई०॥

टाइम्स आफइण्डियाके ऐडीटरसाहब के नामपर-क्योंकि मैंकमीशनके इजलासमें गवाहीकेलिये नहीं बुलाया गयामैं रेजोल्यूशन मईसन्१८७२ई०केविषयमें लिखताहूंकियहठीक हैकिमैंनेरेजोल्यूशन मईसन्१८७२ई०कापाया उसका हाल इसतरह परहैकिमिस्टर हरीचन्द्चिन्तामणि जोश्रीमान्गायकवारके इंगलिस्तानमें एजन्ट हैं उन्होने उसको एकनकल इंगलिस्तानसे लेकरमेरे पासभेजीथी और वह हमारे पास जूनमहीनेमेंआई औरहरीचन्द्चिन्तामणिने २४ जूनकोलार्ड सेलसबरी साहबके सन्मुखपेशकिया इसकाजिक्र मैंने एकबेर सरल्यूइस पेलीसाहबसे भीकिया औरउन्होंने मुझमेंवह मंगवाईकरनैल फियरसाहब जोकहतेहैं किहमने इस विषयमें शिकायत नहीकी वहबिल्कुल गलतहै हमनेकईबेरकरनैल फियरसाहबसे कहाकिआप राज्यके प्रबन्धमेंहमको सहायता दीजिये परन्तु उन्होंने उसकाकुछ विचारनकियाथोड़ेमहीनेपरन्तु नवम्बरको खरीतालिखागयासरल्यूइस पेलीसाहबनेराजमसाहबकोबहुतनवीन प्रबन्धकिये औरहमको बनिस्बत करनैल फियर साहबके तीनमहीनेके सरल्यूइपेली साहब से एक महीनेमें बहुत सहायता मिली करनैल फियर साहब कहते हैं कि २ नवम्बरके खरीतेमें बिल्कुल हालत गलतलिखे थे हांना कि जो कुछ उसमें हाल लिखे थे वह सब ठीक हैं॥

दस्तखत-दादाभाई नौरोजी

और दामोदरपन्थमें कोई रंगभी नया नथा इसमनुष्यको गायक-
वारसे कोईवैर नथा तो क्याकारणहै कि वह गायकवार पर
ऐसा अपराध लगाना चाहे—अखीर मरतबा गायकवार दा-
मोदरपन्थको पोलीसाहब के पासलेगये और उसको पेशकर
केकहा कि यह मनुष्य मेरा प्राइवेटसिक्रेटरी है इससे साफ
जाहिरहै कि गायकवार और दामोदरपन्थमें कोई रंजनथा
जिस दिन गायकवार पकड़े गये उस दिन दामोदरपन्थ भी
पकड़ागया उसको अपनेखासीपर झूठेतोहमतके बनाने का
अवसरनमिला यहबात असम्भवितहै कि पुलिसके नौकर इ-
तने आदमियोंको सिखाते और सबसे एकहीप्रकार की गवा
ही दिलाते-लाईलार्ड-लुकाइसके हाल और गवाहोंकीगवा-
हीके देखनेसे मेरेविचारमें सिवायइसके कि गायकवार पर
जुर्मसाबितहै कमीशनसे और कुछफैसला नहोगा औरजि-
तने गवाह गुजरे सबने ठीक बयानकिया सरजन्टबेलनटायन
साहबने जो२ एतिराजकिये वहबिल्कुल फजूलथे उनकोतक-
रीर हर गिज सनाअतके लायकनहीहै हेमचन्द फतहचन्दने
अदालतके रूबरू बारम्बार झूठी सौगन्दखाई पहिलेकुछब-
यानकिया और फिरकुछकहा सिवाय हेमचन्द फतहचन्दके
और सब गवाहोंने एकसी गवाहीदी अबकमीशनके मेम्बरों
को इखतियारहै जैसाचाहैं वैसालिखें सरजन्टबेलनटायनसा-
हबनेसालिम और यशवन्तरावकेलियेभी कुछअच्छाबयाननहीं
किया यहदोगवाह गायकवारकेविश्वसितथे जबवेआपहीफिर
गयेऔरउनकीगवाहीसरजन्टबेलनटायनसाहबनेनहींलीऔर
बाकीक्यारहगया इससेजियादह मुझको हिदायत नहीहै इस
लियेमैंऔर कुछनहीं कहसक्ता सबसाहिबोंसेमेरीअखीरअ-
रजयहहै किपहरईस जोमाखूज हुवाहै हमदरदीके लायक
नहींहै छोटी२ बातोंकाजिक्र करना मैने उचितन समझा जो
बातेंमुख्यथीं उन्हींकोकहा आशाहै कि कमीशनके मेम्बर खुद
इन्साफ करेंगे मैं कमीशनके मेम्बरोंका शुकरिया अदाकरता

था दीकि यशवन्तको देदोनव हीरेकाचूर्ण मैंयशवन्त कोदेने
लगामैंने उससेपूछाकियह चूरहक्याहोगा उसनेकहाकियह
चूरकर्नैल फ़िअरसाहबको शर्बतमें मिलायाजावेगा ताकि
वहमरजावें यहबात कर्नैल फ़िअरसाहबके विषदिये जानेके
पांचछः दिनपहिले हुईथीजिसदिन विषदियागया मैं महा-
राजाके साथरेजीडण्ट साहबके यहांगयाथा और मैंएकध-
र्म्मशालामें ठहरारहा और महाराजासाहब रेजीडण्ट की
भेंटको गयेजब वहांसे लौट आयेतो मुझसे कहा किविषका
देनाआज मालूमहोगया सालिम औरयशवन्त रावकाआना
जाना रावजीके पासजाहिर होगयाऔरजबयह बात मालूम
हुई तो सालिमरावजीके घरगयाऔरसम्पूर्ण पुडियांजोरा-
वजीके घरपरथी फेंकदीं मैंनेमहाराजासे पूछाकिक्योंकरयह
बात प्रगटहोगई उन्होने उत्तर दियाकि नरसूजमादार आज
केदिनपहिरेपरनथा जबकोई आतायातो नरसूमोटीबजादेता
थाऔरवह कियहांपर नथाइसलिये यहभेद मालूमहोगया
औरदिनोंसे महाराजासाहब आजजल्दी आयेथेमैं फिरवर

दामोदरपन्तके उन इजहारोंका उलथा जोउसने पुलिसकेरूबरू दिये ॥

दामोदर चिम्न ब्राह्मणजोपहिले महाराजा गायकवार केसेक्रेटरीथा इसतरहइजहार देताहैकि यशवन्तरावयेवली सालिम और रावजी करनैलफियरसाहबको विष देनेमें शरीक हैं आश्विनमहीना जोदसहरेके निकट है महाराजाने मुजसे कहाकिथोड़ी संखियाफौजदारीसे मंगाओ और कहाकियह संखियाघोड़ेको खुजलीके वास्तेमंगाईजातीहै परन्तु फौजदार से संखिया नमिली महाराजासाहबनेकहाकि कम्पूसेमंगाओ मैने कहाकि इसके मंगानेमें पासकी आवश्यक होगीमहा-राजासाहबने कहाकिकुछ परवाहनहींहै मैनेदोतोले संखि-यानूरुद्दीन बोहराकेद्वारापाई महाराजासाहबने मुजसेकहा थाकि तुमनूरुद्दीनसे इकरार करदेनाकि महाराजा उसको सिलाखानेकी दारोगगी देंगे पहिले उसनेनहीं बताया कि उसनेसंखिया कहांसेपाई मैने महाराजाको संखिया दिखाई और पूछाकिमैंउसकोकिसेदूं महाराजानेकहाकितुम सालिम कोदेदोवह उसकोऔषधीबनावेगामैने सालिमकोदेदीइसके उपरान्त महाराजाने कहाकि एकतोला भरहीरा मंगाओ और कहाकिइस दवाकेलियेउसको भस्म कोजायेगीमैनेना-नाजीवतिलको आज्ञादी किएकतोलाभरहीरा लाकरमहा-राजाकोदिखाइये उसनेतोला भरहीरा महाराजको लाकर दिखाया औरमहाराजाने कहाकियह हीरायशवन्तको देदो मुजको अबमालूम हुआकि महाराजाने यहहीरा इसप्रयोजन केलियेमंगाया था पहिलेतो महाराजने मुजसेकहा था कि यहहीरा स्वामीअक्कलकोट के ताजकेलिये दरकार है और दूबारह मुजसेकहा कितोला भरहीरेका चूरहहमकोलादो मैने नानाजीवतिल सेकहाकितोला भरहीरेका चूर्णलादो मुजको खूबस्मर्ण नहींहैपरन्तु इतनायादहैकि नानाजीवतिल वाविनायकराव ने दूसरेदिनसंध्या कोहीरेका चर्णलादिया महाराजासे मैनेपूछा कियहचर्ण क्याकियाजावेउन्होंने आ-

उनवरकों को निकाल डालाहै मैंने इसबात को महाराजासे इत्तिलाकर दीहै यहहिसाव किसीभी खातेमें नहीं रहताथा किन्तु कागजके पन्नों पर रहता था जबकि मैंने फौजदार से संखिया मंगायाथा तोजसु जी वद्वा वहांका कारकुन था उसने कहा कि महाराज के पूछनेके बिनामैं तुमको नदूंगा परन्तु फिर उससे मैंने नमंगाई वह कागज कि जिस पर मेरे दस्तखतथे वहफौजदारके दफ्तरमें रहा और जबहमनेमांगा तोवहांसेवापिसनआया करनैलफियरसाहबसेऔर महाराजा से बहुत दिनोंसेवैरहोगयाथा और लक्ष्मीबाईकामहाराजासे विवाहहोने सेतो और भीअधिकवैर होगया था जब किमैं नौसारीमें था तो मैंने देखाकिरावजी सरकारी कागज महाराजाकेपास लेगयावह कागज यमुनाबाईकेथे जिनमें महाराजाकीशिकायत उसने फियरसाहबको लिखीथी मुझसेमहाराजानेकहा किइनकी नकलकर लोसोरातोंरात मैंने उनसब कागजोंकी नकलकरली वहजोनकल मैंनेकरलीथी अबउसको मैंने फाड़डाला यहविचार करकिऐसा नहो कोई देखले फिर करनैल साहब बड़ौदे मेंआये और करनैलफियर साहब कोउन दिनोंज्वर भीआता था और शिरमें फोड़ाभीनिकलाथा मैंनेएकदिन महाराजाको सालिमसे बातेंकरते हुयेसुना सालिमनेमहाराजासे कहरहाथा कि साहबकेफेडकेंलास्टरमें वहद्वा सिलाईगई और साहबके फोड़ेसेबड़ीजलनहै महाराजानेकहा किमैं रावजीसे सुनचुकाहूं और रावजीने लस्टर में वहद्वा।

उसको दिया जावे परन्तु महाराजा कहने लगे कि मैंने उससे कहा कि जबयह कुलमुआमला दूर होजावेगा तब तुसको पारि तोषक मिलेगा फिर जब सूटरसाहब यहां आये और रावजीपकड़ा नहीं गया तो महाराजा ने सुना कि सूटर साहब बम्बई को लौटगये इसबातको सुनकर महाराजा साहब अति प्रसन्न हुये और कहने लगे कि अब कुछ भयनहीं है हमसब बरी होजावेंगे परन्तु रावजी जबपकड़ागया तो महाराजाने मुझसे कहा कि रावजीका अपराधप्रबल होगया और उसने सबबातें अपने इजहारमें कहदी हैं तुम कदापि किसी बातका इकरार न करना और नानाहरबा और सालिम और यशवन्तराव से भी मैंने समझादिया है जबकि रंगोइन्स्पेक्टर सालिम और यशवन्तरावके गिरफ्तारीका हुक्म आया तो मुझको बड़ाभय हुवा और मैंने नानासाहबसे कहा कि हम और तुम भीइसीतरह से पकड़ेजावेंगे संध्याके समय मुझको महाराजासाहबने कहा कि उनदोनों मनुष्योंको रंगोइन्स्पेक्टर मैंनेभेज दिया है और उनसेकहा कि तुम कभी इकरार न करना और फिरमुझसे कहने लगे कि जोतुम इकरार करदोगे तो गोविन्दराव कालीके सदृश तुम्हारे टुकड़े २ होजावेंगे और यही बात नानाहरबासे भी उन्होंने कहीथी मैंने सुनाथा कि नानाजीवतिल ने हीरा के स चन्द्रसेलेलियाथा जबमैंने उसहिसाबको महाराजा साहबके दस्तखतकेवास्ते पेशकिया तो उन्होंने कहा कि खासीनारायणकासकेजोब्राह्मणखिलायेगयेहैं और जोसातहजाररुपयेका हीरा मोललियागयाहै तो उसमेंसे आधी रकमको अर्थात् तीन हजार पांचसौ रुपये तो ब्राह्मणोंके नाम चढ़ादो और तीन हजारपांचसौ रुपये हीरोंकी खरीदके नामरहनेदो और यह लिखदो कि हीरे द्वाकेलियेलियेगयेहैं परन्तु जबकि विष देना साबितहोगयातो मैंने महाराजसेकहाकि हीरा दवामें नहीं पड़ता है अबहम क्या करें उन्होंने कहाकि उसकागजको फाड़डालो मैंने नानाजीवतिलसे कहा और इन्होंने उत्तरदिया कि हमने

उनवरकों कोनिकाल डालाहै मैंने इसबात को महाराजासे इत्तिलाकर दीहै यहहिसाब किसीभी खातेमेंनहीं रहताथा किन्तु कागज़के पन्नों पर रहता था जबकि मैंने फौजदार से संखिया मंगायाथा तोज़सुमजी वद्या वहांका कारकुन था उसने कहा कि महाराज के पूछनेके विनामैं तुमको नदूंगा परन्तु फिर उससे मैंने नमंगाई वह कागज कि जिस पर मेरे दस्तखतथे वहफौजदारके दफ्तरमें रहा और जबहमनेमांगा तोवहांसेवापिसनआया कारनैलफियरसाहबसेऔर महाराजा से बहुत दिनोंसेवैरहोगयाथा और लक्ष्मीबाईकामहाराजासे विवाहहोने सेतो और भीअधिकवैर होगया था जब किमैं नौसारीमें थातो मैंने देखाकिरावजी सरकारी कागज महाराजाकेपास लेगयावह कागज यमुनाबाईकेये जिनमें महाराजाकीशिकायत उसने फियरसाहबको लिखीथी सुनकेमहाराजानेकहा किइनकी नकलकर लोसारातोंरात मैंने उनसब कागजोंकी नकलकरली वहजोनकल मैंनेकरलीथी अबउसको मैंने फाड़डाला यहविचार करकिऐसा नहो कोई देखले फिर कारनैल साहब बड़ौदे मेंआये और कारनैलफियर साहब कोउन दिनोंज्वर भीआता था और शिरमें फोड़ाभीनिकला था मैंनेएकदिन महाराजाको सालिमसे बातेंकरते हुयेसुना सालिमसहाराजासे कहरहाथा कि साहबकेफेड़केस्टरमें वहदवा मिलाईगई और साहबको फोड़ेकेबड़ीजलनहै महाराजानेकहा किमैं रावजीसे सुनचुकाहूं और रावजीने शहर में वहदवा मिलाई थी थोड़े दिनके उपरान्त बड़े हकीमके

कि फौजदारी से लेकर है आज्ञा देदो है दूसरे दिन महाराजाने हरेवा से कहा कि वह हकीम साहब के छोटे भाई दवाके लिये सर्प्प मांगते हैं दो तीन दिन के उपरान्त सर्प्पवाला आया और हरेवा सांपों को लेकर हकीम साहब को देआया नारायणराव वहे लाया और वह भी हकीम साहब के पास भेजदीं फिर हकीम साहबने कहा कि मुझको घोड़े का पेशाब ला दो और मैंने बापा जीको आज्ञा दी और उसने हकीम साहब के पास पहुंचा दिया उसी समय फौजदारी के दफ्तर से संखिया भी मिला परन्तु मुझे स्मर्ण नहीं कि कितना था जब यह वस्तु हकीम साहबके पास पहुंचगई तो वह एक शीशी तैय्यार करके लाये और महाराजा ने वह शीशी सालिम को देदी वह शीशी अतर की थी मुझे मालूम हुवा कि वह कर्नैल फियर साहब के फोड़े में लगाने के लिये दी थी तीन बेर कर्नैल फियर साहब के मारने के लिये उद्योग किया गया पहिले हकीम साहब की दवासे दूसरे पलाहार में विष मिलाने से और तीसरे शर्बत में विष मिलाने से मैंने दो बेर नूरुद्दीन बोहरा से संखिया पाई थी जब मुझे मालूम हुवा कि मुकद्दमें की तहकीकात हो रही है तो मैंने नूरुद्दीन से पूछा कि वह संखिया तो तुमने मेरे नाम नहीं लिखी है उसने कहा मैंने तो नहीं लिखी है परन्तु कम्पू में जिस मनुष्य के पास से तुम लाये थे उसने तुम्हारे नाम लिखी है जो दो सौ रुपये तुम हमको दो तो हम उस कागज से तुम्हारा नाम निकाल डालें मैंने कहा कि अच्छा तुम अपने पास से दो सौ रुपये देके हमारा नाम निकलवादो मैं दो सौ रुपये तुमको अपने हिसाब से मुजरा दूंगा क्योंकि मैं कम्पूवाले को नहीं जानताहूं परन्तु मुझे निश्चय नहीं है कि उसने रुपया देके मेरा नाम निकलवाया हो ॥

दामोदर पंथ अपने इज़हार देरहा है

लिखा हुवा ३० मई सन् १८७५ ई० का।

वह बयान करताहै कि यशवन्तराव और सालिम रुपये ले जाया करते थे और रेजि. उन्हीं के नौकरों को दियाकरते थे

और उनरकमों को और हिसाबमें लिखादिया करतेथे जब यहदोनों मनुष्य गिरिफ्तारहुयेतो महाराजने कहाकिजो रकमेंसम्बन्धक हैं उनकोबदलदो अथवा निकालडालो याछील डालो परन्तु हिसाब तोकई जगहपर लिखाजाता था इस लिये उनरकमोंपर मैने ख्यालकिया। डाक्टरी यशवन्तराव और सालिस रेजीडन्सी के नौकरोंको छैवर्षसे रिशवतदेते थे चार महीनेहुये कि एकलाख बीसहजाररुपये प्रेमचन्दरायचन्दको दियागयाथा यहरुपया लक्ष्मीबाईके लड़काहोने परदियागया था और रुपया गवसाहबके रिशवतदेने को दियागयाथा कि गवर्नमेण्ट लक्ष्मीबाईके पुत्रको मल्हररावका वारिसतसलीम करे परन्तु यहरुपया नहीं दियागया और प्रेमचन्द रायचन्द ने यह रुपया अपने पासरखछोडा और यह रुपया खानगी हिसाबमें लिखागया इसीअवसर में एकबाबू कलकत्तेसे बुलायागयाथा और उसकोएकवेर वीसहजार रुपये और दूसरी वेर पच्चीसहजार रुपयेके नोटदियेगये कि वहभी इसीलड़के के वारिसहोने में कोशिशकरे और यह रुपया लक्ष्मीबाई के हिसाब में लिखा गया बाबू और मोतीलाल से बड़ौदेर तक अंगरेजीमें बातेंहुवाकीं और पच्चीसहजार रुपये उसी रुपये में से मकरपुर में दियागया जो जो संगीनजुर्म महाराजाने किये उनमें किसीको सलाहशामिल नहीं थो भाउसें धिवा गोविन्दराव विनायक और और मनुष्य जो जारहलेगये इस में मैं शरीकनथा।

किफौजदारीसे नौकर है आज्ञा देदो है दूसरे दिन महाराजाने हरेवासे कहाकि वह हकीम साहबके छोटे भाई दवाकेलिये सर्पमांगते हैं दोतीनदिनके उपरान्त सर्पोंवाला आया और हरेवासांपोंको लेकर हकीम साहबको देआया नारायणराव वहीं लाया और वहभी हकीम साहबके पास भेजदीं फिर हकीम साहबनेकहाकि मुझकोघोड़े का पेशाब लादो और मैंने बापा जीको आज्ञा दी और उसनेहकीम साहबके पासपहुंचा दिया उसी समय फौजदारी के दफ्तर से संखिया भी मिला परन्तु मुझेस्मर्ण नहीं किकितना था जब यह वस्तु हकीम साहबकेपास पहुंचगई तो वहएक शीशी तैय्यार करकेलाये और महाराजा नेवहशीशी सालिमको देदी वहशीशी अतरकीथी मुझेमालूम हुवा किवह कारनैलफियर साहबके फोड़ेमें लगानेके लिये दी थीतीनवेर कारनैलफियर साहबके मारनेके लिये उद्योग किया गया पहिले हकीम साहब की दवासे दूसरे पलास्टर में विष मिलानेसे और तीसरेशर्बतमें विषमिलाने से मैंनेदोवेर नूरू-द्दीनवोहरासे संखिया पाई थी जबमुझेमालूमहुवाकि मुकद्दमेंकी तहकीकात होरहीहै तो मैंने नूरूद्दीनसे पूछा कि वह संखिया तो तुमने मेरे नाम नहीं लिखीहै उसने कहा मैंने तो नहीं लिखीहै परन्तु कम्पूमें जिसमनुष्यके पाससे तुमलाये थे उसने तुम्हारे नामलिखीहै जो दो सौरुपये तुम हमको दो तो हम उसकागजसे तुम्हारा नामनिकालडालें मैंनेकहाकिअच्छातुम अपनेपाससे दोसौरुपये देके हमारा नाम निकलवादो मैंदो सौरुपये तुमको अपनेहिसाबसे मुजरादूंगा क्योंकिमैं कम्पवाले को नहीं जानताहूं परन्तु मुझेनिश्चय नहीहै कि उसनेरुपया देके मेरानाम निकलवाया हो॥

दामोदर पंथ अपने इजहार देरहा है

लिखा हुवा ३० मई सन् १८७५ ई० का॥

वह बयान करताहै कि यशवन्तराव और सालिम रुपये ले जाया करतेथे और रेजि.डन्सी के नौकरोंको दियाकरते थे

और भावसेंधिया आदिमारडाले थे (ए)अक्षरसे लेकर(एफ तक जो कागज सरकारमें हैं उनसबमें मेरा दस्तखतहै और महाराजकीआज्ञासेलिखेगयेहैं और (जी) अक्षरसे(क्य)पर्य्यन्त भीमेरोही आज्ञासे लिखेगये हैं यह सबरुपया महाराज की आज्ञासेसालिम और यशवन्तराव कोरेजीडन्सीके नौकरोंकी रिशवतकेलिये दियागयाहै ॥

पहिली याददाश्त सूरतका एकहजार रुपया और १८॥) फीसद बट्टासिक्के चेहरे शाहीमे अधिक करके दिया गयाहै तो कुल रुपया ११८८॥) हुवा और एकवेर दो हजार रुपये बाबाशाहीदियागया है तोसब रुपया ३१८८॥) हुयेयहरुपया माघशुदीपंचमीसम्बत्१९३० मुताबिक२५ नवम्बर सन्१८७३ई० कोदियागया और यह रुपयायशवन्तराव कोदियागया ॥

दूसरा हिसाब श्रावणशुदी अष्टमी सम्बत् १९३० ई० कोयह रुपया अहमदाबाद को भेजा गया था और यशवन्त रावको दिया गया था–तीसरी याददाश्त–दस रुपया दिया गया और १।।।=) बट्टेके दियेदियेगये-तोसबरुपये ११।।।=) दिये गये और ७) बाबाशाही दिये गये तो सब रुपया १८।=) दिये गये इसीभांतिसे सालिम और यशवन्तराव कोभी रुपये दिये जाते थे ६ दिसम्बर सन् १८७३ ई० को यशवन्तराव को रुपयादिया गया२००)रुपया सूरतका दिया गया और प्रति सौ पर १९ रुपया बट्टादिये गयेतो २३८) रुपये हुये–लिखा हुवा२–माघ शुदी सम्बत् १९३० ई—दिसम्बर सन् १८७३ई०के अनुकूल—हिसाबलिखा हुवा २२ माघ सम्बत् १९३० तथा १३

कातको आयाथा महाराज की प्रकृतिथी कि प्रतिदिन तीन दफा हवा खानेको जातेथे और मैंसदा उनकेसाथ जाताथा और जब कभीमहाराजा रेजीडन्सीको जातेथे तोमैंसेवकधर्म्म शालाके वहांठहर जाताथा और जबमहाराज वहांसे लौट कर आतेथे तोफिर सवारकरके मुझको मेरेघर पहुंचादिया करतेथे जो महाराजकी गाडीहांकता था उसका नामरतन-सिंहहै मुझेमहाराजके पास फियरसाहब को आयाके आने का हालभी मालूम न था परन्तु जबकि वह कैदहोगई तोम-हाराजने मुझसे कहा॥

५—फरवरी सन् १८७५ ई०॥

मैंने उन्तीसवीं जनवरी के इज़हार में वर्णनकिया है कि दोबेर हीरेकी कनीमोललीगई परंतु मुझको उसके मोललेने की ठीकतारीख मालूमनहीं इतनातोस्मर्णहै कि एक२ सप्ताह के पश्चात् मोललीगई सालिम और यशवन्तरावने जोरुपया रेजीडन्सीके नौकरोंको दियाहै वहरुपया मेरेयहां मेवा और आतिशबाज़ीके नामसेलिखाहै और मेवा और आतिशबाज़ी नहीं आई और न सालिम और यशवन्तराव का काम लाने का था यह काम महाराजाने सालिमरावजी और यशवन्त राव के हाथ में दिया था कि किसी भांति से फियर साहब मारडालें जावें जो खबरें रेजीडन्सी से महाराजा साहब के पास आतीथी वह सालिमलाता था और मैं उन खबरों को पढ़ के सुनाता फिर वह फाड कर फेंक दी जाती थीं वह दोरकमें बीसहजार और पच्चीसहजार रुपयेकी जोकलकत्ते के बाबू को दीगईं थी वह मुसम्मात भीकूकेनाम मेरे हिसाब लिखीहुईहैं और यहस्त्रीलक्ष्मी बाई के रिश्तेदारोंमें हैं और महाराज की यहभी मदखूला है बलवन्तरावहरकारे जबकि महाराजके नायब दीवानथेतो महाराजऐसे मामलेकीउनसे सलाहकिया करतेथे और उनहीके सम्मतसे गोविन्द नायक

गया जिसमें से १०००) कल्दार दिया गया और बाकी का रुपया बाबाशाही दियागया २२—जेठसम्वत् १९३१ तथा ८ वीं जून सन् १८७४ ई० के अनुकूल सालिम बम्बई से सेवा लाय और नीचेविस्तृत रकमउसकोदीगई १००) नकददियागया और फिर २०१) दियागया और २५०) एकदिया गयायहसब रुपयाचेहरे शाहीदिया गया और २५०) सूरतका दियागया और उसका बट्टा प्रतिशत पर १९॥) रु० के हिसाब से ४८।) दिये गयेतो सबरुपया २९८॥।) दियागया ॥

२४ रज्जब तथा श्रावण सम्वत्१९३१और८वीं सितम्बर सन् १८७४ ई० कोसालिमकेद्वाराअहमदाबादसेसेवामंगायागया और उसको चेहरे शाही रुपया दिया गया नकद १००) रु० और १९॥) रु० और दिये गये तो कुल रुपया ११९॥) रु० दिया गया ॥

हिसाबपहिली महीनेआश्विन्सम्वत् १९३१ तथा १३ अक्टूबर सन् १८७४ ई०के अनुकूल सालिमके द्वाराअहमदाबादसे सेवा मगाया गया १२७५) नकद दियागया और रसीद लेलीगई दामोदरपन्थकहताहैकिवहदो याददाश्तजोअभीतुमने दिखाई हैं वहतांनाजी वतिलने मुझकोलिखीथी और मुझसे दरयाफ्त कीथी कि हेमचन्द फतहचन्दसे जोदोचार हीरेकाचूर्ण लिया गयाहै उसकेबारेमें क्याकियाजावे मैंने उनको उत्तर लिखाहै कि यहहिसाबखानगी खर्चमें डालदिया जायहेमचन्द फतह चन्दसे २९ जनवरीको ६५००) रु० काहीरा लियागयाहै औ बड़ौदेके रुपये ६६३२॥।=)३ पाई दीगई ॥

इति

——०—०——

१९ जनवरी सन् १८७४ ई० के अनुकूल यशवन्तराव के द्वारा खास असबाब बंबई से मोल लिया गया और सरकार की आज्ञासे ६००) रुपये दियागया रसीद २१ वीं जीहज्जह तथा ८ फरवरी सन्१८७४ई० के अनुकूल सालिमके हाथसे लीगई-माघकी २४ वीं सम्वत् १९३० मुवाफिक नवम्बर दिसम्बर सन् १८७३ ई० सालिमको अहमदाबादसे असबाब के लानेकेलिये सौरुपया दियागया है॥

हिसाबमाह जीअकद अर्थात् पौषसम्वत् १९३० तथा २४ दिसम्बर सन् १८७३ ई० के अनुकूल आतिशबाजी और वस्त्र सालिमने बंबईसेभेजी और सरकारने उसकी कीमत के देने के लिये आज्ञादीउसके अनुकूलसूरतके रुपयेदियेगये और जो कुछकि बट्टालगावहभीदियागया और कुलसूरतके ३००) रु० दिये गये और बट्टे के वास्ते फी सैकड़े १८॥) के हिसाब से ५६।) दियागया सबरुपया ३५६।) दियागया जीहिज्जे महीने कीछठी अर्थात् महीनामाघ सम्वत् १९३० २५ जनवरी सन् १८७४ ई० के अनुकूल सालिमको बंबईसे असबाब लानेकेलिये महाराजकी आज्ञानुसार सूरतका ४००) रु० दियागया और बट्टा १८॥) रु० फीसदीकेहिसाबसे सब ४७५) रु० दियागया २५ मुहर्रम अर्थात् फागुन सम्वत् १९३० तथा १५ मार्च सन् १८७४ई०के अनुकूलसालिमअहमदाबादसेअसबाबलाया और सरकारने उसकेखरचके लिये आज्ञादी नक़द रुपया १२४४) दियागया और ५०) उसकेखर्चके लियेदिया गया॥

२५ अप्रैलसन्१८७४ई०तथा वैशाखशुदी नवमी सम्वत्१९३० के अनुकूल १०००) रुपये चेहरेशाही दिया गया यह रुपया किसी असबाब के लिये जो सालिम बम्बई से लाया था दिया गया और उसकीरसीद उससेलेलीगई१५मई-सन् १८७४ ई० तथा ३० वैशाख सम्वत् १९३० सरकार की आज्ञा सेसालिम को १२७४) रु० बम्बईसे किसी असबाब के लानेकेलिये दिये

भेजा न.वे और गज़ट आफइण्डियामें मुद्रितहो-हस्बुलहुक्म श्रीमान् वैसराय और गवर्न्नरजनरल ॥

दस्तखत-सी-यू-एचीसन
साहब सेक्रटरीगवर्न्नमेण्टइण्डिया ॥

रेज़ोल्यूशन ।

नीचेलिखे हुयेकागज़ पढ़ो ॥

पहिले-इश्तिहार लिखाहुवा १३वीं जनवरी सन्१८७० ई० का जिसमें महाराजा मल्हरराव गायकवार मुअत्तिलहुये कि इस जुर्म्मकी तहकीकात जो पूर्वोक्त महाराजा ने बहकाकर रेजीडण्ट साहब को विषदिया कीजावे ॥

दूसरे-इश्तिहार लिखाहुवा १५ फरवरी सन् १८७५ ई० का जिसकेअनुकूल कमीशन तहकीकातके लिये नियत हुई थी ॥

तीसरे-मुकद्दमेके कागज़ उन कागज़ोंके सहित जो उर्दू से छलघा हुयेहैं ॥

चौथे-नोट छपी हुई याददाश्त कौंसिल की तकरीरों के बाबत ॥

पांचवें-रिपोर्ट सररिचर्डकोच साहब ॥

सर आरमीडसाहब-औरपी-एस० मैलवल साहब दस्तख-ती ३१ मार्च सन् १८७५ ई०

छठे-भिन्न राय श्री महाराजा सेंधिया लिखा हुई ७ मार्च सन् १८७५ ई० ॥

सातवें-पृथकराय श्रीमान्महाराजा जयपुर लिखीहुई २९ मार्च सन १८७५ ई० ॥

आठवें-राय जुदागाना राजा सरदिनकरराव लिखीहुई२५ मार्च सन् १८७५ ई० ॥

दफा०१—ऊपरलिखे हुयेकागज़ पढ़ेगये-यहसब रेजोल्यूश-नके क्रमपूर्व्व करेंगे जिनसेमालूम होगाकिमहाराजा मल्हरराव

रेज़ोल्यूशन्॥

श्रीमान् महाराजा मल्हरराव गायकवार अपनी गद्दीसे उतारेगये और थोड़े दिनोंके लिये गवर्न्नमेण्ट ब्रिटिशने बड़ौदे का प्रबन्ध करना अपने ऊपर लिया कि तहकीकात की जावे और उस दोषकी माहियत मालूम कीजावे जो दोष कि विष दिये जानेके बहकाने के लिये मल्हरराव पर लगाया गया था कि पूर्व्वके रेजीडण्ट कर्नेल फियरसाहब सी-बी-कायलम्बुकासगवर्न्नमेण्ट ब्रिटिश इण्डियारियासतबड़ौदाको विष दिलवायागया इस बातकोइच्छाथी कि महाराजाको अपनीवरीयतकामौका मिले और वह अपने ऊपर लगेहुये अपराधको रद्दकरें॥

सरआर कौचसाहब चीफजष्टिस बंगाल और श्रीमान्महाराजा ग्वालियार और श्रीयुत महाराजा जैपुरवीरेश और कर्नेलसरऋार मीडसाहब चीफकमिश्नर मैसूरऔरकुरग और राजासरदिनकरराव और मिस्टर पी॰एम॰मेलवल्लसाहबबंगाले केसिविल सरवन्टपूर्व्वोक्त जुर्मकी तहकीकातके लियेकमीशन के मेम्बर नियत हुये थे जिसमें कि तहकीकात करके श्रीमान् वैसराय और गवर्न्नरजनरलबहादुर कौंसलको रिपोर्टकरें कि उनकेविचार में मुकद्दमे की रोयदाद क्योंकर पाई गई और मुख्तहालत उसकी क्या है॥

गवर्न्नमेण्ट इण्डिया चीफजष्टिस और कमीशनका अतिगुण मानतीहै कि उन्होंने ऐसेबड़े काम और संगीन मुकद्दमे की कारवाई अपने जिम्मेली॥

कमीशन के मेम्बरों के प्रतिकूल रायकी रिपोर्ट गवर्न्नमेण्ट इण्डिया के फैसले के समेत जो बड़ेगौर और कौंसलियों की तकरीर करनेके उपरान्त तैहुईहै सम्पूर्णमनुष्योंकी इत्तिलाके लियेप्रसिद्ध कीजातीहै॥

हुक्महुवा कि नीचेलिखाहुवा रेजोल्यूशन पूर्व्वोक्तकागजों के सहित हिन्दुस्तानके सेक्रेटरी आफिस्टेट के अवलोकनके लिये

और वह समझते हैं कि गायकवारका तअल्लुक विष दिये जानेमें साबित नहीं है वह इस विषयमें यूं लिखते हैं कि विष दिये जानेके उद्योगमें सबसु कहूंगा जो मेरे रूबरू कायम हुवा मेरी समझ और विचारमें विष दिये जानेका जुर्म महाराजा के जिम्मे साबित नहीं है॥

दफ़ा ४—श्रीयुत महाराजा जयपुर समझते हैं कि रेजीडन्सीके नौकरोंको कुछ रुपया मिला और करनैल फियरसाहबको विष भी दियागया और महाराजा और नौकरोंकी वार्त्ताके विषय में वह यों लिखते हैं कि अमीना आया और अन्य नौकरों के बयानसे साबित हुवा कि रुपया मल्हररावकी आज्ञासे भिन्न२ समय और और नौकरों को दियागया परन्तु इससे यह नहीं पाया गया कि रियासतके नौकरोंसे किसी अनुचित कामकेलिये साजिश कीजावे और यूं ही गायकवार ने पारितोषक दिये थे जैसेकि बहुधा विवाह और त्यौहारों आदिमें देते हैं और महाराजासाहब ने कईगवाहियों के हुकुमके विषय में बहुत कुछ मज़मून लिखा है उनका बयान आगे किया जावेगा॥

अन्तमें उन्होंने यह लिखा है कि पूर्वोक्त प्रमाणों पर गौर करनेसे मेरे मनको किसीप्रकारसे निश्चय नहीं कि गायकवार इसजुर्ममें ज़राभी साबूत हों हरचन्दकि करनैलफियरसाहब के शर्बतके गिलासमें विष मिला और सुब्हतलिफ तीन शरीक जुर्म अर्थात् रावजी दामोदरपन्थ और नरसूने गवाही दी॥

कीहरकतोंकी क्योंकर तहकीकात और काररवाई कीगई॥

और यहां पर सम्पूर्ण कागजों को नकल करना सिवाय तूलके और कुछफायदा नहीं इसलिये नकालनकीके वलउन्हीं कागजों जरूरीका बयान करना जरूरहै जिस्से कि फैसलेकी सूरत पैदाहो॥

रईसों और कमीशनके मेम्बरोंनेअति परिश्रम और तहकी-कातकी और कमीशन को बरखास्त किया और अपनी २ रायलिखी अवगवर्न्नमेण्टइण्डियाको पहिलेगवाहोंकी गवाही और कौंसल और अन्यकमीशनके मेम्बरोंकी तक्रीरपर खूब गौर करके इस काररवाई कानतीजा लिखाना शेषरहगया॥

दफ़ा २—सररिचर्ड कौचसाहब और सररिचर्डमीडसाहब और मिस्टर पी०एस०मैलवल साहब आदि तीनों कमीशन के मेम्बरों की राय इसबात परमुत्तफिक है किजो अपराधगा-यकवारपर लगायेगयेथे वहसबसाबित होगये यह सबसाहब अपनीरायमें साफलिखतेहैं किखूबगौर करकेमालूम हुवा कि मल्हरराव ने अवश्य विषदेनेका उद्योग किया था और जिन लोगोंनेयहकाम किया उन्होंनेमल्हरराव के बहकानेसे किया॥

दफ़ा ३—महाराजा सेंधियाकेलिखसे रियासत और मल्ह-रराव के नौकरोंमें गुफ्तगूका होना और विषदेनेका सबूत जिसको श्रीमहाराजा तसलीमकरते हैं पायाजाता है परन्तु महाराजासाहब इसबातको स्पष्टनहीं लिखतेकि कर्नैलफियर साहबको अवश्यविष दियागया और महाराजाके रातदिनको गुफ्तगूनौकरों और महाराजासाहबके बाबमेंयह फिकरा लिखा हैकिकुछ बरीबातनहींहै कि ऐसा आवागमन और पारितो-षककी प्रार्थना विवाह वा त्यौहार पर बहुधा हुवा करते है और इसबातकी सिफारिशकी इच्छा रखते हैं किरेजीडण्टसा-हबहमसे प्रसन्नरहें और हिंदुस्तान के रईस बहुधा रेजीडण्ट की काररवाइयोंको खुफियापूछते हैं और उनकी रियासतसे मुतात्रल्लुक है उनपर अधिकतर शफकतरखते हैं॥

दफा १०—यहिले इसबातपर लिहाज करनाचाहिये कि रियासतके नौकर और गायकवार में बात्तीके होनेका सबूत ऊवाहै यहगुप्तगू रात्रिकोनिर्ज्जनस्थानमें ऊवाकरतीथी और इसीगुप्तबातकेलियेबऊतसे रुपयेके देनेकावाइदा कियागयाथा आजादगवाहें.की गवाहीसे यहबात तहक़ीक़ ऊईहै गवाहो उनकीसीधी सादीगुज़री और यह गवाही ऐसीहै कि जिसे सुख्यबातें मालूमऊईं और इजहारातमें जबमवालात ऊये तो इन गीगवाहोंमें जरासा फर्क नहीं ऊवा और उसी प्रकारसे वहउत्तर देतेरहे जबकभी मैाकाऊवाउनकीगवाहोकी परोक्षा लीगई॥

अर्थात् पूछा कि तुमकोकैान २ लोग किस २ मकान पर लेगये और तुमकोयादहै कि जबरुपया तुमकोदिया गया ता वहांकैान २ मनुष्यथा इनप्रश्नोंका उन्होने उत्तर बखुबी दिया कोईगवाही सुखतलिफ इसबारेमें नहीगुजरी॥

सबतो यहहै कि गायकवार भी इस सच्चीबात से इन्कार नहीं करते—उन्होंने अपने लेखमें जोबड़ी एहतियात से लिखा है उसमें लिखते है कि इससे उनको इन्कारनहीं है अर्थात् अपनेआप बात्ती करनेमें यारुपयेकेनदिलानेमें परन्तु वहकहते हैं कियहकाररवाई मैनेइसप्रयोजन सेनहींकी किमुझकोरजो-उन्मोकी रोजानाखबर मिलतीरहे॥

दफ़ा ११——प्रकटमें गवर्न्मेराट के विचारमें कोई गवाही वगैरह ऐसीनहीहै जिससेरावजीका बयान खण्डन होसके कि उसीने अपनेहाथसे कारनैल फियर साहबको विष दियाहै या गवाहीनेरसुलोरहकीजावेकि उन्होंनेरावजीको मदद दीथी।

दफ़ा १२——गवर्न्मेराट इण्डियाको मालूमहोताहै किइस सूरतमेंहो बऊत बड़े अमूजो हरगिज किसी सूरतसे रहनहीं सकतेसुबूतहोगयेपहिलेयहकिगायकवार अपनेआपगुप्तरीति केसमय रेजीडन्सी के पांचनौकरोंसे बात्ती करतेथे॥

औरउन्होंने रावजीनरसूऔरअमीना कोजोदोनों रियासत

अपनी रायतक पहुँचा होता तो यह अच्छा होता परन्तु इसविषयमें उनका परिश्रम उनके प्रतिकूल हुआ कमीशन के छः मेम्बरों में से तीन मेम्बरों की यह राय है कि गायकवार पर जुर्म साबित है इसलिये ऐसे तीन मनुष्य जिनको इस देश की प्रकृति और कारवाई से एक पूरा तजुर्बा हो चुका है और जिन्होंने तहकीकात करने और गवाहों के हाज़िर करनेके उपरान्त इस मुकद्दमे में अपनी राय दी कि जिस की तहकीकात के लिये हम मुकर्रर हुये थे उस शख्स पर जुर्म साबित होगया और तीनों रायें मुत्तफ़िक़ हैं और जब यह राय कि अफ़सर वाला ने खण्डन नहीं की पस मैं क्या कह सक्ता हूं कि थोड़ी से थोड़ी इस शख्स पर बहुतबड़ी तोहमत है गो जिसकी निस्बत वह जुर्म का सबूत लिखते हैं॥

दफ़ा ८—परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डिया उचित नहीं समझती है कि इसको कमीशन के मेम्बरों की रिपोर्ट पर ख़तम करदे इस कमीशन का इजलास जो किया गया था यह कमीशन केवल तहकीकात जुर्म और गवाहों आदि के इज़हार लेकर गवर्न्मेण्ट को इत्तिलाकरे जो सम्पूर्ण कमीशन के मेम्बरों की भी एकराय होती तौभी गवर्न्मेण्ट इण्डिया अपने इतमीनान के लिये खूब प्रथमसे अन्तपर्य्यन्त मुलाहिजा करती और भले प्रकार अवलोकन करके अपनी राय लिखती॥

यदि कमीशनकी राय मुखतलिफ़ है इसलिये गवर्न्मेण्ट इण्डिया के विचार में उचित मालूम होता है कि केवल अपनी राय न लिखे किन्तु मुख्य २ अपने सब विचार लिखे जिनसे कि यह नतीजा हासिल हुवा॥

दफ़ा ९—राय तीन मेम्बरों की जिन्होंने अलग २ रिपोर्ट लिखी है उनसे कुछ गवाहों की गवाही में और मुख्य २ बातों में जो गवाही के कमज़ोरी के सबब थी इख्तिलाफ़ पाया जासक्ता था गवर्न्मेण्ट इण्डिया इन दोनों बातों में पहिली बात पर अपना ख्याल रुजू करेगी यह इच्छा नहीं है कि सब गवाहियों का ज़िकर हो हां निस्संदेह ज़रूरी बातों पर वह सकी जावेंगी॥

लोगोंको जिनसे वार्त्ता हुवा करतीथी गायकवार ने इनआम दिया और नौकरोंके दरजोंके ख्यालकरनेपर यह इनआमनियादह मालूमहोताहै जैसे कि रावजीको इतना इनआमदियागया जो उसकी वार्षिक तनखाहसे चारगुणा अधिकथा इससे ज़ाहिरहै कि गायकवारका दिलीमन्शा यहथा कि केवल रियासतके नौकरोंका दिलही हाथसेनलें किन्तु उनको रिशवतदें और बड़ेकार्य्यपर उनको उद्यत करें॥

दफ़ा १९—इसके विशेष यहबातभी प्रकटहै कि गायकवार आपभी अपनेतईं उसबातसे अलगकरें जिसका जिक्र श्रीमान् महाराजासेंधिया करतेहैं अर्थात् खबरोंके मिलनेकेलिये रुपयादेना—गायकवारने अपनेबयान तहरीरीमें लिखाहै कि मैं बयानकरताहूं कि मैंनेअपनेआप किसीरेज़ीडन्सीके नौकरसे नहीं कहाथा कि वहमुझको खबरें पहुंचायाकरे और रेजीडन्सी की जासूसीकरे और नमैंनेकभी इसकामकेलिये रुपया दिया औरन दिलवाया मैं

के नौकर थे रुपया दिया दूसरे यह एक बहुत बड़ा इरादा
कियागया कि कर्नैलफियर साहब को पूरीखूराक पुड़ियाके
जहरकीदीगई और रावजीऔरनरसूके द्वारा विषदिलायागया
गवर्न्मेण्ट इण्डियासमझती है कि कोई मेम्बर उनकमीशन के
मेम्बरोंमेंसे जिन्होंनेअपनीरायअलग२ लिखीहैबिरुद्ध इनदोनों
बातों सेइन्कारनहीं करतेहैं और जिनबातोंको उन्होंनेनहीं
मानाहै उनसेभीसाफ़हाल पायानहींजाता ॥

दफ़ा १३——जबयह अमरफ़ैसलहोचुके और सुबूत उनका
सब होचुकातो गौरकामिल करनेपर मुश्किलना दूर पहुंचता
है पहिले२ तोयहसुबह कियाथो औरइसका निश्चयनथा किऐसे
मनुष्यगायकवाररियासत केनौकरोंसे खुफ़ियागुफ़्तगू करें
परन्तु जब यहसाबित होगयातो यहबातदरयाफ़्ततलब रही
कियायह बातचीत इन अपराधोंसेअलग या उसीकेलिये थी ॥

इसकाकोई हेतुवर्णननहींकियागया किरावजीऔरनरसू
नेऐसाकिया केवलइतनाही बयान हुआहैकि पारितोषक की
प्राप्तिकेलिये ऐसा अमल किया गया सो इन्ही दोनों बातों से
इसकामूल और अन्तखयाल करलेना चाहिये और यहदोनों
बातें मिली हुईहैं और एक दूसरेसे पैदाहोती हैं ॥

दफ़ा १४——यहबात ठीकहैकिउनतीनोंमेम्बरोंने जिनकी
राय अलग २ लिखीहै गायकवारऔर रेजीडन्सीकेनौकरोंसे
बातेंहुईं उसको बेमूलसमझतेहैं उनकी राय दफ़ा ३—और ४
मेंहै चाहो हिन्दुस्तानीरियासतोंमें कोईरीतिहो परन्तु गव-
र्न्मेण्ट इण्डिया समझतीहै कि इनमेम्बरोंने उनबातोंपर जो
गवाहीमेंहैं और गायकवारको नुक्सान पहुंचाने वालीहैं ब-
ख़ूबीगौरकरनेके बिना लिखीहै ॥

दफ़ा १५—किसीगवाहीसे इसकासुबूतनहीहै कि गायक-
वारने रेजीडन्सीके नौकरोंको आमतौरपर बिनाहकपारि-
तोषक दियाहो जोसबलोगोंको इनआमदेते और थोड़ा २
देतेतो बुरीबातनहींथी शहादतसे साफ़जाहिरहै कि खास२

दफ़ा १९—इन गवाहों के बयानों की कोई वजह निश्चय न किये जाने की नहीं है लोग कहते हैं कि जिसने यह अपराध किया वह शरीक जुर्म है और इन लोगों की गवाही से भी प्रकट है कि ये हव३ दुष्ट हैं कि जिन्होंने अपने दयावान स्वामी के प्राण लेने की फ़िकर की और अपने साथियों को इलज़ाम देने से न चूके॥

यह बात ठीक है कि ऐसे बयान से इनकी गवाही पर बहुत बड़ा संदेह आगया और जिन लोगों को उनकी गवाही पर गौर करना मुनासिब आया वह ग़ौर करेंगे परन्तु लिहाज़ करे है कि वेसी गवाही बड़े २ कामों में जुर्म के शरीक मनुष्यों से मिला करती है॥

जो इस गवाही से इस बात पर इन्कार किया जावे कि वह किस मनुष्य ने दी अर्थात् शरीक जुर्म ने जो एतिबार के लायक नहीं तो ऐसा इन्कार बुद्धि के प्रतिकूल है और सब की रीति के विपरीत और बड़ा घाटी मालूम नहीं होता ऐसी गवाही के लिये उचित है कि इनकी परीक्षा लीजावे कि सच झूठ दोनों अलग २ मालूम हो जावें॥

समय में सालिस और यशवन्तराव को भी बहुत कुछ रुपया दिया गया॥

और लिखाहै कि पूर्वोक्त दोनों मनुष्योंकेद्वारा वस्तुओंकेमोल लेनेकेअर्थरुपयादियागया परन्तु यहरकमअंकितनहीं। बर्मेंअप्रुद्धकरके लिखीहै क्योंकिदर्यापतकरनेसे मालूमहुवा किकभीकोईवस्तु इनकेद्वारामोल नहींलीगई सालिस और यशवन्तराव गायकवारके दो विश्वसितनौकरहैं और इन्हीदोनोंकेद्वारा रेजीडन्सीके नौकरोंको रुपया दियागया॥

गायकवारका प्राईवेट सिक्रेटरी दामोदरपन्थ वर्णनकरता है कि रेजीडन्सीकेनौकरोंको इसीप्रकारसे रुपयादिया जाताथा यहबातभीठीकहै कि जो इसगवाह अर्थात् दामोदरपंथ का गुमानवदहोतो कुछ आश्चर्य नहीं परन्तु इसबारेमें वैसाही बयानकरताहै जैसाकि इनकागजों के देखनेसे पायाजाता है सिवायइसके इसबयानकोकोई रद्दनहींकरताजोउसकाबयान गलतयाझूठहोताती सुगमतासे तरदीदहोसक्ती थी॥

दफा १८ अवयहबात दर्यापतलब है कि और गवाहीसे भीकुछ सम्बन्धपाया जाताहै यानहीं और जो पाया जाताहै तोउनदोबड़े वजूहातसेजिनकापहिलेजिक्रहै। तुका क्यासम्बन्ध है अर्थात् क्या गायकवार रेजीडन्सी के नौकरोंसे गुप्तवार्त्ता करताथा और रुपयाउसने इसप्रयोजनसे दियाहै और दूसरे यहकि रावजी और नरसूके द्वारा करनैलफियरसाहबको विष दिया गया॥

निस्संदेहरावजी और नरसूनेगवाहीदी उनकेबयानसे विष का दियाजाना साबितहोगया और गायकवारकी रेजीडन्सी को इसप्रयोजनसे रिशवतदेनी किवह करनैलफियरसाहब के मनको महाराजसाहब के तरफसे नरमरक्खें अन्तको इच्छा प्रातेर करनैलफियरसाहबके प्राणपरनौबतपहुंची जोयहबात ऐसीनहीं हैतो रावजी और नरसूने बड़ाकसरकिया और झूठ के पुतलेको गढ़कर बखूबीआरास्ताकिया॥

साफजाहिरहै कि जो नरसूजमादार न मिलालिया जाताती रावजी को पकड़े जानेका बड़ा भय होता॥

(२२)-(ख)-गवर्न्नमेण्ट इण्डियाके विचारमें इन बयानोंके अवलोकनसे किसीभांतिका अन्तरनहीं पाया जाता है॥

गवाहोंकेबयानको आदिसे अन्ततकबीच में बहुतफासिला होगयाथा और उनकेबयानमें कहींफरकनहींहुवा औरएक अति प्रवीण बैरिस्टरने इजहारात परऐसे२ कठिन प्रश्नकियेथे हरचन्दकिइनसेखूब२ प्रश्नहुयेपरन्तु पहिलेकेबयानमें कुछभी अन्तरनपड़ा तारीखोंमें निस्संदेह कुछइखतलाफहैक्योंकियह बातसाफप्रगट है और बुद्धिमानलोग खूबसमझतेहैं किअन-पढ़मूर्ख मनुष्योंको खाससमय और तारीखकायादरहनाकठिन है रावजीके बयानसेपाया जाताहैकि वहअपनेअनुचितकर्म में अतिलज्जित होकरपश्चात्ताप करताथा सोयहबातकुछआश्चर्य की नहीहै किसंगीनमुकद्दमेमें पहिले ऐसेबयान हुआकरते हैं काई बयान रावजीके सबहिमहै जैसे कि शीशीकाहाल जो

के बयानसे मुताबिकत होसक्तीहै और जोकुछ उन्होंने वर्णन कियावह एक कलमा एक दूसरे के मुताबिक है जो आजा-दाना गवाही लोगों नेदी क्या इनलोगोंकी गवाही सेउनकी गवाही मुताबिक है ॥

(ङ)—क्या इनगवाहोंको इसहालके बयान करनेमें कुछ लाभ है जो उन्होंने बयान किया ॥

(च)—क्यायहबात किसीसूरत से जाहिर होसक्ती है कि आपुसमें एकदूसरेसे साजिश हुईहै ॥

(छ)—क्या यहबात प्रगटकीगईहै औरइसबातका सम्भव है किइनको किसीहाकिमने सिखाया है ॥

(ज)—जबइन लोगों से इजहारमें प्रश्नकिये जातेथे तोउन की ऐसी दशाथी कि जैसे सच्चा मनुष्य बोलता है या उसके प्रतिकूल थी ॥

(झ)—क्या इनकी गवाहीकाखण्डन गायकवारकी ओर से साफ २ और बेगानातौरसे हुवा यानहीं ॥

(२१)—(क)—कोईबात असम्भवित नहींहै किइनगवाहों के बयाननिश्चय न कियेजावें और जब पूर्वोक्तदो अमसाबितहो गयेतोकुछ जियादागवाही की आवश्यकता नहीं है थोड़ी२ गवाहीपरहसर होसक्ताहै शायदलोग जानेंगे कि जबगायक-वारनेरावजी को अपने अनुकूल करलियाथा तो उनकोनरसू केसंयुक्तकरने की क्याजरूरतथी पस इससूरत में इन्होंने एक शरीकजुर्मको और बढ़ाया यह होसक्ता था कि गायकवार सिवायइसके औरउपाय करते इसबातको मालूमकरनाअति कठिनहै कि गायकवार नेऐसी कारवाई क्योंकी इसका यह उत्तर होसक्ताहै किरावजी सरकारी कम्पूमेंरहता था और नरसूनगरमें रहताथा नरसूगायकवार के यहांसेखबरें बखूबी लासक्ता था और उनकोरखा पूर्व्वक रावजी के पासपहुंचा सक्ताथा इसकेसिवाय नरसू रावजीका अफसरथा और प्रति समयकर्नैलसाहबकी अरदलीमें बरामदेमें रहताथाइसलिये

वजीकीचपड़ास छेलीगईथी और एककमरेमें लटकादीथी १५ दिसंबरको वहीचपड़ास एकऔर मनुष्यसुसन्ना भोदरकोदी गईउससमय किसीकोयह खयालनथाकि रावजीकोई किस्सा वयानकरेंगेया कुछभीनकहेंगे रावजी २२ दिसंबर को पकड़ा गया और २४ और २५ को उसके इजहार लियेगये अकबर-अलीअफ्सर सुरागी पुलिस बंबईका वहां उपस्थित था उसने अपनेमनमें समझाकिरावजी जिनपुड़ियोंका इजहारकरताहै शायदउनका कुछनिशानमिले इसलिये उसने रावजीसे पूछा किपुड़ियाकहां रखतेथे रावजीने कहा किमैं अपनी पेटीमेंर-खताथा इसकहनेसे भोदर बुलायगया जोचपड़ास और पेटी पहिनेहुयेथा यहचपड़ास १५ दिसंबरसे उसके पासथी पूर्वोक्त भोदरसे अकबरअलीने चपड़ासली और रावजीसेपूछा कितुम पुड़िया कहां रखतेथे रावजीने ठिकाना बताया अकबरअली कोढूंढ़नेसे एक पुड़िया कागज की डोरेसे बन्धी हुई मिली उसनेतुरन्तही सिस्टरसूटर साहबपुलिसकेकमिश्नर को जोदूरसे कमरेमें थेबुलाया॥

सूटरसाहबने कागजकी पुड़िया निकाली और खोलकर-देखाउसमें किसीवस्तु का सफ़ेद चूर्णथा इमतिहान करने मे मालूमहुवा कियहसंखिया थी॥

दोनों मिलगये होंगेकेवल तारीखोंमें इखतिलाफहै और इसमें इखातिलाफ है किगायकवारके पासकईदफे गयेथे और उस जगहपरभी अन्तरपायागया जिसकामको दूसरेमनुष्यने किया है गवर्नमेराटइंडियाकी राय कमीशनके मेम्बरों के अनुकूल है जिसको उन्होंने ३४ और ४२ दफ़ोंमें बयान किया अर्थात्वह लिखतेहैं किजोरावजी और नरस्सू के बयानमें अन्तरहै उससे यहप्रकाट नहींहोता कि इनका बयान गलत है किन्तु सहीस-मझाजाताहै और यहभी मालूम होताहै किगवाह आपसमें नहींमिले और न पुलिसनेउनको सिखाया है ॥

दफ़ा २४(घ)–गवर्नमेराटइंडिया इनलोगोंकेबयानमेंबहुतसी मुताबिकत पातीहै और अभ्यजाहिरीहै और शहादतेंगुजरी हैं वहसब एकसीहैं जो उनलोगोंका बयान ठीक नहोतातो कभीमुताबिकत न होती ॥

जिसकमरे और जिसमहलमें वहगये थे और गायकवार से वार्त्ताहुईथी गवाहउसको शुद्धतापूर्व्वक बयानकरतेहैं और यहजिक्रकिपांचसौ रूपयेरावजी को दियेगयेथे यहभीठीक है इसकीतसदीकजुम्मा और करमाईसे जो रावजीआदिके साथ गयेथे होती है और जो चिट्ठी पेश हुई उससे भी सिदाकत हुईकि रावजी और नरस्सूने खबरें महाराजा कोपहुंचाईसि-वायजुम्मा और दिलपतके गवाहीएकदूसरेको अनुकूलहैऔर यहलोग उस रूपये के वलवलकी सूरत भी बयान करते हैं इसभीरावजीके लियेरूपयेका पानासाबितहोताहै यह खर्च हैजबतककि बहुतसी आमदनी हाथ नआवे तबतक क्योंकर सैकड़ोंरूपये खर्चकरसक्ताहै और इन्हींखर्चोंके कारण लोगों कोसंदेहहुवाथा और इसीसेवह पकड़ाभी गया ॥

दफ़ा २५—एक गवाही जाहिरी और बहुत बड़ी जिसका विस्तारपूर्व्वक बयानहोना उचित मालूम होताहै ९ नवम्बर कोजबकारनैल साहबकेनौकरोंसे तहक़ीक़ातकी गईथीतार,-

मालूम होगा और रावजी और नरसूयह समझते होंगे कि जोहमगायकवार को मालूम करेंगे तो कारनैलफियर साहब हमसे प्रसन्न होंगे॥

परन्तु इसबातपर लिहाजकरना चाहिये कि गायकवार केमालूम होनेसे पहिले कारनैलफियरसाहब बड़ौदे की रेजी-डन्टीसे बदलचुके थे जबसाहब मौसूफ बड़ौदेकी रेजीडन्टीसे बदलचुकेथे तोऐसे इजहारोंके देनेसे इनलोगोंको निस्बतखुश-नूदी महाराजा को क्या फायदा था—इनसब हेतुओं से साफ जाहिरहै कि इनलोगोंने जोइकबाल कियाइसमें कुछसाजिश एक दूसरे की न थी॥

जब इन लोगों को मालूम हुवा कि पुलिस ने सख्तीतह-कीकात करना शुरू की तो उन्होंने यह उचित समझा कि अपने तईं पुलिसके सुपुर्दकरदें और जो कुछ जानते हैं उस को सच २ कहदें॥

मांगवनेकी उसने अपनी देखीतो याद आया कि मैंने सबपुड़ियां नहीं डालीथीं कुछबचरहाया—इसने इसबातको विस्तारपूर्वक कलीतनके इजहारमें वर्णन किया ॥

दफ़ा २७—गायकवारके कौंसलीने इसबातका सबूतचाहा कि इनमेंपुलिसकी कुछबनावटहै परन्तु गायकवारके फ़ायदे की कोईगवाही इसबारेमें नहींहुई पुलिसको क्या प्रयोजन था बावजूद बयानरावजीके जोकहताहै कि मैंने पुड़ियांखर्च करडालीं और पुड़िया पेटीमें रखली और यहभी जाहिरथा कि केवल संखिया होतीया हीरेका चूर्णभी और क्योंकरयह वहीसंखिया पैदाकरते जोकरनैल फ़ियर साहबको दीगईथी और वहपेटीतक क्योंकर पहुंचीजो १५ दिसम्बरसे सोहरके पासथी पहिलेइन सबबातोंका सबूतकरना उचितहै फिरपु- लिसकी साजिश समझते ॥

दफ़ा २८—(ङ)—ऐसे बयानोंसे जोगवाहोंने वर्णन कियेहैं मालूमहै यहकिसीने बयाननहींकिया कि इनगवाहोंसे और गायकवारसे कुछवैरथा या उसकी खराबीमें इनका लाभथा सहीहै कि रावजीसे प्रतिज्ञा की गई थी कि जोसच २ इस मुकद्दमेका हालकहेगा तोउसका अपराधक्षमाहोजावेगा यहदुरुस्तहै कि ठीक कहनेसे झूठ कहनेमें रावजीका बहुत फ़ायदाथा जोज़राभी उसकेबयानमें गलतीहोती तो जिनमनु- ष्योंका इसने नामलियाथा तो लोग अपनी बरीयतके लिये उसकेवचनको खण्डनकरते ॥

नरसूने अपनेप्राणसे हाथ धोकर इजहार दिये थे—उससे कहदिया गयाथा कि तुम्हारा अपराधक्षमा नहोगा सो यह बातमालूम होचुकी है कि जो उन्होंने गलत बयान किया तो अपनेही लिये बुरा किया क्योंकि उनमेंसे एक मनुष्य जिसकी जमानी जाचाल थी ॥

दफ़ा २९—लोग यह कह सक्ते हैं कि करनैल फ़ियरसा- हबसे जो गायकवार का वैर था रेसीडन्सी के नौकरों को

दूसरे को खबर लगी और जब नरसू रावजी के रूबरू २२ दिसम्बर को आया तो रावजी ने नरसू के सामने कहा कि हमने गले गले पानी में सब क़बूल दिया॥

दफ़ा-(२१)-(छ)-शायद किसी को यह संदेह हुआ कि यह बयान रावजी और नरसू का किसी पुलिस के अफ़्सर के सिखाने से हुआ है तथाच ऐसी दलीलें गायकवार के वकील की ओर से पेश हुई हैं गायकवार के कौंसली पुलिस की कारवाई में धब्बा लगाते हैं [सुटर साहब से लेकर छोटे पुलिस के नौकर तक] किन्तु वह कहते हैं कि पुलिस ने सख़्ती की और यह भी कहते हैं कि पुलिस की सब गवाही बनाई हुई है इसका कारण यह था कि हेमचन्द गवाह जो होरे के मोल लिये जाने के सबब बुलाया गया था उसने बयान किया कि मुझसे जबरदस्ती गवाही ली गई यह गवाह वह था जो हवालात में नहीं गया था उसने जो कमीशन के रूबरू गवाही दी उससे अपने पहिले की गवाही रद्द की और बयान किया कि मुझसे सख़्ती करके गजानन्द वतिल ने गवाही दिलवाई इस गवाह के विषय में कमीशन के तीन लेम्बरों ने एक ही राय लिखी है अर्थात् वह लिखते हैं कि इस मनुष्य की गवाही में कुछ भी अन्तर नहीं पाया जाता इसलिये ऐसे मनुष्य की गवाही लिहाज़ करने के क़ाबिल नहीं है कमीशन के मेम्बरों के रूबरू इस मनुष्य ने अपने दस्तख़त से इन्कार किया और उसको पहिचान न सका। किन्तु यह झूठ बोला कि हिन्दुस्तानी मैं जानता नहीं हूं तीनों कमीशन के मेम्बर इसपर सख़्ती के होने का इन्कार नहीं करते इस विषय में मैं कमीशन के मेम्बरों की राय गवर्न्मेण्ट भी तसलीम करती है॥

यहां इस बात का विस्तार करना उचित है कि पहिले इनहार गजानन्द वतिल ने नहीं लिये थे किन्तु मिस्टर सुटर साहब ने लिये थे और दो दिन के पीछे हेमचन्द ने सरल्य इसपीली साहब के रूबरू अपने दस्तख़त किये थे तब उसने उन दोनों साहिबों के रूबरू पुलिस की सख़्ती का बयान न किया न ही तो उसी समय सरल्यू

कितनी दीनावे रावजोसे यहबात कहीगईथी। प्र०—इसकौन नौकरथे जिन्होंने कहाथाकि फैजूपर तोइसत रखनीचाहिये उ०—किसीनेनहींकहाथा लोगोंने फैजूका नामलिया मैंनेभी उसीकानाम लिखवादिया। प्र०—किन २ मनुष्योंनेफैजूकानाम लियाथा? उ०—अब्दुल्ला—पेडरू और हम्माल— इसी प्रकार पांचछः मनुष्योंने नाम लियेथे। प्र०—जबमहाराजा से पहिले तुम्हारीमुलाकात हुईथीतो महाराजासाहब जानतेथेकितुम बदजातहोपरन्तु ऐसेनाजुक मुआमिलेमेंफिर तुम्हाराक्योंकर निश्चयकिया? उ०—रावजी सालिम और यशवन्तरावनेमेरी ओरसे महाराजका इतमीनान करदियाथा। प्र०—क्या तुम हिन्दूहो? उ०—हां। प्र०—तुम्हारी क्याजातिहै? उ०—तिलंगनकीभाती। प्र०—तुमपुलिससे डरतेहो? उ०—क्योंमेरे डरनेका क्याकारणहै जब मैंसच वर्णनकरताहूं। प्र०—तुमजानतेहो कि मैंअपराधीहूं? उ०—हांमेरी बदकिसमती है मैंभी शरीकजुर्महूं। प्र०—जो तुम्हारासरकारअपराधक्षमाकरदेगी तोतुमईश्वरको सर्वत्र वर्त्तमान जानकर सचकहोगे? उ०-मैं कुछ मुआफीके सबबसेसचनहीं कहताहूंचाहेसरकार मुआफ करेयानकरे मैंसचही कहूंगा और अबभी सचकहरहाहूं॥

प्रेजीडराट साहबबोले किगरदिनकाराव काप्रश्नथाकिजो सरकारतुमकोमुआफ करदेगीतो तुमइसमसेबढ़कर सत्यबोलोगे इसपरउलथाकरनेवालेने तर्जुमाकरकेगवाहको सुनायाइसपर गवाहनेकहा किजोमैंने कहासब सचहैऔर इससेबढ़कर क्या सचकहूंगा सरकार चाहेमुझको मारडाले याछोड़दे॥

दफ़ा ३३—(ज) इन मनुष्यों के इज़हारों के देने के वक्त ऐसी दगाथी जिस्से कि उनपर झूठ बोलने का सन्देह माननथा किन्तु नायककबार वेरकोलने भी कोई ऐसा बयान नहीं किया जो गवाहों को परेशानी से पाया जाता किन्तु इन तीनों कमिश्नरोंने भी जिन्होंने एकही रिपोर्टपर दस्तखत किये वह लिखते हैं कि नरसूने ठीक २ बयान किया है और अपने दुष्कर्मसे अति लज्जित था सर दिनकरराव जो उसके सजाति हैं उन्होंने नरसूसे खूब प्रश्न किये उसने भी मालूम हुवा कि यह सच्च ही बोलता है इसीतरह से सर दिनकर रावने उसको सख्त पकड़ा परन्तु कहीं फ़रक न देखा और उसको अपने पहिले बयानपर साबित पाया गवर्न्नमेण्ट वही प्रश्नोत्तर नीचे लिखती है॥

प्रश्न दिनकरराव का—तुम २४ वर्ष से नौकर हो क्या तुम महाराजासाहबके पास कमीशन के एकत्र होनेके पहिले अक्सर जाया करते थे? उ०—जबसे कि पहिली कमीशन एकत्र हुई तबसे मैं जाता था और उससे पहिले कभी नहीं गया खाण्डेरावके पास मैं कभी नहीं जाता था केवल साहबके साथ कचहरीमें जाता था प्र०—जब महाराजने तुमको विष देनेके लिये बहकाया तो तुम जानते होगे कि यह बहुत बुरी बात है तुमने अपने स्त्री पुत्र और कुटुम्बके निर्वाह का कोई बन्दोबस्त किया? उ०—मैंने कुछ नहीं किया इसपर ऐडवकेट जनरलने कहा कि तर्जुमा दुरुस्त नहीं होता उन्होंने कहा कि गवाहने यह भी तो कहाथा कि सिरफ़ ज़ुबानी सेराइत सोना न कियाथा। प्र०—किसी को विष देना बुरी बात है क्या कोई मनुष्य दस बारह आदमियों के रूबरू ऐसा काम करता है? उ०—दस बारह आदमी नथे दो हम लोगथे और दो महाराजाके नौकरथे। प्र०—जो संखिया तुमको दी गई वह मिकदारमें कमथी या ज़ियादह थी और क्या तौन बेर विष दिया गया? उ०—मैंने अपनी आयुभरमें किसी को विष नहीं दिया था एक पुड़िया मुझको दी गई थी और यह कहा था कि रावजीको देदेना मुझसे यह नहीं कहाथा कि

होसचभ्काठ जानतेहोंगे औरसालिम औरयशवन्त रावकेओर सेभी उनकोनिश्चय होगाकि वहसव षुश्राहमेका पानते हैं॥

मल्हरराव कावयानहै किहमने कारनैलफियर साहबकेजहरदेनेकेलिये कोई गुप्तकाररवाई नहींकी औरसालिम और यशवन्तराव इसवातको खूबजानतेहैं जोऐसा घातीयहलोग क्यों नवुलायेगये और क्यों रूबरूइजहारनहुये जवमल्हरवयान करदेते तोगायकवार कोवरीयत होती गायकवार के वकील इनकेन वुलानेकायह हेतुकहतेहैं किगायकवार और उनके वकीलइस शख्सको दसोदरपंथ काशरीक नहींकहसक्ते हैंइस सूरतमें इनका हिरासत मेंरहना अच्छाहै निकालना अच्छा नहींहैजो इसवयानसे यहप्रयोजन हैकि पुलिसने काररवाई कीतोयहभो कहसक्ते हैं किगाईकी फौज और पुलिस कीभी सामिलहै परन्तुगवर्न्मेसट इण्डिया यहं कहतीहै किगायकवारकेन वुलानेकी वजहसे सालिम और यशवन्तरावकोकिवह साफ२ वयानकरेंगेइससे औरभी तसदीक इसअमरकीहोती हैकिरावजी औरनरसू कावयान ठोकया और गायकवार के जिम्मे अपराध लगा॥

ही मुतरज्जिमने उसघाकरके गवाहको सुनाया गवाहने कहा कि ईश्वरके सम्मुखमें कहताहूं कि मैंने जो कुछ वर्णन किया और जहांतक कि मैं जानताथा वह सच्चथा और इसवयानमें कुछभी मैंनेझूठ नहीं कहा ॥

इसवयान परगवाही खतमहुई और गवाह बैठाया गया ॥

दफ़ा ३४—भ—अवयहबात पूछनेके लायकहै कि इनलोगों कीगवाही गायकवारकी ओरसे क्योंकर खण्डनहुई उत्तरइस कायहहै कि गायकवारके वकीलकोयह उचितमालूमहुवा कि गवाहोंके वयानमें कहींजो अन्तरहै यातारीखेंभी खिलाफ हैं उनपर व्यंगकिया जाय और गवर्न्नमेण्टके नौकरोंपर तोहमत-रक्खीं नकिउन आदमियोंको लातेकि गायकवारका जुर्मगलतथा तो उसको खण्डन करते और सफाईके गवाह गुजरानते कि मल्हरराव कोवरीयत होती अच्छीतरहसे तो खण्डन नकर-सके पस सिरफ नुकताचीनी पर कमर बांध ली ॥

रावजी नरसू और अमीना आया आदिके वयानके अनुसार महाराजा का गुप्त वार्त्ताका करनासुबूत हुवा और उससमय दोमनुष्य अर्थात् सालिम औरयशवन्तराव की मौजूदगी मालूमहुई औरसबसुआमिले इन्हीके द्वाराहुवा करतेथे यह लोग गायकवारके बड़े विश्वसितथे इनको गायकवारने रुपया भीबहुत सादियाकि खुफिया काररवाई करें जब यहलोग गि॰रिफ्तार कियेगयेतो फौजीगार्ड कीहिरासत मेंथेपुलिस मेंन थेऐडवकेट जनरल नेवर्णनकिया औरकिसीने उनकेवयान को रद्दनहीं कियाकि इनलोगोंसे औरपुलिससे वार्त्ता होतीथी परन्तु गायकवारके वकीलजब चाहतेथे उनके पास जाते थे औरवह उनसे खुफियाबातें करतेथे परन्तु उन्होंने कुछनहीं कहा और गायकवार कीतरफ होकर कोई गवाही नहींदी जिससे गायकवारकी वरीयतहोती हो ॥

गवर्न्नमेण्ट केवकीलों कोइनलोगोंसे अधिक गवाही लेने कीजरूरत नमालूमहुई गायकवारकी औरबातथी वहआप-

यकवारकी लिखीहुई आज्ञाके विना नमिलीपरन्तु इस बया-नसे दामोदरपंथ की सिद्धाज्ञत नहीं होती जब तक किकोई गवाह और नपक्ष हो ॥

दफा ४०—दूसरे गायकवारके जवाहरखाने के रत्नकानाना वतिलजो करनैलफियरसाहबके विषदेनेमें मालूम नहींहै उ-सकेबयानसे मालूमहुवा कि २० अकटूवरके कई दिन पहिले हीरेकी खाहिशथी यहकिसी छोटेसे कामके लिये आवश्यक नथाकिन्तु एकदवाके लियेचाहियेथा किपीसाजाता उनका बयानहै किमैनेकभी ऐसीभस्म नहीदेखी थी यह भी साबित हैकि बहीखाते गायकवारके यहांथेवह भी मशकूक करदिये गयेहैं जिससे कि कोईकाररवाई छिपकरहो परन्तु कागजचि-ह्नित(टी)अक्षरसेमालूम हुवाकि हिसाब मशकूक कियेगयेथे यहदरबारहखरीदअल्लाहुकी हैं सिवायइसके रामेश्वरमूराजी ब्राह्मण और नानाजीवतम और उनके मातहत आसाराम कीगवाही से भी साबितहुवाहै कि हीरेमोल लियेगये परन्तु फिरभीहीरेके खरीदनेपर और गवाहियों काहोना उचितहै ॥

मालूम होता है कि उससमयविषका जिक्र नहीं किया गया परन्तु यहभी मालूम नहीं है कि अमीना आयाक्योंकरसमझी कि विषकाजिक्र है क्योंकि जब अब्दुररहावने कहा कि कर्नैलफियर साहबकोजो जादूकीपुड़िया और कुछ और दिलमजू करनेके लियेदेंतो तोतूउनकोदेदेगी तब अमीना आयाबिल्कुलडरगई और उसने गायकवारसे निषेध किया कि कर्नैल फियरसा-हबकेलिये कभीऐसा उद्योगनकरना नहीं तोबहुत खराबीमें पड़ोगेयह कहवह चलीगई और फिरकभीनहीं आई॥

दफ़ा ३७—अमीना आया के इज़हार की सिदाक़त उसके पति शेखअब्दुल्लाने की उसकाबयान है किअमीना आयाने मुझसेदूसरेदिन कहाकिगायकवार कहतेथेकि कौनसी वस्तु दीजावेकि साहबका और मेरा एक मनहोजावे और जोफ़-रकआगया है वहदूर होजावे इसपर मैंने कहाकि साहबको कोईवस्तु खानेको नदेना॥

दफ़ा ३८—गायकवारके सिक्रेटरी दामोदरपंथ की गवाही सुननी न चाहियेइस गवाहकेबयान कीहालत अच्छीनहीं है क्योंकिवह इसअपराधमें संयुक्तहोनेका इक़बाल करताहै जो इज़हार उसनेदिये मुआफ़ीके वादेसेदिये और यहइज़हार उसनेक़ैदसे तंगआकर इसतौरपर दियेथे॥

कमीशनके तीनोंमेम्बरोंने जनकीकिरिपोर्ट मुत्तफ़िक़ है उ-न्होंनेबड़ीएहतियातसे दामोदरपंथकीगवाहीको लिखाहैपरन्तु वहयह समझतेहैंकिमुख्य कामोंमेंतो मुताबिक़त है और कुछअ-न्तर नहींगर्ज़ जे हड्डिङ्गसा खूबगौरकरकेलिखतीहैकिदामोदर-पंथकीगवाहीको और गवाहोंकीगवाहीसेसिदाक़त होगई॥

दफ़ा ३९—पहिले कागज परजिसपर कि (जोड़ा अक्षरका चिह्नहै वहनिस्संदेह असलीहै उससेप्रकट है कि ४ अक्टूबर सन् १८७४ ई० को दामोदरपंथको किसी मुख्यकार्य्य के लिये संखिये की ज़रूरत थी और उसके लिये दामोदरपंथ कायह बयानहै किगायकवारको विषचाहियेथा परन्तु संखियागा-

थे और यहरुपये कुछ त्यौहार या विवाहमें नहींदिये केवल इसीलियेदिये कि हमेशा गायकवारके यहां आवेंजावें परन्तु इसने सालिमके कहनेको न माना ॥

दफ़ा ४५—फिर महाराजा कहतेहैंकि सालिम और यशवन्तराव और कांवल कार गजावा और नूरुद्दीन बोहरा और हकीम जो अदालत में पेशनहीं कियेगये यह गायकवार के मुफीदमतलब हैं परन्तु हालइसका यहहै किनूरुद्दीन बोहरा एक अत्तार है दमोदरपन्थ कहताहै कि संखिया जो कारनैल फियरसाहब को दीगई वह इसीकी दूकान से मंगाईगई थी और नूरुद्दीनकी बेकसूरीका कोई सबूतनहींहै जोवह बुलाया भी जाता तो यातो वहकहता कि मंगाईगई है या इन्कारकरता कि नहींमंगाईगई परन्तु जैसेअहिले वयानहोचुकाहै कि ऐसे इजहारात दमोदरपन्थ पर गवर्न्मेण्टको कुछ लिहाज नहीहै और यहदमोदरपन्थके वयानसे कि उसनेनूरुद्दीन की दूकानसे संखियामोललो कहीं निशानभी नहीहै क्योंकि शिनाख़तनहो की इसलिये नूरुद्दीन नहीं बुलायागया उसके नबुलाये जानेसे केवल इतनीबात हुई कि नूरुद्दीनकी दूकान से संखियेका मोललिया जाना साबित नहुवा किन्तु नूरुद्दीन बोहरेकी अदालतमें हाजिरहोने से कुछमुकद्दमे का ज़ोर

दफ़ा ४२—गवर्न्मेण्ट इण्डिया अब उचित समझती है कि उन तीनों कमीशनके मेम्बरोंको मुफस्सिलवजह जिन्होंने अलग२ रिपोर्ट लिखी है कि ग।यकवारपर अपराध साबित नहीं है उनकीतकरीर को विवेचना कीजावे॥

दफा ४३—श्रीमान् महाराजा सेंधिया कहते हैं कि उन गव।होंमें से जिनका सम्बन्ध इसमुकद्दमे में नहींहै केवलतीन गव ह रावजी नरसू और दमोदरपन्त ऊपर कहे हुये जुर्मोंकी गवाही देते हैं और उनके बयान में कुछ और अन्तर है शायद महाराजा साहब अमीनाकी गवाहीको भूलगये जैसे कि पहिले बयान कियागया है शहादत अमीनाकी जरूरीहै और उसकी गवाही से बडाजुर्म साबितहोता है गवर्न्मेण्ट इण्डियाको रावजी नरसु और दमोदरपन्तकी गवाहीमें कुछ भी अन्तर मालूम नहीं होता न जानिये महाराजा साहब किसबयान से अन्तर जानतेहैं खासअमरमें इनकाबयान एक साहै यहबात केवलतीनयाचार गवाहएकखास जुर्मपर गवाहीदेतेहैं और गवाहीके सवालोंमें साबित कदमरहते हैं तो यह प्रयोजन नहीं है किचूंकि गवाहकमहैं इसलिये उनकी गवाहीनिश्चय माननेके योग्य नहींहै॥

दफ़ा ४४—फिर महाराजा कहते हैं कि गवाही पेडरू और अब्दुल्लाको अपराधी के मतलबको मुफोद है गवर्न्मेण्ट इण्डिया के विचारसे अब्दुल्लाकी गवाही गायकवारके मुफीद नहीं है और पेडरू गवाह को रावजीने मुलजिम किया था परन्तु उसने इसकाररवाई से बिल्कुल इन्कारकिया यहकेवल रावजीकी एकबातको खण्डन करताहै अर्थात् अपनी शिरकत उसकेसाथ कुछबयाननहीं करताकि जिससे गायकवार माखूज हों और न उसकीगवाही ऐसीहैकि जोगायकवारकीबरीयत का सबबहो और इसगवाही को रावजी तसदीक करता है कि गायकवारके नौकररेजीडन्सीके नौकरोंकेयहां आते जाते थे वह इसबातको मानताहै कि गायकवारने सुभेरुपये दिये

दफ़ा ५०—श्रीमान् महाराजाजयपुरविचारतेहैं कि रावजी ने बयानकिया कि मुझको और नरसूको गायकवारने एक२ लाखरुपयेके देनेकावायदाकिया और नरसूवर्णनकरता हैकि वहभारी इनआमका वाइदा था रुपये की संख्या बयान नहीं करता गवर्न्नमेण्ट इण्डिया इसइखतिलाफके लियेनिश्चयकरती है कि रावजी और नरसूके बयानमें कुछसाजिश नथी॥

मुख्ययह बातहै कि पारितोषक कीतो प्रतिज्ञाकी गईथी और यहदोनोंकी गवाहीसे साबितहै शायदइनआम इनदोनों को।मुखतलिफ सुनादिये गयेहोंया उनदोनोंकी समझमेंअन्तर हो क्योंकि सालिम और यशवन्तराव भी इसवार्तामें संयुक्तथे ऐसानहीं होसक्ता कि रावजी और नरसू की साजिश होगई होतीतो नरसूभी एकलाख रुपयेके इनआमका इकरारकरता न कि केवलपारितोषकका इकरार॥

दफ़ा ५१—श्रीयुत महाराजाजयपुरठीकतौरसेजाहिरकरते हैं कि यादद्दाश्तें दामोदरपन्थके दफ्तर से आईं उनमें कुछ रुपये का जिक्र नहींहै जोहीरे या संखियेके मोललेनेके लिये दियागयाहो॥

लोदामोदरपंथने भूठबयानकियाथा तोऐसा होसक्ताथा कि गायकवार इन लोगोंको बुलवाते और साफ २ इनसे गवाही दिलवाकर दामोदरपंथकी गवाहीको खण्डनकरते गायकवार को खूबमालूम होगा कि यह गवाह उसके कलामको खण्डन करसक्ते हैं या नहीं॥

दफा ४७—महाराजा सेंधियाको यहबात दिक्कततलब मालूमहुई कि घोडा २ बिषक्यों दियागया जिसमें इतना जमाना बीता इसके लियेभी वैसाही बयान होसक्ताहै जैसा कि और बातोंकेलिये बयानहुवा यहतो मालूमहुवा कि थोड़ा २ बिष दिया गया और नवम्बर की ९ तारीखको अधिक दिया गया और सिवायइसके कि रावजीको भयथा कि जोएकही बेरबिष दियाजावेगा तोतुरन्तही उसकाअसर होजावेगा और परदा खुलजावेगा और थोडा २ देनेसे बहुत दिनोंमें असरहोगा॥

बिषदिये जानेका मूल तहकीकनहींहुवा क़रीनेसे समझा जाताहै कि छः सात सप्ताह पहिले से बिष देना प्रारम्भहुवा जबठीक अवसर मिलीतब बिषदिया रावजीके बयानसे मालूम हुवा कि दोसरतबा उसकोमौका नहीं मिला और इसकाम केलिये उसकोबहुत होशियार रहनापडा॥

दफ़ा ४८—फिर महाराजा लिखतेहैं कि इसकासुबूत कुछ नहींहै कि तांबा, संखिया, और हीरा मोल लियागयाथा न कोईकागज दस्तखती महाराजा साहबका इसबिषयमेंहै॥

दफा ४१—और ४५—मेंबयानहोचुकाहै कि ऐसीखरीदारी कासुबूत करनाफजूलहै और कागजका जवाबयहहै कि यह बात असम्भवतहैकि ऐसाकागज महाराजाने लिखाहो॥

गवर्न्नमेण्ट इण्डियाको किसीप्रकारसे ऐसेलिखेके कागजका निश्चयनहींहै॥

दफा ४९—श्रीमान् महाराजाजयपुर और सरदिनकरराकके गवाहीके लियेउज्र महाराजासेंधियाके समानहैं और जोउनके कुछजियादह उज्रहै वहयहहै॥

रायतीनों यूरोपियन मेम्बरों के अनुकूल है यह रिपोर्ट अति उत्तम और नीति पूर्व्वक लिखीगई है और निश्चय मानने के योग्य है इसमें लिखा है कि दहगवाही ऐसी नहीं है कि जिनका निश्चय न हो और कुछ इनका खण्डन नहीं हुवा और गायकवार के कौंसली नभी किसी गायकवार के एजन्ट को नहीं बुलाया कि वह गायकवार की निर्दोषिता साबित करें और आखिर तक कहा कि हमारा काम नहीं है कि इस मुकद्दमे को तूल दें परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डिया को इस बारे में और ख्याल है उसके निश्चय करनेकी खास वजह यह थी कि गायकवार को अपनी बरीयत के हासिल करनेका मौका दियाजावे गवर्न्मेण्टइण्डिया के विचार में उचित था कि कौंसली गायकवार के मुकद्दमे को कायम करते और जो गायकवार के प्रतिकूल थी उसको रद्द करते परन्तु क़रीने से मालूम होता है कि उनको सामर्थ्य से होना असम्भव था अगर था न होती तो जरूर वह पैरवी करते गायकवार के कौंसिल ने यह वर्णन किया परन्तु तकरीर नहीं की कि मायट दामोदरपंथ और भावपूनाकर इनजहर पूरानी के मामिले सुना नी हो इस बात को बड़ी सावधानी से एक सम्मत कमीशन के तीनों मेम्बरों ने कई बातों में खण्डन किया है॥

सिवायइस शख़्सएक कागजजिसपरकि [वाई] अक्षरका चिह्न है पेशकरता है और उसको इससे रुपयेपानेका इक़्रबालकरता है कियह रुपयापूर्वोक्त कागजको लिखेइये के अनुकूल नाना-जीवतिल गायकवार के जवाहर खानेके दारोगाको दियागया और पुण्यके रुोगेमें लिखागया किभेद नखुले श्री मान्महा-राजा जयपुरके विचारसे किताबका लेखठीक है और दामो-दरपंथ का बयान गलत परन्तु दरबारै तसदीक बयानदामो-दरपंथके दफ़ा ३८ में लिखा गया है॥

दफ़ा ५२—श्रीयुतमहाराजा जयपुर कहते हैं कियहबात प्रसिद्ध थी कि करनैलफियर साहबको विषदिया गयाउस में तांबाभी था परन्तु जबउसके जुजअलग किये गयेतोतांबेका कहीं निशाननथा गवाहीमें तांबेका जिक्रन था भावपूनाकर बाजारी खबरें सुनकर करनैल फियरसाहब से कहताथा कि ऐसा २ विषआपको दियागया॥

दफ़ा ५३—गवर्न्मेण्टइण्डिया नहींसमझती कि श्री मान् महाराजा जयपुरने क्याविचार के यह लिखा कि कोई सूरत सालिम और यशवन्तसे पूछनेकीनथी उन्होंने पुलिसके सम्मुख बयान किया या नहीं जो गायकवारके वकील वा कमीशनके मेम्बरभी कुछ हाल पूछना चाहते तो पुलिस के अफसर और दूसरे मनुष्यभी उनकी बातों का उत्तर देते॥

दफ़ा ५४—सरदिनकरराव तारीखों की तफावत परएति-राज करते हैं और रावजी और दामोदरपंथ के इजहारों का मुक़ाबिला करते हैं और कहते है कि इन्होंने खिलाफ वर्णन किया परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डियाके विचार से किसीमें अन्तर नहीं पाया गया॥

दफ़ा ५५—परिणाम यह हैकि हरचन्द श्रीमान् महाराजा सेंधिया और सरदिनकरराव और इनदोनोंसे श्रीयुतमहारा-जा जयपुर कीराय वाजिल है परन्तु गवर्न्मेण्टइण्डिया की

पर लौट आये और रावजी चपड़ासियों का हवालदार उनसे मिला और उसने साहब को सलाम किया फिर करनैलफि-यरसाहब उसकमरे में गये जिसमें उनका दफ्तर रहता था और वहांवह कपड़े आदि पहिना करते थे वह एक छोटा सामकान है और रेजीडन्सीके खासमकानों के निकट है जबक-रनैल साहब उसकमरे के भीतरगये तो उन्होंने अपने नियम के अनुसार शर्बतका गिलासहाथ धोनेको तिपाई पर रक्खा हुवापाया और दोयातीनघूंट पीकरउन्होंने गिलासकोफिर रखदिया फिरवह लिखनेकेलिये बैठ गये और बीसमिनट या आधघण्टेमें एकहीबेर जीमतलाने लगाकरनैल साहब ने इस विचारसे कियह शर्बतमेरे नामुआफिकहै औरइसअन्देशे से भीकि ऐसानहोजोऔरजियादा पीनेसेउनकाजीबाहै शर्बत दफ्तरके कमरेसे बाहर बरामदेसे फेंक दिया बहुतसा शर्बत बरामदेमें रहाऔर थोड़ासा बहकर बरामदेके बाहर पहुंच गयाजब करनैलफियर साहबने फिरउसगिलासको हाथधोने कोतिपाई पररक्खा देखातो उनका खयालउस तलछटकेरंग कीतरफ गयाजो गिलासमें बाकीरह गयाथा और जिसमेंसे थोड़ीसी गिलास केऊपर अबतक बहरहीथी करनैल साहब बयानकरतेहैं कियहतलछट खाकरंग कीसीथी औरजबउ-न्होंनेगिलास कोउठाकर देखातो उनकेदिलमें यह विचार

अंगरेज़ीमेम्बरोंकी रिपोर्ट ॥

१—सबसेपहिले उन तारीखों का बयान करना पसन्दीदा मालूम होता है जिन से इस मुकद्दमे के कई सम्बन्धी हाल मालूम हुये तथाच वहतारीखें नीचे लिखी हैं ॥

करनैलफियरसाहबने १८—मार्च सन् १८७३ ई० में बड़ौदेकी रेज़ीडन्सीका कामशुरूकियाथा जो बहुतसीबातोंकी शिकायतें करनैलफियरसाहब रेज़ीडन्टमहाराजागायकवार की गवर्नमेण्टसे कीथीं उनकी तहकीकातके वास्ते नवम्बर के प्रारम्भ से २४ दिसम्बर सन् १८७३ ई० तक कमीशन ने इजलास किया ॥

महाराजागायकवार लक्ष्मीबाईसे अपना विवाह करनेके वास्ते करनैलफियरसाहबके समेत २—एप्रिल सन् १८७४ को नौसारी को गये और १६—मईको लौटआये ७—मईको विवाह हुवाथा १६—अक्टूबर सन् १८७४ ई० को लक्ष्मीबाईसे एकपुत्र उत्पन्नहुवा ॥

जोखरीता महाराजागायकवारने श्रीमान्वाइसरायबहादुरके नाम करनैलफियरसाहब को तब्दीलीके लिये भेजाथा दूसरी नवम्बर सन् १८७४ ई०का लिखाहुवा था ॥

जो खरीताश्रीयुत वैसरायबहादुरने महाराजागायकवार के नाम जिसमें इत्तिला तब्दीली करनैलफियर साहब और तकर्रीरीकरनैलसरल्यूइसपीली साहब के सी—एस—आई—को भेजाथावह २५ नवम्बर सन्१८७४ कालिखा हुवाया ॥

दफ़ा २——जोगवाही मिसलके साथहै उससेहमारेविचारसे यहबात साबित है कि९—नवम्बर सन् १८७४ ई०को करनैलफियर साहबको विषदेनेका उद्योगइस भांति कियागयाथा कि सफेद संखिया और हीरे का चूर्ण उस शर्बत के गिलास में जिसको करनैल फियर साहब हमेशा प्रभात को हवाखाने के उपरान्त पियाकरते थे मिलादिया गया करनैल फियर साहब उसदिन सुबह को सातबजे पांच मिनट-

दफा ६—डाक्टरग्रेसाहब केमीकल अग्जेमिनरआफ गवर्न्मेण्टबम्बईकी गवाहीका संक्षेप नीचेलिखाताहै डाक्टरसाहब के पास तीनों पुड़ियां जिनका ऊपर वर्णन ज़ुवा ऐसी सूरत और ऐसीरीतिसे पज़ुंचींजिससे यहखयालनहीं होताकिमार्गमेंउनमें कुछछल कियागया॥

पहिलीपुड़िया जोडाक्टर सीवर्डसाहबने उनकेपासभेजीथी उसमेंडेढ़ग्रीनचूरह्मभूरे रंगकासाथाजिसमेंकुछ२ चमकतेज़ुये ज़रे थेडाक्टर साहबने उसमेंसे थोड़ेसे चूरेको गरमी के द्वारा साफकिया और जबखुर्दबीनसे उसको देखातो अष्टकोण बिल्लौरके सेज़रे मालूमज़ुये डाक्टरसाहबने उनज़रों को जलमें जोशकिया और उसमेंसे थोड़ासाजल लेकरचांदीका तेजाब ऐमोनासुरेत उसमेंमिलाया तोउसके सबबसे एक पीलेरंग कीवस्तुएकच होगई॥

खानेके चमचेसे कुछ कमथा जब डाक्टर सीवर्ड साहब ने गि-लासको हिलाया और रोशनीमें उसकोदेखा तो उनको त-लछटमें कुछ भिल्लीसी मालूमहुई और जब कि उन्होंने उसमें थोड़ासा जलमिलाया तो उनको तलछटके चमकतेहुये अज-जाओंपर रंगत की झलक दीखी कारनैलसाहब ने अपनी त-बीयतकीकैफियत डाक्टरसीवर्डसाहबकेरूबरूबयानकीऔर डाक्टरसीवर्डसाहब गिलासकोबाक़ीशर्बतकेसमेतअपनेघरको इसबातकी तहक़ीक़ातके करनेकेलिये लेगयेकिउसशर्बतमेंकौन वस्तुमिलीहुईथीकारनैलफियरसाहबनेवर्णनकियाहैकिजबमैंने शर्बत चक्खाथातबसेउससमय तककि वहडाक्टरसीवर्डसा-हबको दियागया कोई मनुष्यभी उसकेपास तकनगया जोकैफिय-त कारनैलफियरसाहबको अपनीतबीयतकी मालूमहुईथी उस को एक चिट्ठीमें लिखकरउसीदिन ग्यारहबजे डाक्टरसीवर्ड साहबकेपास भेजदिया जो नीचेसंक्षेपसे लिखाजाताहै॥

यद्यपिमैंनेउसशर्बतकेदो गिलाससेथाकेवलदो या तीनघूंट पियेथेतौभी अनुमान आधघण्टेके जैसाकिमैंने आपसे बयान कियाथा मुझकोखिलाफ मामूलमेदेमें कुछशिकायत मालूम हुई और उसकेसाथ सिरघूमनेलगा और दृष्टिमेंचक्करमालूम हुवा जिसकेसबबसे ख्यालों में फ़तूर पैदाहुवा और मुहमेंभी एक नागवारधातका स्वादमालूमहोनेलगा और मुंहमेंथूक आनेलगी पहिलेकईदिनसे मेरी ऐसीदशा नहींहुईथी और मैंनेउसको कुछ बुख़ारसे (जोअब बिल्कुल जातारहाथा) और कुछ इसविचारसे मन्सूबकिया कि जिनफलोंका हररोज़ मेरे लिये शर्बत बनायाजाताथा वहताज़ेनथे॥

कारनैलफियरसाहबने वर्णनकियाहै कि उसरातकोतांबेका सास्वादथा और वहबयान करतेहैं कि यहस्वाद शर्बतके पीने से जोप्यालेकेऊपर बिल्कुलसाफथा और जिसकाज़ायका कुछ खराबनथा अनुमानपौनघण्टेके उपरान्त मुझकोमालूमहुवा॥

क्टर ग्रे साहबके पास पहुंची उसमेंसातग्रेन संखीथी परन्तु जब उन्होंरीतों ने उसकीपरीक्षा की जो पहिलीपुड़िया के निस्बत अमल किया था तो उसमें संखिया और रेत और हीरे का चूर्णसाबित हुआ जो पुड़िया डाक्टर सीवर्ड साहबने भेजी उसकेडाक्टर ग्रेसाहब को एकग्रेन और जो कारनैल साहब ने भेजीथी उसमेंसवाग्रेन कुलसवादो ग्रेन संखिया निकला डाक्टर ग्रे साहब बयान करतेहैं कि जोसंखिये का असर जावेतो ढाईग्रेन में एक तनदुरुस्त मनुष्य मरसक्ता है और बहुत सूरतों में उसका आधे घण्टेसे लेकर एक घण्टे तक असर होता है बड़ी मोतबिर सनद पर यह बात मालूम होती है कि मनुष्यकी देहपर हीरेके चूरेका कोईमोहलकअसर नहीं होता है डाक्टर ग्रे साहबका विचार हैकितलछट में जोएक भिल्लीसीपैदाहुई जिसकाजिक्र डाक्टरसीवर्डसाहबने किया है वहअवश्य कारकेंनप्तासमें संखियेकेहानेका नतीजाहै ॥

थोड़ासा चूर्णजल और मारीएटकएमड के साथ जो पकिया और जोशकरते दोटुकड़े साफ तांबेके उसमें डाल दिये कई क्षणके पश्चात्तांबेके पत्तरपर भूरेरंगके धात केसे जरें इकट्ठे होगये डाक्टरसाहबने इन तांबेकेपत्तरोंमें से एकटुकड़ेकोसुखाकर एकनलीमें उसको गर्मकिया जिसकेतरफों परअष्ठकोण जरें बिल्लौरके इकट्ठे होगये इनजर्रोंकोभी वहीक्रियाकीजो पहिलेवर्णन हुवा और वहभी वैसेहीहोगये॥

दफा ७—जोचूर्णडाक्टरसीवर्डसाहबने डाक्टरग्रे साहबके पास भेजाथाउसके एकभागमें साहबने कोयला मिलाकर भो धातकेजुजोंकोअलगकिया और जिसनलीमें उन्होंने यह इम्तिहान किया उसको उसघेरेके समेतजो उसपर बनगया था और जिसकोवहसंखिये केहोनेकी अलामत बयानकरतेहैं कमीशनके सम्मुखपेशकिया डाक्टरसाहबने इसहलक्की को गरमी नहींदी जिस्से वह सफेदसंखिया होजाता॥

दफा ८—जो चमकते हुये जर्रे इस चूर्ण में थे जो डाक्टर सीवर्ड साहब के पास से आया था उनकोडाक्टरग्रे साहब बयान करते हैं कि ऊपर कहे हुये तजुर्बो का उन पर कुछ असर नहीं हुवा और उन्होंने एक खुर्दबीन से उनको देखा और पहिली दफायह बयान किया कि शायद वह शीशे का चूर्ण है जबकि १२ नवम्बर को उन्होंनेरोखनेवाले कागज के टुकड़े पर उनको देखा तो खाली आंखसे देख कर उन्होंने यहखयाल किया कि इतनी चमकके सबबसेवहहीरे केजरेंथे डाक्टर साहबने सम्पूर्ण तेजाबों और खारोंसे उनकेगलानेके लियेकोशिश की परवेइनहीं गलेऔर फिरयहसमझेकि वह हीरेका चूर्णथा यहतहकीकातउन्होंनेअपनी तरफसे कीक्योंकि १३ नवम्बरको उनकेपास इस मजमून की कोई इत्तिला नहींआई थी कि उसचूरे में शायदहीरेकाचूर्ण भी होगा॥

दफा—९—दूसरीपुड़िया जोकरनैल फियर साहबने (आई) नम्बरके कागज के साथ भेजी थी वह १७—नवम्बर को डा-

क्टर ग्रे साहबके पास पहुंची उससेंसातग्रेन मट्टीथी परन्तु जब उन्होंरीतों से उसकीपरीक्षा की जो पहिलीपुड़िया के निसबत अमल किया था तो उसमें संखिया और रेत और हीरे का चूर्णसाबित हुआ जो पुड़िया डाक्टर सीवर्ड साहबने भेजी उसमेंडाक्टर ग्रेसाहब को एकग्रेन और जो कारनेल साहब ने भेजीथी उसमेंसवाग्रेन कुलसवादो ग्रेन संखिया निकला डाक्टर ग्रे साहब बयान करतेहैं कि जोसंखिये का असरहो जावेतो ढाईग्रेन में एक तरुणमनुष्य मरसक्ताहै और बहुत सूरतों में उसका आधे घण्टेसे लेकर एक घण्टे तक असर होता है बड़ी मोतबिर सनद पर यह बात मालूम होती है कि मनुष्यको देहपर हीरेके चूरेका कोईमोहलकअसर नहीं होता है डाक्टर ग्रे साहबका बिचार हैकितल्छट में जोएक झिल्लीसीपैदाहुई जिसकाज़िक्र डाक्टरसीवर्डसाहबने किया है वहअवश्य कारकोंगिलासमें संखियेकेहोनेका नतीजाहै॥

निशानियां सिरघूमने और जी मतलाने और वमन और दस्त और लेट्टे में जलन होतीहै और वहयहभी कहतेहैं कि जोबराबर थोड़ा२ संखिया खायाजावे तो नेत्रों से पानी जारीहोजाता है और जो संखिया जख़मसे लगायाजावे तो उसरोगी के मारने का हेतु होजाता है वहयहभी विचारतेहैं कि करनैल साहबने थोड़ा२ संखिया पिया होगा परन्तु यहभी जी मतलाने के लिये काफीथा और जी मतलाने से मुखमें पानी और थूक अधिकआने लगती है॥

दफा १३—मुकद्दमेके इसहिस्सेसे यहसम्बन्धी बातभी जिक्र करनेके योग्यहै कि करनैलफियर साहबने अपनी गवाहीमें कहाहै कि वह सितम्बर सन् १८७४ ई० सेभी अलील थे अर्थात् उनको जुदामया और उनके माथेपरएक फोड़ाथा जिसको इलाजडाक्टर सीवर्ड साहबकरतेथे डाक्टरसाहब उसफोड़ेपर प्लास्टरलगातेथे और बाकी प्लास्टर एकमेज़ परउनके दफ़्तर केकमरेमें रक्खारहताथा सो आपही करनैल फियर साहब तेजाब क्लौडियन इसरीतिसे फोड़ेमें लगाया कि जिस फाहेसे उन्होंनेउसको लगायाथाउसकेछुटानेमें बड़ीमुश्किलहुई एक दिनप्रभातको आठया९ बजेकेबीचमें यहबातहुई उससमयक- रनैल साहबअपनेदफ़्तरमें हाथधोनेकीतिपाईके निकटखड़े थे और वहांसे उन चपड़ासियों पर नजरपड़ी जोउस कमरे केबरामदेमें खड़ेहुयेथे प्लास्टरलगानेसे पहिले और उसकेपीछे भी करनैलसाहबको कुछज्वरथा और उनका शिरभारी था और उनकेनेत्रोंसे बहुतसापानी जारीथाइससे उनको संदेह हुवा कि अक्टूबरके प्रारम्भसे उनकाशरबत उचित प्रकारसे तय्यारनहीं कियाजाता॥

६—नवम्बर को उन्होंने एकयादोघूंट शरबतके पिये और उनको अपनी तबीअत नामुआफिक मालूम हुई और उनका सिर भारी होगया और ऊंघ मालूम होनेलगी अन्तको उन की तबीअत की वहीकैफियत होगईजो अक्टूबरके प्रारम्भ में

ऊई थी ७ नवम्बरको भी उन्होंने थोड़ासा शरबत पिया और वह यह बात जानते थे कि उस दिनसी उनकी तबीयत को वहीदगा थी जैसी कि पहिले दिन थी ८ नवम्बर को उन्होंने शरबत नहीं पिया क्योंकि उस दिन उनको अपनी तबीयत बहुत नासाज मालूम ऊई थी॥

जो अहवालसे कर्नैलसाहबको सितम्बर और नवम्बरके बीच में मालूम ऊई थी उनका जिक्र कई गवाहोंकी गवाहीके जिरह में जो उस तहकीकातसे अखीरपर पेशकीगई थी कुछ जरूर मालूम होगा॥

निशानियांसिरघूमने और जी मतलाने और वमन और दस्त
औरपेटमें दर्द होताहै और वह यहभी कहतेहैं किजोबराबर
थोडा२ संखिया खायाजावेतो नेत्रोंसे पानी जारीहोजाता है
औरजो संखिया जखमसे लगायाजावे तोउसरोगी कोमारने
का हेतुहोजाताहै वहयहभी विचारतेहैं किकरनैल साहबने
थोडा२ संखियापिया होगापरन्तु यहभी जी मतलाने के लिये
काफीथा औरजो मतलाने सेमुखमेंपानीऔर थूकअधिकआने
लगताहै ॥

दफा १३—मुकद्दमेके इसहिस्सेमें यहसम्बन्धी बातभी लिखने
करनेके योग्यहैकि करनैलफियर साहबने अपनीगवाहीमें क-
हाहैकि वह सितम्बर सन् १८७४ ई० सेभी अलील थेअर्थात्
उनको जुकामथा औरउनके माथेपरएक फोडाथा जिसका
इलाजडाक्टर सीवर्डसाहबकरतेथे डाक्टरसाहब उसफोडेपर
प्लास्टरलगातेथे और बाकी प्लास्टर एकमेज परउनके दफ्तर
केकमरेमें रक्खारहताथा सो आपही करनैल फियर साहब
नेभीब्लौडियन इसरीतिसे फोडेमें लगाया किजिस फाहेसे
उन्होंनेउसको लगायाथाउसकेछुटानेमें बडीमुश्किलहुई एक
दिनप्रभातको आठया९ बजेकेबीचमें यहबातहुई उससमयक-
रनैल साहबअपनेदफ्तरमें हाथधोनेकीतिपाईके निकटखडे
थे और वहांसे उन चपडासियों पर नजरपडी जोउस कमरे
केबरामदेमें खडेहुयेथे प्लास्टरलगानेसे पहिले और उसकेपीछे
भी करनैलसाहबको कुछज्वरथा और उनका शिरभारी था
और उनकेनेत्रोंसे बहुतसापानी जारीथाइससे उनको संदेह
हुवा कि अक्टूबरके प्रारम्भसे उनकाशरबत उचित प्रकारसे
तय्यारनहीं कियाजाता ॥

६—नवम्बर को उन्होंने एकयादोघूंट शरबतके पिये और
उनको अपनी तबीअत नासुआफिक मालूम हुई औरउनका
सिर भारी होगया और ऊंघे मालूम होनेलगीं अन्तको उन
की तबीअत की वहीकैफियत होगईजो अक्टूबरके प्रारम्भ में

मियोंके लिये नियतहै और मैंने और कोई बात नहीं देखी॥

दफ़ा १६—परइस बातकेसंदेह करनेकाकोई हेतु मालूम नहीं होताकिइनमेंसे किसीमनुष्यने शर्बतमेंविषमिलायाहो और रावजी आपहीमुक्तिरहै कि मैंनेविषमिलाया इसलिये हमारीरायमें इसविषयमें उसकीगवाहीको ठीकसमझना-चाहिये॥

दफ़ा१७—अबरावजी और २ गवाहों की गवाहीपर बत-फ़सीलगौरकरनाजरूरहैकियह बातनिश्चय होकि रावजीको करनैलफ़ियरसाहबको विषदेनेकी तरग़ीबदीगई और जोयह बातठीकहै तोकिसमनुष्यने उसकोयहकहाथा॥

दफ़ा १८—रावजी की गवाहीनीचे लिखीहै॥

कि मैंने और यलपाने ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० के भोरको
जब कि करनैल फ़ियरसाहब हवाखानेके लिये बाहर गयेथे
दफ्तरके कमरेको साफ़ कियाथा और मैंनेहीताजा जलउस
बोतलके भीतरभरा जो हाथधोनेकी तिपाईपर रक्खीहुईथी
और निःसन्देह वही बोतलथी जिसमेंसे डाक्टरसीवर्डसाहबने
थोड़ासाजल उसगिलासमें डालाथा जिसमें तलछटथी और
मैंनेयह जल उसमट्टीके बरतनमेंसे लियाथाजो मकानके बरा-
मदेमें रक्खारहताथा और जिसमेंसे रेजीडन्सीके यूरोपियन
बाशिन्दोंको जलदियाजाताथा और मैंकरनैलफ़ियरसाहबके
लौटनेके पहिले अनुमान सातबजेके कमरेसे चला आयावह
बयानकरता है किमैंने अब्दुल्ला को कमरेके भीतर आतेहुये
और अपने स्वामीके कपड़ोंको दुरुस्तकरतेहुये और बाहरजाते
हुयेदेखा परन्तु मैंनेउसको शरबतलाते हुये नहीं देखा ल-
छमण दरयावसिंह चपड़ासी कमरेसेबाहरथा गोविन्द बाबूने
कहाहै कि अब्दुल्लाकेचले जानेके उपरान्त रावजीहवालदार
करनैलफ़ियरसाहब केदफ्तरके कमरेमेंआया और पांच या
छःमिनटतक उसके भीतर ठहरारहा और इससमयान्तरमें
उसनेकागज़ोंकीरद्दीकोजो उसटोकड़ीकोजोलिखनेकीमेजके
निकटरक्खीहुईथी खालीकरके एकदूसरी टोकड़ी के अन्दर
कागज़भर दियेजो उसकमरेके भीतररक्खीहुईथी जिसमेंहो-
करदफ्तरके कमरेमें जातेथे इस जगहपर इस बातका जिक्र
करनाचाहिये और कमीशनके बाज़मेम्बरोंकोभी उससेजाती
वाकफ़ियतहै किदफ्तरका कमरालम्बाई चौड़ाई मेंछोटा है
यलपानेगोविन्दबाबू केइसबयानकी तसदीककी है किवहभी
उसदिन भोरको दफ्तरके कमरेके सफाईमें प्रवृत्तथा परन्तु
इससे अधिक उसनेऔर कुछहाल बयान नहींकिया लछमण
दरयाव सिंह वर्णन करता है कि मैंने ९—नवम्बर के प्रभात
को करनैल फ़ियर साहबके लिखने की मेज दुरुस्त की और
उससे सुचित्त होकर मैंउसी स्थान पर बैठगया जो चपड़ा-

लिया परन्तु न सुनेके अवकाशके न होनेका बहाना करदिया॥

दफा १९—इस गवाहकी गवाही का जियादहतर जिक्र करनेसे पहिले इसबातका जिक्र करना उचित होगा कि सालिसएक अरबीहै और बड़ौदे नगरमें रहताहै और वह गायकवार के पासके सवारोंमें नौकर था और सदैव उनकी सेवामें हाजिर रहताथा महाराजाका जासूस यशवन्तराव खासकासिद है और नगरमें रहता है और जिस कमरेमें इस मुलाकात का होना बयान कियागयाहै यहवही कमराहै जिसके भीतर महाराजा गायकवार और रेजीडन्सीके नौकरोंमें सब मुलाकातें हुईथीं उसमकानको कमीशनके कई मेम्बरोंने अवलोकन किया है वहएक छोटासा कमरा तीसरी मंजिलपर है और उसके भीतर एककोनेके तरफसे एकसूक्ष्मसीढ़ीकेद्वारा जातेहैं यहसीढ़ी एकछोटेकमरेके भीतरतकहै और उसमें कोई दरवाजा नहींलगा हुवाहै दरहकीकत यहमकान राजासाहबके सलाम और मुजरा करनेका कमरा है और उसमें केवल एक दरवाजा है जिसमें होकर गायकवारके मुख्यकमरेका मार्ग है उसमुख्यकमरेसें महाराजा गायकवारका एकपलङ्ग और स्नानकरनेकी एक चौकी और नहाने धोनेका सामान था मुजराईके कमरेमेंकई शीशे दीवारोंपर लगेहुयेहैं और उसमें एकनीचीऔर चौड़ीलकड़ीकी बेंचपड़ी हुईहै कहतेहैंकि महाराजा गायकवार रेजीडण्टीके नौकरों से मुलाकातकरते वक्तहरएक मौक्रेपर आ बैठतेथे अब हम फिररावजीके बयानका जिक्र करते हैं॥

दफा २०—रावजीने सन् १८७२ई०के कमीशनके इजलाससे पहिले तीनयाचारदफे और कमीशनके इजलासके समयमें तीन मरतबे गायकवारसे मुलाकातकी इनमेंसे हरएकमौक़ेपरवह फिरयशवन्तरावकेमकानको और वहांसे यशवन्तराव और सालिम केसाथमहाराजागायकवारके महलको जाताथा इनमुलाकातों मेंरावजी महाराजागायकवारसे उनमनुष्योंका जोरेजीडण्टी को आयेथे और जोहाल वहांहोतेथे और जोशिकायतेंगायकवार

ोमतीआभूषण उन्नासी रुपये आठ आनेके तय्यार कियेथे॥
ग़िवगाल्लवठिलऔरदल्लावने उसआभूषणको पहिचानलिया
ोउन्होंनेतय्यार कियाथा औररावजी उसकोतसलीम करता
ाकियह मेराहै॥

इसजगह परयहबातकहनेके योग्यहैकि रावजीकामासिक
वज़दस रुपयेथा॥

दफ़ा २३—अबफिर रावजी कीगवाही कावर्णनकियाजाता
जिसमें उनमुलाकातों कावर्णनहै जो१८७३ई०कीकमीशनके
डौदेसे चलेजानेके उपरान्त औरश्रीमान् महाराजा गायक
ारकी नौसारीके जानेके समय हुईथीं॥

से गया था (वक्तवात स्मर्ण होगी कि नवम्बर और दिसम्बर सन् १८७३ ई० में कमीशन का इजलास होरहाथा) और यशवन्तराव दकोकार कनया सुकर्रर ने पांचसौ रुपये रावजी को दिये थेजिनमें से चारसौ रुपये रावजीने लिये और मुझको सौरुपये अमानतकेतौरपर सुपुर्द कर दिये॥

दलपतसुकर्रर वर्णन करताहैकि बारह या चौदह हफ्तेहो ने कुयेकि मैंने पांचसौ रुपये बड़ौदे के रेजीडेंटर यशवन्तराव को आज्ञासे आठबजे रात्रिको रावजी और जुग्गाकोदियेथे उस समय यशवन्तराव खाना खाने परथा और इसी वजह से वह वहां नथा॥

रावजीनेदजेवाके द्वारअपनेविवाहके लिये आभूषणतय्यार करायाथा वहवर्णनकरताहै कि उसदेवालीजो २० अक्टूबर सन् १८७३ ई० को हुईथी मैंनेशिवलाल वठिलसुनार को रावजी केलिये चान्दी और सोनेके कईप्रकारके जेवरोंकेतय्यार करने के वास्ते मुकर्ररकियाथा यहजेवरदोयातीन मौकोंपरतय्यार होकरउसकेहवालेकियेगये औरदजेवानेउनकेद्वाराआभूषणों कीफेहरिस्त सुनारसेकीमत समेतप्राप्तकी जबअबकीकमीशन तहकीकातहोरहीथी दजेवाने इसफेहरिस्तकोपुलिसकेहवाले करदिया औरउससेविदित होताहैकि शिवलाल ने रावजीके लियेनवम्बर सन् १८७३ई० औरमार्चसन् १८७४ई० केमध्यमें पांचसौअट्ठावनरुपये छः आनेकाआभूषणबनवाया॥

शिवलाल वठिलआभूषणों कीतय्यारी केसमयऔर उनकी तफसील केनिस्बतदजेवाके बयान की तसदीक करताहै और बयानकोरूसेउनकी कीमतचारसौ पिचहत्तररुपयेया पांचसौ रुपयेबयान करता है दजेवा और रावजीने समय२ परआभूषणोंकीपूरीकीमत शिवलाल कोदेदी॥

दूसरेसुनारदलाव नामेने यहइजहार दियाहैकिमैंनेरावजी केलिये जूनऔरअगस्त सन् १८७४ ई०के मध्यमें कई प्रकारके

के नौकरी जानेके प्रथम (२अप्रेल सन् १८७४) को गयाथा और उनलोगों पर उनको महाराज गायकवार की रेजी- डण्टी की कारखाई की खबरदी इस जगह यह बात वर्णन करनीचाहिये कि नरसूने इसमतलब इसप्रकारकी एकमुला- कात का अर्थात् अपनी दूसरी मुलाकात का जिक्र किया

दफ़ा २६—रावजी वर्णन करतेहैं किमैं और नरसू कारनेल साहबके नाथनौकारीको गयेथे और वहांउसने और शख़्सों जैसे सालिमऔर दामोदरपन्तको सोदेखारावजी नेसालिम के द्वारानौकारी में गायकवार से एकबेर मुलाकात कीऔर गायकवार ने भावपूनाकर और और मनुष्योंकाहाल उनसे पूछा जोरेजीडण्टीको जातेथे ॥

के जो दूसरलयमें गायकवार और नरसूमें हुई थी उस्सेतू गायक-
वारने नरसूसे कहा कि तुम शहरमें रहते हो इसलिये तुमको हर-
रोज़ रेज़ीडन्सी की खबरें लानी चाहियें और जोतुम बड़ौदे के एक
पुराने रहने वाले हो और सरदारों को जानते हो इसलिये तुम उन
सरदारों का नाम हमको बतादिया करो जो रेज़ीडन्सी में आते
जाते हों नरसू जमादार इसबात पर राज़ी होगया और यह क-
हा कि हम और रावजी दोनों सालिम के द्वारा खबरें भेजा
करेंगे इसपर महाराजा गायकवार ने यह इच्छा ज़ाहिर की
कि जो कोई बात अति आवश्यक इत्तिला करने के लायक होतो
उसको लिखकर भेजना चाहिये जब जमादार शहर को
अपने घर आवेगा वह उस चिट्ठी को अपने साथ लेता आवेगा
और सालिम को देदेगा नरसूने गायकवार से कहा कि मेरे
भाई की पिन्शन बन्द होगई है आप उसका कुछ बन्दोबस्त
फरमाइये गायकवार ने नरसू से कहा कि तुम इस विषय की
एक अर्ज़ी रेज़ीडन्ट साहब को दो और हम प्रतिज्ञा करते हैं
कि जो रेज़ीडन्ट साहब उसका हक़ न निकालेंगे तो हम कुछ
उसका बन्दोबस्त करेंगे उस समय नरसू के दो भाई गायकवार
महाराजा के पास एक रिसाले के खांडर और जमादार थे ॥

२४—जुम्मा और कारभाई दोनों यह वर्णन करते हैं कि हम
गायकवार के महल को रावजी और नरसू और यशवन्तराव
और सालिम के साथ गये थे और जब यह मनुष्य महाराजा
गायकवार से मुलाक़ात करने के लिये ऊपर गये तो हमको
नीचे छोड़गये उस मनुष्य की पहिचान का कोई वसीला नहीं
है जो इसमौके पर इन मनुष्यों के साथ गया था परन्तु इसमें
कोई बात नहीं होसक्ती कि वह यातो जुम्मा था या कारभाई
था नरसूने केवल यह वर्णन किया है कि एक मनुष्य रावजी के
साथ था परन्तु उसने उसका नाम नहीं बतलाया ॥

दफ़ा २५—फिर रावजी ने यह वर्णन किया है कि मैं और नरसू
फिर चार पांच दफ़ा महाराजा गायकवार की भेंट के लिये उन

से मालिसने कहाथा रावजीनेपहिली मुलाकातका और वो वार्त्तालाप समयसहाराजा गायकवारके साथ हुईथी उसका जिक्र कियाहै और यह कहाहै कि उससमय महाराजनेउस वार्त्ताकोपूछा था जो रेजीडण्टोंके खानेकी मेज़पर होती है और यहइच्छाकी थी कि पेडरूसालिस के द्वाराउनकेपास खबरेंभेजदिया करे बाकी दो मुलाकातोंका कुछब्यौरावर्णन नहीकियागया है रावजी बयान करताहै कि महाराजागायकवारके साथ पेडरू की पिछली मुलाकात गोवासे लौट आनेसेदो तीनदिन पीछे हुईथी अब जोगवाही पेडरूनेकमीशन के सम्मुखदीहै उसमें उसने गोवासे अपने लौटने की तारीख बयाननही कीहै परन्तु जोइजहार उसने मिस्टर ऐडनस्टन साहबबम्बई के डिपुटीकमिश्नर पुलिसके रूबरू—५—जनवरी सन्—१८७५—ई० कोदियाथा उसमेंउसने वर्णनकिया हैकि मैं—३नवम्बर—सन्—१८७३को छुट्टीपरसे बड़ौदेको लौटआया रावजी ने उस गुफ़्तगू को बयान किया है जो पेडरू और महाराजा गायकवार में हुई थीं महाराजा गायकवार ने पेडरूसे इसबातके पूछनेके उपरान्त कि वहगोवासे कबलौट आया यह कहा कि जो हम तुमको कोई वस्तु दें तो क्या तुम उसको करदोगे पेडरूने उत्तर दिया जोहो सकेगा तो मैं करदूंगा फिर गायकवारने यशवन्तरावसे वार्त्ताकी और यशवन्तराव ने एककागज की पुड़िया महाराजा साहब को देदी जिसको महाराजा साहबने पेडरूको देदिया पेडरू ने पूछा कियह क्या है गायकवार ने कहा कियह विषहै और इस को करनैल फियर साहब के खाने में मिलाना चाहिये पेडरूने यह बहाना किया कि जो करनैलफियर साहब इकवारगीमरजावेंगे तोमैं पकड़ाजाऊंगा और तबाहहोजाऊंगा तब महाराजागायकवार ने पेडरूको भरोसादिया कि इकवारगी कोई घात न होगी किन्तु करनैल फियरसाहब दोया तीन महीनेमें मरेंगे रावजी यह निश्चय प्रगट करताहै कि

ने कहा है इसशीशीकेलिये अपनीरायतबदेंगे जब कि हमदा-मोदरपन्यकी गवाहीपर ध्यानदेंगे॥

रावजीकहता है किजिससमयसेनरसूने मुझकोतीनसौरुपये दियेथे उसने चारपांच महीनेके उपरान्त मैंएकबेर उसको महाराजागायकवार की मुलाकातके वास्तेगया इसहिसाब से मालूम होता है कि यह मुलाकात अक्टूबर या नवम्बर सन्१८७४ई० में हुईहोगी रावजी यहख्याल करताहै किदर मुलाकात९-नवम्बरसे पन्द्रहयाबीसदिनपहिलेहुई होगीराव-जीनेयहभीकहा है कि जिसकमरेमें यहमुलाकात हुईथी वह महाराजासाहबकागुसलखानाथा और उससमयसन्ध्याकेसात बजे होंगेया कुछदेर होगईहोगी और उससमय सालिम और यशवन्तराव और नरसू उपस्थितथे जो कुछ वार्त्ता हुईथी उस को रावजीने नीचेलिखेके अनुसार वर्णन कियाहै॥

गयाथा गायकवारने सुझको एकशीशी दी जिससें जलकेसदृश एकसफ़ेद अरकथा और यहकहा कि तुम इसको करनैलफ़ि-यरसाहब के स्नानकरने वा हाथ मुंह धोने के जलमें मिला दो इनशीशी का सुखहुई और रावसेवन्द्या रावजीने इसशीशी को अपने पाजामेके बीचमेंरखलिया और कमरबन्दसे उसको खूबजोरसे पेटपर बांधलिया रास्तेमें चलनेके भुकने से इसमेंसे कुछअरक रावजीके पेटपर गिरपडा तो उसमें पेट पर शोथ होगया जिससे बडीसोजिस होतीथी रावजी इस शीशी को अपनेसाथ रेजीडन्सीमेंलेगया और नरसूके प्रश्नकरनेपर यह उत्तरदियाकि मैंने इसशीशीके अरकको करनैलफियरसाहब के पानीमें मिलादिया परन्तु रावजीकहताहै कि मैनेयहए-कसवारके भरोसेकलिये कहदियाथा जो हरदिन इसबातके मालूमकरनेकेव.स्ते कि मैंनेवह कामकिया या नहीं मेरेपास आयाकरताथा हालांकि मैंने उसअरकको यह विचारकर फेंकदियाथा कि उससे मेरेहाकिमको कष्टपहुंचेगा रावजी ने नरसूको वहसूजनदिखाई जो उसकेउदरपर होगईथीयह शीशी एकसंदूकके नीचे रक्खीहुई थी जो रेजीडन्सीके बरान्डे मे उस बेंचकेपास रक्खारहताथा जहां अरदलीका चपरासी बैठताथा यह बोतल रावजीकी तर्जनीउंगलीके बराबर लम्बी और पतलीथी डाक्टरग्रे ने जिनसे कि रावजीके पेटके सूजन की गवाही लीगई वह कहाहै कि जो तीन निशान नाफसे ऊपर उसजगहपर दीखतेहैं जहांकमरबन्द बांधाजाताहै वह याती तेजाबकाएक या गरमलोहेके लगनेसेपैदाहोतेहैं और संखियाकाएकहै और संखियेसे दुखपहुंचसक्ताहै और इसी प्रकारकेचिह्न होजातेहैं जैसे कि रावजीकोपेटपरहैं इसशर्त्त पर वहचमडेसे एकघण्टेतक मिलारहे चाहे चमडे पर पहि-लेसे कुछजखमनहो डाक्टरग्रेकी यहरायहै कि जो यहसम-झाजावे कि शीशीमें संखियाथा तो जो निशानरावजीकेपेट पर होगयेहैं वहइसीतरह पैदाहोगयेहोंगे जैसा कि रावजी

दूंगा जो तुम इस कामको करदोगे और मैं तुमको नौकरी दूंगा और तुम्हारे सन्तान और कुटुम्बको पालूंगा तुम किसी तरह से मत डरो मैंने खुद महाराजा साहबसे पूछा कि मैं क्योंकर इसविषको मिलादूं महाराजाने उत्तर दियाकि तुम एक छोटी शीशी लेकर उसमें थोड़ासा जल और चूरा डालो और उसको खूबहिलाकर मिला दो फिर मैंने महाराजासाहब से पूछा जो मैं चूरेको इसरीतिसे मिलादूं तो उसका क्या असर होगा महाराजाने कहाकि जो तुम हिलानेके बिना तुम उसको शर्बत में मिलादोगे तो ऊपर आजावेगा इसलिये मिलाने से पहिले हिलाना चाहिये फिर सालिमसवार और यशवन्तराव दोनों ने कहाकि जो तुम इसकामको करदोगे तो तुम्हारे लिये अच्छा होगा तुम कुछ भय मतकरो महाराजाने कहा कि इसकी तीन पुड़ियां बनाओ और इसको तीन दिन में बर्त्तो उससमय मुझको कोई चूर्ण नहीं दिखायागया परन्तु महाराजाने कहा कि मैं सालिम और यशवन्तराव के हाथ जमादार के घरपर भेजदूंगा मैंने कहा बहुत अच्छा॥

दफ़ा ३२—इस मुलाक़ातके दूसरे दिन नरसू एक पुड़िया लाया जिसमें दो प्रकारका चूरहथा एक सफेद और दूसरा गुलाबीरंगका और उसको रावजीको देदिया दोनों पुड़ियों कीमिक़दार जैसा कि गवाहने अदालतके रूबरू जाहिर किया चाह पोनेके दो चमचोंके बराबरथी चाहे सफेद चूरह दूसरे चूरेसे कुछ ज़ियादाथा फिर रावजीने इनदोचूरोंसे तीनचूरे बनाये अर्थात् गुलाबीरंगके चूरेके तीनहिस्से किये और उसमें थोड़ा२ सफेदचूरा मिलाया जिसको वह सफेद संखिया समझता था इससूरतमें थोड़ासा सफेदचूरा बचरहा और रावजीने उसको कागज़में बांधकर अपनेपरतलेके भीतर एक पोशीदा जेबमें रख लिया और तीनपुड़ियोंको दूसरी जेबमें रावजी वर्णनकरताहै कि मैंने इन तीन मिले हुये चूरोंको एक २ करके तीन दिन बराबर करनैलफ़ायरसाहबकी शर्बतमें दफ़्तरके कमरेमें जाकर

और उसने परतलेको उतारकर अकबरअलीको देदिया उस समय सिम्परसूटर साहब कपड़े पहिन रहे थे अकबरअली ने फौरन् उसपरतलेको टटोला और जबकि उसकी उंगलीएक कागजके टुकड़े सेलगी जोपाकिटमें रक्खाहुआथातो उन्हों- ने तुरन्तही सिम्परसूटरसाहबको बुलाया जो दूसरे कमरे में थे और उनकेसाम्हने संखियेकीपुड़िया और एकटुकड़ाडोरे का मिला रावजी अकबरअली और दामोदर और सिम्पर सूटरसाहबके बयानसे साफ जाहिरहै कि रावजीको उसपु- ड़ियाका बिल्कुल खयालनरहा औरजबतक उसपरतलेमेंनहीं मिली तबतक उसका खयाल नहींआया सो इसबातके संदेह करनेका कोईकारण नहीहै कि इसपुड़ियाके निकालनेकी निस्बत जिससे रावजीके दरहकीकत उसबयानकी तसदीक होतीहैजोउसने ब कीदोपुड़ियों के लियेकिया है पुलिसकी ओरसेकोईबनावट औरफरेबहुआहो रावजी वर्णन करताहै कि मैंइससफेद चूर्णका संखियाजानताया और मैंने गुलाबी चूर्णमें थोड़ा २ हरएक पुड़ियामें इसबिचारसे मिलादिया कि कहीविषकाअसर जल्दीनहोजावे॥

दफा ३३—अबहम महाराजा गायकवारकेसाथरावजी कीअन्तकी मुलाकात काजिक्र करतेहैं रावजीकहता है कि यह मुलाकात नरसू केसाथ साकिम के मैगास पर ६ नवम्बर सन् १८७४ ई० शुक्रवारको हुईथीपहिले वह यशवन्तरावके मकानगया और वहांयशवन्तराव साकिम औरनरसूकेसाथ म- हाराजाके महलकोगया औरयहसब लोगमहाराजा गायक- वारकी मुलाकातपर उपस्थितथे जिसकमरेमेंमुलाकात का होनाबयान कियागयाहै वह शुसलखानाहै गायकवारनेइस हेतुसेरावजीको बुराभला कहाकि इसनेकुछनहीकियाजिस पररावजीने उत्तरदियाकिमैंअपना कामकरचुकापरन्तुउसके परिणामके जाहिरनहोनेका कारणमेरी समझमेंनहीं आता गायकवारने कहाकिमैं तुमको कोईऔर वस्तु मिलानेकेलिये

कतकी तसदीक होती है तथा यह स्पष्ट होता है जिन सूरतों में नरसू अदालत के रूबरू हाज़िर हुआ है उनके लिहाज़ से वह एक सच्चा गवाह है और उसके तौर के देखने से हमारे हृदय में सच्चाई का असर हुआ नरसू और रावजी की गवाहियों में निस्संदेह कहीं २ इखतिलाफ़ात हैं परन्तु यह इखतिलाफ़ इस प्रकार के हैं कि जब कोई मनुष्य ऐसे हालों को बयान करता है जिनको हुये बहुत दिन हुये हों तो उनके जहूर में आने का एहतिमाल होता है इस बात के साबित करने के लिये कि जिन गवाहों की गवाही के निस्बत कोई संदेह नहीं हो सक्ता है उनके बयान में भी इखतिलाफ़ का होना सम्भवित है उन वजूहातों का ज़िक्र करना काफ़ी होगा जो मिस्टर सूटर साहब और सर ल्यूइस पीली साहब ने इस बात की बयान की है कि नरसू का बयान उसी दिन क्यों नहीं लिखा गया जब कि उसने पहिली दफ़े किया था मिस्टर सूटर साहब यह बात कहते हैं कि मुझको उस दिन उसके लिखने का अवकाश न था और सर ल्यूइस पीली साहब यह कहते हैं मैंने इस सबब से उसको नहीं लिखा कि मुझको यह आज्ञा थी कि नरसू को इस मुआमले पर गौर का अवकाश दिया जावे॥

दफ़ा ३५—नरसू कहता है कि मैं रेज़ीडन्सी के चपड़ासियों का जमादार चौदह रुपये मासिक पर हूं और इस ओहदे का अनुमान सच्चह वर्ष से काम करता हूं और मेरी रेज़ीडन्सी की नौकरी की सम्पूर्ण अवधि ३० या चौतीस वर्ष है मेरा घर बड़ौदे नगर के भीतर है और मैं रेज़ीडन्सी को साढ़े सात बजे या आठ बजे प्रभात के सदा जाया करता था और साढ़े छः बजे या सात बजे या आठ बजे रात्रि को लौट आता था उसने रावजी के इस बयान की तसदीक की है कि सन् १८७३ ई० के कमीशन के इकट्ठे होने के पहिले श्रावस के करीब महाराजा गायकवार के पास जाने की इससे प्रार्थना की गई थी उसने महाराजा गायकवार के साथ पहिली मुलाकातों के सब ज़रूरी बातों में तसदीक की है जिसके लिये रावजी ने यह

जीने गायकवारसे कुछवार्त्ता करनेके उपरान्त यहरायदीकि तत्मीवाईने जोसत्रागाजाकाबिलाहुआहै उसकाकुछपारि-तोषक देनाचाहिये थे। इसी हेतुमहाराजा गायकवारने पारितोषक केदेनेकाइकरार करलियाथा। व उसके दस अथवा पन्द्रहदिन के उपरान्त सालिस आठसौ रुपये नरसूके पासलाया जिनमेंसे चारसौरुपयेउसनेरावजीको देदिये (जिनमेंसे सौरुपये जुम्माकोदिये) चारसौ रुपयेअपनेवास्तेलिये नरसूनेअपने भागमेंसे सौरुपयेसालिस कोदियेऔर तीनसौ रुपयेअपनेवास्ते रहनेदिये परन्तु जुम्माने इससौरुपयेके पाते का कुछजिक्र नहींकियाहैजिसकाहवाला नरसूनेदियाहैऔर इससे शायदयह नतीजा निकला जासक्ताहैकि यहरुपयाउसके नहीं मिलाहालांकि यहबात मानताहै किमैंरावजीनर सूयसवल्तरावऔरसालिसकेसाथएक दफामहाराजाके महल कोगयाथा यहबात स्मर्णहोगी कि रावजीनेनरसूसे तीनसौ रुपयेके मिलनेका इक़रार कियाहै॥

दफ़ा ३७—रावजी कहताहै किनरसू तबमेरे साथथा जब कि मैं महाराजा गायकवार से उन दिनोंमें मुलाकातकरनेके लियेगया और महाराजाने मुझको शीशी दीथी परन्तु नरसू वर्णनकरताहै कि मैंने शीशीको नहींदेखा यह शीशी उसनेरेज़ीडण्टीमें देखीजहां रावजीने उससेयह बयानकिया कि मैंने विषकोजो उसकेभीतरथा जलमें मिलाकर पिलाया और वहयह बातजानताहै कि यहशीशी इससन्दूक़के नीचे रक्खीहुईथी जोरेज़ीडण्टीमें चपड़ासियोंके बैठनेकी बेंचोंके निकटरक्खा हुवाथा॥

दफ़ा ३८—तवनकी नरसूके स्वकृतकरका कुछजिक्र नहीं किया गया अब नरसू उन पिछली दो मुलाक़ातोंका हाल कहताहै जोरावजीकी पिछलीदो मुलाकातोंसे मुताबिकहै अर्थात् एक मुलाकात नवीनवम्बरसे बीसया पच्चीसदिनपहिले हुईथी जोतारीख २ उससमयकीहै जोरावजीने वर्णन कियाहै

दूसरेदिन एकपुड़िया पहिली पुड़ियाके सदृश अपने मकानके
पासदी और मैंने रेवीडरूटीसे पहुंचकर उसको रावजीको
देदिया रावजी बयानकरता है जबमें महलसे विदा होनेलगा
तबमालिसने जमादारके हाथमें कुछ वस्तुदीथी जिसको मैंने
नहींदेखाथा इस जगहपर ऐसा इख़्तिलाफ पायाजाताहै जो
साफ २ दूर नहीं हुवा ॥

यहकाम होजावेगा तो तुम्हारे लिये अच्छा होगा रावजीने फिर वही बातकही इनशब्दोंसे कि तुम्हारे लिये अच्छा होगा यह प्रयोजनथा कि तुमखानेपीनेसे खुशरहोगे और नौकरीके मोहताज न होगे महाराजाने यहकहा और सालिम और यशवन्तरावने फिर वही बातकही यहमुलाकात दसमिनटया पावघण्टे रही होगी मुझकोयह स्मर्णनहीं है कि यहमुलाकात पन्द्रहदिनया बीसदिनथा पच्चीसया एक महीने इससेपहिले हुई होगी करनैलफियर साहबको अपने प्यालेमें विष मालूम हुवा उस मुलाकातमें मुझकोकोई पुड़िया नहीं दीगई जबवह मुलाकातखतम होगई तो सालिमने दूसरेदिन एकपुड़ियामेरे घरपर मुझकोदी यहपुड़िया मेरीतर्जनी उंगलीके बराबरथी और अहमदाबादके कागजकी बनीहुईथी॥

दफ़ा ३९—नरसूने रावजीकेसाथ महाराजा गायकवारसे पिछलीमुलाकातकी तारीखदूसरी यातीसरी नवम्बरबयानकी है परन्तु रावजी कहताहै कि वहछठी नवम्बरकीथी नरसू अपनेनियमसे आठबजे रात्रिके यशवन्तरावके मकानपरगया और वहांसे रावजी और नरसू और करभाई और जुम्मायह सबएकत्र होकरमहाराजाके महलको गयेतथाच यशवन्तराव और सालिमने उनको महाराजा गायकवार के सन्मुख पेश कियाजो मामूलसे मुजराई कमरेमें उपस्थितथे महाराजाने कहा कि तुमकच्चेहो तुमनेअबतक कुछकाम नहीं किया मैंने कहा कि इस बातको रावजी जानताहै फिररावजीने कहा कि मैंने उसवस्तुको मिलादिया और जो आपकी दवाअच्छी नहोतो मेरा इसमें क्या इख्तियार है महाराजाने रावजीसे कहाबहुतअच्छा मैं एकदूसरी पुड़ियाभेजूंगा परन्तु तुमउसको ठीक २ अंदाजसदो और अच्छेप्रकार डालदो रावजीने कहा बहुतअच्छा यशवन्तराव और महाराजा साहबदोनोंने कहा कि कलसालिम यहपुड़िया तुम्हारे पास लावेगा तुमउसको रावजीको देदो फिरनरसूने बयानकियाहैकि सालिमनेमुझको

दफ़ा ४२—जोगवाही पेशकीगई है उससेयही निश्चयहोता हैकि रावजी और नरसूको अपनी गिरिफ्तारी के उपरांत वार्त्ताकरने की कोई अवसरनमिली सो उनकीगवाहीकोई बातीवाकफियतका नतीजाहै जबनरसू सरल्यूइसपीलोसाहब के रूबरूहाजिर हुआ और २४ दिसम्बर को गवाही दी तब रावजीका बयानलिखा नहींगया था यहबातनहीं होसक्तीहै कि जो नरसूकहना चाहताथा उसकीनिस्बत पुलिसने उस को सिखाया या पढ़ायाहोयह दोनोंगवाह प्रश्नोत्तरकेसमय अपनेवाक्योंपर स्थिररहे और हम निश्चय करते हैं कि जिन मुआमिलोंमें वहसंयुक्त हैं उनकीनिस्बत उनकी गवाहीसच्च है जब सरदिनकररावनेनरसूको उसकीगवाही के पूर्णहोने पर सौगन्द दिलाई किवह निर्भय होकर ईश्वरकोवर्त्तमान जानकर सत्य वृत्तान्त वर्णन करदे तो उसने कहा कि मैंने बिल्कुलसच्चबात बयानकरदी और मुआफीकेवाइदेसे,मैंसिवाय इसके और कोई बात नहीं कहसक्ता हमको यहभी मालूम होताहैकि जबमिस्टरसूटरसाहबने २६दिसम्बरसन् १८७४ई० को नरसू का बयान और इकरारलिख लिया तो नरसूइस लज्जासेकि उसनेऐसे मनुष्यके प्रतिकूलगवाहीदो जिसकोवह और रावजी दोनों एकआफीकाना बयानकरतेहैं रेजीडण्टी के अहातेके कुंवेंमेंगिरपड़ा नरसूने अदालतके सन्मुख इसबात के बयानकरनेमें ताम्मुलकियाकि उसनेवास्तवमें अपनेतईंकुंवें में गिरादिया और यह कहाकि अपनेहमजोलीनौकरों को दशा देखनेसे मेरादिमागपरेशानहोगयाथा और मैंअकस्मात् कुंवेंमेंगिरपड़ापरन्तुकुंवेंकेअवलोकनसे यहबातमुश्किलहमारे समझमें आतीहै किवहइत्तिफाकिया कुंवेमेंगिराहोइसबातके खयाल करने की माकूल वजह यहहै कि वह जान बूझकर कुंवेंमें गिर पड़ा॥

दफ़ा ४३—अब दामोदरपन्यकी गवाहीपर देखनाचाहिये वहहरदिन महाराणागायकवारके महलकोप्रभातकेसातबजे

से दामोदरपन्धने अपनी छोटी शीशीमें खालीकरलिया जो आधी उंगली के बराबर थी और जिसमें अतररक्खा करताथा इसबात में संदेह है कि आया गवाहने अतर गुलाब का या केवल अतरका शब्द कहा जिससे गुलाबका अतर लिखा हुआहै यह बातकुछ लिहाज़के लायक नहींहै और इसपर यहबात जाहिरहै कियह छोटीशीशी उनमामूली गुलाबकी शीशियों में से नहीं है जो यूरोपमें मशहूर हैं और जिनमें थोड़ीसी बूंदें आती हैं दामोदरपन्थ ने उस दवाको छोटी शीशी में डालकर उसका मुखरूई और मोमसे बन्दकरदिया और महाराजागायकवारके ज़ुबानीआज्ञा के अनुकूल दूसरे दिनउसे सालिमकोदेदिया औरसालिमको कहाकिवहशीशी रावजीको देदे दामोदरपंथको वह समय ठीक२ स्मर्ण नहींहै जबकि उसनेवहशीशी देदीपरन्तु उसको निश्चय हैकि अगस्त सन्१८७४ई०केउपरान्तउसनेयहशीशीदीथीऔर वहयहकहता हैकि मैंनेदसहरेके निकट(२० अक्टूबर सन्१८७४ ई०)शीशी को दियाथा वहयहभी कहताहै कि मैंइसबातको जानताथा कि शीशीके द्वाराकरनैल फ़ियर साहबको विषदिया जावेगा जिस रीतिसेयहशीशी रावजीकेपास पहुंचीउसको हमठीक२ नहीं समझसके परन्तु हमनिश्चयकरते हैकि महाराजा गाय-कवारके पासेउसकेपास गुप्तवा प्रगटएक शीशीआई जिसमें वह दाह दाई अरक था जिससे करनैल फियर साहब को कष्ट पहुंचाना समझा गया था॥

उपरान्त उसको सालिम को देदिया महाराजा गायकवारने कहा कि सालिमखुनली के वास्ते उसको औषधी तय्यार कर लावे फौजदारीके सरिश्तेसे कोई संखिया नहीं आया और दत्तेरिया रामचन्द्र जो महाराजा गायकवारके सरिश्तेफौजदारीमें नौकरथा यहकहताहै कि कागजनम्बरी (ज्वाद) मेरे पासआया और वह तबतक दफ्तर फौजदारमें रहाजब कि पूर्व्वोक्तसरिश्ते के हाकिमअफसरने अपनी गवाही देनेसेतीनसप्ताहप्रथम उसकोमंगालिया और उस हुक्मपर संखियानहीं दियागया क्योंकि पिछले अठारह महीनेसे यहहुक्म जारीथा कि महाराजा साहबकी आज्ञाकेसिवाय संखिया और और जहरनहीं दियाजावेऔर इसकागजमेंमहाराजागायकवार काहुक्मनथा हालांकि उसकीपीठपर यहलिखाहै किमहाराजा गायकवारने आज्ञादी ॥

दफा——४४ फिर दामोदरपन्थने यहबयान कियाहै कि संखियाखानेके आठदिनके उपरान्त महाराजा गायकवारने मुजको एकतोले हीरेको मंगाने और यशवन्तरावको उसके देने को आज्ञादी तथाच मैंने नानाजी वतिलके पाससे जो जवाहरखाने का मुहर्रिरथा एक पुडियामंगाई जिसमें हीरे वयानकिये गयेहैं और महाराजा साहबकी आज्ञाके अनुसार उसपुडिया यशवन्तराव को देदी ॥

दफा ४५—वह यहभी कहताहै कि इससे आठयाचार दिनके उपरान्तगजाबा जोनानाकंवलकर गायकवारको साले और भाऊसीवजीरका नौकरथा मेरेपास एकछोटीसीशीशी लायाहै जिसमें कुछदवायी गायकवारने पहिलेसे दामोदर पन्थको यह आज्ञादी थी कि वहबडी२ च्यूंटिया और सर्प और कालेघोडेका मूत हकीम के पाससेलादे तथाचबोतल के भीतरइनहीं वस्तुओंकी मिलीहुई दवा हकीमकी बनीहुई थी और जो किमहाराजा गायकवारने दामोदरपन्थसे कहा था कि वह उसको एक और बोतलमें खालीकरदे इसहेतु

सन् १८७४ ई०) कईदिन पहिले मैंने दामोदरपंथ की आज्ञासे अड़सठ यासाढ़े अरसठ रत्तीचपटे गुलाबी रंगके हीरे फत चन्दके पुत्रहेमचन्द से मोललिये उसने इसखरीदकी याददाश्त तय्यारकरनेकेवास्ते एकमुहर्रकोहिदायतकी इससेसातयाआठ दिनकेउपरान्तउसनेदामोदरपंथकीआज्ञासेहेमचन्दनेअनुमान चौहत्तररत्ती हीरे उसी प्रकारके मोल लिये और उसीयाद-दाश्तमें उनकीखरीदभी लिखलीगई इनदोनों प्रकार केहीरों केखरीदनेके उपरान्त दामोदरपंथको देदियेगये और दामोद-रपंथने उसगवाहसे यहकहा।कि इनहीरोंका चूरन बनाकर दवाकेतौरपर इस्तैमाल किया जावेगाउनकी सबकीमत छः हजारतीन रुपयेथी नानाजी वतिलने हेमचन्द को तीनहजार रुपयेनीचे लिखेकेअनुसार दियेथे अर्थात् दोहजार रुपयेना-नचन्दसर्राफ और सेलामहल के द्वारादो रक़मोंमें से जिनकी जमातीनहजार छः सौउन्नीस रुपयेतेरहआने तीनपाईहैदिये गये और यहरक़मसें गौरिनीकी वचत और उनअशरफियोंकी

समेतीनमासे हीरेका चूर्ण और ९मासेहीरा है दामोदरपंथने महाराजा गायकवारकी आज्ञासेइस पुड़ियाकोयशवन्तराव कोदेदिया उसने दामोदर पंथके एकप्रश्नके उत्तरमें यहबयान कियाकि इसकाचूरह बनाकर करनैलफियर साहबको दिया जावेगा यह हीरोंकी पुड़िया९ नवम्बरसन् १८७४ ई० सेपांचया सातदिन पहिले यशवन्तरावको दीगई थीगायकवारनेदामो-दरपंथसे कहाकियह हीरे अक्कलकोटके बड़ेपुनारीके ताजके लिये हैं ॥

दफ़ा ४८—इसजगह परयह बातप्रगट हैकि किनूरुद्दीनबोहरेसेहीरेकेप्राप्तकरने कीनिस्वतदामोदरपंथ केबयानकी तसदीकके वास्तेकोई गवाही नहींहै परन्तु यह बात महाराजा गायकवार संखिया प्राप्तकरनाचाहतेथे दामोदपंथकी गवाही और कागज नम्बर (रद) सेसाबित है औरहमारेबिचारसे इसबातकी बड़ीशङ्का है किदामोदरपंथनेउसीरीतिसे संखिया प्राप्तकी जैसेकि उसनेवर्णन कियाहै हमारेबिचारमें रावजी औरनरसूकी गवाहीसे यहबातभी सावित है कि जो करनैल फियरसाहब कोविषदियागया वहसालिमके पाससे आयाथा औरयहभी बड़ीशङ्काहै किजोसंखिया दामोदरपंथ नेसालिम कोदियाथा वहवही संखिया है जो करनैल फियर साहब को विषदेने केलिये वर्त्तीयागया जबकि दामोदरपंथ केबयानकी तसदीक़के लिये कोई गवाही नहीं है तोहमनहीं कहसक्ते हैं कि यहबात साबित है किजो संखिया रावजी ने मिलाया था वह वही संखिया है कि जिसके लियेदामोदरपंथ बयान करताहै किमैंनेउसको नूरुद्दीन बोहरेसे लियाथा और सालिम को देदिया था ॥

दफ़ा ४९—हीरोंके खरीदनेकी गवाही नीचेभीलिखी है अर्थात् नानाजी वतिल महाराजा गायकवार के जवाहर खाने कादारोगा वर्णनकरता है किपिछले दसहरेसे(२० अक्टूबर

संदेह नहीं होसक्ता क्योंकि रामेश्वर जिसका नाम पूर्वोक्त आज्ञा में रुपया पाने वास्ते और दावत के मोहतमिम के तौरपर बयान किया गया है वर्णन करता है कि मेरे पास यह रुपया नहीं आया और दामोदर पन्थ के इस बयान की तसदीककी है कि पानेवाला सदाआज्ञा पत्रकेसाथ एकरसीदलगादिया करताथा तथाच उसने एकअसल हुक्मकाहवालादियाहै नम्बरी (म) जिसपर उसकी रसीदमौजूदहै और हुक्मनम्बरी (घ)को आज्ञापर कोई रसीद नहीहै परन्तु इस मेंसंदेहहै किआया कागज़नम्बरी(घ)का रुपयावास्तवमें उस रकमके बराबरहै जो कागजनम्बरी (ष)में की गईहै क्योंकि पहिले तो कागज नम्बर (द,च,ध) का मजमूआ तीनहजार छःसौ उन्नीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और कागज नम्बर (घ) का मजमूआ तीनहजार छःसौ तीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और दूसरे यह कि कागज़ (घ) ३१ दिसम्बर सन् १८७४ ई० का लिखाहुवा और कागज (ट) पहिली जनवरी सन् १८७५ई०का लिखाहुवा है परन्तुयह बातसाफ जाहिरहै कि नानाजीवतिल को जैसाकि वहतसलीमकरता है वह रकमें वसूल हुई जो

फिरनानाजी वतिलउसको मेरेपाससे लेगयाउस गवाहनेयह भीकहाहै किमहाराजा गायकवारके जवाहरखानेमें बहुतसे अलग और जड़ेहुयेहीरे मौजूदथे और जबयहहीरेमोललिये गयेथेतबएक तलवारकाकबजा और पेशकब्ज औरएकजांकट परछोटे २ हीरे जो महाराजा गायकवार के जवाहरखाने से लियेगये थे मोललिये जातेथे इसीभांति के हीरे हरसालजि- यादह मौजूदरहते थे उसनेप्रश्नोत्तर के समयमें यहभीबयान किया कि जबकि नानाजी याददाश्तको लेगया तो उसकेउ- परान्त मैंने हेमचन्दसे यह पूछा कि उसके हीरे उसके पास लौट आगयेया नहीं उसनेउत्तर दिया किलौटआये नानाजी वतिलने याददाश्तके लेजानेकेसमय यहकहाथा कि यहहीरे मोलनहीं लियेजावेंगे किन्तु मैंउनको लौटादेना चाहताहूं॥

दफ़ा ५०—दामोदरपंथने उनहीरोंकीकीमत देनेकेविषयमें जोनानाजीवतिलकेपास सेउसकेपासआयेनीचेलिखेकेअनुसार बयानकियाहै अर्थात् महाराजागायकवारने उनकीकीमतके देनेकी दामोदरपंथको जुबानीआज्ञादी औरउसने नानाजीव- तिलको यहहिदायतकी किजो रुपया महाराजागायकवारके निजके हिसाबके विषयमें उसकेपास आताहै उसमेंसे उसरु- पयेको देदे कुल उसरुपयेकी संख्याजो निजके हिसाबमेंजमा कियागयाथा तीनहजार छःसौ उन्नीसरुपये तेराआनेतीनपाई बयानकीगईहै दामोदरपंथ वर्णनकरताहै कि उनहीरोंकेबा- बत जौहरियोंको कीमतदेनेकीआज्ञा दिसम्बर सन् १८७४ ई० की लिखीहुईहै जिसमेंयह लिखाहै कि तीनहजार छःसौती- स रुपये तेरहआने तीनपाई महाराजागायकवार ने सिवाय नारायणके मन्दिर के ब्रह्मभोजके लिये दिये हैं दामोदर पंथ कहता है कि यह बनावटी आज्ञा थी और जिस प्रयोजन के लिये यह रुपया दरकार था उसके छिपाने केलिये यहआज्ञा दीगईथीइसबातके बाबतकि वास्तवमेंऐसाहीहुवाहोगा कुछ

नासका कुछविस्तार नहींहै जिससे वह मोललियागया नम्बर (क)नम्बर (ट)तकश्रौर नम्बर(घ)में यह इखतिलाफ है कि पहिले कहेहुये कागज़ोंमेंसे हरएकश्राज्ञामें पानेवालेकी रसीद है श्रौर (घ)में नहीं है इससेयह प्रकट हुवा कि कागज़ (घ) केवलयादिहाश्तमतलबकेहै साक्षीभीनहीं है किन्तुवहइस प्रयोजन से बनाया गया है कि जिसमनुष्य को रुपया दिया गया था उसकानाम जाहिरनहो श्रौर उससेदामोदर पन्थकेइस बयानकी तसदीकखयाल की जातीहै कि हीरेजवाहिरातके हिसाबमें जमानहीकिये गये क्योंकिमहाराजा गायकवारने यहकहाथा कि वहदवाके लियेहैं श्रौर इसमजमून कोकेवलएकयाददाश्त जवाहरखानेमें तय्यारकीगईथी जिसकेलिये महाराजा गायकवारने उससमय जबकि दामोदरपन्थनेनवीं नवम्बर को कर्नेलफ़ियर साहबको विषदेने के उद्योगके उपरांत उसकोबुलाया महाराजा गायकवारने यहहिदायतकी थी कि वहनष्टकर दीजावे इसलिये दामोदरपन्थने नानाजी वतिलसे अलगकरने को कहा श्रौर उसने उसकोअलग कर दिया श्रौर यह रक़म खासीनारायण के नामलिख दीगई॥

दफ़ा—५१श्रब हीरों के विषय में हेमचन्द की गवाही पर नज़रडालनी बाक़ीहै इसगवाह ने नाकिस तौर से गवाही दीहै श्रौर उसकीगवाही परश्रासतौर से एतिबार नहीं होसक्ता उसका यह मंशामालूम होताथाकि हीरोंकीखरीद के हरकिस्मके तश्रल्लुक़से इन्कार करेवहयह बातमानताहै कि वहहीरेकीदोपुड़ियां विनायकराव(महाराजा गायकवार के नौकरनानाजी वतिलकासाला)के पास—३१—श्रक्टूबरयापहिलीनवम्बर—सन्—१८७४—ई० को लेगया परन्तु वहकहता है कि वहपुड़ियां मुझको लौटा दीगईं वह दामोदर पन्थयानानाजीवतिल या विनाकराव के हाथहीरोंके वेचनेसे इन्कार करताहै वहतसलीम करताहै कि ३ दिसम्बर सन्१८७४ई०को मैंने नानाजीवतिलकेपास सेदोहजाररुपयेश्रौर दूसरीतीसरी

में महाराजा गायकवार की आज्ञा से नानाजी वितल के पाससे हीरे मंगाये और उनको यशवन्तरावको देदिया और नानाजीने उन हीरोंको हेमचन्दसे मोललिया और महाराजासाहबके महलके हिसाबकिताब और हेमचन्द के हिसाब किताबमें इसभांति कीमा। जिसकी गई है जिससे हीरोंका मोल लियाजाना छिपजावे बड़ौदानगर के निवासी हिन्दुस्तानियों केवासियोंके सट्टेहीरेकी जो हकीकत और पर निश्चय करते हैं चाहो प्रगटमें इसप्रकारसे निश्चय जानने की कोई मालूम वजह नहीं मालूम होती पस अब यह बात गौर करने को पैदा होती है कि दामोदर पंथने महाराजा गायकवारके जवाहर खानेसे हीरे क्यों न लिये जहां हमेशा हीरे मौजूद रहते थे इस प्रश्नका केवल यही उत्तर होसक्ता है कि नये हीरोंके मोललिये जानेका छिपाना उससे कि वह एक ऐसे जवाहरखाने से लिये जावें जिसका रजिस्टर सुगमतासे वो अपने हिसाब किताब में जाहिर करना अपना फर्ज समझता जियादह तरसुगम ख्याल कियागया ॥

एक हजार रुपये जमारके हीरों की कीमतसे कुछ सम्बन्ध न
था या यहकि नानावतिल ने इससे पहिले कि कुछ रुपया
हीरों के मोल लेने के लिये उसको दिया गयाहो दर्जकर
लियाहेमचन्द की किताबों से दामोदर पन्थ के उसबयाकी
तसदीक में जो उसने हीरों के मोललिये जानेके विषय में
कियाहैबक़त कलमहद मिलतीहै उनमेंसे केवल एक किताब
हमारे रूबरूपेश की गईहैउसकिताब में कुछबनावटकीगई
हमइसविचार का कोईहेतुनहीं पातेकिपुलिस को साबित
करनेमें कुछ प्रयोजन था इस किताब में ७, और ८, नव-
म्बर सन् १८७४ ई०—में यहलिखा है कि नानाजीने दामो-
दरपन्थसवाछः हजारदो सौ सत्तररुपयेके हीरेमोललिये
और हेमचन्दइस बातकोमानता है कियहरकममेरेहीहाथ
की लिखीहुईहै परन्तुवह वर्णनकरता है कि गजानन्दपुलि-
सकेइन्स्पेक्टर ने जबरदस्तीसे मैनेयह रकमउसदिन संध्याको
जबकिमैंने मिस्टरसूटर साहबके रूबरू पहिले अपना बयान
किया(६-फरवरी सन्-१८७५ई०)लिखीथी पूर्वमें हमवर्णन
करचुकेहैं किहमको निश्चयनहीं है कि गजानन्दवितलनेइस
भांतिकीजबरदस्ती कीहोक्योंकि यहरकमें उसबयान से कुछ
प्रतिकूलहैं जो हेमचन्दने मिस्टरसूटर साहबके सन्मुख किया
और यहबातभी विचारमें नहीं आतीकि गजानन्द जो अति
चतुर और बुद्धिमान है उसनेइस प्रकारकी खिलाफ बयानी
कीहो परन्तुहम इस मूलपर कियह किताब बदलाई गई है
कुछनिश्चयनहीं करनाचाहते हेमचन्द कीगवाहीका केवल
एकभाग जिसको इसमुकद्दमे से बड़ासम्बन्ध है वह यहहैजो
महाराजासाहबके महलको हीरोंकेलेजाने और तीनहजार
रुपयेके देनेसेसम्बन्धित है ॥

दफ़ा ५२—हीरोंके मोललेनेकेविषयमें हमयहनतीजानि-
कालतेहैंकि हमारेविचारमें इसबातके निश्चयकरनेका उत्तम
हेतुहैकिदामोदरपंथनेअक्टूबर औरशुरूनवम्बरसन्१८७४ई०

इससे मालूम होताहै कि महाराजा गायकवारको वह खबर मालू-
म थी जो ९—नवम्बरको कर्नैल फियरसाहब के विष दिये जाने
का उद्योग प्रसिद्ध होगया था ९—नवम्बरकी वार्त्तामें एक ऐसी
बातहै जिसकी तसदीक ख़ारिजीगवाहीसे होतीहै और उस
से इन मुलाकातों के विषय में दामोदरपन्तके बयानकी मदद
होती है जबकि महाराजा गायकवार ९—नवम्बर के प्रभात
को रेजीडन्सीसे लौट आते थे तो उन्होंने दामोदरपन्तसे
कहा कि सालिमआज प्रभातको रावजी के मकान पर इस
प्रयोजन के लिये दौड़ा गया कि जो विष की पुड़िया बाकी
रही हों उनको लेकर अग्निमें जलादे अकेलेजुम्माने जो बड़ौदे
के सदरबाजारकी छावनीकी सफाईका मोहतमिमथा जहां
रावजीरहाकरता था सालिमको सदरबाजारकीओर नगरसे
जाताहुआ ९-नवम्बरकेसुबहको और पांचमिनटकेउपरान्त नगर
केतरफसे आतेहुये देखा और मुहम्मदअलीबख्श रेजीडण्टी
के चपरासीने सालिमसे रेजीडण्टीके मुकामपर इससेपहिले
कि कर्नैलफियरसाहब हवाखानेसेलौटआवें कुछवार्त्ताकीऔर
जबवह सदरबाजार से डाक्टरसीवर्डसाहबके मकानसे फिरा

वरीसन् १८७५ ई० कोकी गई इसइकरार कावही मज़मूनहै जोउमने इसकमीशनके रूबरूबयान किया और यह इकरार उसनेउम समय कियाथा जब कि सरल्यूइस पीली साहब ने उससे मुआफिकी प्रतिज्ञाकरली॥

दफा ५४—उस के इकरारके उपरान्त उसका वहसंदूक जिससेमहाराजा गायकवार के निजके कागजबन्दथे उसके साम्हने खोलागया और कई कागज उसकेभीतरसे पायेगये वहवर्णनकरता है कि यद्यपि अपनी गिरिफ्तारीसे पहिले मुझको साखिमकी जुबानी वह बातें मालूम होजातीथी जो रावजी और २ मनुष्योंके बयानको वह सुना करता था तथापितबतकजबकिमैंने अपना इकरार मिस्टर रिची साहबके रूबरूकिया हरगिज रावजी और नरसूके इकरारोंकाकोई व्यौरे वारहाल मालुमनहीं हुआ हमयहबात नहीं कहसक्ते किइस बयानको ठीक माननाचाहिये परन्तुउसके प्रतिकूल कोईगवाही पेशनहींकी गईहैप्रगट होकि दामोदरपंथकरनैल फियरसाहबके जमानेमें कभी रेजीडन्सी को नहींगया औरवह महाराजा गायकवारके साथ एकहीबेर सरल्यूइस पीली साहब केरेजीडण्ट नियत होने केउपरान्त गयाउसने रावजीको कभीमहलमें नहींदेखा परन्तु वह बयान करताहै किसाखिमने महाराजा गायकवारसे मेरे सामने उससमय जबकि करनैलफियर साहबको सितम्बरके महीनेमें फोड़ाथा महाराजा गायकवारसे यहबात कहीकिमैनेरावजी कोउस प्लास्टर मेंजोफोड़े परलगाय जाताहैसंखिये केमिलाने परतय्यार कियाथा और इससे फोड़ेमें जलनपैदा हुई औरकरनैलफियरसाहबने इससबबसे प्लास्टरको अलगकरदियादामोदरपन्थने इसगुफ्तगूका जिक्रकियाहैजोउसकेवचनकेअनुसार महाराजा गायकवारके साथकई दफे ९—नवम्बरसे लेकर उसकीगिरिफ्तारीके जमानेतक हुईथी यदि यहवार्त्ता वास्तवमेंहुई और उनके विषयमें उसका बयान ठीकहै तोउ-

समेमालूमहोताहै कि महाराजागायकवारको वह खबरमालू-
मथी जो ९—नवम्बरको करनैलफियरसाहब के विषदियेजाने
का उद्योग प्रसिद्धहोगयाथा ९—नवम्बरकी वार्त्तामेंएकऐसी
बातहै जिसकीतसदीक खारिजीगवाहीसे होतीहै और उस
से इनमुख्यबातों के विषय में दामोदरपन्थके बयानकी मदद
होती है जबकि महाराजा गायकवार ९—नवम्बर के प्रभात
को रेज़ीडन्सीसे लौट आते थे तो उन्होंने दामोदरपन्थसे
कहा कि सालिमआज प्रभातको रावजी के मकान पर इस
प्रयोजन के लिये दौड़ा गया कि जो विष की पुड़िया बाकी
रहीहों उनकोलेकर अग्निमेंजलादे अकेलेजुम्माने जोबड़ोदे
के सदरबाजारकी छावनीकी सफाईका मोहतमिमथा जहां
रावजीरहाकरताथा सालिमको सदरबाजारकीओर नगरमें
जाताहुआ९-नवम्बरकेसुबहकोऔर पांचमिनटकेउपरान्तनगर
केतरफ़से आतेहुये देखा और मुहम्मदअलीबख्श रेज़ीडण्टी
के चपरासीने सालिमसे रेज़ीडण्टीके मुक़ामपर इससेपहिले
किकरनैलफियरसाहब हवाखानेसेलौटआवें कुछबार्त्ताकीऔर

मालूम होताहै और यहबात अतिकठिन समझमेंआती है कि जो बयान महाराजागायकवार ने दामोदरपन्थसे किया था उसको अपनेमनसे बनायाहै॥

दफा ५५—दामोदरपन्थ यहभी वर्णनकरता है कि महाराजागायकवारने मेरे साम्हने बराबर यशवन्तराव और सालिमको यहताकीदकी कि वह विषदेनेके विषयका कुछजिक्रनकरें यहमनुष्य इसतहकीक़ातमें मुद्दई या मुद्दआअलेह की ओरसे गवाहोंकी तौरपर बुलाये नहीं गयेहैं दामोदरपन्थने उसरीतिकोवर्णनकियाहै जिसकेअनुसार उसके खानगी सरिश्ते में हिसाबरहताथा इसजगहपर केवलइसबातका जिक्र करना काफीहोगाकि सबसेपहिला कागज वहयाददाश्त है जिसमेंरुपयेकेदेनेकेबाबतआज्ञाहै औरजिसपरपानेवालेकीरसीदहै इसयाददाश्तसे हरदिन एकरोज नामचा और रोजनामचेसेमाहवारीहिसाब और माहवारी हिसाबसेवर्षकाहिसाब तय्यार किया जाता है याददाश्त और रोजनामचा सुगमता पूर्व्वकनष्ट होसक्ते हैं परन्तु जबकि एक दफ़ा मासिक हिसाब तय्यार होजावे और बार्षिक हिसाबमें संयुक्त करदियाजावे तो किसी खास रक़म के पता मिटाने में बहुतसी दिक्कत हो जाती है और यही कारण है जो दामोदरपंथ ने प्रश्नोत्तर के समय उनसम्पूर्ण कागजों के नष्टन करने के विषय में बयान की जो किसीतरह परउनमुआमिलों से सम्बन्धित हैं जोइस तहकीकात के सबबसे हुये हैं चार रोजनामचों में रकमों के मिटानेका इरादाकिया गयाथा दामोदर पंथ कहता है कि मैंनेवलवन्तराव लर्कसे कहाकि जिस जगह पर सालिम का नामलिखाहै वहांरोशनाईडालकरमिटादो बलवन्तराव रक़मों केमिटानेसे इन्कार करताहै यहरक़में बड़ीबेतमीजी से मिटाईगईं चाहेउनका कुछचिह्न भी बाक़ीन रहा दामोदर पंथबयान करताहै कि मैंनेइन रक़मों को इन मुआमिलों में सालिमका नामछिपाने और महाराजागायकवार कोबचाने

के लिये सिटवाया था और यह काम मैंने गायकवार की आज्ञामे कियाथावह अब तसलीमकरताहै कि यहबात अति अनुचितथी क्योंकि रोशनाईके दागजल्दी दीखतेहैं यहकाग-ज़दामोदर पंथ के उनकागजों के हिस्से थे जो महाराजा गायकवार की गिरिफ्तारी के दिनमहल में मोहरबन्दकिये गये थे और गजानन्द और मिस्टरसूटरसाहब की गवाहीसे मालूमहोताहै कि जबयहकागज दामोदरपन्थके साम्हनेलेगये तो वह उसी दशामें थे जैसेकि वह हमारेरूबरू पेशकिये गयेअन्तमें दामोदरपन्थ वर्णनकरताहै कि नूरुद्दीनकोसंखिये केलिये कुछरुपया नहींदिया गयाक्योंकि उस संखियेकेदेनेके वदले उससेयह प्रतिज्ञाकी गईथीकि महाराजा गायकवार के शफाखानेमें उसको कुछकामदियाजावेगा नूरुद्दीनगिरि-फ्तार कियागया है परन्तु उसकी गवाही नहीलीगई ॥

मालूम होता है और यह बात अतिकठिन समझमें आती है कि जो बयान महाराजागायकवार ने दामोदरपन्थसे किया था उसको अपनेमनसे बनाया हो ॥

दफ़ा ५५—दामोदरपन्थ यहभी वर्णनकरता है कि महाराजागायकवारने मेरे साम्हने बराबर यशवन्तराव और सालिमको यहताकीदकी कि वह विषदेनेके विषयका कुछजिकनकरें यहमनुष्य इसतहकीक़ातमें मुद्दई या मुद्दआअलेह की ओरसे गवाहोंकी तौरपर बुलाये नहीं गयेहैं दामोदरपन्थने उसरीतिकोवर्णनकियाहै जिसकेअनुसार उसके खानगी सरिश्ते में हिसाबरहताथा इसजगहपर केवलइसबातका जिक्र करना काफ़ीहोगाकि सबसेपहिला काग़ज़ वहयाददाश्त है जिसमेंरुपयेकेदेनेकेबाबतआज्ञाहै औरजिसपरपानेवालेकीरसीदहै इसयाददाश्तसे हरदिन एकरोज़ नामचा और रोजनामचेसेमाहवारीहिसाब और माहवारी हिसाबसेवर्षकाहिसाब तय्यार किया जाता है याददाश्त और रोजनामचा सुगमता पूर्वकनष्ट होसक्ते हैं परन्तु जबकि एक दफ़ा मासिक हिसाब तय्यार होजावे और वार्षिक हिसाबमें संयुक्त करदियाजावे तो किसी खास रक़म के पता मिटाने में बहुत सी दिक्कत हो जाती है और यही कारण है जो दामोदरपंथने प्रश्नोत्तर के समय उनसम्पूर्ण काग़जों के नष्टन करने के विषय में बयान की जो किसीतरह परउनमुआमिलों से सम्बन्धित हैं जोइस तहक़ीक़ात के सबबसे हुये हैं चार रोजनामचों में रक़मों के मिटानेका इरादाकिया गयाथा दामोदर पंथ कहता है कि मैंनेबलवन्तराव क्लर्कसे कहाकि जिस जगह पर सालिम का नामलिखाहै वहांरोशनाईडालकरमिटादो बलवन्तराव रक़मों केमिटानेसे इन्कार करताहै यहरक़में बड़ीबेतमीजीसे मिटाईगई चाहेउनका कुछचिह्न भी बाक़ीन रहा दामोदर पंथबयान करताहै कि मैंनेइन रक़मों को इन मुआमिलों में सालिमका नामछिपाने और महाराजागायकवार कोबचाने

कोकि जो कुछ मेमसाहिबा ने जिक्र किया होतो सालिस और अमदन्तनाव के द्वारा उसको इत्तिला भेजदो यद्यपि फैजू इसबात से इन्कार करता है कि उसने अमीना आया को महाराजा गायकवार के पास जाने के निमित्त त्यार किया तथापि वह स्वीकार करता है कि मै महाराजा गायकवार के पास उसके साथ गया और कारण यह कि उसवक्त गाड़ीवान था मैंनेवह वार्त्ता सुनीजो आया और महाराजा गायकवार के बीचमें हुई गायकवार ने आया से कहा कि वह मिस्टर फियर साहब की मेमसाहिबा से उनकी सिफारिश करें क्योंकि वक्तसे मनुष्य रेजीडण्ट साहब से उनकी निस्बत अरज कर रहे थे आया ने उत्तर दिया कि मैं फियर साहब की मेमसाहिबा से कुछ अरज नहीं कर सक्ती कारसाई कहता है कि मैं अमीना आया और फैजू को इसदफे गाड़ीमें सवार कराके महाराजा साहब के महलको ले गया ॥

दफा ५७—आया वर्णन करती है कि मैंने जून सन् १८७३ ई० में दूसरी मुलाकात महाराजा गायकवार के नौसारी से लौट-आने के उपरान्त सालिस और करीम के कहने से कीथी उसके साथ करीम गया था सालिस मार्गमें उनके साथ होलिया और आया और करीम को गायकवार के पास लेगया महाराजा गा-यकवार ने आया से पूछा कि मिस्टर बोबी साहब की मेमसाहि-बा ने हमारे विवाह के लिये जो नौसारी में कुछ तुमसे जिक्र किया है अमीना ने उत्तर दिया कि मैं ने कुछ नहीं सुना परन्तु जब मिस्टर फियर साहब की मेमसाहिबा इङ्गलिस्तान से लौट आवेंगी तो आपके लिये कुछ बेहतरी होगी क्योंकि यह मेमसाहिबा और करनैल फियर साहब आपसे अति प्रसन्न हैं फिर महाराजा गा-यकवार ने करीम से कहा कि तुम मेरी निस्बत मिस्टर बोबी साहब से कुछ खैर के वचन कहो जब अमीना और करीम विदा होने को उठे तो महाराजा गायकवार ने सालिस से कहा कि तुम उनको कुछ देदो तब सालिस ने करीम से कहा कि तुम कल यशवन्त राव के मकान को आना तथाच दूसरे दिन संध्या को करीम

हुआ और इसप्रकार की वार्त्ता जैसीकि उसने बयान की है इसकी और महाराजा साहबकी हुई ॥

दफ़ा ६२—जबमुद्दईकी ओरसेबयान खतमहोचुका तो महाराजागायकवार के वकीलने उनकी ओर से एक लिखा हुवा जवाबदावा पेशकिया नतो महाराजा गायकवार की ओरसे गवाहबुलायेगये और न कमीशनके रूबरूउनसेकोई प्रश्नपूछा गया तथाच उनकेबयानका मुख्यआशय नीचेलिखा है ॥

मुझको करनैलफियरसाहबसे कभीस्वतःबैरनथा औरनअबहै यहबात निस्संदेह सचहैकि मुझको और मेरेवज़ीरों को यह निश्चयथा किजोरीति करनैलफियरसाहबने इख़्तियारकीथी उस से यहबात असम्भवित थी कि जो प्रबन्धमैंने उसहिदायत के अनुसारजो सन् १८७३ ई० की कमीशन की रिपोर्ट पर जो २५-जूलाई सन् १८७४ ई० के खरीतेके द्वारा मेरे पास भेजी गईथी तजवीजकिये थे

पहिले महाराजासाहब ने मुझसेपूछा कि क्यामेमसाहबा ने बच्चे के लिये कुछ जिक्र कियाहै मेमसाहबासे मिस्टरबोवी साहिबकीमेमसाहिबासे प्रयोजनहै और लड़केसे मुराद उस लड़केसेथा जोमहाराजासाहबकेयहां उत्पन्नहुवाथा मैंने कहा मेमसाहबाने कुछनहीकहा और मुझको कुछहालमालूमनहीं इसकेअनन्तर मैंने महाराजासाहब सेकहाकिजबमेमसाहिबा आपकेपास लौटआवेंगी तोआपकेलिये कोईबेहतरीकीबात होगी मेमसाहिबा और करनैलफियर साहब दोनोंखैरख्वाह हैं पस जोसाहब कहैं तुमको उसपर अमलकरना चाहिये और कुछ सबसानलतहो फिर सालिमने कहा कि कोई जादू भी कामदेसक्ताहै वानहीं वो सालिमने सबसे पहिले जादू का जिक्रकिया अर्थात् सालिमने कहा किजो कोई जादू किया जावे तो क्यासाहबका मन फिरजावेगा परन्तु उसकाठीकर मतलब मेरीसमझमें नहीं आया फिर मैंनेसालिमसे और महाराजासाहबसेभी कहाकि आपसाहबकेलिये कोई जादूनकीजिये क्योंकि साहबको उसका कुछ असरनहोगा और इसका मैने यहबयान किया किसाहब लोगकेवल ईश्वरको मानतेहैं फिर सालिमने मुझसेकहा कि कोई वस्तु साहबको खिलादी जावे तोतुम्हारे विचारसे उसका क्या असरहोगा उसकेसुनने से मुझको अत्यन्त भयहुवा क्योंकि उससेपहिले मैनेदोजबुष्यों की जुबानी कुछजिक्र सुनाया फिर मैंने कहा कि महाराजा साहब अबआपसे विदाहोतीहूं मैंउससमय महाराजा साहब को यहां नहीं देखती जो वहपहिले मौजूदहोते तो वहमेरे बयानकी तसदीक करते फिर सालिमने मुझसेकहा किजोकुछ महाराजा साहबकहें तुम उसको कानलगाकर सुनो जोतुम उनकाकहना करोगी तो तुम्हारीमेंप आयुकेलिये तुमकोदिवीकादारा खुलजावेगा फिरसालिमनेमुझसे कहा कितुम्हारे पतिकोभी नौकरी होजावेगी और तुमको आगेनौकरीकरनेकी कुछ आवश्यकतान रहेगी इसके उत्तरमें सालिमसेमैंने कहा

है तथाच कोई दफा रावजीने उस समय रेजीडण्ट साहबको विष देनेका उद्योग किया जबकि उसने तीन दफे मिलेहुये चूरेको लिगाया और जो उसको पूरी खुराक संखिया के देनेमें भय नहोता तो अवश्य है कि करनेल फियरसाहब सख्त बीमार होते चाहो उनके प्राण जाते न रहते॥

दफा ६५—हम अपना इस विषयमें भी निश्चय प्रगट करचुकेहैं कि रावजीने नरसू से मिलकर ९—नवम्बरको शर्बतके प्यालेमें विष मिलाया था चाहो नरसू विषके मिलाते वक्त उपस्थित नथा हम खयाल करते हैं कि रावजी और नरसू के इन उद्योगोंसे अपने स्वामीको दुखपहुंचानेको कोई अपना प्रयोजन नथा किन्तु और मनुष्योंने उनको बहकाया था और हम विश्वास मानते हैं कि वह शख्स गायकवारथा जिसने उनको सिखायाथा तथाच हमारे विचार में रावजी और नरसू और दामोदर पंथकी

हलफ़नामेमें अपर लगाया गया है और मैं सौगन्द खाकर यह बात वर्णन करता हूं कि मैंने कभी न तो स्वतः और न किसी अपने एजण्ट के द्वारा इस प्रकार की हिदायत की और मैं बयान करता हूं कि इस विषयमें अमीना आया और रावजी और नरसू और दामोदर पंथ की सम्पूर्ण गवाही बिल्कुल गलत है मैंने रेजीडन्सी के किसी नौकर को रेजीडण्ट के जासूस का काम देने या जो कुछ रेजीडण्टी में होता था उसकी मुझको इत्तिला देने की कभी हिदायत नहीं की और न मैंने इनको किसी प्रयोजन के लिये रुपया दिया और न रुपया दिलवाया मैं इन दासों का कुछ जिक्र नहीं करता जो किसी उत्सव या तेवहारों में जैसा कि विवाह आदि में शायद रेजीडण्टी के नौकरों को दिये गये हों चाहो छोटे२ मुआमिलों की जो रेजीडण्टी और मेरे महल में होते हैं दोनों तरफों के मनुष्यों को मालूम होते हों परन्तु मैंने स्वतः इस प्रयोजन के लिये इन नौकरों से बातें नहीं की और न मैं इस बात को जानता हूं कि इस प्रयोजन के लिये कुछ रुपया दिया गया है और न मैंने इस प्रकार के प्रबन्ध की आज्ञा दी जिससे रेजीडन्सी की खबरें मुझको मिलें॥

दफ़ा ६३—अब हम उस सब गवाही का जो इस मुक़द्दमे के समझने के लिये आवश्यक थी संक्षेप में वर्णन कर चुके गवाही के बाकी हिस्सों का जिक्र उस राय में जो हम आगे को बयान करेंगे किया जावेगा॥

दफ़ा ६४—हम अपना निश्चय इस बात पर बयान कर चुके हैं कि करनैल फ़ियर साहब के शर्बत में ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० को विष मिलाया गया और हमको इस विषय में कुछ संदेह नहीं है कि यह विष करनैल फ़ियर साहब के मार डालने की इच्छा से मिलाया गया हमारी राय में इस यकीन के वास्ते कि इससे पहिले सितम्बर सहीने के अखीर हिस्से और ९ नवम्बर के बीच में करनैल फ़ियर साहब को विष देने का उद्योग किया गया अति उत्तम प्रमाण

दफ़ा ६७—इस चिट्ठीके उत्तरमें श्रीमान् वैसरायवीरे गवर्नमेण्टने उन सबबोंके निस्बत जिनपर महाराजा गायकवार ने बड़ौदेके रेज़ीडेण्टकी बदलीचाहीथी बहस करना व्यर्थ ख़्याल किया परन्तु शिकायतें जो उन्होंने ज़ाहिर की थी उनपर खूब लिहाज़ करके और सिवाइसके गवर्नमेण्ट हिन्दने इस इरादेपर अमल करके कि महाराजा गायकवारको एक नवीन प्रबन्धको कामयाबीके साथ करनेके लिये हर प्रकारसे मौक़ा दिया जावेगा हुजूर ममदूहने महाराजा गायकवारको इस इरादेसे इत्तिलादी कि कर्नल फ़ेर साहबके—सी—ऐस—आईको कारमेलसे फिरार साहबकी जगहपर बड़ौदे में एजण्ट नियतकरना चाहते हैं॥

के हाथसे आगेको वगैरःकिसी साहबसे अच्छे सलूककी क्यों
करआशाकर सक्ता। फिरगायकवाड़ने अपने और अपनेप्रबन्ध
के विषयमें रेजीडण्ट साहबकी दिलीबैरका जिक्रकियाहै और
वहदोदृष्टान्तइसबातके बयानकिये हैं कि पहिले करनैलफियर
साहबके चालचलन के लिये एतिराज़ कियागया है और यह
लिखाहै कि यहदोदृष्टान्त जोमैंने बयानकियेहैं उनसेउसपरे-
शानी औरदुःखका हालखूब समझमें नहीं आसक्ताहै जोमुझको
हालमें रेजीडण्टसाहब के हाथसेपहुंचताहै अंगरेजी गवर्न्न-
मेण्टकेनायबकी यह रीति मेरे लिये बड़ीचिन्ता और दुखका
हेतुहुआहै विशेषकरइससबबसे कि ऐसेसमयपर बहुतसे लोग
औसरपाकर अपनेलाभके प्रयोजनसेमेरी निसबत गलत खबरें
मशहूर करतेहैं और सदा मेरी प्रजाको मुझसे शत्रुता और
आज्ञाके तोड़नेपर तय्यारकरतेहैं इसकायह परिणाम होगा
कि इसवर्षकी आमदनीमें बड़ी हानि होगी और मेरीप्रजा
सदैवचिन्तित और दुखित रहेगी और इस बातका समझना
कुछकठिननहींहै कि इनबातोंसे उसप्रबन्धमें बड़ा विघ्न होगा
जोमैं करनाचाहताहूं हुजूर उसकामकेमूल और अन्दाजेको
खूब जानतेहैं जोमुझको करना पड़ताहै सोमैं अपनी ओरसे
और जिन मनुष्योंको मैंने उस कार्य्यके लिये नियत कियाहै
उनकी ओरसेयह विनयकरताहूं कि यदि करनैलफियर सा-
हबयहां इसीतौरसे अंगरेजी गवर्न्मेण्टके नायब रहेंगे और
मेरे और मेरेअहलकारोंसे इसीभांतिसे ईर्षा और बैरकरेंगे
तोमुझको अपनीकोशिशोंके कामयाबीकीकभी आशा न होगी ॥
मैं नेकनिय्यती और दियानतदारी के सिवाय और कोई
बात करनैलफियर साहबमें नहीं करताहूं परन्तु उनकी राय
और तदबीर एक निराले तौर कीहै और उनकीराय और
विचार बाज़े मुआमिलोंमें एतिदालकी हद्दसे बढ़गयेहैं और
जोकुछउन्होंने अबतक कहाहै याकियाहै उसकीमदद करना
वहअपने जिम्मेजरूरी समझतेहैं ॥

इसपुस्तलिकमें महाराजासाहबने आयाभेवार्ताकीथी उस का मतलब सिवाय इसके और कुछ नहीं है सक्ताकि उनको विवाहकी बड़ीचिन्ताथी और उसमें कुछ संदेह नहीं कि यह चिन्ता उनको पुत्रके उत्पन्न होनेके उपरान्त और भी अधिक होगई होगी ॥

दफ़ा ६९—इसबात को तसीजकरना कठिनहै कि महाराजा साहब कारनैलफियर साहब से देशके किसी कारण से अपनेमनमें वैर रखतेथे या निजडौलसे अपने मनसेवैररखते थे इस तहक़ीक़ात से किसीतरहपर यहबात साबित नहीं हुईहै कि कारनैलफियरसाहब ने महाराजागायकवार के विषयमें कोई जातीवदसलूकी जाहिरकी थी सोजहांतक हम को मालूम होसक्ता है कारनैलफियरसाहब और महाराजा गायकवारमें देशके प्रबन्धमें मतान्तरके होनेसे वैरपैदाहुआ था परन्तु इसविषय मेंभी कोईबात नहीं होसक्तीहै कि जो ग्लानि महाराजासाहब कारनैलफियरसाहबसेरखतेथे उसका देश और अपनेडौलके दोनोंहेतुओंसे बुनियादथी और हम उनकेइसबयानको ठीक नहीं मानसक्ते कि उनको कारनैलफियरसाहबसे कोई जातीवैर नथा ॥

दफ़ा७०—जिसरीतिसे महाराजागायकवारनेरावजी और नरसू और अमीना आयासेवार्त्ता शुरूकीथी उसकाअन्तको यहनतीजाहुवाकि रेजीडण्टसाहबको विषदेनेकेलिये साजिश कीगई और यहबातउसगवाहीसे साबितहुईहै जिसकोहमने संक्षेपमें वर्णनकियाहै पहिले सन् १८७३ई० के अन्तमें और सन् १८७४ई० के प्रारम्भ में महाराजागायकवारका प्रयोजन प्रकटमें केवल इसबातकी इत्तिलाहासिलकरना था जोरेजी-डण्टीमेंबड़ौदेकी रियासत के हुआमिले पेशहोवें महाराजा साहबहरएकबातकोबिल्कुलअपनेआधीनरखतेथेऔरसालिम और यशवन्तराव से एजण्टका कामलेतेथे और जो कुछहो-ताथा उसको अपने प्राईवेटसीक्रेटरी दामोदरपन्थकोभी नहीं

उनको इसका हाल मालूमनथा तो उसदिन संध्या से पहिले उनको इत्तिलाहोगई होगी कर्नैल फियरसाहब और और गवाहोंने यह इजहार दियाहै कि बड़ौदे कीछावनी में विष देनेकी खबर सर्व्वत्र प्रसिद्ध थी ॥

शहरछावनी सेएककोसकी दूरीपर नहीहैसो जिसदिन रेगीडन्सीमेंआयाथाऔररावजीने उससेकहाथाकि वहकाम होगया यहबात समझमेंनहीआती किसालिमने जोमहाम-हाराजा गायकवारकेपास उपस्थित रहाकरताथा अपनेअ-सीको इसबातकी खबरनदीहो परन्तु हमदेखतेहैं किमहा-राजा गायकवार ९—नवम्बर सोमवारके उपरान्त पहिलेही दफे अगले बृहस्पतिवार को कर्नैल फियरसाहब के मुला-कातकरनेके लियेगये औरउससमय यहबयान कियाकिमैंने आपकोविष देनेके इरादे की खबर पिछले दिन अर्थात् ११ नवम्बर कोसुनीथी औरनीचे लिखीहुई चिट्ठी१४ नवम्बरको लिखी गई ॥

मिलेरे जो हब्सीमेंसे हों उसको सदा खबर देते रहें और यह मासूली पारितोषक नथे जो महाराजा साहब खुशीपर रेजीडन्सीके नौकरोंको दिया करते थे सो जो रुपया इसप्रकार से दिया जावे तो वह हमारे विचार से रिशवत है परन्तु हम यह बात नहीं कहसक्ते कि महाराजा गायकवार भी इसको रिशवत समझते थे या नहीं॥

दफा ७१—परन्तु यह प्रश्न पूछा जासक्ता है कि महाराजा गायकवार को रावजी और नरसूसे यह आशा होसक्ती थी कि वह एक ऐसी खास केवद् लेजिसको उसकाम से कुछ सम्बन्ध न था जिसका पूरा होना उनके जिम्मे ठहराथा मार डालें इसका यह उत्तर होसक्ता है कि महाराजा गायकवारने उसरुपये केद्वारा जोउन्होंने नरसू और रावजीको दिया और अपने पास उनके बुलाने और वस्तुओंके देनेसे उनको अपने वसकर लिया और इसकार्य्य के सिद्ध होनेपर बड़े पारितोषक के देनेकी प्रतिज्ञा कीथी रावजी वर्णन करता है कि मुजसे एक लाख रुपया और नरसूसेभी इतनेही रुपयोंके देनेका वाइदा कियागयाथा नरसू कहता है कि महाराजाने हमारे सम्पूर्ण परिवार सहित निर्वाहके बन्दोबस्त करनेका इरादा कियाथा सो उन गरीब आदमियोंके विचारमें जो पहिलेही से महाराजा गायकवारके तअल्लुकमेंथे निस्संदेह यह प्रतिज्ञा एक काफी उपदेश इसबात केलिये मालूम हुवा कि वह इस रीतिसे करनैलफियर साहब कोवधकरें जिसका असर तुरन्तही न होजावे और वह पकड़े न जावें किन्तु धीरे २ उनको मारडालें॥

दफा ७२—जो रीति महाराजा गायकवार ने ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० कोथा उसके पीछे अखतियार कीथी उससे उनकी निर्दोषता प्रतीत नहीं होती दामोदर पंथकी गवाहीसे इस बात का निश्चय होता है कि महाराजा गायकवार को चाहीयह बात मालूम थी कि विष देनेका उद्योग उस समय कियागयाथा जबकि वह उसदिन दसवजे भोरके करनैलफियर साहब की मुलाकातके लियेगयेथे और जो उसवक्त भी

उसका कुछ प्रयोजनथा यह बातभी साबित नहीं हुई कि दामोदरपन्तने अपने खासीके सामने चुरालिया है जोउसने उस प्रश्नका उत्तर दिया है कि जोरुपया खुफिया कामोंके लिये खानकरकेथा उसकेलिये वह महाराजा गायकवारको क्योंकरठीकर उत्तरदे सक्ता है वह हमारे विचारसे काफी मालूम होता है अर्थात् यह कि रुपयेके पानेवालोंकी रसीदहुक्म केसाथ लगी हुईथी हालांकि हुक्मइस रीतिसे लिखागयाथा जिससे गुप्त मुआमिले कालूमलुत होजावे केवल कागज़ नम्बर (टी के मुआमिलेमें उसरीतिपर बर्त्तावनहीं कियागया यदियहभी कल्पनाकीजावे कि दामोदरपन्तने तगल्लुबकिया है तोभी यह ख्याल होता है कि वह इस बातको पूरा२नजानता था कि निज मुआमिलों का वह बहैसियत महाराजा गायकवारकासे-क्रेटरीअंजाम देताथा उनकी निस्बत तहकीकात करनाकर्नैलफियर साहब के अख्तियारसे बाहरथा॥

मिस्टरदादाभाईनौरोजजीने दी होगी जिन्होंने उसखरीते को सुरक्षित कियाथा और विपदेनेके सबूत को नजानते थे यह ख्यालकिया जासक्ता है किमहाराजागायकवारने इस राय को शीघ्रही पसन्द करलिया होगा॥

दफ़ा ७४——यदि महाराजागायकवार इस अपराध में संयुक्त होतेतोउनकोयह तरीकाइखतियार करना उचित थाकि वहतुरन्त होकरनैल फियरसाहबकेपासजाकर अपनी चिन्ताप्रगट करते और वारम्बारमिजाजकी तन्दुरुस्तीपूछते तेऔर उनसेयह आशाथी किवहएक चिट्ठीइस मजमून की करनैलफियर साहबको नामभेजतेकि हमको इसहालसे बड़ा खेदहुवा औरइसबात कावडा पश्चात्ताप हुवाकिमुख्यहमारे होटेशमें एक बदमाशके सबबसे हमारीमेहमान्दारीमें फरक हुवा औरयहबात उचितथी किजोनफरतउनकोकरनैलफियरसाहब सेथी उसकेसबबसे उनकोइस बातकी दुगनी चिन्ता रहतीकि इसमुआमिलेमें गवर्न्मेण्टअंगरेजीके साथशीघ्रही अपनीसफाई करलेंपरन्तुइसकेबदले महाराजानेआंखेंछुपाई औरबड़ी देरकेपीछे एक बाजाबिता चिट्ठी सरबमुहरके साथ लिखभेजी महाराजासाहबके इसबर्त्ताव के सिवाइसके और कोईसबब विचारमें नहींआसक्ता है किआपही उन्होंने विष देनेके लिये लोगोंको बहकायाथा।हम लाचारीसे महाराजा साहबके इसबयान कोकि उनकोइसमुआमिले कोकुछ खबर नथी निश्चयमानने केयोग्य नहीं ख्यालकरतेहैं॥

दफ़ा७५—यहराय जोजाहिर कीगईहै किशायददामोदर पंथने करनैलफियर साहबके विषदेने का उपाय किया इस प्रयोजनसेहो किखास उसकेखतमें छुपजावें उसकेलियेहमारीयह रायहैकि किसीगवाहीसे यह बातसाबितनहीं होती किदामोदरपंथ नेऐसा कामकियाथा जिसको वहमहाराजा गायकवारसे गुप्त रखना चाहताथा अथवा यह कि करनैल फियरसाहब कीहिफाजत यावडौदेसे उनकीबदलीके चाहनेमें

दफा १८—जोरायहमारी इसमुकद्दमेमेंहै उससे श्रीमान् महाराजा ग्वालियार और श्रीयुत महाराजा जयपुर और राजा दिनकरराव कीराय प्रतिकूलहै जोराय उनको उन चलनरिपोर्टोंमें लिखीहै जोहरएककमीशनकेमेम्बरने पेशकी है हमनेउसपरखूबगौरकिया हमनिश्चयकरतेहैं किगवाहोंकी प्रख्यातिके एतबारपर हरएक किस्मकी वाजिबीरिआयतकरने केपीछे मुकद्दमेकेहालसेनीचे लिखेहुयेअमरसाबित होतेहैं॥

पहिले—यहकि उन मनुष्यों ने करनैलफियर साहबके विषदेने का उद्योग किया जिनको मल्हरराव गायकवार ने बहकाया॥

दूसरे—यह कि मल्हरराव गायकवार नेअपने एजण्टों केद्वारा औरस्वत: भीकई नौकरोंसेगुप्तवार्त्ता कीजोकरनैल फियरसाहब बड़ौदेके रजीडण्टकेपासनौकरथे यारेजीडन्सी सेसम्बन्ध रखतेथे॥

तीसरे—मल्हरराव गायकवारने उनमेंसे कई मनुष्यों कोरुपयादिलवाया है॥

चौथे—यहकि इसप्रकारकीवार्त्ताकरने औररुपयेके दिलवानेसे उनका पहिलेप्रयोजन यहथाकिजोकुछ रेजीडन्सी मेंउनके लिये और उनकी रियासतके मुआमिलोंकेलियेहोता होवह मालूम करेंऔर दूसरेयहकि करनैलफियरसाहबको विष देकर दु:खदें॥

बम्बईलिखाहुवा ३१ मार्च सन् १८७५ ई०

दस्तखत—आर०कोच
दस्तखत—आर०जी०मीड
तथा—पी०एस०मैलवल

———

रोरके खण्डनकरनेका नहीं देखता यह बात भी गौर करने के लायक है कि मल्हाररावने जरा भी खातिर और यश-वन्तरावको सरल्यूइस पेलीसाहब के हवाले करदेनेमें ता-मुलनहीं किया किन्तु यह ख्याल किया कि मैं अपनी सामर्थ्य भरसब तरहकी सहायता दूंगा ॥

उनवार्त्ताके विषयमेंजो नौकरोंसे रातको यादिनको हुई थीगौर करनेकेलायक नहीहै ऐसा आवागमन और तेहारों पर पारितोषक का मांगना हुवा करता है ॥

और यह कारवाई केवल रेजीडण्ट साहबके प्रसन्नकर-नेकेलिये जो रईस किया करते हैं और रईसभी इसबातकी इच्छाकरतेहैं कि रेजीडण्ट साहबकी कारवाईसे इत्तिला पावें ऐसीही इत्तिलाकी इच्छा रईस और रेजीडण्ट साहब से हुवा करती है मैं अन्त में लिखता हूं कि खासबातें जांच करने की यह हैं ॥

पहिलेविषदियेजाने का उद्योग—दूसरेनौकरोंकोसाजिश-पसजो कुछमेरीराय पूर्वोक्त मुआमिलेमेंथीवहपेशकरताहूं ॥

दस्तखत—श्रीमान्महाराजा ग्वालियार

मुक़ाम बम्बई—२७ मार्चसन् १८७५ ई० ॥

राय श्रीमान् महाराजा जयपुर जय-सी-एस-आई ॥

मल्हारावगायकवारपरलगेहुये अपराधकी कमीशनके इज-लासकेगवाहोंकी गवाहीपर कामिल गौरकरनेके उपरान्त नीचे लिखी हुई राय पेश करता हूं वहबयान जो अमीना आयाने और रियासतके दूसरे नौकरोंने किया उससे यह साबित हुवा कि आया और दूसरे रियासत के नौकरों को समय २ पर गायकवारकी आज्ञाके अनुसार रुपये दियेगये परन्तु यहइससे पाया नहीं जाताकि यह रुपय उनको एक अनुचित अपराधके साजिशकरने के लियेदियेगये होंजोकुछ रुपयादिया गयावह गायकवारने पारितोषककीभांतिदिया

खानबहादुर बम्बईके पुलिसअफ्सरोंने सरजनटवेलनटायनसा-हबके पत्तोत्तरके समयजो इजहारात परकियेगयेथे इसबात का इक़रार कियाकि बौहराअबतकमौजूदहैइस लियेसाफइससे प्रगटहै किबौहरेने विषके मोललेने केविषयमें सिदाकतनहीं की जोयाददाश्तें दामोदरपन्थ कोदफ्तरकी पेशहुईं उनसे तसदीक इसकी पाई नहीं गई किकोई खासरकम अल्मास यासंखिया याकिसी भांतिके विषके मोल लेनेके लिये रुपया दिया गया होउन याददाश्तों में ब्रह्मभोजन यापुण्यके लिये मंजूरीकाहुक्महै और गवाही इसबातकी काफ़ीहै कि वास्तव मेंयह रुपया इन्हींकामों में खर्चकिया गया ॥

दामोदरपंथएकशीशीकाजिक्रकरतेहैंजिसमेंएकवस्तुपतली विपैलीथीऔरबड़े२ कालेचोवटों औरकालेसापों औरसुम्की घोड़ोंके पेशावसे उसकोहकीमने तय्यार कियाथा औरएकम-नुष्यगजाबा महाराजासाहबके साले कांवलकर नौकरकेहाथ दामोदरपंथके मकानपर भिजवादीथी परन्तु नतो हकीमकमी-शनकेरूबरू पेशहुवा और न गजाबा आयाजो इसबयान की सिदाकतकरता इसलिये यह मालूम नहुवाकि यह लोगक्या बयान करते ऊपरके कहेहुये हेतुओंसे प्रकट है किजो कुछ दामोदरपंथ ने विषमोललिये जानेके विषयमेंबयान कियावह सिवाय उसके बयानके किसी और मनुष्य का बयान नहीं है इसलिये किसी भांतिसे साबित नहीं होसक्ता ॥

बयानहुवा थाकितांबाभी करनैल फियरसाहब केशर्वत में मिलाया गयाथा क्योंकिवह भीएकविषहैपरन्तु इसतांबेका कुछपता नमिलाकि गिलासकेशर्वतमें थायानथा और नवडा-क्टर सीवर्डसाहब और डाक्टर ग्रेसाहब नेतलछटके जुज अलग कियेतब भीउससे कुछ साफमालूमनहुवा ॥

तीनगवाह–दामोदरपंथ-रावजी-नरसू-जिनकीगवाहीगा-यकवारके जुर्म संगीनके विषयमेंहै वहभीशरीक जुर्म हैंइन

पहिलेके मल्हराव गायकवार की गद्दीसे उतारे जानेका हुक्म देनेमें अखतियार किया है ॥

दफा ३—जिसकमीशनने सररि चर्डमीड साहबके नीचे इज-लासकियाथा उसने यह रिपोर्टकी थी कि इस रियासत की कुप्रबन्धता जिससे गवर्न्नमेण्टको चिन्तायी उसदरजेतक पहुंच गईहै कि उसके दुरुस्ती की बहुत जरूरत है कमीशन ने यह राय भी जो लिखी थी कि इसरईस और उसके सम्मतियों से इसलाह और अच्छेबन्दोबस्त के किसी सबसूरतदबीरकीआशा रखनी बेफाइदा है और यह बातें केवल अंगरेजी गवर्न्नमेण्टके दखलकरने और हिमायत सेजारी होसकीहैं इसलिये पूर्व्वोक्त कमीशनने एकऐसे मदारुलमहामकी तकर्रुरकी सिफारिशकी जिसको जरूरी अधिकारसौंपेजावैं और जोगवर्न्नमेण्ट हिन्दी की रजामन्दीके सिवाय अलगन होसके ॥

मुर्सकी गवाहीअर्थात् रावजी—नरसू—और दामोदरपंथ की गवाहीपरस्पर प्रतिकूल है॥

दस्तखत रामसिंघ बम्बई २७ मार्च
सन् १८७५ ई०॥

राय श्रीमान् राजासरदिनकरराव के० सी० एस० आई मल्हरराव
गायकवार बड़ौदेके मुक़द्दमेमे—स्थानबम्बई
लिखाहुवा २६ मार्च सन् १८७५ ई०॥

विषदिये जानेके विषयके सब मुकद्दमें के देखने और सुनने सेमुझको मालूमहुवा किमहाराजा मल्हररावपरकिसीतरह का अपराध नहीं लगता और कोई सुबूत हीरे और संखिये और तांबेके मोललिये जानेकेविषय में नहीं है॥

या इन जहरोंकी तय्यारीमें एक रुपयेके खर्चका भी सबूत नहींहै और कोई लेख महाराजा के हाथका याकोई कागज जिनमें इनजहरोंके विषयमें लिखाहो पेशनहीं हुवा हरचन्द उनकाप्राईवेटसीक्रेटरी उनकाप्रत्न्होगया बहुतसे मनुष्योंमें सेजिनकोइस मुकद्दमेसेसंबन्धथाकेवलतीनगवाहोंअर्थात्राव-जीनरसूदामोदरपंथ नेविषके मोललेनेकेविषयमें गवाही दीहै इनसवकाबयानएकदूसरेके प्रतिकूलहै दामोदरपंथ का बयान हीरे के खरीदने में आत्माराम और हेमचन्द से खण्डन हुवा इसनेवर्णन कियाकिमैंने पुड़ियाखोल-कर हीरा और संखिया नहींदेखाथादामोदरकानाम न रावजीनेलियाथानरसूने कुछ उसकाजिक्र कियाउसका खुदबयानहै किमैंनेयह बयान इस प्रयोजनसे कियाकिमैं गोरोंके पहिरे मेंसोलह दिन तक कैद रहा और मुझकोबड़ा दुखथाइसलियेमैं चाहताथा किमैंऐसा बयानकरूं कि छूटजाऊं रावजी और करनैलफियरसाहब के बयानमें तारीखोंका इखतिलाफहै जबकिविष गिलासमेंडाला गयाथारावजीकहताहै किमैंने शीशीमहाराजासेपाईथी और

भाताहूं आपको अधिकार है कि जिसमनुष्य को आप चाहें अपना कारकून नियत करेंगे पर यह बातखूब प्रगटहो कि जो नसीहतमैं अब आपको करताहूं और बड़ौदे कारेजीडण्ट जिसपर मुझको अटल विश्वासहै मेरे हिदायत से आपको सम्मतदेगा जो उसपर आपन चलेंगे और इसी हेतुसे बड़ौदे के प्रबन्धमें कुछ दुरुस्ती नहोगी तो सिवाय इसके और कोई बन्दोबस्त नहोगा कि आप अपनेअधिकारसे पृथक् कियेजावेंगे और कोई उपाय जोमेरे विचार से बड़ौदे के मनो भलषित प्रबन्धकेलिये आवश्यक होगा और जिस्मे बड़ौदे को रियासत से कुछ दस्तअन्दाजीनहो किया जावेगा॥

सो आपने इसकेबिना कि इसवर्ष के अन्ततक महाराजा गायकवार के निज अधिकार पररहने देने का जिम्माकरें वह तारीख एक बहुइम बातकी मुकर्रर की कि उससे आगे आप महाराजासाहबके साथ रियायत न करेंगे॥

हैं जिनके अनुसार उन तहक़ीक़ात का वर्त्ताव होना चाहिये जो आपको आधीनी रियासतोंके साथहैं आपने लिखाथाकि आपने यहठीकलिखा है कि गवर्न्नमेण्ट अँगरेज़ी हिन्दुस्तानमें निस्संदेह सबसेबड़ी गवर्न्नमेण्ट है और हिंदुस्तानीरियासतों की बनावटतरी उसकी सुरब्बियाना इनायत और हिमायत पर मौक़ूफ है तथाच बड़ौदे की रियासत इनदोनों बातों के लिहाजसे कि वह जुगराफिये के रूसे ऐसी जगह पर है कि अंगरेज़ी राज उससे मिलाहुवा है और वहां एक अँगरेज़ी फौज रियासत की रक्षा और उसके अधिपतिके पक्ष और उसकी उचित आज्ञाके प्रचार के लिये रहती है खासकर यही कै-फियतहै॥

मेरेलिये मैं इसबातपर राज़ी नहीं होसक्ता कि जो मनुष्य कोई बेजा काम करताहो उसकी हिमायतलिये सेनातैनात करूं जिस सल्तनत को अंगरेज़ी गवर्न्नमेण्ट सहायक हो उसकीतरफ से कोई बदअमली हैतो वह ऐसी बदअमली है जिसकी जवाबदिही में कुछ गवर्न्नमेण्ट अंगरेज़ी भी संयुक्त होती है इससे इस बातकी निगरानी करनेका गवर्न्नमेण्ट अंगरेज़ी को हक़ही हासिल नहीं है किन्तु उसीका खास फर्ज़है कि जिस रियासत की यह दशा हो उसके प्रबन्ध की दुरुस्ती की जावे और सब खराबियों को रोका जाये॥

दफ़ा ६-फिर आपने महाराजा गायकवारको उसविषयसे सुचिताकिया कि इन असूलों के लिहाजसे आपको क्याअमल दरामद करना उचितहै आपने यह इच्छा प्रकटकी कि उनको अपनीरियासतकी दुरुस्तीकाअच्छामौका दियाजावेगा और जोवह उससे लाभ न उठावेंगे तो आपनेउनको उसके जरूरी नतीजों से भी आगाह कर दिया अर्थात् आपने महाराजा साहबको यह लिखाथा कि जो बड़ी२ खराबियां आपके प्रबन्ध में हुई हैं उनकी दुरुस्ती के लिये मैं आपको जिम्मेदार सम

दफ़ा ९—जो संगीन अपराध मल्हरराव के जिम्मे विष दिलवाने का नियत किया गया और जिसकी मिस्टर सूटर साहब ने तहक़ीक़ात की थी उसके मुक़ाबिले में इस प्रकार का तामूल निस्संदेह सहज नाचीज़ था श्रीमान् महारानी विक्टोरिया की गवर्नमेण्ट आप की इस राय से बिल्कुल अनुकूल है कि आप इस इलज़ाम से हरगिज़ चश्मपोशी नहीं कर सकते थे एक ऐसे राजा के साथ जिसके निस्बत ऐसा है बतनाक इलज़ाम हो और वह उन मनुष्यों ने लगाया हो जो अपने तई उसका कारिन्दा बयान करते थे सिवबत् सम्बन्ध और ज़ाहिरा इत्तिफ़ाक़ात माग रखना बड़ी रुसवाई की बात होती और सरकार के उन लायक़ मुलाज़िमों के हक़ में जो बहुधा कठिन और भय की हालत में अति उत्कृष्ट शोच कार्य्य को अंजाम देते हैं सम्पूर्ण संसार में इस बात का प्रकट करना कि आपके प्राण को बहुत सस्ता समझते हैं न्याय से दूर होता॥

साथ बदसलूकी कि उसके सबबसे उसके हिलाकतका अन्देशा था और एकऐसा विवाह किया जिससे रियासत के सरदारों और उनमें और बैर अधिक होगया और पूर्व्ववत् उसी प्रकार की फजूल खरची करते रहे जिसके सबबसे उधर तो काश्तकार निरास होगये और इधर इसके इस सबबसे कि हिंदुस्तानी सिपाहियोंकी जरूरी मासिक केदेनेका कुछ बंदोबस्त नथा सलतनतसें बड़ीअबतरी के होनेका संदेह था पसइन बातोंसे मल्हरराव की जाती नालायकीमें किसीप्रकारकी तब्दीली साबित नहीं होती थी उनके अहदकी तवारीखमें जहरखूरानी केके इलजामसें उनके गिरफ़तार होने और उनके अहदकेपूर्ण होनेसे पहिले उसवजीरका किसीसबबके बिना मुसौफी होनाथा जिसनेरियासतके प्रबन्धकी इसलाह करनी शुरूरी थी और औसररिचर्डमीडसाहब कीरिपोर्ट परनियत हुवाथा॥

दफ़ा ८—यदियह बातफर्जकी जावेकि मल्हररावकेजिम्मेविषदेनेका इल्जाम ठहराताहो नहीं तो अवइस बातका तहकीककरना कुछअवश्यनहींहै कि उनकीनालायकीको इनअलामतोंके मूलपर अमल करना करीन मसलेहत था यावर्ष के पूर्ण होने तक फैसलेका मुल्तवी करना उचितथाकेवल इस बातकावर्णन करनाकाफी हैकिजो तरीका इखतियार किया जातावह केवलबड़ौदे के रहने वालों के भलाईके लिहाजसे होताजो बरअंगेखती और खतरहलोगों केदिलोंमेंइकबारगी किसीतदबीर मुमकिनत बदल जानेसे पैदाहोताहै यद्यपिउससे दरगुजरकरनाउसकेबनिस्बतमुनासिबहोताकिमैआदके पूर्ण होनेसेरियासतमेंवहइसलाहकीजावेजोबहुतसे आपत्तिके मारेसमूहों कीदशाकेलिहाजसे मुनासिवथीपरन्तु रियासतके अधिपतिके चालचलनमें कोईबातऐसी नथीजो इसप्रकार की रियायतके मुस्तहक होतीयाआपके गवर्न्नमेण्टको उत्तमप्रबन्धकीमौहूम आशामें अधिकतर ठहरना लाजिमआता॥

जातीहै और जिसकी निस्बत हुजूर मदूहा की गवर्नमेण्ट ने हमेशा अपनी बड़ी रजामन्दी जाहिर की है ॥

दफ़ा ११-पर इस बातसे कलाम होसक्ताहै कि इसप्रकारका कारवाई कानतीजा हर एकतरहपर आपकीआशकेअनुकूल हुवायानहीं निस्संदेह उससेभी बड़ी २ कबाहतें पैदाहुई है जिससेकाफीदलील इसबातकी पैदाहोसक्तीहै जोईश्वर नचाहै आगेकोइसीप्रकारका मौका पैदाहोतोइसप्रकारके उपायका अमलमेंलाना अनुचितहोगा राजे और सरदार अपनेकानूनी तालीमके सबबसे एक नाजुक कानूनी तहक़ीक़ातके करने के योग्यनहीं होते और हिन्दुस्तानके उनसरदारोंको जो अंगरेजी कानूनी अदालतके दस्तूरों और एकअंगरेजी वकीलकी लियाकत से नावाकिफहोते हैं इसप्रकारके नयेकामोंकेकरने से खासकिस्मकी दिक्कतपेश आईहै इसकेसिवा इसमुकद्दमेके हालातके अवलोकनसे यहबात साबितहोतीहै कि एकमुल्क के अधिपतिके अपराधका उसीकेदेशकेभीतरअदालतकीरीति के अनुसार तहक़ीक़ात करना कमसुनासिब होताहै क्योंकि कारवाई अदालतके मुश्तहरहोनेसे और जो पाबन्दी मुल्की मसलहत के लिहाज से उसकी निस्बत करारदेते इब्तिदामें लाजिम होतीहै उनसे उसकी बड़ी जिल्लत होतीहै जो उस की रिआया और और राजाओंमें दृष्टिमें सिर्फजुर्मके साबित होनेके उपरान्त नायद न होसक्तीहै और इसीसबबसे वहलोग उसके दरदशरीक होजाते है और यहहमदर्दी आसानी के साथ जोउसके हक्कमें बमंजिले तरफ़दारीके होजातीहै इसके उपरान्त जोकायदे कारवाईके अंगरेजी कानूनकी रूसेजारी कियेगयेहैं उनका अमलदरामद उनमुक़द्दमोंमें मुनासिबनहीं होता जहां गवाहोंके साथ उनके पहिले इजहार और आम अदालतमें उनकेपेश होने के दरमियान सुगमता से साजिश होसक्ती है और जहांइस किस्मकेअमलके वास्तेवक्तसे जरि-

केउपरान्त सरल्यूइमपोली साहबकोहूबहू भावसेंधियाकाविष देकर मारा जाना और उससेभी अधिकएक और हैबतनाक कतलतस्यीत् गोविन्दनायक का बड़े अनावसे हिलाक होना साबित होगयाथा यह दोनों जुर्म उन मनुष्यों ने कियेथे जो मल्हररावके आधीन अधिकारीथे और पिछले जुर्मकी निस्बत तोसाफयह पतालगगया किवह मल्हररावकी आज्ञासे हुवा था अगर वहजुर्म उसवक्त साबित होजाते जबकि वह गद्दीपर बैठेहुयेथे तोजिस हुकूमत से ऐसेबड़े कामकिये जावेंउसके खत्म करनेमें गवर्न्नमेण्ट अंगरेजी बहुत अरसे तक ठहर नहीं सक्ती थी॥

दफ़ा १७-पस इन वजूहात पर अगर मल्हरराव के जिम्मे कारनैल फियरसाहब को जहरदेने का इलजामभी न होता तौभी उनकागद्दीसे उतारना उचितथागवर्न्नमेण्ट अंगरेजीको मल्हररावके सरदारों और रिआयाको अपने हकूकके हासिल करनेके इखतियारसे महरूम करदिया था यहबात वाजिब न होती कि वह फिर उनको एक ऐसे राजा की हुकूमत के कुबूल करनेपर मजबूर करे जिसकी लाइलाज बुराइयांतजु-र्बेसे बखूबी साबित होगईथीं पसआपको यह हिदायतकी गई कि आप अपने जाबितेके इश्तिहारमें मल्हररावके गद्दीसे उ-तारे जानेकी भी आम वजूहात बयानकरें इस अंदेशेसे कि शायद कोई यह खयालकरे कि एक रेजीडण्टको जहरदेनेके जुर्मसें सिर्फ गद्दीसे उतारे जानेकी सजादीगई और कमी-शनके हिन्दुस्तानी मेम्बरों की भी रायके लिहाज से यह अम्र मुनासिबनथा कि आप अपने वजूहातमें उन अमूरको दाखिल करेंजो तहकीकातसे पैदाहोंउस किस्मकी कारवाई गोया एक फजूलवजह एक जरूरीकी होती और उसके सबबसे इस असलमें खललवाके होता कि सलतनदनजमीहै फौनफसा अख-तियारात हकूमतसे महरूमकरनेको काफीवजहहै जोफर्ज अ-